विजयेश्वर
पंचाङ्गः

विक्रमी २०५२
सप्तर्षि ५०७१
ईस्वी ९५-९६

॥ ओ३म् ॥

Vijayashwer Jyotish Karyalaya (Regd.)
Bhori Patta, Chungi,
JAMMU - 180002

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं रत्नप्रभं
तीव्रमनादिरूपम्।दारिद्र्यदुःखक्षयकारणं च पुनातु
मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।। यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितं
ब्रह्मर्षिदेवर्षिनृपर्षिभावितम्। तं देवदेवं प्रणमामि
सूर्यं पुनातु मां०।। यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं
त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम्। समस्ततेजोमय-
दिव्यरूपं पुनातु मां०।। यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधं
धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम्। यत्सर्वपापक्षयकारणं
च पुनातु०।। यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं
यदृग्यजुःसामसु संप्रगीतम्। प्रकाशितं येन च

कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग

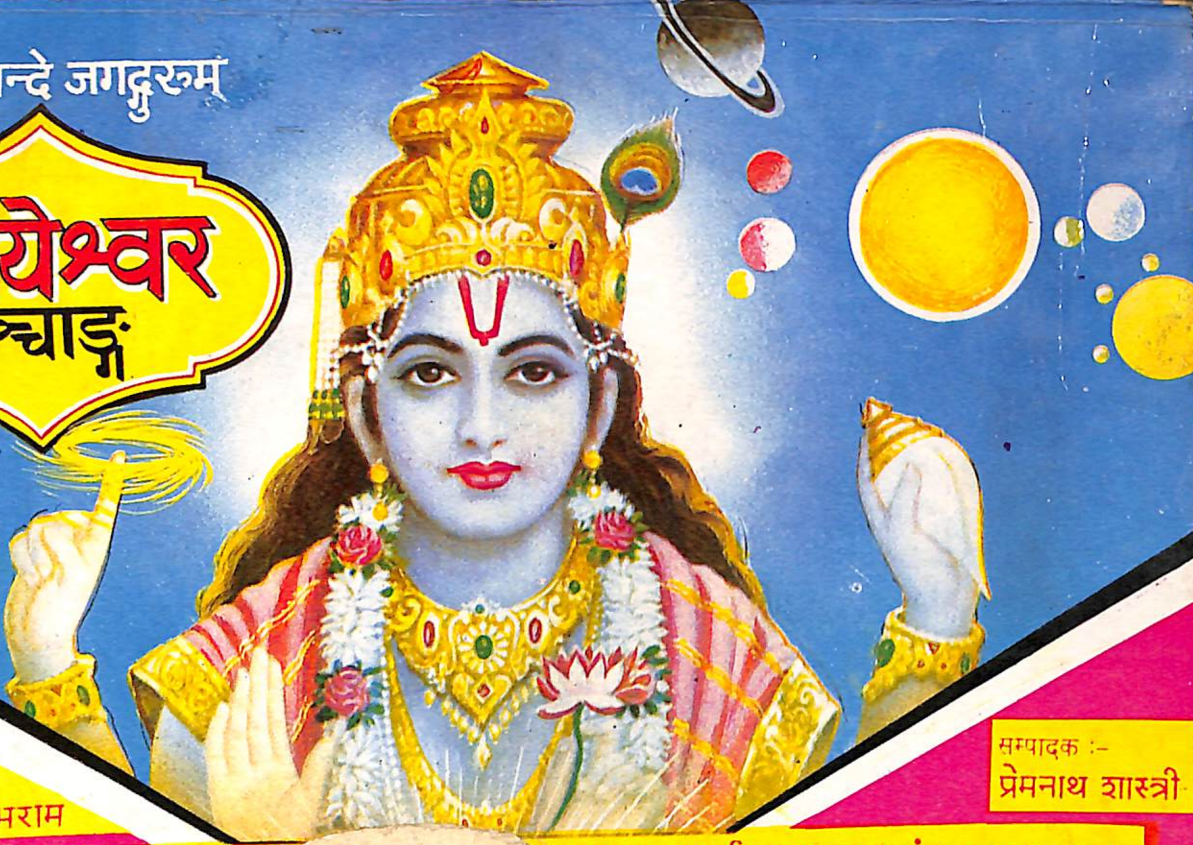

ञ्चाङ्गप्रवर्तक :-
योतिषी आत्माराम

सम्पादक :-
प्रेमनाथ शास्त्री

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि [illegible] त्थानम्-अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
परित्राणाय साधूनां विनाश [illegible] थापनार्थाय संभवामि युगे युगे श्री भगवद्गीता

वैदिक – राष्ट्र – गीत

आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्
दोग्ध्री धेनु- र्वोढा -नड्वानाशुः—सप्तिः पुरन्धिर्योषा
जिष्ण रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्।
निकामे निकामे नःपर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयःपच्यन्ताम्।
योगक्षेमो नः कल्पताम्।

यजुर्वेद 22-22

हे प्रभु ! हमारे भारतवर्ष में ब्राह्मण विद्वान ब्रह्मतेज से युक्त हैं, क्षत्रिय शूरवीर तथा महारथी हैं (जो एक ही योद्धा 10 हजार शस्त्रधारी योधाओं से लड़ने में समर्थ हूँ महारथी कहलाता है) गौवें दूध की धारयें बहाने वाली हैं, वायुवेग से अधिक शीघ्र चलने वाले यातायात के साधन सुलभ हैं, महिलायें चरित्र-शील सयानी तथा अच्छी गुणवाली हैं, भारतमाता की सभी सन्तान यज्ञों में व्यस्त हैं, शूरवीर सभ्य तथा सुशिक्षित हैं समय समय पर बादल बरसते रहे, हमारे देश में अन्न तथा औषधियाँ अधिकमात्रा में तथा रस से परिपूर्ण हैं, हे भगवन् हमारे देश की अधूरी योजनाओं को सम्पूर्ण कीजिये और सम्पूर्ण हुई योजनाओं की रक्षा कीजिये ।

शारदा
गुरुमुखी
कन्नड़
देवनागरी
ओड़िया
सिन्धी
असमिया
गुजराती
प्रणवे च दृढ़ा मतिः
स वै "हिन्दू"
मराठी
बांगला
तमिल
मलयालम्
तेलगु

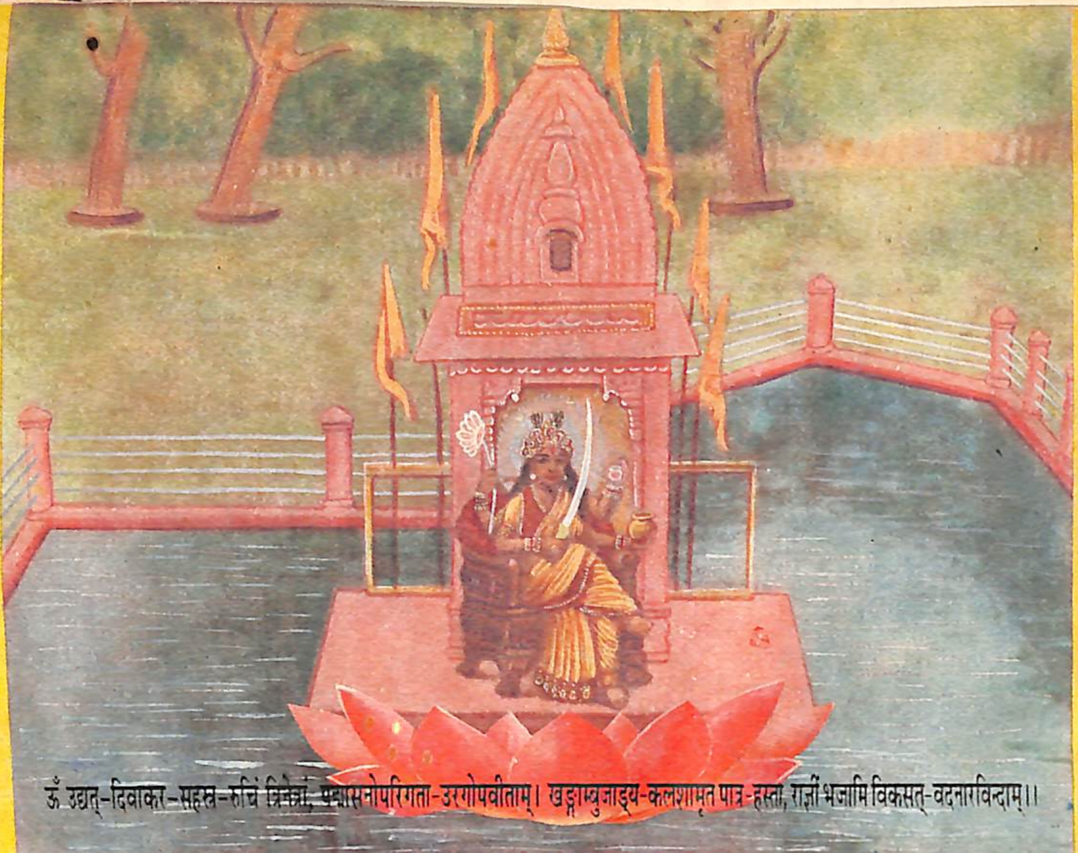

ऊँ उद्यत्-दिवाकर-सहस्त्र-रुचिं त्रिनेत्रां, पद्मासनोपरिगता-उरगोपवीताम्। खड्गाम्बुजाड्य-कलशामृत पात्र-हस्ता, राज्ञीं भजामि विकसत्-वदनारविन्दाम्।।

Regd. No. 892

सप्तर्षि० सं० 5071

विक्रम० सं० 2052

पञ्चांग प्रवर्त्तक

ज्यो० आप्ताम शर्मा

विजयेश्वर पञ्चांग

1995-96

सम्पादक

ज्योतिषी प्रेमनाथ शास्त्री

मूल्य : 18 रु०

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय के कार्यकर्ता

जयोतिषी काशीनाथ शर्मा, ऊँकारनाथ शास्त्री, भूषण लाल० एम० ए०, जवाहिरलाल शास्त्री।

3379 Kathua

विषय सूची

गायत्री मन्त्र	3	शिव संकल्प	41-43	जातक मिलाप	105-106	विवाह मुहूर्त	174-186
ब्राह्मी विद्या	4-6	शिवोऽहं	44-45	यात्रा प्रकरण	117-122	शेष मुहूर्त	187-213
गुरु स्तुति	7	विष्णु स्तुति	46-47	नाम राशि	123	राशि के अनुसार	
अष्टादश श्लोकी गीता	8-15	गायत्री महत्व	48-54	हमारे पर्व	124-125	यज्ञोपवीत मुर्हूत	214-217
सप्तश्लोकी गीता	16-18	सप्त श्लोकी दुर्गा	55-57	व्रतों की सूची	126-127	राशि के अनुसार	
नव ग्रहस्तोत्र	19-20	गणेष स्तोत्र	58-62	निषेध समय	128	विवाह इत्यादि मुर्हूत	217-228
मुख प्रक्षालण विधि	21	राम स्तुतिः	63-67	ग्रह संचार	129-130	राशि फल	229-298
नित्य प्रार्थना	22-23	आसय शरण	68	जयन्तियां	131-132	साढ सत्ती	299-300
गणेश स्तुति	23-24	इन्द्राक्षी	69-70	गण्डान्त	132-133	ढय्या	301-302
भगवान् मेरी नैया	24-25	आरती	71	ग्रहण	134	लग्न सारिणी	303-315
देवी प्रार्थना	25-29	प्रेप्युन	71-72	आमदनी खर्च	135-139	शिवरात्रि	316
गौरी स्तुति	29-31	जन्मदिन पूजा	78-86	अवश्य पढ़िये	140	पंचाग के विषय में	317
शंकर प्रार्थना	31-33	धर्म शास्त्र	87-94	भविष्य वाणी	141-146	गीता कैसट	318
लिंगाष्टकम्	34-35	दशांश जप	95	जन्त्री	147-170	कार्यालय के नियम	
शिवस्तुति	36-40	मन्त्र प्रकरण	96-104	यज्ञोपवीत मुहूर्त	171-174	तथा प्रकाशन	319-320

ओ3म्–भूर्भुवःस्वः, तत्–सवितुर्–वरेण्यं
भर्गो–देवस्य–धीमहि, धियो–यो– नः प्रचोदयात् ।

वाल्मीकी रामायण 24 हजार श्लोकों का महान् ग्रन्थ है, उसमें वाल्मीकी जी ने एक–2 हजार श्लोकों में गायत्री मन्त्र के एक अक्षर की व्याख्या की है, ऐसे ही भागवत के 12 स्कन्दों में गायत्री मन्त्र के दो दो अक्षरों की व्याख्या है, इस से ज्ञात होता है कि गायत्री मन्त्र का अर्थ कितना गम्भीर और विशाल होगा, तो भी मैं यहाँ एक दो पंक्तियों में संक्षेप रूप से अर्थ लिखने का साहस करूँगा ।

अर्थ :– मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूं जो शक्ति **ओ3म्** = ब्रह्मरूप है । **भू–भुर्वः–स्वः** जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है । **तत्** = जिसको वेद "तत्" नाम से पुकारते हैं । **सविता** = जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती है, पालन करती है, नाश करती है । **वरेण्यम्** = जो वरण करने योग्य है । **भर्गः** = जो तेजो रूप है । **देवः** = जो द्योतनशील है या जो शक्ति ऐश्वर्य देने वाली है, ऐसी उस महान् शक्ति का **धीमहि** = चिन्तन करता हूं कि वह शक्ति, **धियः** = मेरी बुद्धि को **प्रचोदयात्** = सत् कर्मों में लगाए ।

ब्राह्मी – विद्या

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर, मोहं भिन्धि, रजस्तमसी भिन्धि, प्राकृत–पाशजालं–सावरणं परिहर, सत्वं ग्रहाण – पुरुषोत्तमोसि, सोम–सूर्यानल, प्रवर, परमधामन् ब्रह्म विष्णुमहेश्वरस्वरूप, सृष्टिस्थिति–संहारकारक, भ्रू – मध्य–निलय, तेजोसि–धामासि–अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हँसः, शुचिषत्, वसुरन्त–रिक्षसत् होता वेदिषद्, अतिथि–दुरोणसत्, नृषत्–वरसत्–ऋतसत्–व्योमसत्, अब्जा गोजा ऋृतजा अद्रिजा, ऋृतं, परंब्रह्म–स्वरूप, सर्वगत सर्वशक्ते, सर्वेश्वर, सर्वेन्द्रिय–ग्रन्थि भेदं कुरु, कुरु, परमं–पदं परामर्शय परमार्ग ब्रह्म–द्वारं सर, कुमार्ग–जहि–षट्–कोशिकं शरीरं–त्यज, शुद्धोसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व स्वपदम्–आस्वादय स्वाहा ।

अर्थः– तीन प्रकार के दुःखों का निवारण करने के लिए मंगलरूप में तीन बार आरम्भ में "ओउम्" उच्चारण किया गया है, हे शिष्य ! तुम त्रिगुण पुरुष हो यानी तीन गुणों में तेरा ही निवास है, शरीर रूपी क्षेत्र में फिरने से तुम ही क्षेत्रचर हो, तुम मोहरूपी तथा रजोगुण तमोगुण रूपी ग्रन्थियों को काटो, जो तुम्हारे ऊपर बनावटी बन्धनों का जाल है उसको आवरण सहित फँक दो, तत्व को जान, तुम स्वयं ही पुरुषोत्तम हो, चन्द्रमा, सूर्य अग्नि यह तोजोमयरूप तुम्हारे ही हैं तुम ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप हो, तुम ही सृष्टि के बनाने वाले हो, पालन करने वाले, नाश करने वाले हो, भ्रुवों के मध्य में ध्यान टिकाने से तुम जाने जाते हो, इसलिए तुम्हें भ्रूमध्य–स्थान वाला कहते हैं, तुम सतरूप हो, तुम "हंसः" हो यानी स्वयं प्रकाश हो, तुम "शुचिषत्" हो यानी निर्मल स्थान पर रहने वाले हो, तुम आकाश में रहने वाले वसुनाम के देवता हो, तुम ही अग्नि में आहुति डालने वाले हो, तुम ही "वेदिषत्" यानी यज्ञ की वेदी पर ठहरे हुए अग्नि हो, तुम ही "अतिथिर्दरोणसत्" हो यानी गृहस्थों में अतिथि रूप देवता हो, तुम "नृषत्" मनुष्यों में रहने वाले हो "वरसत्" देवताओं में रहने वाले हो, तुम "ऋतसत्" सत्य में रहने वाले हो, तुम "व्योमसत्" हो आकाश में ओतप्रोत हो, "अब्जः" जल से जो रत्न, शंक आदि उत्पन्न होते हैं वह तुम ही हो, तुम पर्वतों से "गोजा" हो पृथ्वी से प्रकट होने वाले अन्न औषधि रूप हो तुम "अद्रिजा" पर्वतों से प्रकट होने वाले नदी–नाले रूप हो, तुम "ऋतजा" हो सबसे महान् और परम सत्य तुम हो "परम ब्रह्म" स्वरूप हो, तुम "सर्वगत" सबमें गए हो, तुम सर्व शक्तिमान्, हो,

Vilayashwer ... (Regd.)
... JAMMU - 180002

तुम सबों के स्वामी हो, सब इन्द्रियों से आसक्ति छोड़ो, उस परमपद का तथा उत्तम मार्ग का विचार कर ब्रह्म द्वार की ओर चल, यानी अपने स्वरूप को जान, अज्ञान के मार्ग को छोड़, इस षट्कोशिक शरीर 'रोम रक्त, माँस, मज्जा, हड्डियों और वीर्य'' से बने हुए स्थूल शरीर को छोड़ तुम शुद्ध रूप हो, तुम निर्मल हो इसका जरा विचार कर, अपने स्वरूप का अनुभव कर इस ज्ञान को तू अच्छी प्रकार स्वीकार कर । कश्मीरी पण्डितों में प्राचीन काल से यह प्रथा चलती आती है कि अन्तिम समय पर पुत्र अपने माता–पिता को ब्राह्मी विद्या कान में सुनाता है, माता–पिता अपने पुत्र को बचपन से ही ब्राह्मी विद्या कण्ठस्थ करवाते थे, चूंकि पुत्र पिता का ही दूसरा रूप होता है वह अपने पिता को अन्तिम समय में यह चेतावनी देता है जो ज्ञान आपने मुझे बचपन से दिया है ऐसा न हो कि इस समय आप उसको भूल जायें ।

ओउम्–भूर्भुवःस्वः, तत्–सवितुर्–वरेण्यं
भर्गो–देवस्य–धीमहि, धियो–यो– नः प्रचोदयात् ।

गुरुस्तुति

वन्देहं सच्चिदानन्दं भेदातीतं जगद्‌ गुरुम्
नित्यं पूर्णं निराकारं निर्गुणं सर्व–संस्थितम्। 1 ।
परात्परतरं ध्येयं नित्यम्–आनन्द कारणम्
हृदयाकाश–मध्यस्थं शुद्धस्फटिक–सन्निभम् 2 ।
नमामि सद्‌ गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थ–सिद्धये । 3 ।
अखण्ड–मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः । 4 ।
अज्ञानतिमरान्धस्य ज्ञानाञ्जन–शलाकया
चक्षुर्–उन्मीलितं येन तस्मै श्री–गुरवे नमः। 5 ।
हरौ रुष्टे गुरु–स्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन
सर्वदेव–स्वरूपाय तस्मै श्री-गुर-वे नमः । 6 ।
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम्
बिन्दु–नादकलातीतं तस्मै श्री-गुर-वे नमः 7 ।
शिष्यानां मोक्षदानाय लीलया–देहधारिणे
सदेहेपि विदेहाय तस्मै श्री-गुर-वे नमः । 8 ।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम्
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम् । 9 ।
पुरस्तात्–पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्याम्–उपर्यधः
सदामत्–चित्तिरूपेण विधेहि भवदासनम्। 10 ।

ॐ

अष्टादशश्लोकी गीता

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्रमरुतः स्तुर्वा [illegible] व्यैः स्तवै–
वेंदैः सांगप[illegible]ोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थित–तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ।।

अर्थ – जिनका ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, और मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों द्वारा स्तुति करते हैं, सामवेदके गानेवाले अंग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदों द्वारा जिनका गान करते हैं, योगीजन ध्यान में स्थित तद्गत हुए मनसे जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिनके अन्तको नहीं जानते, उन (परमपुरुष नारायण) देव के लिए मेरा नमस्कार है ।

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव

न च श्रेयो-नुपश्यामि हत्वा स्वजनम्-आहवे ।। 1 ।।

अर्थ – अर्जुन भगवान् से कहता है, कि अब मुझे सब लक्षण उल्टे दिखाई देते हैं, ऐसे मुझे प्रतीत नहीं होता है कि अपने सम्बन्धियों को युद्ध में मारकर कुछ कल्याण हो सकेगा । अध्याय 1 श्लोक 31

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय ।

सिद्धय-सिद्ध-योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ।। 2 ।।

अर्थ – फल की आशा छोड़ कर सिद्धि हो या न हो फिर भी अपने मन की वृत्ति समान रखनी चाहिये, इस प्रकार की चित्त की समवृत्ति को योग कहते हैं, इस योग से युक्त होकर मनुष्य अपने सब कर्म करे । अध्याय 2 श्लोक 4

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।

इद्रियार्थान्-विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ।। 3 ।।

अर्थ – जो हठ से कर्मेन्द्रियों को रोकता है परन्तु अन्दर ही अन्दर मन से विषयों का चिन्तन करता है उस मूर्ख को मिथ्याचारी कहते हैं ।

अध्याय 3 श्लोक 6

श्रद्धावान्–लभते ज्ञानं तत्–परः संयतेन्द्रियः

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिम्–अचिरेणाधिगच्छति ।। 4 ।।

अर्थ – ईश्वर गुरु और धर्म शास्त्रों में श्रद्धा रखने वाला मनुष्य ज्ञान को प्राप्त करता है और ज्ञान होने पर उसको शान्ति प्राप्त होती है ।

अध्याय 4 श्लोक 39

यतेन्द्रिय मनो बुद्धि–र्मुनि–मोक्ष–परायणः

विगतेच्छा–भय क्रोधो–यः सदा मुक्त एव सः ।। 5 ।।

अर्थ – जो मनुष्य इन्द्रियों, मन और बुद्धि को वश में रखता है और केवल ब्रह्मशान्ति प्राप्त करने में लगा रहता है वह सदा मुक्त है ।

अध्याय 5 श्लोक 28

युक्ताहार–विहारस्य युक्त–चेष्टस्य कर्मसु

युक्त–स्वप्नाव–बोधस्य योगो भवति दुःखहा ।। 6 ।

अर्थ – यथायोग्य आहार विहार करने वाला कर्मों को यथायोग्य ढंग से करने वाला यथायोग्य निद्रा करने और योग्य समय पर उठने वाले साधक का योग दुःख को दूर करने वाला होता है । अध्याय 6 श्लोक 17

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया,

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम्–एतां–तरन्ति–ते ।। 7 ।।

अर्थ – परमात्मा की सत्वरज तमोगुणमयी माया को पार करना कठिन है जो मुझ ईश्वर को प्राप्त करते है वह इस माया से पार हो जाते हैं । अध्याय 7 श्लोक 14

अग्निर्–ज्योतिर्–अहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्

तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ।। 8 ।।

अर्थ – उत्तरायण काल के छः मास के शुक्ल पक्ष में दिन के प्रकाश में प्रदीप्त अग्नि के समय जो ब्रह्मज्ञानी इस शरीर को छोड़कर चले जाते हैं वे ब्रह्म को प्राप्त होते हैं । अध्याय 8 श्लोक 24

अपि चेत्-सुदुराचारो भजते माम्-अनन्यभाक्
साधुर्-एव स मन्तव्यः सम्यक्-व्यव-सितोहि-सः ।

अर्थ - बड़े से बड़ा दुराचारी यदि अनन्यभाव से मेरा भजन करेगा तो यह समझ लेना चाहिये कि वह साधु हो जायेगा ।

अध्याय 9 श्लोक 21

यो माम्-अजम्-अनादिम्-च वेत्तिलोक-महेश्वरम्
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।

अर्थ - जो मुझे जन्म रहित, आदि रहित सब लोकों का स्वामी समझता है वह संसार में अज्ञान से छूटकर यानी ज्ञानी बनकर सब पापों से मुक्त होता है ।

अध्याय 10 श्लोक 3

मत्कर्म कृत्-मत्परमो मत्-भक्तः संघ-वर्जितः
निर्वैरः, सर्व-भूतेषु यः स मामेति पाण्डव ।।

अर्थ - हे अर्जुन जो मेरे लिये कर्म करता है, जो मुझे परमश्रेष्ठ मानता है जो भोगों का संग छोड़ता है और

सब प्राणियों के विषय में वैर रहित होता है मेरा वही भक्त मुझे प्राप्त करता है । अध्याय 11 श्लोक 55

श्रेयो हि ज्ञानम्–अभ्यासात्, ज्ञानात्–ध्यानं विशिष्यते,

ध्यानात्–कर्म–फलत्यागस्त्यागात्–शान्तिर्–अनन्तरम् ।।

अर्थ – अभ्यास योग से ज्ञान योग श्रेष्ठ है, ज्ञान योग से ध्यान योग की विशेषता अधिक है, ध्यान योग से कर्मफल का त्याग उत्तम है, कर्मफल का त्याग करने से शीघ्र ही शान्ति मिलती है । अध्याय 12 श्लोक 12

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्व–क्षेत्रेषु भारत

क्षेत्र–क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञानं–यत्–तत्–ज्ञानं मतं मम ।।

अर्थ – हे भारत सब क्षेत्र में रहने वाले मुझे तू क्षेत्रज्ञ समझ जो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का ज्ञान है वही मेरा ज्ञान है ।

मां च यो – व्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते,

स गुणान्–सम्–अतीत्य–तान् ब्रह्म–भूयाय कल्पते ।।

अर्थ – जो एक निष्ठ भक्ति भाव से मेरी सेवा करता है वह इन गुणों को लांघ कर ब्रह्म के महत्व को प्राप्त करने योग्य बन जाता है । अध्याय 14 श्लोक 16

निर्मान–मोहा जितसंग–दोषा अध्यात्म–नित्या विनि–वृत्तकामाः
द्वन्द्वै–र्विमुक्ता सुख दुःख संज्ञैर्गच्छन्त्य मूढाः पदम्–अव्ययं–तत् ।।

अर्थ – जो अभिमान रहित, मोह रहित, अनासक्त आत्मनिष्ठ भोगवासना रहित, द्वन्द्वाभाव से दूर और ज्ञानी है, वह उस अविनाशी परम पद को प्राप्त होते हैं । अध्याय 15 श्लोक 5

यः शास्त्र–विधिम्–उत्सृज्य वर्तते काम–कारतः ।
न स सिद्धिम्–अवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ।।

अर्थ – जो शास्त्र विधि को त्याग कर मनमाना आचरण करता है उसे न सिद्धि मिलती है न सुख मिलता है और न श्रेष्ठ गति ही प्राप्त होती है । अध्याय 16 श्लोक 23

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनम्–आत्म–विनिग्रहः ।
भाव–संशुद्धिर्–इत्येतत्–तपो मानसम्–उच्यते ।।

अर्थ – मन को प्रसन्न रखना, शान्ति का अवलम्बन करना, मौन धारण करना, संयम करना और आत्मशुद्धि करना मानसिक तप है ।

सर्व–धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्व–पापेभ्यो मोक्ष–यिष्यामि मा–शुचः ।।

अर्थ – सब धर्मों को छोड़कर मुझ अकेले (ईश्वर) की शरण आये मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त करूँगा, तू शोक मत कर ।

अध्याय 18 श्लोक 56

"कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्"

"श्री कृष्णार्पणमस्तु"

सप्तश्लोकी गीता

ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म, व्याहरन्–माम् – अनुस्मरन्

यः प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम् ।.

अर्थ – योग धारणा में स्थित ओंकार रूपी एकाक्षर ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और मेरा (परमेश्वर) का चिन्तन करता हुआ जो साधक देह त्यागता है वह निःसनदेह श्रेष्ठगति को प्राप्त होता है ।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या । जगत्–प्रहृष्य–त्यनुरज्यते च ।।

रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति । सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ।. 2 ।।

अर्थ – हे ऋृषीकेश यह ठीक ही है आपका कीर्तन करने से जगत् प्रसन्न होता है ओर उसमें उसकी प्रीति होती है, राक्षस तुम से डर कर दिशाओं में भाग जाते हैं और सभी पुरुषों के समुदाय आपको प्रणाम करते हैं ।

सर्वतः पाणिपादं तत्–सर्वतोक्षि–शिरोमुखम् ।

सर्वतः श्रुतिमत्–लोके सर्वम्–आवृत्य–तिष्ठति ।। 3 ।।

अर्थ – इस लेक में उसके सर्वत्र हाथ, पांव सब ओर आँख, सिर और मुख और सब ओर कान हैं वह सर्वत्र व्याप कर रह रहा है ।

कविं पुराणम्–अनुशासितारम् । अणोरणीयांसम्–अनु–स्मरेत्–यः ।।

सर्वस्य धातारम्–अचिन्त्यरूपम् ।आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।। 4 ।।

अर्थ – जो अन्तकाल में सर्वज्ञ पुरातन नियन्ता अणु से भी सूक्ष्म, सब के धारण कर्ता अचिन्त्य स्वरूप अन्धकार से परे रहने वाले सूर्य के समान तेजस्वी ईश्वर का स्मरण करता है – वह उसी दिव्य परमात्मा को प्राप्त होता है ।

उर्ध्वमूलम्–अधः शाखम्–अश्व–त्थं प्राहुर्–अव्ययम् ।

छन्दांसि–यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ।। 5 ।।

अर्थ – संसार का वृक्ष अनादि अनन्त चारों ओर फैला है, इसके ज्ञान रूपी पत्ते सबको शीतल छाया देने वाले

हैं, शाखायें ऊपर नीचे फैली है, इनमें सत्त्व-रज तम गुणों का रस भरपूर भरा है, शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषयों के सुखदायी कोमल अंकुर लगे हैं और इनकी कर्मों से सम्बन्ध जोड़ने वाली जड़ें चारों ओर फैली हुई हैं ।

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्-ज्ञानम्-अपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैर्-अहमेव वेद्यो वेदान्त-कृत्-वेद विदेव-चाहम् ।6 ।।

अर्थ - मैं ईश्वर सबके हृदयों में रहता हूं, मुझसे ही सब को स्मरण, ज्ञान विस्मरण और अज्ञान होता है मैं ही सब वेदों के द्वारा जानने योग्य हूं ओर मैं ही वेदान्त शास्त्र का निर्माण करने वाला और वेद का ज्ञाता हूं ।

मन्मना-भव-मत्-भक्तो मत्-याजी मां नमस्कुरु ।
मामे-वैष्यसि युक्त्वैवम्-आत्मानं मत्-परायणः ।। 7 ।।

अर्थ - मुझमें मन लगा, मेरा भक्त बन, मेरे निमित्त भजन कर, मुझे नमस्कार कर, इस तरह मुझमें परायण होकर मेरे साथ आत्मा का योग करने से तू मूझे प्राप्त कर लेगा ।

ओ3म् भूर्भुवःस्वः, तत्-सवितु-र्वरेण्यं
भर्गोदेवस्य-धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्

सूर्य ग्रहाणाम्-आदिर्-आदित्यो-लोकरक्षण-कारकः
विषमस्थान-सम्भूतां-पीडां-हरतु-मे रविः ॥ 1 ॥

चन्द्र रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः
विषम-स्थान सम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः ॥ 2 ॥

भौम भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृत् सदा
वृष्टिकृद्-वृष्टि-हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः ॥ 3 ॥

बुध उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः
सूर्यप्रिय करो विद्वान्, पीडां हरतु मे बुधः ॥ 4 ॥

बृहस्पति	देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः अनेकः शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः ॥ 5 ॥
शुक्र	दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः ॥ 6 ॥
शनि	सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः ॥ 7 ॥
राहु	महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी ॥ 8 ॥
केतु	अनेक-रूप-वर्णश्च शत शोथ सहस्त्रशः उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः ॥ 9 ॥

मुखप्रक्षालण विधि

शौच आदि से निवृत होकर बायां पैर धोते हुए पढें :- नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि-शिरोरु बाहवे । सहस्र-नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटी-युगधारिणे नमः ।।

दायां पैर धोते हुए पढें :- ॐ नमः कमलनाभाय-नमस्ते जल शायिने । नमस्ते केशवानन्त-वासुदेव नमोस्तुते

मुख धोते हुए पढें :- गंगा, प्रयाग, गयनैमिषपुष्करादि-तीर्थानि, यानि भुविसन्ति-हरिप्रसादात्, आयान्तु तानि करपद्मपुटे मदीये प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलंकम् । तीर्थे स्नेयं तीर्थमिव समानानां भवति मा नः शंस्यो अररुषो धूर्ति प्राणङ्‌ मर्त्यस्यरक्षाणो ब्रह्मणस्पते ।।

मुंह धोकर यज्ञोपवीत धोते हुए तीन बार पढें :- ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

यज्ञोपवीत गले में फिर से धारण करते हुये पढें :- यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्-आयुष्यम्-अग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः । यज्ञोपवीतम्-असि यज्ञस्यत्वा-उपवीतेन- उपनह्यामि ।।

मुखप्रक्षालण करके स्नान कीजिए, हिन्दु जीवन का प्रारम्भ स्नान से ही होता है और अन्त भी स्नान से ही ।

नित्यप्रार्थनाविधि

पूर्व दिशा की ओर मुख करके धूपदीप जला कर शुद्ध आसन पर पद्मासन से बैठ कर आदिदेव–भगवान् गणेश का ध्यान करके पढ़ें :–

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतु–र्भुजम् –प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये । अभिप्रेतार्थ – सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्–अपि, सर्वविघ्नछिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ।

विभ्रत्–दक्षिण–हस्तपद्म–युगले दन्ताक्षसूत्रे शुभे, वामे मोदक–पूर्णपात्र–परशु नागो–पवीती त्रिधृक श्रीमान्–सिंहयुगासनः श्रुतियुगे शंखौ वहन्, मौलिमान् दिश्यात्–ईश्वरपुत्र–ईश–भगवान् लम्बोदर–शर्म–नः

सिन्दूर–कुंकुम–हुताशन–विद्रुमार्क–रक्ताब्ज–दाडिमनिभाय–चतुर्भुजाय, हेरम्बभैर व–गणेश्वर–नायकाय, सर्वार्थसिद्धि–फलदाय गणेश्वराय ।।

मुख्यं द्वादश–नामानि गणेशस्य महात्मनः । यः पठेत्–तु शिवोक्तानि स लभेत्–सिद्धिम् उत्तमाम् ।

प्रथमं वक्रतुण्डं तु चैकदन्तं द्वितीयकम्, तृतीयं कृष्णपिंङ्गं तु चतुर्थं च कपर्दिनम्, लम्बोदरं पंचमं तु, षष्ठं विकटम्–एवच, सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम्, नवमं भालचन्द्रं तुं दशमं तु विनायकम्,

एकादशं गणपतिं द्वादशं मन्त्रनायकम्–पठते श्रृणुते यस्तु गणेश–स्तवम्–उत्तमं, भार्यार्थी लभते भार्यां धनार्थी विपुलं धनम्, पुत्रार्थी लभते पुत्रम्, मोक्षार्थी परमं पदम्, इच्छाकामं तु कामार्थी धर्मार्थी धर्मम्–अक्षयम् ।।

सुमुखैश्चैक–दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो गणाधिपः । धूम्र–केतु–गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः द्वादशैस्तानि–नामानि गणेशस्य महात्मनः, य पठेत्–श्रृणुयात्–वापि स लभेत् सिद्धिम्–उत्तमाम् । विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा, संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।

।। श्रीगणेशस्तुति ।।

हेमजा सतुं भजे गणेशं ईशनन्दनम् रक्ष

एकदन्त–वक्रतुण्ड–नागयज्ञ सूत्रकम् । रक्तगात्र–धूम्रनेत्र शुक्लवस्त्र–मण्डितम् । कल्पवृक्ष–भक्त नमोस्तु ते गजाननम् ।1।

पाशपाणि–चक्रपाणि–मूषकादि–रोहिणम् । अग्निकोटि, सूर्य–ज्योति, वज्र–कोटिनिर्मलम् चित्र–भाल, भक्तिजाल, भालचन्द्र–शोभितम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ।। 2 ।।

भूतभव्य, हव्यकव्य–भृगु–भार्गवा–र्चितम् । दिव्य–वह्नि कालजाल–लोकपाल वन्दितम् पूर्णब्रह्म–सूर्यवर्ण पूरुषं पुरान्तकम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ।। 3 ।।
विश्ववीर्य, विश्व सूर्य, विश्वकर्म निर्मलम् । विश्वहर्ता, विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम् । चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितुं चतुर्युगम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ।। 4 ।।
ऋद्धि बुद्धि अष्ट सिद्धि नवनिधान दायकम् । यज्ञ कर्म – सर्वधर्म–सर्ववर्ण अर्चनम् । पूत धूम्र दुष्ट मुष्ट दायकं विनायकम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ।। 5 ।।

भगवान् मेरी नैया-

भगवान् ! मेरी नैया उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना।। भगवान्....
दल बल के साथ माया घेरे जो मुझे आकर।
तो देखते न रहना झट आ के बचा लेना।। भगवान्....

सम्भव है झंझटों में मैं तुम को भूल जाऊँ।
पर नाथ ! कही तुम भी मुझ को न भुला देना।। भगवान्...
तुम देव मैं पुजारी तुम इष्ट मैं उपासक।
यह बात अगर सच है सच करके दिखा देना।।
भगवान् मेरी नैया उस पार लगा देना।।

देवी प्रार्थना

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्य-दुःखभय-हारिणि का त्वत्-अन्या, सर्वोपकार-करणाय दयार्द्रचित्ता ।।
देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, पसीद मात-र्जगतोखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वारि पाहि विश्वं त्वं-ईश्वरी देवि चराचरस्य ।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः,
परं तेषां मध्ये विरलतरलोहं तव सुतः ।
मदीयोयं त्यागः समुचितम्–इदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचित्–अपि कुमाता न भवति ।।

जगत्–मातर्–मातः तव चरणसेवा न रचिता,
न वा दत्तं देवि द्रविणम्–अपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निर्–उपमं यत्–प्रकुरुषे,
कुपुत्रो जायेत क्वचित्–अपि कुमाता न भवति ।।

शरणागत–दीनार्त–परित्राण–परायाणे, सर्वस्यार्तिहरे देबि नारायणि नमोस्तु ते ।।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य–भिधीयते नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।

या देवी सर्वभुतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।

आनन्दसुन्दर पुरन्द्र–मुक्तमाल्यं मौली हठेन निहितं महिषासुरस्य
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु – मञ्जीर–शिञ्जित–मनोहरम्–अम्बिकायाः
उत्तप्त–हेमरुचिरे त्रिपुरे पुनीहि, चेत्तश्चि रत्तनम्–अघौघवनं लुनीहि,
कारागृहे निगड–बन्धन–पीडितस्य त्वत्संस्मृत्तौ झट्–इति मे निगडा–स्त्रुट्यन्तु
माया कुण्डलिनी, क्रिया–मधुमती, कालीकला–मालिनी
मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी

शक्ति शंकर–वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी, ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता–कुमारीत्यसि। महाबले महोत्साहे महाभय–विनाशिनि । त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रुणां भयवर्धिनि। सर्वमंगल–मंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ।।

।। गौरीस्तुति ।।

ॐलीलारब्ध–स्थापित–लुप्ताखिल – लोकां, लोकातीतै–र्योगिभिर्–अन्तर्हृदि–मृग्याम्
बालादित्य–श्रेणि–समान–द्युतिपुञ्जां गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईड्ये
आशापाश–क्लेशविनाशं विदधानां पादाम्भोज –ध्यान–पराणां पुरुषाणाम् ।
ईशीम्–ईशाङ्गार्ध हरां तां तनुमध्यां गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ई॰

प्रत्याहार–ध्यान–समाधि–स्थितिभाजां नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम् ।
सत्य–ज्ञानानन्दमयीं तां तडित्–आभां–गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईड्ये

चन्द्रापीडा–नन्दितमन्द–स्मितवक्त्रां, चन्द्रापीडा–लंकृतलोलालकभाराम् ।
इन्द्रोपेन्द्रा–द्यर्चितपादाम्बु जयुग्मां गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईड्ये

नानाकारैः शक्ति–कदम्बै–र्भुवनानि, व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका ।
कलयाणीं तां कल्पलताम्–आनतिभाजां, गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईड्ये

मूलाधारात्-उत्थित वन्ती विधिरन्ध्रं, सौरंचान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम् स्थूलां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रहा-क्षीम्-अहम् ईड्ये

आदिक्षान्ताम्–अक्षर मूर्त्या विलसन्तीं भूते भूते भूतकदम्बं प्रसवित्रीम् ।
शब्द–ब्रह्मा–नन्द–मयीं ताम्–अभिरामां, गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईड्ये

यस्याः कुक्षौ लीनम्–अखण्डं, जगत्–अण्डं भूयो भूयः प्रादुर्–अभूत्–अक्षतमेव ।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीं गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईड्ये

यस्याम्–एतत्प्रोतम्–अशेषं मणिमाला, सूत्रे यत्–वत्–क्वापि चरं चाप्यचंर च ।
ताम्–अध्यात्मज्ञानपदव्या गमनीयां गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ईड्ये ।
नित्यः सत्यो निष्कल एको जदीशः साक्षी यस्याः सर्गविधौ सहंरणे च ।
विश्वत्राण- क्रीडन शीलां शिवपत्नीं गौरीम्–अम्बाम्–अम्बु–रुहा–क्षीम्–अहम्–ई॰
प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो भकत्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वाचां सिद्धि सम्प्पत्तिमुच्चैः शिवभक्तिं तस्या वश्यं पर्वत पुत्री विदधाति।।

।। शंकर प्रार्थना ।।

प्रणतोस्मि महादेव प्रपन्नोस्मि सदाशिव निवारय महामृत्युं मृत्युंजय नमोस्तुते ।
मृत्युंजय महादेव पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु–जरारोगैः पीडितं भवबन्धनात् ।
कर्पूर–गौरं करुणावतारं संसार–सारं भुजगेन्द्र–हारम् ।
सदा रमन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ।।

हर शम्भो महादेव विश्वेशामरवल्लभ । शिव शंकर सर्वात्मन् नीलकण्ठ नमोस्तुते ।
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोसि महेश्वर यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नम : ।

आधीनाम्–अगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम् ।
उपद्रवाणां दलनं महादेवम् – उपास्महे ।।

आत्मा त्वं गिरजा मतिः परिजनाः प्राणाः शरीरं गृहं, पूजा ते विषयो–पभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
संचारोऽपि परिक्रमः पशुपते स्तोत्राणि सर्वा गिरो, यत्यत् कर्म करोमि देव भगवन् तत् तत् तवाराधनम् ।

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय ।
देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।।

मातंगचरमाम्बर–भूषणाय समस्तगीर्वाण-गणार्चिताय,
त्रैलोक्य–नाथाय पुरान्तकाय तस्मै मकारय नमः शिवाय ।

शिवा–मुखाम्भोज–विकासनाय दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय
चन्द्रार्क–वैश्वानरलोचनाय, तस्मै–शिकाराय नमः शिवाय ।।
वशिष्ठकुम्भोत्भवगौतमादि मुनीन्द्र वन्द्याय गिरीश्वराय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ।।
यज्ञस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय,
नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।
वपुष्प्रादुर्भावात् अनुमितम्–इंद–जन्मनि पुरा ।
पुरारे नैवाहं क्वचित् – अपि भवन्तं प्रणतवान् ।।
नमन्मुक्तः सम्प्र–त्यतनुर्–अहम्–अग्रे प्यनतिमान्–महेश क्षन्तव्यं तत्–इदम्–अपराध–द्वयम्–अपि
करचरणकृतं वाक्–कायजं कर्मजं वा श्रवण–नयनजं वा मानसं वा पराधम् ।
विदितम्–अविदितं–वा सर्वम्–एतत्–क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।।

लिंगाष्टकम्

ब्रह्मा मुरारिःसुरार्चित लिंगं, निर्मल–भासित=शौभित–लिंगम् ।
जन्मज–दुःख–विनाशक–लिंगं, तत्प्रणमामि सदा शिव–लिंगम् ।। 1 ।।

देव–मुनि–प्रवरा–र्चितलिंग, कामदहं करुणाकर–लिंगम् ।।
रावणदर्प – विनाशित–लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ।। 2 ।।

सर्व–सुगन्धि सुलेपित–लिंगं, बुद्धिविवर्धन–कारण–लिंगम् ।।
सिद्ध–सुरासर–वंदित–लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव–लिंगम् ।। 3 ।।

कनक–महामणि–भूषित–लिंगं, फणिपति वेष्टित–शोभित–लिंगम् ।।
दक्ष–सुयज्ञ–विनाशक लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव–लिंगम् ।। 4 ।।

कुंकम–चंदन–लेपितलिंगं, पंकज–हार–सुशोभित–लिंगम् ।।
संचित–पाप–विनाशन–लिंगं, तत्प्रणमामि–सदाशिव–लिंगम् ।। 5 ।।

देव–गणार्चित सेवित लिंगम् भावेर्भक्तिभिरेव च लिंगम् ।।
दिन–कर–कोटि–प्रभा–कर लिंगम् तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ।। 6 ।।

अष्ट–दलोपरि वेष्टित–लिंग, सर्व–समुद्भ–भव–कारण–लिंगम् ।।
अष्ट–दरिद्र–विनाशित–लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ।। 7 ।।

सुरगुरू–सुरवर–पूजित–लिंगम् सुरवन–पुष्प–सदा–र्चित–लिंगम् ।।
परात्परं–परमात्मक–लिंगम् तत्प्रणमामि सदाशिव–लिंगम् ।। 8 ।।

अभिनवगुप्त कृत शिवस्तुतिः

इस स्तुति के बारे में जनश्रुति चलती आई है, "जब अभिनवगुप्त स्वेच्छा से अपना पंचभौतिक शरीर छोड़ने के लिये किसी रम्य एकान्त भूमि की तलाश में जन्मभूमि काश्मीर के घने जंगलों में घूम रहे थे, उस समय उनकी शिष्य मण्डली उन के साथ थी, उसी समय शैवशास्त्रों के रचयिता अभिनवगुप्त ने इस स्तुति की रचना की है शिष्यमण्डली के साथ इस शिवस्तुति की गूँज में ही मनोवाँछित स्थान पर पहुँच कर अभिनवगुप्त पञ्चभौतिक शरीर छोडकर ब्रह्मलीन हुये ।

ॐ व्याप्त–चराचर–भाव–विशेषं, चिन्मयम्–एकम्–अनन्तम्–अनादिम् ।
भैर–व–नाथम्–अनाथ–शरण्यम्, तन्मय–चित्ततया–हृदि वन्दे ।। 11

भावार्थ : मैं अभिनवगुप्त मन की एकाग्रता से उस शंकर की हृदय में वन्दना करता हूँ, जो शंकर अखिल चराचर सृष्टि में ओत प्रोत है । जो ज्ञान रूप है, एक है, अनन्त है । भैरवों का स्वामी है और अनाथों को शरण देने वाला हैं ।

त्वन्मयम्–एतत्–अशेषम्–इदानीं भाति मम त्वत्–अनुग्रह शक्त्या
त्वं च महेश सदैव ममात्मा स्वात्ममयं मम तेन समस्तम् ।। 2।।

अर्थ : यह चराचर सृष्टि आप का ही रूप है, ऐसा मुझे आप की अनुग्रहशक्ति से प्रतीत होता है, परन्तु हे शंकर मेरी आत्मा ही आप है, अतः यह सारा जगत् मेरा ही रूप है, ऐसा भी मैं अनुभव करता हूँ ।

स्वात्मनि–विश्वगते त्वयि नाथे, तेन न संसृति–भीतेः कथास्ति
सत्–स्वपि दुर्धर–दुःख-विमोह त्रास–विधायिषु कर्म–गणेषु ।। 3 ।।

अर्थ : हे नाथ ! भयंकर दुःख मोह उत्पन्न करने वाले कर्मों के जाल में फंसे हुये, आप के भक्त इस भावना से कि विश्व आप का ही रूप है अतः वे संसार के क्षणिक दुःखों से डरते नहीं है, क्योंकि डर अथवा भय तब होता है जब दूसरा हो, जब आप के बिना कोई दूसरा है ही नहीं तो डर कहाँ । "भयं द्वितीयात्"

अन्तक ! मां प्रति मा दृशम्-एनां, क्रोध– कराल–तमां विदधीहि
शंकर–सेवन–चिन्तन–धीरो, भीषण–भैरव–शक्ति–मयोस्मि ।। 4 ।।

अर्थ : हे यमराज ! क्रोध से कराल भयंकर दृष्टि से मेरी ओर न देख, जबकि मैं हर समय शंकर सेवन के चिन्तन

में लगा रहता हूँ, जिस सेवा चिन्तन से में भैरवशक्ति का पुंज बना हूँ अतः आप की यह कराल क्रोधभरी दृष्टि मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती है ।

इत्थम्–उपोढ–भवन्मय–संवित्, दीधिति–दारित–भूरि–तमिस्रः

मृत्यु–यमान्तक कर्म–पिशाचै–र्नाथ ! नमोस्तु न जातु बिभेमि ।। 5 ।।

अर्थ : हे शंकर सब कुछ आप का ही रूप है ऐसी संवित् के जागृत होने से मेरा अज्ञानरूपी अन्धकार नष्ट हो चुका है, अतः मैं यमराज के परिवारभूत पिशाच आदि से डरता नहीं हूँ, हे नाथ मेरा आप को बार-बार नमस्कार हो ।

प्रोदित–सत्य–विबोध–मरीचि–प्रोक्षित–विश्व–पदार्थ–सतत्वः

भाव–परामृत–निर्भरपूर्णे, त्वय्यहम्–आत्मनि निर्वृतिम्–एमि ।। 6 ।।

अर्थ : हे शंकर ! आप के सत्यज्ञानरूप किरणों से विश्व के पदार्थ तथा सभी तत्व सिचिंत अथवा हरकत में है । ऐसे ही इस ज्ञान के प्रकट होने पर मैं श्रद्धा के अमृत से परिपूर्ण आप के ही स्वरूप भूत अपने ही आत्मा में परमानन्द का अनुभव करने लगता हूँ ।

मानस–गोचरम्–एति, यदैव–क्लेश– तनु–ताप –विधात्री

नाथ ! तदैव मम–त्वत्–अभेद–स्तोत्र–परामृत–वृष्टिर्–उदेति ।। 7 ।।

अर्थ : शरीर के ताप को उत्पन्न करने वाली कष्ट की दशा को जब मैं मन से महसूस करने लगता हूँ, उसी समय मेरे अन्दर आप के अनुग्रह से प्राप्त अभेद वृष्टि का उदय होता है, जिस के प्रभाव से मैं किसी प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं करता हूँ ।

शंकर ! सत्यम्–इदं व्रत-दान–स्नान –तपो–भव–ताप–विनाशि

तावक–शास्त्र–परामृत–चिन्ता–सिध्यति चेतसि–निर्वृति–धारा ।। 8 ।।

अर्थ : हे शंकर ! यद्यपि व्रत-दान–तप से संसार के दुःखों का नाश होता है, परन्तु शैवशास्त्र के चिन्तनमात्र से ही मन में अमृत की धारायें प्रवाहित होने लगती हैं ।

नृत्यति गायति हृष्यति गाढं, संवित्-इयं मम भैरवनाथ ।

त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम्–एकं, दुर्लभम्–अन्यजनैः समयज्ञम् ।। 9 ।।

अर्थ : हे मेरे भैरवनाथ ! मेरी दृढ़ संवित् यज्ञादिकों से अप्राप्य आप के अलौकिक दर्शन प्राप्त करके कभी नाचती है कभी गायन करती है कभी हर्ष का अभिनय करती है ।

वसु–रस–पौषे कृष्ण–दशम्यां अभिनव–गुप्तः स्तवम्-इमम्–अकरोत्
येन विभु-भर्व–मरु–सन्तापं शमयति झटिति जनस्य दयालुः ।। 10 ।।

भावार्थ : भक्तों पर दयालु आध्यात्मिक बलवाले अभिनवगुप्त ने सम्वत् 68 पौषकृष्णदशमी को यह शंकरस्तुति की है जिस के उच्चारण श्रवण मनन से क्षणमात्र में दयालु शंकर संसार रूपी मरुस्थल के दुःखो का नाश करता है ।

प्रत्यभिज्ञाहृदय, स्पन्द सन्दोह, बोधविलास पराप्रवेशिका आदि शैवशास्त्रों के रचयिता आचार्य क्षेमराज के गुरु, अद्वैतसिद्धान्त के सर्वश्रेठ व्याख्याता "तन्त्रालोक" जैसे महान् शैवग्रन्थ के निर्माता **अभिनवगुप्त** की उपरिलिखित स्तुति संक्षिप्तभावार्थ सहित पाठको को अर्पित है, यह स्तुति विशेषतया हर एक काश्मीरी पण्डित को कण्ठस्थ करनी चाहिये ताकि हमारी आगामी सन्तति अपने आदरणीय पूर्वज काश्मीर के गौरवभूत आचार्य अभिनवगुप्त को भूल न जायें ।

ॐ नमः शम्भवाय मयो–भवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय शिवतराय च ।।

यजुर्वेद

शिवसंकल्प (यजुर्वेद से)

यत्–जाग्रतो–दूरम्–उदेति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरं–गमं ज्योतिषां ज्योतिर्–एकं – तन्मे मनः शिव–संकल्पम्–अस्तु ।। 1 ।।

अर्थ : जो मन जागते हुये मनुष्य का दूर चला जाता है, और सोते हुये का निकट आ जात है, जो परमात्मा के साक्षात्कार का एकमात्र साधन है, जो ज्ञानेन्द्रियों का प्रकाशक और प्रवर्तक है, मेरा वह मन शिव (कल्याणकारी) संकल्प वाला हो ।

येन कर्मा-ण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यत्–अपूर्वं यक्षम्–अन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्पम्-अस्तु ।। 2 ।।

अर्थ : कर्मयोगी विद्वान् जिस मन के द्वारा हर एक कर्म को यज्ञ के ढाँचे में डालते है, जो इन्द्रियों का अध्यक्ष है, जो समस्त प्रजा के हृदय में निवास करता है, वह मेरा मन शिव संकल्प वाला हो ।

यत्–प्रज्ञानम्–उत चेतो धृतिश्च यत्–ज्योतिर्–अन्तर्–अमृतं प्रजासु ।
यस्मात्–न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पम्–अस्तु ॥ 3 ॥

अर्थ : जो मन ज्ञान का करण है जो धैर्यरूप है, जो समस्त प्रजा के हृदय में रह कर उन की इन्द्रियों को प्रकाशित करता है, जो मृत्यु होने पर भी अमर रहता है, जिस के बिना कोई भी कर्म किया नहीं जाता है वह मेरा मन शिवसंकल्प वाला हो ।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतम्–अमृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिव–संकल्पम्–अस्तु ॥ 4 ॥

जिस अमृतरूप मन के द्वारा भूत-भविष्य वर्तमान की सभी वस्तुयें जानी जाती हैं, जिस के द्वारा सात होता वाला शरीर रूपी यज्ञ सम्पन्न होता है मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो (सात होता :– पांच ज्ञानेन्द्रिय मन और बुद्धि)

यस्मिन्–ऋचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता–रथनाभौ–इवाराः ।
यस्मिन्-चितं सर्वम्–ओतं प्रजानां तन्मे मनः शिव–संकल्पम्–अस्तु ॥ 5 ॥

अर्थ : जिस मन में रथचक्र की नाभि में अरियों के समान वेद प्रतिष्ठित है, जिस में सब पदार्थों से सम्बन्ध रखने वाला सम्पूर्ण ज्ञान ओत प्रोत है, मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो ।

सुषा—रथिर्—अश्वान्—इव, यन्मनुष्यान् नेनीयते-अभीशुभिर्—वाजिनःइव ।
हृत्प्रतिष्ठं यत्-अजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिव—संकल्पम्—अस्तु ।। 6 ।।

अर्थ : योग्य सारथि जैसे घोड़ो का संचालन करता है और लगाम के द्वारा घोडों का नियन्त्रण करता है, वैसे ही प्राणियों का संचालन तथा नियन्त्रण करने वाला हृदय में रहने वाला कभी बूढा-न होने वाला, अधिक तेज भागने वाला मेरा मन शिव संकल्प वाला हो ।

मानसिक शान्ति के लिये ऊपरलिखित
यजुर्वेद के छः मन्त्रों का उच्चारण किया करे ।

Vijay... (Regd.)
... - 180002

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोहम्

मनो बुद्ध्य–हंकार–चित्तानि नाहं
नच श्रोत्र–जिह्वे नच घ्राण –नेत्रे ।
नच व्योम-भूमि–र्न तेजो न वायुः
चिदानन्द–रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं ।1।
नच प्राण–संज्ञो न वै पंचवायुः
न–वा सप्त–धातु–र्न वा पंचकोशः
न वाक्–पाणिपादं न चोपस्थ–पायुः
चिदानन्द–रूपः शिवोहं शिवोहम् ।2।
नमे द्वेषरागौ न मे लोभ मोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्य–भावः
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः
चिदानन्द रूपः शिवोहं शिवोहम् ।3।
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञ :
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ।4।

न–मृत्यु-र्न शंका न मे जातिभेदः पिता नैव मे नैव माता च जन्म ।
न बन्धु-र्न मित्रं गुरु-नैव शिष्यः चिदानन्दरूपः शिवोहं शिवोऽहम् ।5।
अहं निर्विकल्पी निराकाररूपो लघुत्वात्-च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्
न चा संगतं नैव मुक्ति-र्न मेयः चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोहम् ।6।

इति-श्रीमत्-शंकराचार्य-विरचितं निर्वाणषट्कं सम्पूर्णम्

पुष्पाणि सन्तु तव देव मत्-इन्द्रियानि, धूपोगुरु-र्वपुरिदं ह्र्दयं प्रदीपः
प्राणा हवींषि करणानि नवाक्षतास्ते, पूजाफलं व्रजतु साप्रतम्-एषजीवः

।। विष्णुस्तुति ।।

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे ।
उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोऽहं संसारे ।।
घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।
माम्–अनुकम्पय दीनम्–अनाथं कुरु भव–सागरपारम् ।। घोरं हर. ।। 1 ।।
जय जय देव जया–सुरसूदन जय केशव जय विष्णो ।
जय लक्ष्मीमुख कमल–मधुव्रत जय दशकन्धर जिष्णो ।. घोरं हर. ।। 2 ।।
यद्यपि सकलम् अहं कलयामि हरे नहि किम् अपि स सत्वम् ।
तत्–अपि न मुञ्चति माम्–इदम् अच्युत पुत्रकलत्र–ममत्वं । घोरं हर. ।.
पुनर्–अपि जननं पुनर्–अपि मरणं पुनर्–अपि गर्भ–निवासम् ।
सोढुम् –अलं–पुनर् – अस्मिन्–माधव माम्–उद्धर निजदासम् । घोरं हर. ।। 4 ।।

त्वं जननी जनकः प्रभुर्–अच्युत त्वं सुहृत्–कुलमित्रम् ।
त्वं शरणं शरणा–गतवत्सल त्वं भव–जलधि – वहित्रं ।। घोरं हर. ।। 5 ।।

जनक – सुता–पति – चरण – परायण शकंर – मुनिवर–गीतं ।
धारय मनसि कृष्ण–पुरुषोतम – वारय संसृति–भीतिम् ।। घोरं हर. ।। 6 ।।

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ।।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं राम चन्द्रं भजे ।।
सूरजं शैशवं सत्यभा–माधवै श्रीधरं श्रीपतिं–राधिका–राधितम् ।
इन्दिरा–मन्दिरम् चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दजं संभजे ।।
अगंनाम्–अगंनाम्–अन्तरे माधवो, माधवं माधवं चान्तरे–णांगना ।
सत्यभा–कल्पिते मण्डले मध्यग; सङजगौ वेणुना देवकीनन्दनः ।।
बालिका–बालिका बाललीला–लयः संग–सन्दर्शित–भ्रू–लता–विभ्रमः ।
गोपिका गीत–दत्ता–वदानः स्वयं संजगौ वेणुना देवकी – नन्दनः ।।
जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोयं जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः ।
जयतु जयतु मेघ–श्यामलः कोमलांगो जयतु जयतु पृथ्वी–भारनाशो मकुन्दः ।।

गायत्री मन्त्र का महत्व

गायत्री की महिमा सभी वेदों तथा पुराणशास्त्रों में सविस्तर दर्ज है – अथर्व-वेद में स्वयं वेदभगवान् का कहना है – **"स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्, आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्"** अर्थ :– मेरे द्वारा स्तुति की गई द्विजों को पवित्र करने वाली वेदमाता गायत्री आयु प्राण स ..ति पशु कीर्ति धन ब्रह्मतेज देने वाली है (अथर्व-वेद)

"गायत्री मन्त्र"

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्-सवितुर् वरेण्यं, भर्गो-देवस्य धीमहि, धियो यो-नः प्रचोदयात्

अर्थ :– मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ जो शक्ति ॐ ब्रह्मरूप है, **भूर्भुवः स्वः** जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है, तत् = जिस को वेदों ने तत् नाम से पुकारा है **सविता** = जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती है, पालन करती है, नाश करती है, **"वरेण्यम्"** जो वरण करने के योग्य है, **भर्गः** = जो तेजो रूप है, **देवः** जो द्योतनशील है, अथवा ऐश्वर्यवाली है, ऐसी उस महान् शक्ति का **धीमहि** = चिन्तन करता हूँ, वह शक्ति **धियः** मेरी बुद्धि को, **प्रचोदयात्** = सत् कर्मों में प्रेरित करे ।

मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ, जो ब्रह्मरूप है, जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है, जिस को वेद "तत् नाम

से पुकारते है, जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती, पालन तथा संहार करती है, जो वरण करने (अपनाने) के योग्य है, जो तेजोरूप है, जो ऐश्वर्य देनेवाली है ऐसी ही उस महान् शक्ति का मैं चिन्तन करता हूँ, वह शक्ति मेरी बुद्धि को सत्कर्मों में लगाये ।

गायत्री मन्त्र का महत्व क्यों ?

शब्दनित्य है (शब्द ब्रह्म) वर्तमान विज्ञान भी यही मानता है, आज जो बातें हम करते हैं, अथवा हमारे मन की लहरें आकाश में अथवा सृष्टि के अन्तराल में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है, सृष्टि के आरम्भ से ही ऋषि मुनि साधक गायत्री मन्त्र के अनुष्ठान करते आये हैं, उन ऋषियों मुनियों साधकों की साधनायें भावनायें तपश्चर्यायें इस छोटे से गायत्री मन्त्र के पीछे तेजोपुंज के रूप में एकत्रित है, जो व्यक्ति इस गायत्री मन्त्र का उच्चारण अथवा जप करता है उस साधक की सफलता में वह तेजोपुंज अवश्य सहायक बनता है, साधक ज्योंही इस मन्त्रराज का जप अथवा उच्चारण करने लगता है तो उसी क्षण से इस मंत्र के प्रभाव का अनुभव करने लगता हैं, यही है इस गायत्री मन्त्र के महत्व का रहस्य ।

गायत्री जपविधि :—

शुद्ध आसन पर पद्मासन पर पूर्व की ओर मुख कर के पानी का एक लौटा और एक थाली तर्पण के लिये रख कर नमस्कार करते हुये पढ़ें (यदि नदी के तट पर करना हो तो थाली की आवश्यकता नही) :—

प्रणवस्य ऋषि र्ब्रह्मा गायत्रं छन्द एवच, देवोग्नि—र्व्याहृतिषु च विनियोगः प्रकीर्तितः, प्रजापते—र्व्याहृतयः पूर्वस्य परमेष्ठिनः । व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च ब्राह्मम्—अक्षरम्—ओम्—इति । व्याहृतीनां समस्तानां दैवतं तु प्रजापतिः, व्यस्तानाम्—अयम्—अग्निश्च वायुः सूर्यश्च—देवताः । छन्दश्च व्याहृतीनाम्—एकाक्षराणम्—उक्तारव्यम्—द्व्यक्षराणाम्—अत्युक्—ताख्यम् । विश्वामित्र—ऋषि—श्छन्दो, गायत्रं सविता तथा, देवतो—पनये जप्ये गायत्र्या योग उच्यते आवाहयामि गायत्रीं, सर्व—पाप—प्रणाशि—नीम् । न गायत्र्याः परं जप्यं, नव्याहृति—समं हुतम्, आगच्छ वरदे देवि, जप्ये मे सन्निधौ भव । गायन्तं त्रायसे यस्मात्—गायत्री त्वं ततः स्मृता, अग्नि—र्वायुश्च, सूर्यश्च, बृहस्पत्याप—एव-च, इन्द्रश्च—विश्वे—देवाश्च देवताः सम्-उदाहृताः । एवम्—आर्ष—छन्दो दैवतं विनियोगं चानुस्मृत्य । गायत्र्या शिखाम्—अबिद्ध्य गायत्र्यैव समन्ततः, आत्मन—श्चापः परिक्षिप्य, ओजोसीति गायत्रीम्—आवाह्य देवानाम्—आर्षम् (अपने आप को छिडक अंजलि धारण करते हुये पढ़े :—ओजोसि सहोसि बलम्—असि प्राजोसि देवानां धाम नामासि, विश्वम्—असि—विश्वायुः, सर्वम्—असि—सर्वायुः, अभि-भूः—

अंगन्यास—कीजिये— दोनों हाथों की ऊँगलियों से स्पर्श करते हुये पढ़ें :

"अ" नाभौ (नाभिको) **"उ" हृदि** (हृदयको) **"म" शिरसि** (सिरको) ।। **ॐ "भूः"—अंगुष्ठाभ्यां नमः** (दोनों अंगूठों

को) "**भुवः**" **तर्जनीभ्यां नमः** (अंगूठे के साथ वाली ऊँगलियों को, "**स्वः**" **मध्यमाभ्यां नमः** (बीचवाली ऊँगलियों को) "**महः**" **अनामिकाभ्यां नमः**, (सब से छोटी अंगुली की साथ वाली ऊँगलियों) को "**जनः**" **कनिष्ठकाभ्यां नमः** (छोटी ऊँगलियों को "**तपः सत्य**" **करतल पृष्ठाभ्यां नमः** (दोनो हाथ के तलवों को आपस में स्पर्श करें । "**भूः**" **पादयोः** (पावों को) "**भुवः**" **जान्वोः** (गुठनों को) "**स्वः**" **गुह्ये** (गुह्यस्थान को) "**महः नाभौ** (नाभि को) "**जनः**" **हृदि** (हृदयको) "**तपः**" **कण्ठे** (गले) **को** "**सत्यं**" **शिरसि** (सिर को), ॐ "**भूः**" **हृदयाय नमः** "**भुवः**" **शिरसि स्वाहा**, "**स्वः**" **शिखायै वौषट** (चोटी को) **महःकवचाय हुँ** (वस्त्रों को) **जन नेत्राभ्यां वौषट्** (नेत्रों को) "**तपः सत्यम्–अस्त्राय फट्**" चुटकी मारे ।। "**तत्–सवितुर्**" **अंगुष्ठाभ्यां नमः**, "**वरेण्यं**" **तर्जनीभ्यां नमः**, "**भर्गो–देवस्य मध्यमाभ्यां नमः**, "**धीमहि**" **अनामिकाभ्यां नमः**, "**धियो योनः**" **कनिष्ठकाभ्यां नमः**, "**प्रचोदयात्**" **करतल करपृष्ठाभ्यां नमः तत** "**पादयोः** "**सवितुर्**" **जान्वोः** (गुठनों को) "**वरेण्यं**"**कट्यां** कमर को) **भर्गो नाभौ** "**देवस्य**" हृदये "**धीमहि**" कण्ठे "**धियो,:**" **नासिकायां** "**यो**" **चक्षुषोः** (नेत्रों को) "**नः ललाटे** (माथे को) "**प्रचोदयात्**" **शिरसि**, ।। "**तत सवितुर्**" **हृदयाय नमः** "**वरेण्य**" शिर से **स्वाहा**, "**भर्गो देवः**" **शिखायै वौषट्** '**धीमहि**' **कवचाय हुँ** (वस्त्रों को "**धियो योनः** "**नेत्राभ्यां वौषट्** '**प्रचोदयात अस्त्राय फट्** (चुटकी मारिये) "**आपः**" **स्तनयोः** (स्तनों को) "**ज्योतिः**" **नेत्रयोः**, "**रसो**" **मुखे अमृत**" **ललाटे** "**ब्रह्म-भूभुर्वः स्वरों**"

(शिरसि) प्राणायाम करके तर्पण कीजिये :–

ओ3म अस्य गायत्री शापविमोचन–मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्री च्छन्दः वरुणो देवता ब्रह्मशाप–विमोचने विनियोगः । (तर्पण करते रहिये)

ओ3म्-यत्–ब्रह्मेति ब्रह्मविदो विदुः–त्वां पश्यन्ति धीरा : ।

सुमनसो–वा गायत्री त्वं ब्रह्मशापात्–विमुक्ता भव ।। 1 ।।

ओ3म्–अर्क–ज्योतिर् अहं ब्रह्मा ब्रह्म ज्योतिर्–अहं शिवः

शिव–ज्योतिर्–अहं विष्णुः शिव–ज्योतिः शिवः परम् ।। 2 ।।

गायत्री त्वं वशिष्ठशापात् –विमुक्ता भव ।

ॐ अहो देवि महादेवि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वति ।

अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनि नमोस्तुते ।

गायत्रि त्वं विश्वामित्र–शापात्–विमुक्ता भव ।। 3 ।।

गायत्री का ध्यान करते हुये पढ़े :–

मुक्ता–विद्रुम–हेम–नील–धवल, छायै–र्मुखैः–त्रीक्षणैः

युक्ताम्–इन्दु–निबद्ध–रत्न–मुकटां, तत्त्वात्म–वर्णात्मिकाम्

गायत्रीं वरदा–भया–ङ्कुश–करां शूलं कपालं गुणं

शंखं चक्रम्–अथार–बिन्दु–युगलं हस्तौ–र्वहन्तीं भजे ।। 1 ।।

आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि ।

गायत्रि छन्दसां–मात–र्ब्रह्म–योने नमोस्तुते 2

यह मन्त्र तीन बार पढ़ कर–गायत्री मन्त्र का जप करें

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्–वेरण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ

यदि माला से जप करना है तो जप समाप्त करके माला सिर पर रख कर प्राणायाम करके तर्पण करते हुये पढ़े :– देवा–गातु–क्षेत्रिया:, देवा गातुविदो, गातुं वित्वा–गातु–मित मनसस्–पत-इमं देवयज्ञं स्वाहा, वाचे स्वाहा वातेधाः

नमो धर्मनिधानाय नमः सुकृत–साक्षिणे । नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः

जप करने का स्थान :– घर के उस कमरे में जप करें जहां आप की एकाग्रता में किसी प्रकार का विघ्न न पड़े, नदी के तट पर जप करना अधिक लाभदायक रहता है । जप की विधि आसन प्राणायाम आदि की जानकारी इसी जन्त्री के पाठप्रकरण में देखिये ।

क्या महिलाओं को गायत्री साधना जप अनुष्ठान आदि करने का अधिकार है ?

वेदों शास्त्रो पुराणों के स्वाध्याय से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष हो या स्त्री दोनों गायत्री उपासना के अधिकारी है, प्राचीनकाल में गार्गी, मैत्रेयी देवयानी, लोपामुद्रा आदि महिलाओं ने गायत्री शक्ति की उपासना से ही आत्मा को समुन्नत बनाया था सावित्री ने एक वर्ष तक गायत्री की साधना की थी जिस साधना से ही वह अपने पति को यमराज से लौटा सकी । स्त्री और पुरुष दोनों ही गायत्री माता की सन्तान है, स्त्री सधवा हो या विधवा अपने जीवन को सफल बनाने के लिये गायत्री मन्त्र का जप किया करें ।

ॐ भुर्भूवः स्वः तत्सवितु वरिण्यं भर्गो–देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात ॐ

सप्तश्लोकी दुर्गा

ज्ञानि-नाम् -अपि चेतांसि देवी भगवती हिसा ।
बलात्-आकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।।1।।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि ।

दारि-द्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वत्-अन्या
सर्वोप-कार-करणाय दयार्द्र-चिता ।।2।।

सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ।।3।।

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे

सर्वस्यार्ति-हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ।।4।।

सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते,

भयेभ्यस्त्राहि-नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ।।5।।

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि तुष्टा

रुष्टा-तु कामान् सकलान्-अभीष्टान्

त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणां

त्वाम्-आश्रिता ह्या श्रयंतां प्रयान्ति ।।6।।

सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्य-स्याखिलेश्वरि

एवम्-एव त्वया कार्यम्-अस्मत्-वैरि-विनाशनम् ।।7।।

इति सप्तश्लोकी दुर्गा समाप्त।

सप्तश्लोकी दुर्गा का अर्थ

अर्थ : भगवती माहमाया देवी ज्ञानियों के भी चित को बलपूर्वक खींच कर मोह में डाल देती है ।।1।।

माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती है, और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याण रूपी बुद्धि देती है, दुःख दरिद्रता हरणेवाली देवी आप के बिना दूसरी कौन है जिस का चित्त सब का उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता है ।।2।।

हे माँ ! तुम सब प्रकार का मंगल करने वाली मंगलमयी हो, कल्याण करने वाली शिवा हो, सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागत-वत्सला, तीन नेत्रों वाली तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी, तुम्हे नमस्कार है ।।3।।

शरण में आये हुये, दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में लगी रहने वाली, तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी तुम्हे नमस्कार है ।।4।।

सर्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न, दिव्यरूपा दुर्गे देवि सब भयों से हमारी रक्षा करो, तुम्हें नमस्कार है ।।5।।

हे देवि ! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट करने वाली, और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो । जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति आती ही नही है, तुम्हारी शरण में गये हुये मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं ।।6।।

हे सर्वेश्वरि ! जिस प्रकार तुम ने मधुकैटभ का नाश किया तुम उसी प्रकार तीनों लोकों की सभी बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो ।।7।।

इति सप्तश्लोकी की दुर्गा समाप्ता ।।

गणेश-स्तोत्र

नरद-उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं, गौरीपुत्रं विनायकम्

भक्तावासं स्मरेत्-नित्यम्-आयुं-कामार्थ सिद्धये ।।

प्रथमं वक्रतुण्डं च, एकदन्तं द्वितीयकम्,

तृतीयं कृष्ण-पिंगाक्षं,गजवक्त्रं चतुर्थकम् ।2।

लम्बोदरं पंचमं च, षष्ठं विकटं-एवच

सप्तमं विघ्नराजं च, धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ।।3।।

नवमं भालचन्द्रं च, दशमं तु विनायकम्

एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ।।4।।

द्वादशैतानि नामानि, त्रिसन्ध्यं, यः पठेत्-नरः
नच विघ्नभयं तस्य, सर्व-सिद्धि-करं परम् ।।5।।

इति श्रीनारद-पुराणे संकट-नाशनं गणेश-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

ऊपरलिखित गणेश स्तोत्र संकटनाशन-स्तोत्र कहलाता है, इस स्तोत्र के नित्य पाठ करने से संकटों का नाश, तथा हर एक मनोकामना सिद्ध होती है ।।

विष्णोः अष्ट-नामस्तोत्र

अच्युतं केशवं विष्णुं, हरिं सत्यं जनार्दनम् ।
हंसं नारायणं चैवम् – एतत् -नामाष्टकं पठेत् ।।1।

त्रिसन्ध्यं यः पठेत् नित्यं दारिद्र्यं तस्य नश्यति
शत्रु-सैन्यं क्षयं याति, दुःस्वप्नः सुखदो भवेत् ।।2।।

गंगायां मरणं चैव, दृढ़ा भक्तिस्तु केशवे
ब्रह्म-विद्या-प्रबोधश्च तस्मात्-नित्यं पठेत् नरः ।।3।।

विष्णु पुराण में लिखा है - इस विष्णु अष्टनाम स्तोत्र के नित्यपाठ करने से दारिद्र्य का नाश होता है - बुरे स्वप्न भी सुखदायक बनते है – भगवान् की भक्ति में वृद्धि होती है – ज्ञान की प्राप्ति होती है ।

आप प्रातः काल के नित्य कर्म में जो पाठ करते हैं उन में नीचे लिखे स्तोत्र अथवा श्लोक भी जोडिये :–

प्रातः स्मरण मंगलस्तोत्रम्

उत्तिष्ठो-त्तिष्ठ गोविन्द, उत्तिष्ठ गरुड़-ध्वज,
उत्तिष्ठ-कमलाकान्त, त्रैलोक्ये मंगलं कुरु ।।1।।
मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुड-ध्वजः,
मंगलं पुण्डरीकाक्षः मंगलायतनं हरिः ।।2।।

मूकं करोति वाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम्
यत् कृपा तम्-अहं वन्दे परमानन्द–माधवम् ।।3।।

नमो ब्रह्मण्य-देवाय, गोब्रह्मण-हिताय च
जगत्-हिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमोनमः ।।4।।

कृष्णाय वासुदेवाय, देवकी–नन्दनाय च
नन्द-गोपकुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः ।।5।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वम्-एव,
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।6।।

एक-श्लोकी-नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा-मुरारिः–त्रिपुरान्त-कारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च,
गुरुश्च शुक्रःशनि-राहु केतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।

इस एकश्लोकी नवग्रह स्तोत्र के नित्यपाठ से नवग्रहों की शान्ति होती है ।

एकश्लोकी रामायण

आदौ राम-तपोवनादि-गमनं, हत्वा मृगं कांचनं
वैदेही-हरणं जटायु-मरणं सुग्रीव सम्भाषणम् ।
वाली निर्दलनं समुद्र तरणं लंकापुरी-दाहनं
पश्चात रावण कुम्भकर्ण-हननं चैतत्-हि-रामायणम् ।।1।।

श्रीरामस्तुतिः

श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि

सुग्रीवमित्रं परमं पवित्रं, सीताकलत्रं नवमेघ-गात्रम् ।
कारुण्य-पात्रं शतपत्र-नेत्रं, श्रीराम-चन्द्रं सततं नमामि ॥1

अर्थ :– सुग्रीव के मित्र, परमपावन, सीता के पति नवीन मेघ के समान शररर वाले । करुणा के सिन्धु कमल के समान नेत्रवाले श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ ।

संसार-सारं निगम-प्रचारं – धर्मावतारं हृतभूमि-भारम् ।
सदाविकारं सुखसिन्धु-सारं-श्रीराम-चन्द्रं सततंनमामि ॥2॥

अर्थ :– असार संसार का सारवस्तु, वेदों का प्रचार करने वाले, धर्म के अवतार, भू-भार हरण करने वाले, सदा विकार रहित, आनन्द सिन्धु के सारभूत, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ ॥

लक्ष्मी-विलासं जगतां निवासं – लंकाविनाशं भुवन-प्रकाशम् ।
भू-देव-वासं शरत्-इन्दुहासं–श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि ।।3।।

अर्थ – लक्ष्मी से विलास करने वाला, जगत् का निवास, लंकानाश करने वाला, भुवनों को प्रकाशित करने वाला, ब्राह्मणों को शरण देने वाला, शरत् चन्द्र हास्यवाला, श्रीरामचन्द्र का मैं निरन्तर नमन करता हूँ।

मन्दार-मालं-वचने रसालं – गुणैर्विशालं हत-सप्त-तालम्
क्रव्याद-कालं सुर-लोकपालं– श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि ।।4।।

अर्थ :– मन्दारपुष्प माला वाले, रसीले वचन बोलने वाले, गुणों में महान्, सातताल वृक्ष भेदने वाले, राक्षसों के काल, देवलोक पालक, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ ।।

वेदान्त-गानं सकलैः समानं – हतारि-मानं-त्रिदश-प्रधानम् ।
गजेन्द्र-यानं विगतावसानं – श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि ।।5।।

अर्थ :— वेदान्त द्वारा गेय, सबके साथ एक जैसा, शत्रुओं का मान मर्दन करने वाला, देवताओं में गजेन्द्र सवारी करने वाले, अन्त-रहित - श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ ।

श्यामाभि-रामं नयना-भिरामं, गुणाभिरामं, वचनाभिरामम् ।

विश्व-प्रणामं कृतभक्तकामं, श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि ।।6।।

अर्थ :— श्याम सुन्दर, नेत्रों को आनन्द देने वाला, गुणों से मनोहर, मधुर वचन बोलने वाले विश्व वन्दनीय, भक्तजनों की कामनायें पूर्ण करने वाले, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ ।

लीलाशरीरं रणरंगधीरं, विश्वैकसारं रघुवंश-हारम् ।

गम्भीरनादं जितसर्व-वादं, श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि ।।7।।

अर्थ :— लीला के लिये शरीर धारण करने, वाले रणस्थली में धीर, विश्व के सार, रघुवंश में श्रेष्ठ, गम्भीरवाणी बोलने वाले, समस्तवादों को जीतने वाले, श्रीरामचन्द्र को मैं प्रतिक्षण प्रणाम करता हूँ ।

खले कृतान्तं स्वजने विनीतं – सामोपगीतं मनसाऽप्रतीतम् ।
रागेणगीतं वचनात्-अतीतं – श्रीराम चन्द्रं सततं नमामि ।8।।

अर्थ :– दुष्टों के लिये मृत्युरूप, अपने भक्तों के लिये नम्रभाव वाले, सामवेद के द्वारा स्तुत, मन के अगोचर प्रेम से गान करने योग्य, वचनों से अग्राह्य, रीरामचन्द्र को मैं सर्वदा नमस्कार करता हूँ ।

प्रार्थना

जब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ।।

मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं ।
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ।।

यदि जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, जैसे जल में कमल का फूल रहे ।
मम अवगुण दोष समर्पित हों, भगवान तुम्हारे हाथों में ।।
यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तव चरणों का मैं भक्त बनूँ ।
इस भक्त की तनमन का, रहे तार तुम्हारे हाथों में ।।
जब-जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से काम करूँ ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ – निराकार तुम्हारे हाथों में ।।
मुझ में तुझ में बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो ।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ।।

आसय शरण करतम-दया

ॐ श्रीगणेशाय नमः। यज्ञस जपस व्यहार-सय, ग्वड छिय सुरान प्रथ कार-सय कारस अनान छुक च़य जमाह, ॐ श्री गणेशाय नमः। मूषक च्य़ वाहन शूभवुन, त्र्यन-लोकन-मंज़ फेरवुन मदतस रोज़तम प्रथदमा, ॐ श्री गणेशाय नमः। च़य छुक ज़गतुक आदि देव-चय़ छुक लछ बद कामदेव, सिद्ध कर वुन्य म्यनि कामना ॐ श्री गणेशाय नमः। प्रारान छुस बह डेडि तल, आलव म्योन गुय ना कनन, कनथाव वननुक छुम तमाह, ॐ श्री गणेशाय नमः।। आसय शरण करतम क्षमा ॐ श्री गणेशाय नमः।गणपत-गणेश्वर हे प्रभु कलि राज़ह राज़न हुन्द विभु पज़ि लोल पादन तल न्यमा ॐ श्री गणेशाय नमः। गोडन्युक च्ये छुय आधिकार कलि कालकुय छुक ताजदार राज़स् परन पादन प्यमा ॐ श्री गणेशाये नमः। बाह नाव सुन्दर शूभवन्य त्र्य लूकि मंज-तिम आसवन्य पूर्ण करुम पूर्ण कृपा ॐ श्री गणेशाय नमः।

इन्द्राक्षी

अस्यं श्री इंद्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य, पुरंदर-ऋषिः, अनुष्टप्-छन्दः, इन्द्राक्षी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम् । सकलकामना-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ।

अथ-ध्यानम् ।

इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीत-वस्त्रधरां शुभाम् वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय-प्रदाम् ।1। सहस्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार-भूषिताम्, प्रसन्न वदनां नित्यम्-अप्सरो-गणसेविताम् ।2। श्री-दुर्गां सौम्य-वदनां पाशांकुशधरां परां, त्रैलोक्य-मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम् ।3। ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं पें स्वाहा ।

इन्द्र-उवाच –

इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता, गौरी शाकंभरी देवी दुर्गा-नाम्नीति-विश्रुता ।1। कात्यायनी महादेवी चन्द्र-घण्टा-महातपाः, गायत्री सा च सावित्री ब्रह्म्राणी ब्रह्मवादिनी ।2। नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला, अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रि-स्तपस्विनी ।3। मेघ-श्यामा सहस्राक्षी, विष्णुमाया जलोदरी, महोदरी मुक्त-केशी घोररूपा महाबला ।4। आनन्दा-भद्रजा नंदा रोगहंत्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परेमश्वरी ।5। इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति-परायणा, महिषा-सुर-संहर्त्री चामुण्डा गर्भदिवता ।6। वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी, श्रुतिः स्मृति-धृति-मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।7। आनंदा विजया पूर्णा मानस्तोकांऽ पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा ।8। शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध-शरीरिणी, एतै-र्नाम-पदै-दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।9। आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्य सुख-संपत्तिकारकम्, क्षय-पस्मार-कुष्ठादि-ताप-ज्वर-निवारणम् ।10।

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे, ॐ जय ।।1।।

जो ध्यावे फल पावे दुःखविनशे मन का
सुख सम्पत्ति घर आये कष्ट मिटे तन का, ॐ जय. ।2।

मात पिता तुम मेरे शरण पडों किसकी
तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी ।ॐ जय. ।3।

तुम-पूरण-परमात्मा तुम अन्तर्यामी
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी । ॐ जय. ।4।

तुम-करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता । ॐ जय. ।5।

तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति
किस विधि मिलों दयामय तुमको मैं कुमति । ॐ जय.।6।

दीन बन्धु दुःख हर्ता रक्षक तुम मेरे
अपने चरण लगावो द्वार पडा तेरे । ॐ जय. । 7।

विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा । ॐ जय. ।8।

प्रेप्युन (नैवद्यमन्त्र)

(नैवेद्य को दोनों हाथों से पकड़ते हुये पढ़ें)

अमृतेश–मुद्रया–अमृतीकृत्य अमृतम्–अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम् । सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो–र्बाहुभ्यां–पूष्णो हस्ताभ्याम्–आददे ।। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणि द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश–देवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वर–देवताभ्यः चतुर्वेदिश्वराय सानुचराय ऋतु–पतये नारायणाय दुर्गायै त्रयम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्नि- ष्वात्तादिभ्यः पितृ--गणदेवताभ्यः । भगवते वासुदेवाय सङ्–कर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय–पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय–सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय भवायदेवाय –शर्वाय–देवाय–रुद्राय–देवाय पशुपतये देवाय उग्राय–देवाय भीमायदे

महा–देवाय ईशानाय–देवाय ईश्वराय–देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्राय विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्षाय वल्लभा- सहिताय श्रीमहागणेशाय । क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय । भगवते हौं ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थ–साराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय । भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका–भगवत्यै श्री शारदायै–भगवत्यै श्री महाराज्ञीभगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकरीदेव्यै क्षेमंकरीभगवत्यै सर्वशत्रुघातिण्यै इहराष्ट्राधिपतये इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैऋतये खड्ग–हस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय–गदा–हस्ताय विष्णवे–चक्रहस्ता·

अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः अग्न्या–दित्याभ्यां वरुण-चन्द्रमोभ्यां कुमार-भौमाभ्यां विष्णु–बुधाभ्यां इन्द्रा-बृहस्पतिभ्यां सरस्वती-शुक्राभ्यां, प्रजापति-शनैश्चराभ्यां गणपति-राहुभ्यां, रुद्रकेभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्ता-गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिरव्यादिभ्यः पंच-चत्वारिंशत्-वास्तोष्पति-याग-देवताभ्यः ब्राह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गा-क्षेत्र-गणेश्वर-देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिका-देवताभ्यः सिनीवाली-देवताभ्यः यामी–देवताभ्यः रौद्री-देवताभ्यः वारुणी–देवताभ्यः बार्हस्पत्य–देवताभ्यः ॐ भूर्देवताभ्यः ॐ भुवोदेवताभ्यः ॐ स्वर्देवताभ्यः ॐ भूर्भुवः-स्वर्देवताभ्यः अखण्ड-ब्रह्माण्ड-यागदेवताभ्यः धूर्म्यः उपधूर्म्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै–सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वदुकादिभ्यः, उत्पन्नम्-अमृतं दिव्यं प्राक्-क्षीरो-दधि–मन्थनात्-अन्नम्-अमृतरूपेण नैवेद्यं प्रति-गृह्यताम्

(इष्टदेवता का ध्यान करते हुये पढ़े –

उों तत्सत् – ब्रह्म – अद्य तावत् तिथौ अद्य – मासस्य – पक्षस्य – तिथौ – आत्मनो वाङ्मनः कार्योपार्जित–पापनि –वारणार्थम्, उों नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः ।

"चुटू" को स्पर्श करते हुये पढें :– या काचित् – योगिनी – रौद्रा – सोम्या घोरतरा परा । खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा ।

चुटू को अंगूठे से तिलक लगाकर अर्घफूल डालते हुये पढें :– आकाशमातृभ्योऽन्नं नमः, आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः । प्रेप्युन की थाली में चुटू के साथ सात (7) म्यचियां अथवा सात छोटे प्रसाद के भाग रखे हुये होते हैं – पहली म्यची को स्पर्श करते हुये पढ़ें – भगवते वासुदेवाय अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः ।

(2) दूसरी को स्पर्श करते हुए पढें–

भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः (3) भगवते विनायकाय अन्नंसमर्पयामि नमः

(4)
हौं ह्रीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः(5) इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान् –मिष्ठान्नं– क्षीरं समर्पयामि नमः ।

अंतिम दो भागों या दो म्यचियों पर अर्घ पानी डालते हुये पढ़ें –

यस्मिन्–निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालाः सकिंकराः । तस्मै नि–वेदयाम्यद्य बलिं पानीय संयुतम्–क्षां–क्षेत्राधिपतये अन्नं नमः रां राष्ट्राधिपतये अन्नं नमः–सर्वाभय–वरप्रदो मयि पुष्टिं पुष्टिपति–र्दधातु ।

दोनों हाथ में फूल लेते हुये प्रणाम करते हुये पढ़ें

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा । भगवन्–त्वां–प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम् । उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः ।

तर्पणः– सीधा हाथ रखते हुये पढ़ें –

नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषधिभ्यः, नमो वाचे नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते, कृणोमि, इत्येतासाम्–एव–देवतानां–सा - रि - ष्टिं - सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्–आप्नोति – य एवं विद्वान् – स्वाध्यायम्–अधीते ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

ॐ नमः शम्भवाय च, मयो भवाय च

नमः शंकराय च मयस्कराय च

नमः शिवाय च शिवतराय च ।

जन्म दिन पूजा

पूजा आरम्भ करने से पहले यज्ञोपवीत धारण करें और थाल में नारीवण को रखकर नमस्कार करते हुये पढ़े ।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशि–वर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेे सर्व–विघ्नोपशान्तये ।।
अभिप्रीतार्थ–सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर्–अपि । सर्व–विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ।।

हृदय और मुख को जल छिडकते हुए पढें ।

तीर्थे स्नेयं तीर्थ–मेव समानानां भवति । मा नः शंसे अररुषो धूर्तिः प्राणङ्ग मर्त्यस्य रक्षा–णो बह्मणस्पते ।।

अनामिका उंगली में पवित्र धारण करके अपने आप को तिलक, अर्घ, फूल लगाते हुये पढें ।

आत्मने नारायणाय परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्रनाथाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः ।।

रत्नदीप धूप को तिलक, अर्घ, पुष्प अपर्ण करके सूर्य भगवान् को थाली में तिलक तथा अर्घ, पुष्प अर्पण करते हुये पढें :–

नमो धर्म–निधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे । नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः ।।

खोसू से थाली में रखे हुये नारीवण के ऊपर अर्घ सहित जल की धारा डालते हुये पढें :–

यत्रास्ति–माता न पिता न बन्धु–र्भ्रातापि नो यत्र सुहृज्जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिस्तत्रात्मीपं शरणं प्रपद्ये । आत्मने नारायणाय–आधारशक्त्यै धूपदीपसङ्ग–कल्पात् सिद्धिर्–अस्तु धूपो नमः दीपो नमः ।।

जलसहित खोसू में थोड़ा सा तिलक और तीन पुष्प डालते हुये पढें :–

सं वः सजामि हृदय संसृष्टं मनो अस्तु वः । संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः संयावः प्रियास्तन्वः सं प्रिया हृदयानि वः । आत्मा वो अस्तु सं प्रियः सं प्रियस्तन्वो मम ।

इसी जल की धारा को नारीवण पर डालते हुये पढ़ें

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव । मित्रा–वरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव । बृहस्पतेः प्राणः सं ते प्राणं ददातु तेन जीव जन्मोत्सव–देताभ्यो जीवादानं परिकल्पया–मि नमः ।

चावल सहित दो दर्भ सीधे हाथ में लेकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ें :–

ॐ भूर्भवःस्वः तत्सवितुर्–वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो योनः प्रचोदयात् '3'जन्मोत्सदेवतानां अर्चाम्–अहं करिष्ये उँ कुरुष्व ।।

इसी मंत्र से हाथ में पकडे हुये दो दर्भ निमर्मि में डालकर फिर से दो दर्भ आसन के रूप में नारीवण के सामने डालते हुये पढ़ें :–

सप्त–जन्मोत्सव देवतानां आसनं नमः ।

चावल सहित दो दर्भ हाथ में पकड कर केवल चावल को कन्यों से फँकते हुये पढ़ें :–

सप्त–जन्मोत्सवदेताभ्यः युष्मान्–पूजयामि । ॐ पूजय ।।

दो दर्भ इसी तरह पकड़ते हुये पढ़ें :–

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । स भूमिं विश्वतो वृत्वा–त्यतिष्ठत्–दशांगुलम् । जन्मोत्सवदेवता आवाहयिष्यामि । ॐ आवाहय ।।

पहले पकडे हुए दो दर्भ निर्माल में ढाल कर तीन बार फूल नारीवण पर डालते हुए पढ़ें :–

भगवन् ! पुण्डरीकाक्ष ! भक्तानु–ग्रहकारक अस्मत् दयानु–रोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो ।।3 ।।

दोनों कन्धों के ऊपर चावल फैंक कर प्राणायाम करके खोसू में जल डालते हुये पढ़ें :–

पाद्यार्थम्–उदकं नमः । शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोर–अभिस्रवन्तु नः ।

लाय, केसर, सर्वौषधि, दर्भ, जल, सब चीजें खोसू में डाल कर नारीवण पर जल छोडते हुए पढ़ें

अश्व–त्थामने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्काण्डेयाय, परशुरामाय, सप्तचिरजीवेभ्यः पाद्यं नमः ।।

पाद्य का बचा हुआ पानी निर्माल में डालकर फिर से खोसू में पानी डालते हुये पढ़ें :–

शन्नो देवीर्–अभीष्टये–आपो भवन्तु पीतये । शंयोर्–अभिस्रवन्तु नः ।

जल, दर्भ, घी, चावल, जौ, सर्वोषधि, दूध ये आठ चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर डालते हुये पढ़ें :–

अश्वत्थामन्, बले, व्यास, हनुमन्, कृपाचार्य, मार्काण्डेय, परशुराम, सप्तचिर–जीव इंद वोडर्घ्यं नमः ।

शुद्ध जल डालते हुये पढ़ें :–

प्रजापति–जन्मोत्सवदेवताभ्य : आचमनीयं नम : ।

दूध वगैरह जल डालते हुये पढ़ें :–

तद्विष्णोः परम पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततं तद्विप्रासो विपण्यवो । जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम् । प्रजापति जन्मोत्सवदेवताभ्यः स्नानं नमः ।।

किसी कटोरी में फूलों का आसन बनाते हुये पढ़ें :–

आसनाय नमः गरुडासनाय नमः पद्मासनाय नमः । शतदल–पद्मासनाय नमः सहस्रदल–पद्मासनाय नमः । किभासनं ते गरुढासनाय किं भूषणं कौस्तुभ–भूषणाय लक्ष्मीकलत्राय किम्–अस्ति, देयं–वागीश किं ते वचनीयम्–अस्ति ।।

नारीवण को आसन पर बिठाते हुये पढ़ें :–

उत्तिष्ठ भगन्विष्णो ! उत्तिष्ठ कमलापते !
उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ ! त्रैलोकी मंगलं कुरु ।।

नारीवण को सात तिलक लगाते हुये पढ़ें : –

अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिरजीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः ।

इन्हीं सात नामों का उच्चारण करते हुये नारीवण पर अर्घ और पुष्प चढाते हुये पढ़ें :–

अश्वत्थाम्ने, बलये (इत्यादि) नाम्ना अर्घो नमः पुष्पं नमः ।।

धूप, रत्नदीप, कपूर उठकर घुमायें । घण्टा और शंख भी भजावें ।

यह मंत्र पढ़े :-

तेजसो शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि प्रियं देवानामंउनादृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृहणामि यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञिभ्यो गृहणाभि जन्मोत्सवदेवताभ्यः धूपं रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नमः ।

नमस्कार करते हुये पढ़ें :-

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे । उद्धर माम्उसुरेश-विनाशन्, पति-तोउहं संसारे । घोरं हर मम नरकरिपो, केशव कल्पषभारम् । माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं कुरु भवसागरपारम् । भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय । सप्त-जन्मोत्सव-देवताभ्यः चामरं छत्रं परिकल्पयामि नमः ।

फूल चढाते हुये पढ़े :-

ध्येयं सदा परिभवघ्नम्ऽभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिव–विरिंचि–नुतं शरण्यम् । भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणार–विन्दम् ।।

नमस्कार करते हुये पढ़ें :–

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसां च अष्टांग–नमस्कारं करोमि नमः ।

कटोरी में थौड़ा दूध, शहद या क्षीर रख कर अर्पण करते हुये पढ़ें :–

वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय प्रजापति–जन्मोत्सवदेवताभ्यः मात्रामधुपर्कं ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः ।

दक्षिणा डालते हुये पढ़ें :–

जन्मोत्सव–देवताभ्यः दक्षिणायै तिल–हिरण्य रजत निष्कर्णं ददानि ।

फिर से दक्षिणा अर्पण करते हुये पढ़ें :–

एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु ।।

फूल चढाते हुये पढ़े :–

ओं तद्विष्णोः परम पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुर्–आततम् । तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम् ।

अब नैवेद्य तहर या क्षीर थाली में लाकर एक पात्र में अलग चट्टू और पांच म्यचिया रखें, नैवेद्य के साथ दही मिसरी भी रखें । नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकडकर सारा प्रोप्युन पढ़ें ।

आज्ञा मांगते हुये पढें :–

आज्ञो मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे । शरीरयात्रा सिद्धयर्थं भगवन् क्षन्तुम्–अर्हसि ।।

पुष्प चढाते हुये पढें :–

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा । भगवंस्त्वा प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणा–गतम् ।

पवित्र निकाल कर, हाथ में नारीवण वांधकर, चट्टू कहीं बाहर रखकर, निर्मल नदी में डालकर नैवेद्य के साथ शकर दायें हथेली में रखकर मुंह में डालते हुये पढ़ें :–

मार्कण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकल्पान्त जीवन आयुर्–अरोग्यं सिद्धयर्थं प्रसीद भगवन्मुने । मार्कण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त–जीवन, आयुरारोग्य सिद्धयर्थम्– अस्माकं वरदो भव ।। मार्कण्डेय नमस्तेस्तु सप्तकल्पान्तजीवन, आयुर्–आरोग्य चिरऽजीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरद्विज कुरुष्व मुनिशार्दूल तथा मां चिरजीविनम् ।।

धर्मशास्त्र

धार्मिक रीति रिवाज भी संस्कृति के ही अंग माने जाते हैं, परंतु जब वे रीति रिवाज धर्मशास्त्र के आधार पर हूँ, कहीं कहीं धर्मशास्त्रों में मतभेद पाया जाता है, ऐसी दशा में देशाचार की भी प्रामाण्यता होती है – इन बातों को ध्यान में रख कर ही धर्मशास्त्र की चन्दबाते समय समय पर काम आने वाली निम्नलिखित हैं ।

सगोत्र : जिन का आपस में एक ही गोत्र हो सगोत्री कहलाते हैं – सगोत्रियों का आपस में विवाह करना निषेध है, मातृपक्ष से पांच पीढी तक पितृपक्ष से सात पीढी तक विवाह नही कर सकते हैं ।

दत्तक : (मंगत लाना) अपने खानदान से दत्तक लाना धर्मशास्त्र के अनुसार उत्तम माना जाता है, दूसरे वंश का भी दत्तक लाया जा सकता है, साला (पत्नी का भाई) दत्तक लाना धर्मशास्त्र से निषेध है ।

मुण्डन : माता अथवा पिता के मरने पर मुण्डन करना पुत्र के लिये आवश्यक है, यदि बड़ा लड़का घर में न हो अथवा किसी कारण से क्रिया कर्म दाह संस्कार आदि न कर सके तो कोई भी पुत्र कर सकता है ।

क्रिया कर्म का अधिकारी पुत्र, दाह संस्कार पर घर में न होने पर बारवें दिन तक जिस दिन भी घर पहुँचे उस दिन से ही व्रतधारी रह कर क्रिया कर्म कर सकता है, परन्तु क्रिया कर्म आरम्भ करने से पहले मुण्डन करना आवश्यक है ।

अशौच : दो प्रकार का होता है, जन्म का अशौच जिसे सूतक कहते हैं और दूसरा मरने का अशौच, जिस को

मृतक कहते हैं, ब्राह्मणों को दस दिन, क्षत्रियो को 12 दिन और शूद्र को 30 दिन का अशौच होता है, बिना विवाह के कन्या का, पिता के घर में मृत्यु हो तो तीन दिन का अशौच होता है, विवाहित लड़की को 10 दिन के अन्दर जिस दिन भी माता पिता के मृत्यु का सन्देश मिले तो उस दिन से लड़की को तीन दिन का अशौच होता है ।

दो अशौच : एक साथ दो अशौच होने पर पहले अशौच के समाप्त होने पर ही दूसरे अशौच की भी शुद्धि होती है, उदाहरण के रूप में, किसी के पिता की मृत्यु होती है उस के दसवें दिन से पहले किसी दिन (पैतृव्य) चाचा की मृत्यु हो ऐसी दशा में जिस दिन पहला अशौच समाप्त होगा उसी दिन दूसरा अशौच भी समाप्त होता है, यदि जन्म के अशौच पर मरने का अशौच पड़े तो मरने का अशौच समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है, यदि दसवें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो ऐसी स्थिति में दूसरा अशौच समाप्त होने पर दो दिन के लिये अधिक अशौच रहता है, यदि 11 वें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो अशौच समाप्त होने के बाद अधिक तीन दिन तक अशौच रहता है । सूतक का अशौच हो या मृतक का अशौच 11वां दिन करना आवश्यक है, 12वां दिन अशौच समाप्त होने के पश्चात् भी किया जाता है, षड्मासिक पर भी किया जा सकता है ।

छलुन : दसवें दिन तक छलुन आवश्यक है, यदि लड़की दसवें दिन तक छलुन का कार्य न करे तो उस को ग्यारवें बारवें दिन के क्रियाकर्म में सम्मिलित होने का अधिकार नहीं है, छलुन के लिये शुभवार होनी चाहिये, यह बात याद रखें हिन्दू संस्कृति के अनुसार सूर्योदय से सूर्योदय तक वार होती है 12 बजे रात से वार बदलती है ऐसा न मानिये, जिस समय छलुन करना हो उस समय शुभवार होनी चाहिये, शुभवार है सोमवार, बुध्वार, शुक्रवार, परन्तु बृहस्पतिवार

शुभवार होने पर भी छलुन के लिये निषेध है, पंचक भी छलुन के लिये निषेध है ।

अस्थि संचय : फूल प्रवाहित करना : मृत्यु के पश्चात दस दिन के अन्दर ही गंगा में प्रवाहित करें यदि ऐसा न हो सके तो एक वर्ष के अन्दर किसी भी दिन प्रवाहित करें ।

यदि बच्चा मरा हुआ उत्पन्न हो अथवा उत्पन्न होते ही मरे उस बच्चे को लट्ठे में लपेट कर पृथ्वी को अर्पण करें, घर से गौद में उठा कर गडढा खोदने तथा पृथ्वी में अर्पण करने के समय तक लगातार **"ॐ नमः शिवाय"** मन्त्र का बार-बार उच्चारण करें, दाँत निकलने तक जिस बच्चे का मृत्यु हो जाये उस का दाह संस्कार न करें अपितु उस को भी पृथ्वी अर्पण करें, दान्त निकलने के पश्चात जो बच्चा मरे उस का दाह संस्कार करें, यज्ञोपवीत संस्कार के बिना कोई भी लड़का किसी भी आयु का हो उस की मृत्यु होने पर दाह संस्कार के पश्चात दसवाँ दिन अवश्य करें, 11वां और बरावाँ दिन न करें, उस बालक के निमित आने वाले किसी शुभ वार पर बालकों को भी पूरी भोजनादि से तृप्त करें, उस मृतक बालक को जिन वस्तुओं पाठ्य पुस्तकों की ओर प्रवृत्ति हो किसी निर्धन–विद्यार्थी को ऐसी वस्तुयें पुस्तकें वस्त्रादि दानरूप में दीजिये, या कोई आर्थिक सहायता कीजिये ताकि उसकी पढ़ाई अगे चल सके । **श्रद्धया–देयम्–अश्रद्धया–देयम्"** देना ही प्राप्ति का मार्ग है ।

श्राद्ध : श्राद्ध की जो तिथि हो, जन्त्री में उस मास की वह तिथि देखे, यदि उस तिथि के साथ "दिवा" "दि" का चिन्ह हो तो श्राद्ध एक दिन पहले होता है, यदि प्रविष्ठ "प्र" की निशानी हो तो श्राद्ध अपने ही दिन होगा, दिवा–प्रविष्ठ के आधार से जन्त्री में, श्राद्ध और मध्यान्ह दर्ज है वहीं से देखिये ।

मासिक श्राद्ध : मासवार की जो तिथि हो उस तिथि का मध्याह्न देखना आवश्यक है, मध्याह्न श्राद्ध किस दिन का कब होगा पंचाग में दर्ज है ।

षड्‌मासिक श्राद्ध (षडमोस) मृतक के श्राद्ध की जो तिथि हो, मध्याह्न के आधार से उस तिथि का श्राद्ध कब होगा उस दिन एक दिन पहले षड्-मासिक श्राद्ध करें और निश्चित मध्याह्न के दिन मासवार करें ।

वार्षिक श्राद्ध : वहरवुर श्राद्ध देखते समय इस बात का ख्याल रखें यदि आप हर श्राद्ध में मध्याह्न देखते है तो वार्षिक श्राद्ध की तिथि में भी मध्याह्न देखिये, यदि आप मध्याह्न देखते नहीं है तो निश्चित श्राद्ध की तिथि को "दिवा" "प्रविष्ठ" के आधार से देखिये—मध्याह्न के आधार से अथवा दिवा प्रविष्ठ के आधार से जिस दिन निश्चित तिथि का श्राद्ध आयेगा उस दिन से एक दिन पहले मासवार होगी ।

श्राद्ध : के दिन अधिक भोजन न खायें, दिन को न सोयें, ब्रह्मचर्य का पालन करें, दूसरे घर में खाना न खाइये, शराब, अथवा किसी मादक द्रव्य का प्रयोग न कीजिये ।

श्राद्ध करने न करने के सम्बन्ध में : विवाह यज्ञोपवीत आदि संस्कार के पश्चात छः मास तक श्राद्ध न करें, परन्तु इस बात को भूलिये मत, यह धर्मशास्त्र की आज्ञा माता पिता के श्राद्ध पर लागू नहीं है, बल्कि माता पिता का श्राद्ध अवश्य करना चाहिये, यदि किसी पितर का श्राद्ध करना हो परन्तु तिथि मास का ज्ञान न हो तो ऐसी स्थिति में मार्गकृष्णपक्ष अमावसी के दिन श्राद्ध करें, यदि श्राद्ध करने में आप असमर्थ है तो विध्यनुसार संकल्प करें, किसी योग्यपात्र

को भोजन दक्षिणा आदि से तृप्त करें और स्वयं व्रतधारी रहिये, एक समय शुद्ध भोजन खाइये, श्राद्ध के दिन मांस का प्रयोग न करें, भगवान् व्यास का कहना है **"देवयज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणि, तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात जीवघातनम्"** **जो गृहस्थी पितृश्राद्ध विवाहादि मंगल कर्म में** जन्मोत्सव आदि में मांस का प्रयोग करता है, वह नरक में जाता है ।

श्राद्ध संकल्प विधि :–

पितृऋण चुकाने के निमित्त श्राद्ध अवश्य करें, यदि आप श्राद्ध करने में असमर्थ है ता संकल्प करें, ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है

श्राद्ध संकल्प के लिये पहले सामग्री एकत्रित करें, एक थाली में चावल थोड़ा सा नमक फल दक्षिणा आदि रखें, थोड़ा सा तिल धूप दीप फूल अर्घ पवित्र तिलक, केसर या चन्दन का तिलक जिस पितर का श्राद्ध हो उस का फोटो तिलक फूल की मालादि से सजा कर सामने रखें, यदि फोटो न हो तो भगवान् विष्णु का, अथवा भगवान् कृष्ण का फोटो रखें ।

पद्मासन में शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठिये, संकल्प करने से पहले श्रीमद्भगवद्गीता का कम से कम एक अध्याय का पाठ करें, यदि ऐसा न हो सके, तो जन्त्री के पाठ प्रकरण से अष्टादशश्लोकी गीता का पाठ अवश्य करें, उस के पश्चात् दीप धूप करें जैसा कि "कर्मकाण्डदीपक" में दर्ज है, दीपो नमः धूपो नमः तक पढकर पढ़ें:–

ॐ तत् सत्–ब्रह्म, अद्य–तावत्–तिथौ–अद्य (मास पक्षवार का नाम लेकर) जैसे वैशाख–मासस्य कृष्णपक्षस्य, (अथवा) शुक्लपक्षस्य, तृतीस्यां तिथौ–भौम–वासरा–न्वितायां–विष्णु–प्रीत्यर्थम्–दीप–धूप संकल्पात सिद्धिर्–अस्तु–दीपो नमःधूपोनमः ।

बायाँ यज्ञोपवीत रख कर : तिल सहित जल से तर्पण करते हुये पढ़े :-

नमः पितृभ्यः – प्रेतेभ्यः, नमो धर्माय विष्णवे नमो यमाय रुद्राय कान्तार पतये नमः ।

ॐ तत् सत्–ब्रह्म–अद्य–तावत्-तिथौ–अद्य (मास–पक्ष तिथि वार का नाम लेकर) पित्रे.. पितामहाय...प्रपिताम हाय । मात्रे पिता–मह्यै प्रपितामह्यै । माता महाय, प्रमाता–महाय, वृद्ध प्रमाता–महाय, मातमह्यै प्रमातामह्यै वृद्ध–प्रमातामह्यै समस्तमाता–पितृभ्यो द्वादश–दैवतेभ्यः पितृभ्यः नित्यकर्म निमतं दीपः स्वधः, धूपः स्वधः, जिस पितर का श्राद्ध हो उसी का नाम गोत्रसहित लेकर संकल्प का पानी जो आपने हाथ में लिया होगा चावल आदि पर छिडकते हुय पढ़े – ॐ तत्–सत्–ब्रह्म–अद्य–तावत्–तिथौ अद्य मास–पक्ष–तिथि-वार का नाम लेकर पढ़े :– सांवत्सरिके श्राद्धे (यदि काम्बर पछ (पितृपक्ष) का श्राद्ध हो) कन्यांकगत आपरि–पाके श्राद्धे परलोके वैकुण्ठ पदवीप्राप्त्यर्थं आत्मनः पुण्य वृद्ध्यर्थं इदं–अन्नं दक्षिणा सहितं–फल–मूलवस्त्रादि–सहितं संकल्पयामि संकल्पयामि संकल्पयामि (दायाँ यज्ञोपवीत) रखकर फिर से तर्पण करते हुये पढ़े :–

नमो–ब्रह्मणे–नमो–अस्तु–अग्नये–नमः पृथिव्यै–नमः औषधीभ्यः नमो वाचस्पतये–नमो–विष्णवे–वृहते कणोमि । इति–एतासाम्–एव–देवतानां–सारिष्टिं–सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्–आप्नोति य एवं विद्वान्–स्वाध्यायम्–अधीति ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

मांस खाना निषेध है

के सम्बन्ध में शास्त्र प्रमाण

सुरां मत्स्यान् मधु-मांसम्-आसवं कृत्सरौदनम् धूर्तैः प्रवर्तितं धर्मं नैतत् वेदेषु कल्पितम् ।।

भगवान् व्यास कहते हैं :– शराब पीना, मछली खाना, माससहित तेल वाला बता (तहर चरवन आदि) खाना अथवा देवता को अर्पण करना यह धर्म है, यदि कहीं ऐसा दर्ज है – तो जानना चाहिये यह धर्म ठगों ने चलाया है – वेदों में मांसखाना विधि है कहीं दर्ज नही है ।

प्रमाणीकृत्य-शास्त्राणि ये वधः क्रियतेऽधमैः लभते परलेके ते श्वभ्रे शूलाधिरोहणम् ।।

अर्थ : शास्त्रों के प्रमाण दे दे कर जो दुरात्मा पशुओं को मरवाते हैं उन्हें परलोक में शूली पर अवश्य चढ़ाया जायेगा

महाभारत– **यदि चेत् खाद को न-स्यात् नतदा घातको भवेत् घातकः खाद-कार्याय तत् घातयति वै नरः ।।3।।**

अर्थ : यदि मांस भक्षक न हो तो मारने वाला नहीं होगा अतः जो मांस खाता है वही पशु हिंसा का प्रेरक है ।

यत्र प्राणि-वधो धर्मः अधर्मस्तत्र कीदृशः, ब्राह्मणो यत्र मांसाशी चण्डालस्तत्र कीदृशः

याज्ञवल्क्य सर्वान् कामान् अवा प्रोति हयमेधफलं तथा, गृहेपि न्निवसन् विप्रो मुनिर्मांस-विवर्जनात् ।।4।।

जहाँ प्राणिहत्या धर्म माना जाता है, अधर्म के विषय में वहाँ क्या कहा जाय, जहाँ ब्राह्मण ही मास खाता हो, वहाँ चण्डाल कैसा होगा । बाह्मण मांस के न खाने से सब कामनाओं को सिद्ध करता है, घर पर निवास करने पर भी मांसत्यागी ब्राह्मण मुनि के समान है ।

किं-जाप होम-नियमै स्तीर्थस्नानैश्च भारत ! यदि खादिन्त मांसानि सर्वमिव निरर्थकम् ।।5।।

जप होम नियमपालन गंगादितीर्थों में स्नान करने से मांसभक्षण करने वालो को कोई लाभ नही बल्कि उनका वह जप नियमादि निरर्थक है ।।

महाभारत– यावंति पशुरोमाणि पशुगात्रेषु-भारत तावत् वर्ष सहस्राणि पच्यते नरके नरा ।।6।।

हे भारत ! पशु के शरीर में जितने रोम है उतने हजार वर्ष के हिसाब से पापी मांसाहारी नरक में दुःख भोगता है ।।6।।

मधुमांसे प्राश्य-आलभ्य वा शरीरं पुनव्रतम्-आलभेथाः

अर्थः जो ब्राह्मण अथवा ब्रह्मचारी मांस खाये अथवा मांस का स्पर्श करे उसको नया यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिये

।। जप निषेद ।।

क्व क्व मांस क्वास्ति वै भक्तिः क्व-मद्यं क्व शिवार्चनम् मद्यमांसानुरक्तानां दूरे तिष्ठति शंकरः ।

अर्थ : कहाँ मांस खाना कहाँ भक्ति (पाठ पूजा करना) कहाँ शिवपूजा और कहाँ मांस और शराब का सेवन । मधु मांस खाने वालों से शंकर दूर भागता है ।

महाभारत– **सर्व-मांसानि यो राजन् । यावत् जीवं न भक्षयेत । वर्गे स विपुलं स्थानं प्राप्नुयात् नात्र संशयः ।।**

हे राजन्–जो पुरुष जीवन भर मांस नहीं खाता है, निसंदेह वह स्वर्ग की गति पाता है और वहाँ भी ऊँचा स्थान प्राप्त करता है ।

देवयज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणि तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात जीवघातनम्

अर्थ : देवयज्ञ पर पितृश्राद्ध पर तथा किसी मंगल कर्म (जन्मदिन आदि पर) जो मांस का प्रयोग अथवा किसी प्रकार की हिंसा करता है, उसे नरक मिलता है ।

दशांश जप अथवा करमाला जप

अंगलियों के पर्वो (गाँठो) पर भी जप किया जाता है जिसे करमाला जप अथवा दशांश जप कहते है। हाथ के चित्र से आपको ज्ञात होगा। 'दो पर्व' मध्यमा के जप में छोडे गए हैं यह करमाला के 'सुमेरु' माने गए है, जैसे जप की माला में बड़ा दाना 'सुमेरु' होता है ऐसे ही हाथ में यह पर्व है, जैसे सुमेरु को छोड़ कर जप किया जाता है उसी प्रकार हाथ में यह दो पर्व छोडे जाते है।

ओ3म्–भूर्भुवःस्वः, तत्–सवितुर्–वरेण्यं
भर्गो–देवस्य–धीमहि, धियो–यो– नः प्रचोदयात्

मन्त्र प्रकरण (मन्त्र–तन्त्र–यन्त्र)

आज विज्ञान का युग है कोई भी बात विज्ञान की कसौटी पर जब खरी उतरे तो स्वीकार की जाती है, भारतीय ऋृषियों ने मन्त्रों की रचना में जिस वैज्ञानिक दृष्टि को सामने रख के कार्य किया है वह बहुत ही आश्यर्चजनक है ।

आज के साईनसी दौड़ में ऐसे तजरुबे हो रहे है जिसमें यह धारणा दृढ़ होती जाती है कि औषधि तथा बिजली से बढ़ कर "ध्वनि" से रोगी स्वस्थ हो जाते है, मन्त्रों में ऋृषियों ने अक्षर ऐसे जोड़े हुए हैं जिस प्रकार धातु और रसायनिक पदार्थों को विध्यनुसार मिलाने से बिजली प्रकट होती है उसी प्रकार मन्त्रों के अक्षर जोड़े गये है जिनसे उनमें आश्चर्यजनक शक्ति उत्पन्न होती है ।

मन्त्रों के जप का फल है मनुष्य में छुपी हुई शक्तियों को जगा कर अपने तथा दूसरों के उपकार के लिए प्रयोग में लाना ।

मन्त्रमार्ग की तीन धारणायें हैं ।

मन्त्र– एक सूक्ष्म तत्व है जिसके द्वारा प्रकृति को वश में किया जाता है । **तन्त्र**–आज के समाज में तन्त्र शब्द से जादू टोना समझते हैं, परन्तु ऐसे रूप में प्रयोग करना अथवा ऐसा समझना गलत है । **तन्त्र**–जिस ग्रन्थ में देवताओं के गुण कर्म तथा पूजन का विधान हो वह तन्त्र ग्रन्थ कहलाता है, आत्म साक्षात्कार जिस साधना से शीघ्र होता है **तन्त्र** – कहलाता है, जिस साधना से मनुष्य के भय की रक्षा की जाती है तन्त्र कहलाता है । **यन्त्र**–इष्ट देवता की रेखाओं वर्णों तथा संख्या के रूप में बनाई गई साकार मूर्ति यन्त्र कहलाता है, यन्त्र की मूर्ति प्रायः धातु की अथवा भोजपत्र पर बनाई जाती है, पूजा–यन्त्र अथवा धारण–यन्त्र के रूप में यन्त्र की पूजा की जाती है ।

बीज अक्षर

जिस प्रकार बीज में सूक्ष्मरूप से वृक्ष छुपा रहता है परन्तु वह देखतने में नहीं आता है, अच्छी जमीन, वायु, जल खाद मिलने पर उस बीज में से पुष्प, पत्ते फल निकल पड़ते है, उसी प्रकार 'बीज अक्षरी' में गुप्त रूप में शक्ति छुपी हुई होती है, बीज अक्षर हैं जैसे :-ह्रैं श्रीं क्रीं आदि ।

वेदमाता गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् ।

शताक्षरी गायत्री

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात । ॐ जातवेदसे सुन्वाम सोमस्अराती यतो निदहाति वेद : । स नः पर्षद्ऽति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।
ॐ त्रयम्बकं यजमहे सुन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात ।

अजपा गायत्री "सोहम्"

हमारे श्वास उश्वास में रात दिन एक महामंत्र "सोहं मंत्र का जप चलता रहता है, उसी को शास्त्रों में 'हंस मंत्र' अथवा 'हंस गायत्री" कहते है, इस सोहं जप को ही अजपा गायत्री कहते है, सोहं से जब 'स' और 'ह' का लोप होता है तो 'ओउम्' मंत्र बाकी रहता है, इस ॐ स्वयं सिद्ध मन्त्र का लगातार जप करने से भी सभी सिध्दियाँ प्राप्त होती है ।

एकाक्षरी गणपति मंत्र

"ॐ गं ॐ"

मृतसंजीवनी मंत्र (शुक्राचार्य द्वारा उपासित)

इस मंत्र के जप से असाध्य रोगों की निवृत्ति होती हैं :-

ॐहौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं, ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्,- ॐ भर्गो देवस्य धीमही, ॐ उर्वारुकमिव बन्धनाद्, ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्, ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ ।

उपरिलिखित मन्त्र से शिवलिंग पर दूध सहित जल चढ़ाने से रोगी को शीघ्र आराम मिलता है ।

सूर्य उपासना

शास्त्रों में दर्ज है सूर्य से आरोग्य की कामना करें । प्रातः नहाने तथा मुख प्रक्षालन के पश्चात् सूर्य की ओर मुख करके प्रणाम करते हुये पढ़ें :–

ॐ मित्रायः नमः । ॐ र–वये नमः । ॐ सूर्याय नमः । ॐ भानवे नमः ।
ॐ खगाय नमः । ॐ पूष्णे नमः । ॐ हिरण्यगर्भाय नमः । ॐ मरीचये–नमः ।
ॐ आदित्याय नमः । ॐ सवित्रे नमः । ॐ अर्काय नमः । ॐ भास्कराय नमः ।
ॐ मित्र–रवि–भानु–खग–पुष्प–हिरण्यगर्भ–मरीच्यादित्य सवित्रार्क–भास्करेभ्योनमः

"असाध्य रोग निवृत्ति मंत्र"

रोगान्–अशेषान्–अपहंसि–तुष्टा रुष्टा तु कामान्–सकलान्–अभीष्टान् ।
त्वाम्–आश्रितानां न विपत्–नराणाम् त्वाम्–आश्रिता ह्यश्रियतां प्रयान्ति ।।

"दुर्गा सप्तशती का सारभूत मंत्र

हर गृहस्थ में इस मन्त्र की गूंज होनी चाहिये इस मन्त्र के बार बार उच्चारण करने से लक्ष्मी, सतबुद्धि श्रद्धा, लज्जा, सत् गुणों की प्राप्ति होती है :-

"या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः, श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा, तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि ! विश्वम्"

नवग्रह मन्त्र

"**सूर्य**" ओउम् ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः । "**चन्द्र**" ओउम् श्रीं श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः ।
"**भौम**" ओउम् क्राँ क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः । "**बुध**" ओउम ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ।
"**वृहस्पति**" ओउम् ग्राँ ग्री ग्रौं सः गुरवे नमः । "**शुक्र**" ओउम द्राँ द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः ।
"**शनि**" ओउम् प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः । "**राहु**" ओउम भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः ।
– केतु ओउम् प्राँ प्रीं प्रौं सः केतवे नमः ।

नवग्रहों के लघुमन्त्र (छोटे तथा आसान मन्त्र)"

"सूर्य" ओ3म् रं र–वये नमः । "चन्द्र" ओ3म् सौं सोमाय नमः । "भौम" ओ3भौं भौमाय नमः । "बुध" ओ3म् बं बुधाय नमः । "गुरु" ओ3म् गुं गुरवे नमः । शुक्र" ओ3म् शुं शुक्राय नमः । "शनि" ओ3म् शं शनैश्चराय नमः । "राहु"ओ3म् राम् राहवे नमः । "केतु" ओ3म् कैं केतवे नमः ।

बारह राशियों के मन्त्र

"मेष" ओ3म् हीं श्रीं श्रीलक्ष्मीनारायाणाय नमः । **"वृष"** ओ3म् गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः ।
"मिथुन" ओ3म् क्ली कृष्णाय नमः । **"कर्क"** ओ3म् ह्रीं हिरण्यागर्भाय अव्यक्तरूपिणे नमः ।
"सिंह"ओ3म् क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः । **"कन्या"** ओ3म् पीं पीताम्बराय नमः ।
"तुला" ओ3म् तत्त्वनिरंजनाय तारक रामाय नमः । **"वृश्चिक"** ओ3म् नारायणाय सूरसिंहाय नमः ।
"धनु" ओ3म् श्रीं देवकृष्णाय ऊर्ध्वजाय नमः । **"मकर"**ओ3म् श्री–वत्सलाय नमः ।
"कुम्भ" ओ3म् श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः ।। **"मीन"** ओ3म् क्लीं उद्धृताय उद्धारिणे नमः ।

नोट :– जिस राशि मे ग्रह अनिष्ट हो उस ग्रह के मंत्र हमने दर्ज किये हैं उसके अतिरिक्त अपनी राशि के मन्त्र का जाप करने से शुभ फल प्राप्ति में अधिक समय नहीं लगता है ।

सर्वकामनासिद्ध मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये ममवरद सर्वजनं मे वशं–आनय स्वाहा ।

हर प्रकार के मंगल प्राप्ति का मन्त्र

सर्व मंगल मंगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके, शरण्ये त्रयम्बके, गौरि नारायणि नमोस्तुते

विपित्ति नाश का मंत्र

शरणागत दीनार्त–परित्राण परायणे, सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते ।

(सभी उलझनों से छुटकारा पाने का मंत्र)

सर्वाबाधा–विनिर्मुक्तो, धनधान्य–समन्वितः, मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति–न संशयः ।

भय नाश का मंत्र

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति–समन्विते भयेभ्यस्त्राहि नो देवि ! दुर्गे देवि नमोस्तुते ।

आरोग्य तथा सौभाग्य मंत्र

देहि सौभाग्यम्–आरोग्यं देहि में परमं सुखम् रूपं देहि जयं–देहि यशो देहि द्विषो जहि ।

विद्या प्राप्ति का मन्त्र

कृष्ण कृष्ण महाकृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे रमा–रमण विश्वेश, विद्याम्–आशु प्रयच्छ मे ।।

हर प्रकार के उलझनों से मुक्त होने के लिए शीघ्र सिद्धि देने वाला शिव मंत्र –

भगवान् शंकर के डमरु से प्राप्त 14 सूत्रों का एक ही श्वास में बोलने का अभ्यास करें –शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इस मन्त्र का उच्चारण किया जात है, बुखार मृगी आदि बोहोशी के रोग के समय इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये छीटें दिये जाने से रोग की निवृत्ति होती हैं :–

मन्त्र– अ इ उण् । ऋ लृक् । ए ओङ् । ऐ औच् । ह य व र ट् ।
लण् । ञ, म, ङ ण नम् । झ भ ञ् घ ड ध श । ज ब ग ड् – द
श । ख फ छठ थ – च ट, तव् । क, प, य् । शष सर् । हल् ।

संतान प्राप्ति का मंत्र

देवकी सुत गोविन्द ! वासुदेव जगत्पते
देहि मे तनयं कृष्ण ! त्वाम्–अहं शरणं गतः ।

जातक मिलाप – प्रकरण

बल देखने की विधि :–लग्न और चन्द्रमा से वर वधू की जन्मकुण्डली के पहले चौथे, 7वें, 8वें 12वें घर में जितने पापग्रह होंगे उतने बल मानिये, एक पापग्रह का एक बल माना जाता है । बृहस्पति और शुक्र एक घर में इकट्ठे हों तो उसका भी एक बल मानिये । यदि लडके की जन्म कुण्डली में शुक्र से चौथे, 8, वें घर में कोई पापग्रह हों तो उतने बल लड़के के और मान लीजिये । राक्षस जाति का भी एक बल मानिये ।

नक्षत्र नाम – अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्री, पुनर्वसु तिष्या अश्लेषा मघा, पूवीफाल्गुणी, उत्तराफल्गुणी, हस्त चित्रा, स्वाति, विशाखा अनूराधा ज्येष्ठा, मूला, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठ, शतमिषक् पूवीभाद्रपद्, उत्तराभाद्रपद्, रेवती ।

षष्टाष्टक नवपंचक द्विद्वादशी

लड़के अथवा लड़की राशि से गिनने पर आठवीं और छटी राशि षष्ठाष्टक कहलाती है, ऐसे ही एक की राशि से दूसरे की राशि तक गिनने पर नवीं और पाँचवी राशि नवपंचक कहलाती है, दूसरी और बारवीं राशि **द्वि–द्वादशी**कहलाती है, जैसे लड़के या लड़की राशि मेष और वृश्चिक, मिथुन और मकर हो तो आपस में षष्टाष्टक होगी – आप निम्नलिखित चक्र में देखिये :–

राशि कूट चक्र

मित्र षटाष्टक मेष और वृश्चिक, मिथुन+मकर, सिंह और मीन, तुला और वृश्चिक, धनु और कर्क, कुम्भ+कन्या
शत्रु षष्टाष्टक वृष और धनु, कर्क और कुम्भ, कन्या और मेष वृश्चिक–मिथुन, मकर और सिंह मीन+तुला

मित्रनवपचक	मेष+सिंह	मिथुन+तुला	सिंह+धनु	तुला+कुम्भ	धनु+मेष	कुम्भ+म.
शत्रुनवपंचक	वृष+कन्या	कर्क+वृश्चि	कन्या+मकर	वृश्चिक+मीन	मकर+वृष	मीन+कर्क
मित्रद्विद्वादशी	मेष+मीन	मिथुन+वृष	सिंह+कर्क	तुला+कन्या	धनु+वृश्चिक	कुम्भ+मकर
शत्रुद्विद्वादशी	मेष+वुष	मिथुन+कन्या	सिंह+कन्या	तुला+वृश्चि	धनु+मकर	कुम्भ+मीन

देखने की विधि :–मेष राशि की वृश्चिक राशि के साथ षष्टाष्टक ऐसे ही मिथुन और मकर की षष्टाष्टक होगी । **नोट** :– मित्रषष्टाष्टक, मित्रनवपंचक, मित्रद्विद्वादशी निषेध नहीं – बल्कि शुभफलदायक ही होती है ।

नाडी देखने का चित्र

आद्य नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उफा	हस्त	ज्येष्ठा	मूला	शत	पूभा
मध्य नाडी	भर	मृग	तिष्या	पूफा	चित्रा	अनू	पूषा	धनि	उभा
अन्त्य नाडी	कृति	रोहि	अश्ले	मघा	स्वाति	विशा	उषा	श्रव	रेव

नाडी देखने की विधि :– जन्मपत्री मिलाने के लिये दोनो वधूवर का नक्षत्र अवश्य मालूम होना चाहिये । यदि दोनों का नक्षत्र आद्य नाडी की पंक्ति में हो तो आद्य नाड़ी दोष होता है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र मध्यनाड़ी की पंक्ति मे हो तो मध्यनाडी दोष होता है, यदि दोनों वरवधू का नक्षत्र अन्त्य नाडी की पंक्ति में हो तो अन्त्य नाडी दोष होता है । मध्यनाडी दोष विशेष हानिकारक माना जाता है । नाडी होने पर भी यदि नक्षत्र का याद भिन्न भिन्न याद हो तो नाडी दोष नही होता है ।

देव जाति - मनुष्य जाति - राक्षस जाति

देव जातिः-	अनू	मृग	श्रवण	पुनर्व.	रेवती	स्वाति	हस्त	तिष्या	अश्वि
मनुष्य जाति	पूषा	पू. फा.	पू. भा.	उ. भा.	उ. फा.	उषा	रोहि	भर	आर्द्रा
राक्षस जाति	मघा	अश्ले	धनि	कृति	ज्येष्ठा	मूला	शत	चित्रा	विशा

देखने की विधिः- अनूराधा नक्षत्र होने पर देवजाति, ऐसे ही पूर्व फाल्गुणी नक्षत्र के लिये मनुष्य जाति, मघा नक्षत्र की राक्षस जाति :-

देवजाति + राक्षस जाति = मध्यम,	मनुष्यजाति + देव जाति = शुभ
राक्षस जाति + देव जाति = मध्यम	देव जाति + मनुष्य जाति = शुभ
राक्षस जाति + मनुष्य जाति = अशुभ	मनुष्य जाति + राक्षस जाति = अशुभ

दोनों लड़के तथा लड़की की एक ही जाति का होना शुभफल होता है, विशेषतया यदि लड़की की जाति राक्षस हो और लड़की की मनुष्य, जाति, तो विशेष हानिकारक होती है ।

जातक मिलाप सारिणी

वधु लड़की	वर → लड़का	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अ	भ	कृ	कृ	रो	मृ	मृ	अ	पुं	पुं	ति	अ	मं	पू	उ	उ	ह	चि
मेष	अश्वि	28	33	28	18	24	23	26	17	18	23	31	27	2	24	15	11	10	13
	भर	33	28	29	18	27	15	18	26	26	31	24	25	19	17	24	19	19	6
	कृति	27	28	28	18	10	17	20	20	20	25	27	23	16	19	20	15	15	19
वृष	कृति	19	19	19	28	19	27	17	17	17	21	23	19	19	22	22	20	18	23
	रोहि	24	24	11	20	28	36	27	23	22	26	27	13	11	25	27	26	26	19
	मृग	24	15	19	27	35	29	19	24	23	26	19	21	20	16	25	23	26	12
मिथुन	मृग	27	18	21	19	26	20	28	33	31	20	11	15	24	21	29	31	34	20
	आर्द्रा	19	27	22	19	25	26	34	28	25	12	21	13	22	28	21	25	25	27
	पुन	19	26	22	19	22	23	32	24	28	14	21	16	22	26	20	24	25	27
कर्क	पुन	22	29	25	21	24	25	18	10	13	28	34	29	17	21	15	17	18	20
	तिष्या	30	21	27	23	25	18	11	19	24	34	28	29	19	15	24	26	26	12
	आश्ले	25	23	22	19	12	21	13	12	15	29	29	28	15	16	18	21	20	26
सिंह	मघा	19	19	16	17	11	18	21	21	20	17	19	16	28	30	27	15	15	20
	पूफा	25	17	19	20	24	16	19	27	26	23	17	17	30	28	34	24	21	6
	उफा	19	27	22	23	27	26	29	22	22	17	26	20	27	34	28	18	17	15
कन्या	उफा	11	21	16	21	26	24	32	22	24	18	28	21	16	23	17	28	27	25
	हस्त	11	19	16	21	24	25	32	29	24	18	27	22	16	21	15	26	28	28
	चित्रा	13	5	19	23	19	11	25	26	25	20	12	26	20	7	14	25	27	28

जातक मिलाप सारिणी

जातक मिलनावंच सारणं

वधू लड़की ↓	वर लड़का →	तुला चित्रा स्वाति विशा	वृश्चिक विशा अनू ज्येष्ठा	धनु मूला पूषा उषा	मकर उषा श्रव धनि	कुंभ धनि शत पूभा	मीन पूभा उभा रेव
मेष	अश्वि	23 27 22	19 27 15	13 25 23	25 26 21	21 15 16	15 24 26
	भर	15 28 21	19 18 20	20 18 26	28 26 10	10 20 24	23 17 26
	कृति	28 14 19	17 20 26	25 19 12	14 14 25	25 26 18	18 20 13
वृष	कृति	22 9 14	22 25 30	22 15 7	12 11 25	29 30 23	20 22 13
	रोहि	18 15 8	15 30 24	14 20 11	16 18 19	25 24 29	26 27 19
	मृग	11 25 17	24 22 25	15 11 17	22 26 12	18 26 28	25 18 27
मिथुन	मृग	13 27 20	13 13 14	23 19 25	20 24 10	12 21 23	24 17 26
	आर्द्रा	20 27 20	14 19 5	15 28 27	22 23 17	19 12 17	19 26 26
	पुन	20 27 21	15 21 6	14 27 27	22 23 17	19 13 16	18 27 26
कर्क	पुन	19 27 21	19 25 11	8 21 21	26 27 21	12 6 10	16 25 25
	तिष्या	11 25 21	19 17 21	18 13 21	26 27 13	4 13 18	26 18 26
	अश्ले	26 12 17	16 2 26	23 16 8	13 13 26	17 18 11	18 20 22
सिंह	मघा	24 11 16	25 25 32	24 19 9	4 5 18	24 25 18	18 19 12
	पूफा	10 25 18	24 23 25	20 17 24	19 19 6	10 11 24	24 27 25
	उफा	18 27 18	25 24 17	9 25 25	20 20 12	18 11 16	16 27 25
कन्या	उफा	17 26 17	18 26 12	14 30 30	24 24 16	17 10 15	17 28 26
	हस्त	20 27 19	20 26 14	15 27 29	23 24 18	16 11 14	16 26 26
	चित्रा	19 12 26	27 11 25	27 13 21	16 17 15	16 24 17	19 10 19

जातक मिलाप सारिणी

जातक मिलनावंनच सारण

लड़की ↓	लड़का →	मेष अश्वि	मेष भर	मेष कृति	वृष कृति	वृष रोहि	वृष मृग	मिथुन मृग	मिथुन आद्री	मिथुन पुंन	कर्क पुंन	कर्क तिष्या	कर्क अश्ले	सिंह मघा	सिंह पूभा	सिंह उफा	कन्या उफा	कन्या हस्त	कन्या चित्रा
तुला	चित्रा	22	14	28	23	19	11	12	20	19	19	11	25	25	11	18	18	20	20
	स्वाति	28	30	18	13	17	27	27	26	27	28	28	16	14	26	26	26	28	21
	विशा	21	22	20	15	9	17	19	20	20	21	21	17	17	19	18	18	19	26
वृश्चिक	विशा	17	17	19	20	14	22	11	13	13	18	18	15	25	23	22	17	18	26
	अनू	24	15	19	24	28	11	10	15	20	25	17	20	25	21	29	24	25	11
	ज्येष्ठा	10	18	23	29	23	30	12	2	4	10	20	25	31	24	16	11	11	24
धनु	मूला	12	19	25	20	13	13	21	14	12	8	18	23	24	18	20	13	13	26
	पूषा	26	19	18	13	19	11	19	27	27	23	15	17	19	17	25	29	27	12
	उषा	24	26	12	6	10	17	25	26	27	23	23	9	9	24	25	29	29	20
मकर	उषा	27	29	15	12	16	23	19	25	22	28	28	14	5	20	21	24	24	16
	श्रव.	28	27	15	12	17	26	23	20	22	28	28	24	6	19	20	23	24	17
	धनि	20	11	26	24	19	11	8	16	15	21	13	27	19	5	11	16	17	15
कुम्भ	धनि	20	11	25	30	26	18	11	18	17	12	4	18	25	18	19	18	19	17
	शत	15	21	27	31	25	27	20	12	12	7	13	19	26	20	12	11	11	25
	पूभा	18	25	20	24	30	30	24	17	17	12	20	12	19	25	17	16	16	18
मीन	पूभा	15	21	17	19	26	26	24	18	18	17	25	18	17	23	15	16	16	18
	उभा	24	16	19	21	26	18	17	25	27	26	19	20	18	15	26	27	26	9
	रेव	25	24	11	13	17	26	25	24	25	25	26	13	12	23	23	24	25	19

जातक मिलाप सारिण

जातक मिलनावनच सारण

लड़की ↓	लड़का →	तुला चित्रा स्वाति विशा	वृश्चिक विशा अनु ज्येष्ठा	धनु मूला पूषा उषा	मकर उषा श्रव धनि	कुंभ धनि शत पूभा	मीन पूभा उभा रेव
तुला	चित्रा	28 27 34	23 7 21	27 13 21	24 25 23	18 26 19	12 3 12
	स्वाति	28 28 20	10 24 19	23 27 19	23 26 21	21 22 25	19 19 11
	विशा	34 19 28	16 16 22	28 21 13	16 16 30	24 26 20	14 13 4
वृश्चिक	विशा	22 7 15	28 27 32	22 16 8	11 11 25	24 26 20	19 18 10
	अनु	7 21 16	28 28 31	16 14 22	25 26 12	11 20 25	24 18 26
	ज्येष्ठा	20 15 19	32 30 28	14 17 17	20 20 25	24 17 10	10 20 10
धनु	मूला	26 21 26	23 17 16	28 28 16	14 15 19	29 22 15	17 25 26
	पूषा	12 27 20	17 16 18	27 28 34	22 23 6	15 24 29	30 23 31
	उषा	20 19 12	9 24 18	25 35 36	22 23 6	15 24 29	30 31 23
मकर	उषा	23 22 15	12 27 21	15 24 17	28 27 26	16 17 22	30 31 23
	श्रव.	24 22 15	12 27 21	14 23 15	26 28 27	17 18 21	29 23 24
	धनि	29 24 29	26 12 26	21 7 15	26 27 28	17 26 18	25 15 23
कुम्भ	धनि	18 20 25	25 11 25	30 16 24	17 18 18	28 33 28	17 17 14
	शत	26 21 26	27 20 18	25 25 25	17 18 24	23 28 29	8 15 16
	पूभा	19 26 20	21 27 11	15 30 20	23 23 18	27 19 28	16 22 20
मीन	पूभा	11 19 13	19 25 10	14 29 29	29 23 15	16 7 15	28 33 31
	उभा	2 19 12	18 18 20	24 22 20	30 30 15	6 15 21	33 28 33
	रेव	12 10 4	11 26 21	26 29 21	24 22 23	14 16 15	20 33 28

वधूवर मिलाप सारिणी देखने की विधि

जन्मपत्री मिलान के लिये वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्र, गण, भकूट, नाडी यह आठ मानिये पर्चे होते हैं, यदि वर्ण आपस में (वधू वर का) मिले तो एक गुण (मानिये 1 अंक मिलता है, जब वश्य का आपस में मिलान होगा, तो उस के दो अंक यानी 2 गुण मिलते है ऐसे ही क्रमशः तारा के मिलान में 3 गुण, योनि के मिलान में 4 गुण होते हैं– यानि 8 पर्चों में क्रमशः 1+2+3+4+5+6+7+8 गुण कुल मिलाकर 36 गुण होते हैं, वधूवर के मिलान में 36 में से 18 गुण मिले तो विवाह शुभफलदायक होगा ।

सारिणी देखने की विधि : सारिणी देखने के लिये दोनों (वरवधू) लडके, लडकी की जन्मराशि का ज्ञान होना आवश्यक है, मानिये लडके की राशि है मेष और लड़की की राशि है मिथुन । मेष राशि वाले का नक्षत्र होगा अश्विनी, भरणी अथवा कृतिका, ओर मिथुन राशि वाले का नक्षत्र होगा मृगशिर, आद्री पुनर्वसु, **सारिणी में देखिये** – हर राशि के नीचे नक्षत्र लिखा है ।। उदाहरण के रूप में मानिये लड़के की राशि है मेष और लड़की की राशि है मिथुन । मेष राशि वाले का नक्षत्र होगा अश्विनी, भरणी अथवा कृतिका और मिथुन राशि वाले का नक्षत्र होगा मृगशिर, आद्री पुनर्वसु, सारिणी में देखिये – हर राशि के नीचे नक्षत्र लिखे है । **उदाहरण :** के रूप में मानिये लडके की राशि है मेष और नक्षत्र है भरणी, ऐसे ही लड़की की राशि है मिथुन मानिये नक्षत्र है मृगशिर– सारिणी में देखिये :– भरणी

नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और मृगशिर की पड़ी पंक्ति जहाँ आपस में मिलती हैं वहाँ सारिणी में 18 इस चिन्ह में 18 दर्ज है, यानी वधूवर के मिलान में 18 गुण हैं, इसलिये यह मिलान शुभ है । **दूसरा उदाहरण** देखिये, लडके की राशि है सिंह और नक्षत्र है मघा, लड़की की राशि है कन्या और नक्षत्र है "हस्त" सारिणी में देखिये "मघा" नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और हस्त की पड़ी पंक्ति का मिलान 16 इस निशान पर है वहाँ केवल 16 गुण मिलते हैं अतः मिलाप शुभ नहीं होगा ।

मंगल दोष विचार

1. **शनि भौमोथवा कश्चित् पापोवा तादृशोभवेत् तेष्वेव भवनेषु भौम दोष विनाशकृत्।।**
जिस जन्म कुण्डली में वह लड़की की हो या लड़की की 1, 4, 7, 8, 12 वें घर में यदि मंगल हो उसे के जवाब में, जन्मचक्र से अथवा राशि चक्र से कोई क्रूरग्रह (यह आवश्यक नही मंगल ही हो) सूर्य, भौम, शनि राहु, इन्ही घरों में यानी 1, 4, 7, 8, 12 वाँ हो तो मंगल का दोष नही होता है ।

2. **"अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे, द्यूने मृगे कर्किचाष्टे भौम दोषो न विद्यते ।।"**
लडके अथवा लड़की की कुण्डली में, लग्न में मेष राशि का मंगल हो, वृश्चिक का मंगल चौथा हो, मकर राशि में सातवाँ हो, कर्क का आठवाँ हो, धनु राशि का बारवाँ हो तो भौम का यानी मंगल का दोष नहीं होता है ।

3. **सप्तमस्थो यदा भौमो गुरुणा च निरीक्षितः तदातु सर्वसौरण्यं स्यात् मंगलीदोष नाशकृत।**

यदि सातवाँ मंगल हो, उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल का दोष नहीं होता है ।

4. **भौम यदि वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु के घर में हो तो मंगल का दोष नही होता है ।**

नाडी दोष अपवाद

1. लड़के अथवा लडकी का नक्षत्र यदि रोहिणी मृगशिर तिष्या कृतिका, उत्तराभाद्रपद्, श्रवण, आद्री तथा ज्येष्ठा हो तो नाड़ी दोष नही होता है ।

2. यदि लडके लड़की में से एक की राशि कन्या और दूसरे की मिथुन, एक की धनु दूसरे की मीन, एक की तुला, दूसरे की राशि वृष हो तो नाड़ी दोष नही होता है ।

3. वर तथा कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग हो तो नाड़ी दोष नही होता है ।

4. नाड़ी दोष होने पर यदि पाद भेद हो तो भी नाड़ी दोष नहीं होता है ।

5. वर और वधू के राशि स्वामियों अथवा नवांश स्वामियों की यदि आपस में मित्रता हो– तो राक्षस जाति तथा षष्ठाष्टक आदि का दोष नही होता है ।।

यात्रा प्रकरण

यात्रा के लिये उत्तम नक्षत्र

अश्विनी, पुनर्वसु, अनूराधा, तिष्या, मृशिर, रेवती हस्त, धनिष्ठा ।

यात्रा के लिये निषेध नक्षत्र

भरणी, कृतिका, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति, विशाखा ।

यात्रा के लिये नक्षत्र मध्यम

रोहिणी, उत्तराफाल्गुण, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभाद्रपद, पूर्वाफा, पूर्वाषा, ज्येष्ठा, मूला, शतभिषक ।

यात्रा के लिये अशुभ योग

कालदण्डः, धौम्य :, ध्वांक्षः, उन्मूलम्, मुमलम्, मुद्गरम्, काण्डः, क्षयः, शूलम् ।

यात्रा के लिये अशुभ चन्द्रमा

अपनी राशि से हानिकारक चन्द्रमा चौथा, आठवाँ, बारवाँ ।

यात्रा को जाना यदि आवश्यक हो

बृहस्पति, शुक्रवार, रविवार, को रात्रि में यात्रा को जाने में कोई दोष न मानिये , ऐसे ही सोमवार, शनिवार और मंगलवार – इन तीन वारों का दोष दिन को न मानिये ।

वार दोष निवारण के लिये

रविवार को पान खाकर यात्रा को जायें, सोम्वार को दूध अथवा खीर, मंगलवार को आँवला अथवा कांजी खट्टी पदार्थ, बुध्वार को मीठा, बृहस्पति बार को दही शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को उडद अथवा तहर ।

घातचन्द्र घातवार

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
1	5	9	2	6	10	3	7	4	8	11	12	चन्द्र
रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र	वार

मेष राशि वालों के लिए पहला चन्द्रमा घात चन्द्रमा है, ऐसे ही रविवार भी घातवार है, घातचन्द्रमा केवल यात्रा के लिये निषेध है ।

यात्रा के लिये उत्तम योगिनी तथा चन्द्रमा

दिशा	वार	बायें योगिनी	पीछे योगिनी	सम्मुख चन्द्रमा	दायां चन्द्रमा
पूर्व	रवि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र,	द्वितीया दशमी,	षष्ठी चतुर्द	मेष, सिंह , धनु	मकर, कन्या, वृष ,
पश्चिम	सोम, बुध, गुरु, शनि	पंचमी, त्रयो.	प्रतिपदा, नवमी	मिथुन, तुला, कुंभ	कर्क, वृश्चि, मीन
दक्षिण	सौम, भौम, बुध, शुक्र,	प्रतिपद नवमी	द्वितीया, दशमी	मकर, कन्या, वृष,	मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर	सोम, शुक्र, शनि, रवि,	षष्ठी, चतुर्द	पंचमी, त्रयोदशी	कर्क, वृश्चिक, मीन	मेष, सिंह, धनु

यात्रा के लिये

(चतुर्घटिका मुर्हूत का चित्र)

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरूवार	शुक्र	यानि	+घ.मि.
कष्ट	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चिन्ता	कष्ट	+ 1.30
कष्ट	कष्ट	कष्ट	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	+ 3.00
लाभ	शुभ	कष्ट	कष्ट	कष्ट	अमृत	रोग	+ 4.30
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	कष्ट	कष्ट	कष्ट	+ 6.00
कष्ट	कष्ट	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	कष्ट	+ 7.30
शुभ	कष्ट	कष्ट	कष्ट	अमृत	रोग	लाभ	+ 9.00
रोग	लाभ	शुभ	कष्ट	कष्ट	कष्ट	अमृत	+ 10.30
कष्ट	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	कष्ट	कष्ट	+ 12.00

देखने की विधि :– यह चार घड़ियों वाला (चर्तुघटिका) मुहूर्त भी होरा मुहूर्त की तरह प्रयोग में लाया जाता है जैसे आपने रविवार को दक्षिण दिशा की ओर जाना ज़रूरी है परन्तु रविवार को दक्षिण दिशा की ओर जाना निषेध है । मानलीजिये आपने 17 अप्रैल को दक्षिण दिशा की तरफ जाना है आप 17 अप्रैल का सूर्योदय देख लीजिये, 17 अप्रैल का सूर्योदय 6 बजे 1 मिनट है उसके साथ एक घण्टा 30 मिनट मिलाने से 7 बजे 31 मिनट हुआ अर्थात् 7 बजे 31 मिनट तक कष्ट वेला है । फिर से एक घण्टा 30 मिनट मिलाने पर 9 बजे 1 मिनट तक कष्ट वेला है फिंर से एक घण्टा मिलाने पर 10 बजे 31 मि. तक लाभ वेला है इस समय यात्रा करने पर लाभ होगा इसी प्रकार 12 बजे 1 मिनट तक अमृत वेला है इस समय कोई शुभ कार्य करना शुभ फलदायक है ।

होरा मुहूर्त देखने की विधि

रोज़ाना छोटे-मोटे यात्रा मुर्हूत इत्यादि के लिये जब वार नक्षत्र इत्यादि मुहूर्त अनुकूल न हों तो उस दिन कार्य सिद्धि के लिये होरा मुर्हूत विधि से काम लीजिये । जिस दिन आपने होरा मुर्हूत देखना हो उस दिन की वार और सूर्योदय देखिये जैसे 12 अप्रैल 1994 को मंगलवार है सूर्योदय 6 बजे 7 मिनट पर है उसके साथ एक घण्टा जोडने से 7 बजे 7 मिनट तक भौम की होरा है । उसमें एक घण्टा जोड़ने से 8 बजे 6 मिनट तक सूर्य की होरा है । उसमें एक घण्टा जोडने से 9 बजे

6 मिनट तक शुक्र की होरा है । इसी प्रकार सूर्योदय में 8 घण्टा जोडने से 2 बजे 6 मिनट हुये जो मंगल की होरा है । इसके साथ एक घण्टा जोड़ने से 3 बजे 6 मिनट हुये अर्थात 2 बजे 7 मिनट से 3 बजे तक सूर्य की होरा है किस होरा में कौन सा काम करना चाहिये इस प्रकार है ।

सूर्य होरा :– सामान खरीदना अथवा घर लाना, चारज लेन-देन, दफ्तर का कोई कार्य या टैण्डर देना, नोटस भेजना, फार्म भरना ।

चन्द्रमा होरा :– प्रायः हर काम के लिये शुभ ।

भौम होरा :– मुकदमा करना, अफसर से मिलना, रुपया बैंक में जमा करना, यात्रा को जाना ।

बुध होरा :– दरखवास्त देना, दुकान खोलना, लाटरी डालना, कालेज इत्यादि में दाखिल भरना ।

वृहस्पति होरा :– किसी पुस्तक का छपना अथवा प्रकाशित करना, विवाह सम्बन्धित कोई काम शुरू करना ।

शुक्र होरा :– नया वस्त्र, भूषण घड़ी इत्यादि खरीदना फैक्ट्री इत्यादि का काम शुरू करना अथवा हार्डवियर का दुकान खोलना, गाड़ी वाहन इत्यादि खरीदना या बेचना ।

शनि होरा :- मकान का सामान खरीदना या घर लाना मशीनरी, सीमेंन्ट, तेल इत्यादि का काम शुरु करना या घर लाना।

होरा मुहुर्त

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	घण्टा	
सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	+	1
शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	+	2
बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	भौ	+	3
चन्द्र	भौ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	+	4
शनि	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	+	5
गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	+	6
भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	+	7
सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	+	8

आपकी नाम राशि

मेष	चू, चे चो, ला, लि, ली, ले, लो, अ,
वृष	ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो,
मिथुन	का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह,
कर्क	हि, हु, हे, हो, डा, डी, डु, डे, डो,
सिंह	मा, मी, मु मे, मो, टा, टी, टो, टू,
कन्या	टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो,
तुला	रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते,
वृश्चिक	तो, ना, नी, नू ने, नो, य, यी, यू,
धनु	ये, यो, भा, भी, भू, घ, फ, ढ, भे,
मकर	भो, जा, जी, जू, जे, खा, ग, गी,
कुम्भ	गा, गे, गो, सा, सी, सू, से सो, दा,
मीन	दि, दू, थ, झ, ञा, दे, दो, चा, ची,

पश्चिमीय पद्धति के अनुसार राशि

मेष	21 मार्च से 19 अप्रैल तक ।
वृष	20 अप्रैल से 20 मई तक ।
मिथुन	21 मई से 20 जून तक ।
कर्क	21 जून से 22 जुलाई तक ।
सिंह	23 जुलाई से 22 सितम्बर तक ।
कन्या	23 अगस्त से 22 सितंबर तक ।
तुला	23 सितम्बर से 22 अक्टूबर तक ।
वृश्चिक	23 अक्टूबर से 21 नवम्बर तक ।
धनु	22 नवम्बर से 21 दिसम्बर तक ।
मकर	22 दिसम्बर से 19 जनवरी तक ।
कुम्भ	20 जनवरी से 18 फरवरी तक ।
मीन	19 फरवरी से 20 मार्च तक ।

देखने की विधि :— अपने नाम का पहला अक्षर ऊपर की पंक्तियों में देखिये जिस राशि की पंक्ति में मिले वह आपकी नामराशि कहलायेगी । जैसे कृष्ण की राशि "मिथुन" होती है ।

हमारे पर्व और त्यौहार
2052 के लिये

नवरेह	1	अप्रैल
दुर्गाष्टमी	8	अप्रैल
रामनवमी	9	अप्रैल
बैशाखी	14	अप्रैल
अच्छिन त्र्य	2	मई
नारद काह	11	मई
गणेश चुदाह	13	मई
ज्येठ अठम	6	जून
निर्ज़ला काह	9	जून
हार सतम	5	जुलाई
हार अठम }	6	जुलाई
हार नवम }		
ज्वाला चुदाहा	11	जुलाई
श्रावण बाह	7	अगस्त
अमरनाथ यात्रा		
थजीवोर यात्रा	10	अगस्त
नवदल यात्रा	14	अगस्त
चन्दन षष्ठी	15	अगस्त
जन्माष्टमी	17	अगस्त
विनायक चोरम }		
वराह पंचम }	30	अगस्त
गंग अंठम	2	सप्ताम्बर
व्यथ त्रुवाह	7	सप्ताम्बर
अनन्त चुदाह	8	सप्ताम्बर
काम्बर पछ	9	सप्तम्बर
काश्मीरी पण्डित		
बलिदान दिवस	14	सप्तम्बर
साहिब सप्तमी	15	सप्तम्बर
पित्रामावसी	24	सप्तम्बर
नवदुर्गारम्भ	25	सप्तम्बर
दुर्गाष्टमी]		
महानवमी]	2	अक्टूबर
दीपमाला	23	अक्टूबर
मुंजहर तहर	7	दिसम्बर
क्ष्यचरिमावसी	21	दिसम्बर
साहिब सप्तमी	12	जनवरी
शिशर संक्रान्ति	15	जनवरी

शिवचतुर्दशी	18	जनवरी
काश्मीरी पण्डितों का जन्मभूमि निष्कासन दिवस	19	जनवरी
गौरी तृतीया	23	जनवरी
त्रिपुरा चोरम	24	जनवरी
बसन्त पंचम	24	जनवरी
भीष्म अठम	28	जनवरी
भीमसीन काह	31	जनवरी
काव पुर्णिमा	4	फरवरी
हुरि अठम	12	फरवरी
हेरथ	16	फरवरी
शिवर्चतुदशी	17	फरवरी
डून्य् मावस	18	फरवरी
तोल अठम	26	फरवरी
थाल भरुन	14	मार्च
सोन्थ	15	मार्च
चित्र चुदाह	18	मार्च

महापुरूषों की जयन्तियां

श्री महावीर	13	अप्रैल
श्री वल्लभाचार्य	25	अप्रैल
श्री छत्रपति शिवाजी	1	मई
श्री आद्यगुरु शंकराचार्य	5	मई
श्री रामानुजाचार्य	6	मई
श्री रविन्द्रनाथ टैगोर	7	मई
श्री महाराणा प्रताप	1	जून
श्री गुरुहर गोविन्द	14	जून
श्री बाल गंगाधर तिलक	23	जुलाई
श्री गोस्वामी तुलसीदास	3	अगस्त
श्री महात्मा गांधी	2	अक्टूबर
श्री लालबहादुर शास्त्री	2	अक्टूबर
श्री स्वामी रामतीर्थ	22	अक्टूबर
श्री गुरु नानक	7	नवम्बर
श्री जवाहर लाल नेहरू	14	नवम्बर
श्रीमती इन्द्रिरा गान्धी	19	नवम्बर
श्री सतसाई बाबा	23	नवम्बर
श्री गुरु गोबिन्दसिंह	28	दिसम्बर
श्री स्वामी विवेकानन्द	13	जनवरी
श्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23	जनवरी
श्री ला. लाजपतराय	28	जनवरी
श्री गुरु रविदास	4	फरवरी
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती	17	फरवरी
श्री रामकृष्ण परमहंस	20	फरवरी

मुस्लिम त्यौहार

ईदुलजुहा	11	मई
मुहरम	1	जून
ईदमीलाद	10	अगस्त
शब-इ-मिराज	20	दिसम्बर
शब-इ-बरात	7	जनवरी
रमज़ान	22	जनवरी
जमतुल विदा	16	फरवरी
शब-इ-कद्र	17	फरवरी
ईदुल फित्र	21	फरवरी

व्रतों की सूची 2052 के लिये

संक्रान्ति व्रत

वैशाख	14	अप्रैल	शुक्रवार
ज्येष्ठ	15	मई	सोमवार
हार	15	जून	गुरुवार
श्रावण	17	जुलाई	सोमवार
भाद्र	17	अगस्त	गुरुवार
असोज	17	सितम्बर	रविवार
कार्तिक	18	अक्टूबर	बुधवार
मार्ग	17	नवम्बर	शुक्रवार
पौष	16	दिसम्बर	शनिवार
माघ	15	जनवरी	भौमवार
फाल्गुण	13	फरवरी	भौमवार
चैत्र	14	मार्च	गुरुवार

अमावसी व्रत

वैशाख	29	अप्रैल	शनिवार
ज्येष्ठ	29	मई	सोमवार
हार	28	जून	बुधवार
श्रावण	27	जुलाई	गुरुवार
भाद्र	26	अगस्त	शनिवार
असोज	24	सितम्बर	रविवार
कातिक	24	अक्टूबर	भौमवार
मगर	22	नवम्बर	बुधवार
पौष	21	दिसम्बर	गुरुवार
माघ	20	जनवरी	शनिवार
फाल्गुण	18	फरवरी	रविवार
चैत्र	19	मार्च	भौमवार

अष्टमी व्रत

चैत्र	8	अप्रैल	शनिवार
वैशाख	8	मई	सोमवार
ज्येष्ठ	6	जून	भौमवार
हार	6	जुलाई	गुरुवार
श्रावण	4	अगस्त	शुक्रवार
भाद्र	2	सितम्बर	शनिवार
असोज	1	अक्टूबर	रविवार
कतक	31	अक्टूबर	भौमवार
मगर	29	नवम्बर	बुधवार
पौष	29	दिसम्बर	शुक्रवार
माघ	28	जनवरी	रविवार
फाल्गुण	26	फरवरी	सोमवार

पूर्णिमा व्रत

चैत्र	15	अप्रेल	शनिवार
वैशाख	14	मई	रविवार
ज्येष्ठ	13	जून	भौमवार
हार	12	जुलाई	बुधवार
श्रावण	10	अगस्त	गुरुवार
भाद्र	9	सितम्बर	शनिवार
असोज	8	अक्टूबर	रविवार
कतक	7	नवम्बर	भौमवार
मगर	6	दिसम्बर	बुधवार
पौष	5	जनवरी	शुक्रवार
माघ	4	फरवरी	रविवार
फाल्गुण	5	मार्च	भौमवार

संकट चतुर्थी

वैशाख	18	अप्रैल	भौमवार
ज्येष्ठ	17	मई	बुधवार
हार	16	जून	शुक्रवार
श्रावण	15	जुलाई	शनिवार
भाद्र	14	अगस्त	सोमवार
असोज	12	सितम्बर	भौमवार
कतक	12	अक्टूबर	गुरुवार
मगर	10	नवम्बर	शुक्रवार
पौष	10	दिसम्बर	रविवार
माघ	9	जनवरी	भौमवार
फाल्गुण	8	फरवरी	गुरुवार
चैत्र	8	मार्च	शुक्रवार

कुमार षष्ठी

चैत्र	5	अप्रैल	बुधवार
वैशाख	5	मई	शुक्रवार
ज्येष्ठ	4	जून	रविवार
हार	3	जुलाई	सोमवार
श्रावण	2	अगस्त	बुधवार
भाद्र	31	अगस्त	गुरुवार
असोज	29	सितम्बर	शुक्रवार
कतक	29	अक्टूबर	रविवार
मगर	27	नवम्बर	सोमवार
पौष	27	दिसम्बर	बुधवार
माघ	25	जनवरी	गुरुवार
फाल्गुण	24	फरवरी	शनिवार

पंचक आरम्भ

23	अप्रैल	1 बजे 42 रात
21	मई	10 बजे 47 दिन
17	जून	6 बजे 42 सांय
14	जुलाई	2 बजे 37 रात
11	अगस्त	10 बजे 36 दिन
7	सितम्बर	6 बजे 35 सांय
4	अक्टूबर	2 बजे 32 रात
1	नवम्बर	10 बजे 39 दिन
28	नवम्बर	6 बजे 38 सांय
25	दिसम्बर	2 बजे 39 दिन
22	जनवरी	10 बजे 44 दिन
18	फरवरी	6 बजे 48 सांय
16	मार्च	2 बजे 54 रात

पंचक समाप्त

28	अप्रैल	5 बजे 42 दिन
25	मई	1 बजे 4 रात
22	जून	8 बजे 33 दिन
19	जुलाई	4 बजे दिन
15	अगस्त	11 बजे 25 रात
12	सितम्बर	6 बजे 58 प्रातः
9	अक्टूबर	2 बजे 30 दिन
5	नवम्बर	10 बजे 2 रात
3	दिसम्बर	5 बजे 38 रात
30	दिसम्बर	1 बजे 16 दिन
26	जनवरी	8 बजे 52 रात
22	फरवरी	4 बजे 33 रात
21	मार्च	1996

2052 में निषेध समय

शुक्रास्त :–29 जुलाई से 5 अक्टूबर तक

बृहस्पति अस्त :– 7 दिसम्बर से पहली जनवरी 1996 तक

स्यंघ :– 17 अगस्त से 16 सितम्बर तक

पितृपक्ष :– 9 सितम्बर से 24 सितम्बर तक

पौह :– 16 दिसम्बर से 13 जनवरी तक

चैत्रकृष्णपक्ष :– 6 मार्च से 19 मार्च तक

नोट :– देवगौण के लिये कोई वार भौमवार, गुरुवार इत्यादि तथा धनिष्ठ पंचक निषेध नहीं हैं

ग्रह संचार 2052 के लिये

सूर्य

14	अप्रैल	मेष में सूर्य
15	मई	वृष में सूर्य
15	जून	मिथुन में सूर्य
17	जुलाई	कर्क में सूर्य
17	अगस्त	सिंह में सूर्य
17	सितम्बर	कन्या में सूर्य
18	अक्टूबर	तुला में सूर्य
17	नवम्बर	वृश्चिक में सूर्य
16	दिसम्बर	धनु में सूर्य
14	जनवरी	मकर में सूर्य
13	फरवरी	कुम्भ में सूर्य
14	मार्च	मीन में सूर्य

भौम

10	मई	सिंह में भौम
10	जुलाई	कन्या में भौम
28	अगस्त	तुला में भौम
12	अक्टूबर	वृश्चिक में भौम
22	नवम्बर	धनु में भौम
31	दिसम्बर	मकर में भौम
8	फरवरी	कुम्भ में भौम

बुध

14	अप्रैल	मेष में बुध
29	अप्रैल	वृष में बुध
6	जुलाई	मिथुन में बुध
23	जुलाई	कर्क में बुध
6	अगस्त	सिंह में बुध
24	अगस्त	कन्या में बुध
31	अक्टूबर	तुला में बुध
18	नवम्बर	वृश्चिक में बुध
8	दिसम्बर	धनु में बुध
27	दिसम्बर	मकर में बुध
21	जनवरी	धनु में वक्री बुध
31	जनवरी	धनु में मार्गी बुध
8	फरवरी	मकर में बुध
3	मार्च	कुम्भ में बुध

बृहस्पति

7	दिसम्बर	धनु में बृहस्पति

शुक्र

16	अप्रैल	मीन में शुक्र
11	मई	मेष में शुक्र
5	जून	वृष में शुक्र
30	जून	मिथुन में शुक्र
24	जुलाई	कर्क में शुक्र
18	अगस्त	सिंह में शुक्र
11	सितम्बर	कन्या में शुक्र
5	अक्टूबर	तुला में शुक्र
29	अक्टूबर	वृश्चिक में शुक्र
22	नवम्बर	धनु में शुक्र
16	दिसम्बर	मकर में शुक्र
9	जनवरी	कुम्भ में शुक्र
3	फरवरी	मीन में शुक्र
29	फरवरी	मेष में शुक्र

शनि

3	जून	मीन में शनि
7	अगस्त	कुम्भ में वक्री शनि
20	नवम्बर	कुम्भ में मार्गी शनि
17	फरवरी	मीन में शनि

राहु

5	दिसम्बर	कन्या में राहु

केतु

5	दिसम्बर	मीन में केतु

सूक्ष्म गणित के अनुसार

दुर्गाष्टमी — 2 अक्टूबर

वसन्त पंचमी — 24 जनवरी

शिवरात्रि

16 फरवरी

काश्मीर के महात्माओं की जयन्तियां

श्राद्ध अथवा यज्ञ

चण्डीगाम महात्मा यज्ञ	चैत्र शुक्लपक्ष षष्ठी	6 अप्रैल	स्वा. विद्याधर जी जयन्ती	आषाढ़ शुक्ल पक्ष त्रयो.	10 जुलाई
जानकी नाथ साहिब दर यज्ञ	वैशाख कृष्णपक्ष सप्तमी	21 अप्रैल	ग्रट बब दिवस	श्रावण कृष्ण पक्ष द्वरदशी	22 जुलाई
श्री महादेव काक भान यज्ञ	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	21 अप्रैल	स्वा॰ गण काक यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	10 अगस्त
श्री स्वामी लक्ष्मण जी जयन्ती	वैशाख कृष्णपक्ष द्वादशी	26 अप्रैल	श्री शकर साहिब यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष द्वितीया	11 सितम्बर
श्री शकर साहिब यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष द्वितीया	1 मई	स्वामी लक्ष्मण जी यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	13 सितम्बर
योगिराज धर्मदत्त यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	2 मई	स्वामी हरकाक यज्ञ	आश्विन कृष्णपक्ष त्रयोदशी	22 सितम्बर
श्री काक जी यज्ञ	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वितीया	16 मई	स्वामी हरि कृष्ण यज्ञ	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीय	26 सितम्बर
भगवान् गोपीनाथ यज्ञ	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया	31 मई	श्री नन्दलाल साहिब	आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयो॰	6 अक्टूबर
सिद्ध बब यज्ञ	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष नवमी	7 जून	ज्योतिषी आप्ताभ शर्मा यज्ञ	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी	12 अक्टूबर
स्वा. आनन्द जी विल्गाम	आषाढ़ शुदि सप्तमी	5 जुलाई	महादेव काक यज्ञ	कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी	31 अक्टूबर

(Regd.)
JAMMU
002

स्वामी. आत्मा राम जी यज्ञ	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी.	3 नवम्बर	श्री अशोकानन्द यज्ञ	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	21 दिसम्बर
स्वामी काशीनाथ (हुगामा)	मार्ग कृष्णपक्ष पंचमी	12 नवम्बर	मथुरा देवी यज्ञ	पौष शुक्ल पक्ष चतुदर्शी	4 जनवरी
स्वामी. सर्वानन्द यज्ञ	मार्ग कृष्णपक्ष त्रयो.	20 नवम्बर	किश्काक बडीपोरा यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष नवमी	13 मार्च
स्वामी विद्याधर जयन्ती	मार्ग शुक्ल पक्ष तृती०	25 नवम्बर	ब्रह्मचारी अर्जुनदेव यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी	14 मार्च
श्री नन्द लाल जी यज्ञ	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	21 दिसम्बर	श्री ग्वाशकाक यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	19 मार्च

नोटः- ऊपर लिखे हुये श्राद्धों में 'दिवा' 'प्र' के आधार से एक दिन की तिथि आगे. पीछे भी हो सकती है स्वंय शुद्ध कीजिये!

गण्डान्त आरम्भ			गण्डान्त समाप्त			गण्डान्त आरम्भ			गण्डान्त समाप्त		
31	मार्च	3 बजे 53 रात	1	अप्रैल	4 बजे 46 दिन	4	जून	1 बजे 31 दिन	4	जून	2 बजे रात
10	अप्रैल	10 बजे 26 रात	11	अप्रैल	10 बजे 40 दिन	13	जून	6 बजे 46 प्रातः	13	जून	5 बजे 56 शां
19	अप्रैल	2 बजे 25 दिन	19	अप्रैल	1 बजे 38 रात	21	जून	2 बजे 8 रात	22	जून	2 बजे 57 दिन
28	अप्रैल	11 बजे 17 दिन	28	अप्रैल	12 बजे 6 रात	1	जुलाई	9 बजे 5 रात	2	जुलाई	9 बजे 35 दिन
8	मई	5 बजे 57 प्रातः	8	मई	6 बजे 19 शां	10	जलाई	2 बजे 55 दिन	10	जुलाई	2 बजे 6 रात
16	मई	10 बजे 34 रात	17	मई	9 बजे 48 दिन	19	जुलाई	9 बजे 40 दिन	19	जुलाई	10 बजे 20 रात
25	मई	6 बजे 42 शां	26	मई	7 बजे 30 प्रातः						

गण्डान्त आरम्भ	गण्डान्त समाप्त	गण्डान्त आरम्भ	गण्डान्त समाप्त
28 जुलाई 4 बजे 31 रात	29 जुलाई 5 बजे 6 दिन	24 नवम्बर 7 बजे 46 प्रात:	24 नवम्बर 6 बजे 55 रात
6 अगस्त 11 बजे 3 रात	7 अगस्त 10 बजे 16 दिन	2 दिसम्बर 11 बजे 25 रात	3 दिसम्बर 11 बजे 52 दिन
15 अगस्त 5 बजे 11 दिन	15 अगस्त 5 बजे 15 रात	12 दिसम्बर 5 बजे 45 सांय	13 दिसम्बर 6 बजे 35 प्रात:
25 अगस्त 12 बजे 4 दिन	25 अगस्त 12 बजे 41 रात	21 दिसम्बर 3 बजे 52 दिन	21 दिसम्बर 3 बजे 6 रात
3 सितम्बर 7 बजे 16 प्रात:	3 सितम्बर 6 बजे 27 शां	30 दिसम्बर 7 बजे 6 प्रात:	30 दिसम्बर 7 बजे 26 सांय
11 सितम्बर 12 बजे 35 रात	12 सितम्बर 1 बजे 18 दिन	8 जनवरी 1 बजे 10 रात	9 जनवरी 2 बजे दिन
21 सितम्बर 7 बजे 30 रात	22 सितम्बर 8 बजे 12 दिन	17 जनवरी 12 बजे 3 रात	18 जनवरी 11 बजे 14 दिन
30 सितम्बर 3 बजे 25 दिन	30 सितम्बर 2 बजे 43 रात	26 जनवरी 2 बजे 44 दिन	26 जनवरी 3 बजे 3 रात
9 अक्टूवर 8 बजे 15 दिन	9 अक्टूबर 8 बजे 45 रात	5 फरवरी 8 बजे 30 दिन	5 फरवरी 9 बजे 25 रात
18 अक्टूबर 2 बजे 58 रात	19 अक्टूबर 3 बजे 41 दिन	14 फरवरी 8 बजे 11 दिन	14 फरवरी 7 बजे 22 रात
27 अक्टूबर 11 बजे 32 रात	28 अक्टूबर 10 बजे 46 दिन	22 फरवरी 10 बजे 25 रात	23 फरवरी 10 बजे 40 दिन
5 नवम्बर 4 बजे 49 दिन	5 नवम्बर 4बजे 17 रात	3 मार्च 3 बजे 49 दिन	3 मार्च 4 बजे 49 रात
15 नवम्बर 10 बजे 21 दिन	15 नवम्बर 11 बजे 12 रात	12 मार्च 4 बजे 17 दिन	12 मार्च 3 बजे 35 रात

खग्रास सूर्य ग्रहण:-

यह ग्रहण कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावसी मंगलवार तदानुसार 24 अक्टूबर 1995 को प्रातः 7 बजे 22 मिनट से आरम्भ होकर 10 बजे 25 दिन को समाप्त होगा यह ग्रहण सारे भारत वर्ष में दिखाई देगा इस ग्रहण का सूतक 23 अक्टूबर सोमवार को प्रातः 7 बजे 22 मि. से आरम्भ होगा, यह ग्रहण मेष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, कुम्भ, मीन राशिवालों के लिये हानिकारक है तुला राशि वालों को हो सके मौनब्रत रखें, ग्रहण आरम्भ होने के समय स्नान करके ग्रहण समाप्त होने तक गायत्री मन्त्र का जप करें तथा ग्रहण समाप्त होने पर फिर से नहायें, ग्रहण के समय यथा शक्ति अन्न, धन, वस्त्र इत्यादि का दान करें यह ग्रहण चित्रा तथा स्वाति नक्षत्र पर होगा इन नक्षत्र वालों को वस्त्र, अन्न, धन इत्यादि का दान अवश्य करना चाहिये, सूतक के आरम्भ से ग्रहण समाप्त होने तक कुछ भी न खायें।

सूर्य ग्रहण देखने से आंखों में अन्धापन होने का भय रहता है इस कारण यह ग्रहण देखें ही नहीं यदि देखना हो तो शीशे को काज़ल से काला बनाकर देखें।

खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण:-

यह ग्रहण चैत्रशुक्ल पक्ष पूर्णिमा शनिवार तदानुसार 15 अप्रैल 1995 को सांय 5 बजे 11 मिनट पर आरम्भ होकर 6 बजे 25 मिनट सांय समाप्त होगा, यह ग्रहण देहली, जम्मू, कशमीर, में दिखाई नहीं देगा इसलिये स्नान व्रत इत्यादि रखने की आवश्यकता नहीं है।

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय के नियम

जन्मपत्री बनवाने के लिये शुद्ध गणित का होना आवश्यक होता है। यदि आप शुद्ध और सही जन्मपत्री बनवाना चाहते है तो सम्वत् तिथि समय और जन्मस्थान "गोत्र" लिख कर भेजे।

1. फलादेश सहित जन्मपत्री बनवाने की दक्षिणा = 200 रु.
2. जन्मपत्री बनवाने की दक्षिणा = 150 रु.
3. जन्मपत्री दिखाने की दक्षिणा = 20 रु.
4. यदि आप ने सम्पादक से मिलना हो तो विजयेश्वर प्रिंटिगं प्रेस तालाब तिलो से सम्पर्क करें।

प्रबन्धक

आमदनी खर्च का चित्र

	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृं	धं	म	कुं	मी
आमदन	8	2	8	2	5	8	2	8	5	14	14	5
खर्च	5	14	11	8	5	11	14	5	11	11	11	11

आमदनी खर्च का फल

आमदनी और खर्च के अंकों को जोडके 1 घटाकर 8 से भाग देने पर जो शेष बचे

1. एक बाकी बचे – तो यह वर्ष सुख शान्ति के वातावरण में आदरमान से व्यतीत होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक तर्की की सम्भावना है यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो प्रयत्न करने पर अवश्य सफलता होगी, यदि आप तिजारत करते हैं तो आपके कारोबार को विशाल बनाने के निमित्त यह वर्ष रिकार्ड होगा, कारोबार सम्बन्धित प्रत्येक काम में आपको लाभ रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये भी यह वर्ष अनुकूल है आप प्रयत्न कीजिये आशा से अधिक सफलता होगी।

2. दो बाकी बचे – जिन तर्की की आशाओं को लेकर आप बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे हैं प्रायः सभी आशायें पूर्ण होंगी हर आरम्भ किये हुए कार्य में सफलता निश्चित रूप से होगी, सफलता के साथ–साथ आदरमान की दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा, आप परिश्रम कीजिये ग्रह आपके सहायक हैं। यदि आप कपड़े से सम्बन्धित व्यापार करते हैं तो लाभ की आशा न रखें, किरयाना लोहा मशिनरी सम्बन्धित काम करने वाले व्यापारी लाभ में रहेंगे, यदि आपका काम फलों बागों से सम्बन्धित है तो दौड़धूप अधिक परन्तु अन्त में जाकर आपने खसारा में ही रहना होगा। नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित कोई समस्या क्यों न हो जरा सी सावधानी से कदम उठाने पर हर समस्या का समाधान होगा, हर पहलू से उत्तम समय होने पर भी शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिए, शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उपाय के रूप में किसी भी मादक द्रव्य का सेवन न करें, रविवार को निश्चित रूप से वैष्णव रहें।

3. तीन बाकी बचे – तो यह वर्ष संघर्ष का होगा, कोई भी कार्य उलझनों व रुकावटों का सामना किये बिना सफल नहीं होगा, घरेलू परेशानियां भी आपको घेरे रखेंगी केवल परिवार में सन्तान पक्ष से शान्ति रहेगी, घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा जिसमें अधिक से अधिक धन राशि का व्यय होगा शरीर के विषय में सावधान रहिए चोट आदि लगने का भी अन्देशा है, किसी रिश्तेदार मित्र अथवा किसी विश्वासपात्र से धोखा लगने का योग है, उपाय के रूप में हनुमान चालीसा अथवा बहुरूपगर्भ का पाठ नियम से करें किसी दिन नागा न करें, यदि किसी दिन पाठ न कर सकोगे तो दूसरे दिन भी उस दिन पाठ करें, यदि आप विद्यार्थी है आपको इस वर्ष सावधान रहना चाहिए रात दिन परिश्रम करने पर ही सफलता की आशा न रखें, वह सफलता भी इच्छानुसार नहीं होगी, यदि आप इस वर्ष सफलता चाहते हैं तो नियम से घर से किसी वृद्ध सदस्य अथवा माता–पिता के चरणों को प्रातः प्रणाम करके नित्य उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें।

4. यदि चार बाकी बचे – तो यह वर्ष संघर्ष तथा दौड़धूप में ही गुज़रेगा हर एक कार्य में कोई न कोई उलझन खड़ी होगी, यदि आप नौकरी पेशा हैं तो मर्जी के उल्ट तबदीली होगी, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियों का सामना करना पड़ेगा परन्तु खर्च के नये–नये रास्ते निकल आयेंगे यदि आप व्यापारी हैं, तो लेन–देन के विषय में सावधान रहें अचानक धोखा लगने का अन्देशा है, लेन–देन अथवा धन के सम्बन्ध में किसी गैर का विश्वास न कीजिए बाद में पछताना पड़ेगा, जायदाद सम्बन्धित कोई झगड़ा खड़ा होने का अन्देशा है, जायदाद सम्बन्धित किसी झगडे का आरंभ दिख पड़ते

ही आपसी सुलह करने में दिलचस्पी रखें, उपाय के रूप में नित्य प्रातःकाल उठ कर किसी बुजुर्ग अथवा माता–पिता के चरणों का स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करें निश्चय रखिये वह आशीर्वाद रामबाण का काम करेगा ।

5. **शेष बचे** – तो वर्ष भर मानसिक अशान्ति बनी रहेगी, कोई भी कार्य बिना रुकावट के सफल नहीं होगा, वर्ष भर घरेलू परेशानियों से छुटकारा नहीं मिलेगा, धन की दशा भी डांवाडोल रहेगी, कभी धन आवश्यकता अनुसार मिलता रहेगा कभी तंगदस्ती से भी दुचार होगा, कभी अचानक लाभ की सम्भावना है, उस लभ की आशा में अधिक विश्वास न रख्खें, उपाय के रूप में घर में कोई महोत्सव या मकान आदि बनाने का प्रोग्राम बनायें ऐसे शुभ कामों में लगे रहना आपके लिये शान्ति का कारण बनेगा, यदि यात्रा का प्रोग्राम बने अवश्य बनायें घर की अपेक्षा आप यात्रा में सुखी रहेंगे, विद्यार्थी वर्ग को चेतावनी है कि आप पढ़ाई में आलस्य न करें परिश्रम करने पर आप अच्छी पुजिशन में सफल होंगे ।

6. **शेष बचना** – आपके वर्ष पर की शान्ति की सूचना हैं, आपको किसी महापुरुष से संयोग होगा जो आपकी मानसिक शान्ति का कारण बनेगा, कोई भी कार्य जो आप हाथ में लेंगे, उसमें अवश्य सफलता होगी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, मान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा, सामाजिक तथा धार्मिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेंगी, नौकरी पेशा वालों के लिये यद्यपि यह वर्ष दौड़धूप तथा संघर्ष का ही होगा परन्तु मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, व्यापारी वर्ग भी लाभ में रहेगा, विद्यार्थियों के लिये, यह वर्ष सफलता का है, धन लाभ के साथ–साथ खर्च का योग भी बलवान है, प्रायः खर्च शुभ कामों में ही होगा घर में विवाह आदि महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा ।

7. शेष बचे – तो इस वर्ष आपका भाग्योदय होगा आप केवल प्रोग्राम ही न बनायें अपितु हर प्रोग्राम को अमली रूप देने का प्रयत्न कीजिए, इस वर्ष ग्रह आपके अनुकूल हैं आपके कठिन से कठिन काम को सफल बनाने में सहायक होंगे, यदि आप गृहस्थी हैं तो घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम अवश्य बनेगा, यदि आप मकान या जायदाद बनाने का विचार रखते हैं तो इस वर्ष इस शुभ अवसर को हाथ से न जाने दें यदि आप व्यापार करते हैं या नौकरी अथवा विद्यार्थी हैं तो आप का हर काम जरा सा ध्यान देने से सफल होगा आपको यात्रा का प्रोग्राम बने जिसमें संतोषजनक सफलता होगी, आपका स्वास्थ्य भी इस वर्ष ठीक रहेगा, धन लाभ के साथ–साथ खर्च का भी योग है ।

8. यदि शेष आठ बचे – आठ का शेष रहना वर्ष भर के संघर्ष तथा दौड़धूप का सूचक है, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियाँ आपका पीछा छोड़ेंगी नहीं!, यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर में प्रायः मन अशान्त रहेगा, सम्बन्धित अफसरों से अनबन रहेगी, नौकरी सम्बन्धित यदि तरक्की की कोई आशा है, हर एक कार्य ज्यों का त्यों लटकता रहेगा, यदि आप व्यापार करते हैं परिश्रम बहुत करना होगा परन्तु पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा, यदि आप विद्यार्थी हैं तो परिश्रम करने पर भी सन्तोषजनक सफलता नहीं होगी, यद्यपि यह वर्ष हर पहलू से ढीला ही रहेगा ऐसा होने पर भी धार्मिक प्रवृत्ति, सामाजिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेगी, उपाय के रूप में आप हर सोमवार को भगवान् शंकर पर जल चढाया करें ।

नोट– आमदनी और खर्च के अंकों के जोड़ से एक कम करके आठ से भाग देने पर फल उपरि लिखित है ।

अवश्य पढिये !

यह भविष्यवाणी लिखने से पहले मेरे मन में आया था कि इस वर्ष भविष्यवाणी लिखूँ ही नहीं जबकि इस भविष्यवाणी की कोई बात गाहे पूरी उतरती है और गाहे गलत, अब पाठकों का प्रश्न अवश्य होगा तो क्या ज्योतिष विज्ञान गलत ही है ? इस प्रश्न का उत्तर पाठक ज़रा ध्यान से पढ़ें जिन त्रिकालदर्शी ऋषियों ने ज्योतिष विज्ञान बनाया है उन्होंने इस भावना से नही बनाया है कि ज्योतिषी लोग इस ज्योतिष के आधार से रास्तों पर बैठकर भविष्य वाणियाँ करने लगें बल्कि वह ऋषि लोग अपनी हर एक मनोकामना यज्ञों के द्वारा सिद्ध करते थे–यज्ञों के लिये ग्रहों की स्थिति का ज्ञान होना, कौन ग्रह किस स्थिति में है अथवा कौन सा ग्रह किस राशि में ठहरा है इन बातों का ज्ञान होना जरूरी होता था इसी जरूरत को पूर्ण करने के लिए इन त्रिकालदर्शी ऋषियों ने ज्योतिष विज्ञान को जन्म दिया था परन्तु वराह मिहर आदि विद्वानों का कहना है कि जो ब्रह्माण्ड में है वह पिण्ड में भी है इसलिये मनुष्य अथवा चराचर सृष्टि पर भी ग्रहों का प्रभाव अवश्य पडता होगा, कुछ भी हो पञ्चांगकर्ता ज्योतिषी परम्परा से पञ्चांगों में भविष्यवाणी लिखते आ रहे हैं इस लिये मैं भी भविष्यवाणी के चन्द शब्द लिख रहा हूँ प्रभु ही जानता है कि यह शब्द कहाँ तक सही होंगे।

भविष्यवाणी 2052 विक्रमी के लिये

वर्ष का राजा काश्मीरी पद्धति से **शुक्रदेवता**	वर्ष का राजा भारतीय पद्धति से **शनि देवता**	वर्ष का मन्त्री **शुक्रदेवता**	धान्य का स्वामी **शनि देवता**	फलों के स्वामी **बृहस्पति देवता**
अजनास के स्वामी **चन्द्रमा देवता**	धन के स्वामी **शुक्र देवता**	धातों के स्वामी **सूर्य देवता**	रक्षामंत्री **बृहस्पति देवता**	
रस के स्वामी **बुध देवता**	मेघ के स्वामी **बृहस्पति देवता**	वर्षा भगवती **शराबिन**	वर्ष का वाहन **हाथी**	वसन्त का वाहन **बाघ**

वर्ष का नाम सर्वधारी

काश्मीर पद्धति के अनुसार वर्ष का राजा शुक्र देवता भारतीय पद्धति के अनुसार शनि देवता

भौम शनि को शत्रुदृष्टि से देख रहा है इस क्रूर योग के प्रभाव से यह वर्ष काश्मीर के लिये मन्हूस वर्षों में एक यादगार वर्ष होगा, काश्मीर में वर्षभर खून खराबा अथवा भगवान् शङ्कर का ताण्डव नृत्य होता रहेगा शनि की दिशा पश्चिम दिशा है शनि मुस्लिम ममालिक का स्वामी माना जाता है अतः निश्चित है कि मुस्लिम देश शनि के प्रभाव से मुतासिर होगें कई मुस्लिम देशों में आपसी टकराव युद्ध का रूप धारण करेगा, इस वर्ष कई मुस्लिम देशों की रूपरेखा ही बदलेगी, बृहस्पति ने रक्षा पद को सम्भाला है जिसके प्रभाव से हर समय युद्ध के बादल मंडलाते रहेंगे और वह बादल बार-बार गरजते रहेंगे परन्तु बरसेंगे नहीं बल्कि बृहस्पति के प्रभाव से संसार आलमगीर युद्ध से बचा रहेगा।

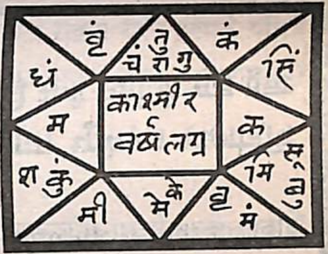

हमने 1994 ई० की विजयेश्वर जन्त्री में लिखा था कि 1998 ई० के बाद जब बृहस्पति मेष राषि में आयेगा तो काश्मीर समस्या का हल निकल आयेगा–काश्मीरी पण्डित जनता विश्वास रखें कि काश्मीर की नींव (संगबुनियाद) कश्यप ऋषि ने रखी है–काश्मीर भारत का अटूट अंग क्या भारत का मुकुट बनकर रहेगा ? क्या हमारी आगामी संतति का सम्बन्ध इस ऋषि भूमि से रहेगा ? पहले भी हमने जन्त्री में लिखा था कि वेदान्त सम्राट स्वामी रामतीर्थ जब काश्मीर आये थे तो उन्होंने काश्मीरियों को वरदान ही नही बल्कि आशीर्वाद भी दिया था "आपने काश्मीर में जन्म लिया है यह आप के सौभाग्य हैं" काश्मीरी पण्डितों का सम्बन्ध काश्मीर के साथ चोलीधामन का सम्बन्ध है यह सम्बन्ध सैंकडों वर्षों से चलता आया है और चलता रहेगा आपका अब यह कर्त्तव्य है कि आप गये गुज़रे, नष्ट हुये जाईदाद के बदले आगामी सन्तति के बारे में सोचिये और उनको बनाइये जब कि काश्मीरी पण्डितों के पास बुद्धि के बिना कुछ बॉकी नहीं रहा है शास्त्रों का कहना है "**बुद्धिर्यस्य बलं तस्य**" जिसके पास बुद्धि है उसके पास सब शक्ति है जिस बुद्धिबल से समय आने पर काश्मीरियों को शान व मान से काश्मीर वापस जाना होगा, काश्मीरी पण्डित बुद्धि जीवि हैं ऋग्वेद में दर्ज है "**ब्रह्मणोस्य मुखमासीत्**" ब्राह्मण समाज का मुख है–वेदों का पढना पढाना अथवा ज्ञान का प्रचार करना ब्रह्मण

का काम है–हम काश्मीरी पण्डित जिस संकट के दौर में गुज़र रहे हैं यह अपने किये हुये पापों का हम दण्ड भोग रहे हैं–पाप कहलाता है अपने कर्त्तव्य से गिरना हम सैंकडों वर्षों से अपने खानपान से गिर चुके थे हम ब्राह्मण होके वैष्य और शूद्रों का काम कर रहे थे–हम काश्मीरी पण्डित अपने महत्व को भूल गये थे जबकि हमारी रगों में दत्तात्रेय, कश्यप, वसिष्ठ तथा गारगेय जैसे तपस्वी ऋषियों का खून भरा हुआ है, **हे काश्मीरी पण्डित!** तुम आज तक ख्वाब गफलत में पड़ा था अब तुम्हारी तर्की का युग आरम्भ हो गया है अब आपने देश देशान्तरों में ज्ञान प्राप्त करने अथवा पढने पढाने के लिये घूमना है तुमने अब बड़े-बड़े इन्जीनियरों वैज्ञानिकों और डाक्टरों को जन्म देना है चूँकि आप की रगों में ऋषियों का खून है इसलिये यह बात निश्चित है कि आपने ऐसे कामों में सफल रहना है आप को सफल बनाने में हर समय प्रकृति आप की सहायता करेगी, यह बात निश्चित है कि अब हमारे फलने फूलने का समय आया है जब कि वेदान्त सम्राट स्वामी रामतीर्थ की भविष्यवाणी गलत नही हो सकती है ऐसा सम्पादक का विश्वास है **परन्तु** दो बातों को भूलना मत तभी उनकी भविष्यवाणी अथवा आर्शीवाद हम पर पूरा उतरेगा–

(1) भारतीय संस्कृति अथवा अपनी काश्मीरी संस्कृति को भूलना मत। **"जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"** यह भारतीय संस्कृति का पहला सिद्धान्त है–माँ और मातृभूमि के सामने सभी स्वर्ग के सुख तुच्छ हैं मातृभूमि की उपासना करना हमारा पहला कर्त्तव्य है।

(2) ***"प्रजा तन्तुं मां व्यत्रच्छत्सी:"*** आगे होने वाली सन्तति की पवित्रता का खयाल रखना यानि आपके पवित्र खून का रिश्ता पवित्र खून से ही होना चाहिये, किसी वंश या खानदान के गिरने का साधन होता है वर्णसंकरों का जन्म लेना" **संकरो नरकायैव"**

भारत:-

भारत गणतन्त्र चक्र की ग्रहचाल तथा चौथी मुँथा होने से सभी सियासी पार्टियाँ अपनी आन्तरिक मतभेद की उल्झनों को सुलझाने में ही लगी रहेंगी, देश में दिनों दिन नये दंगे फसाद दबाये रखना सरकार का नित्य का काम होगा, वर्तमान सरकार यद्यपि वर्ष भर लड़खडाये भी रहेगी तो भी मध्यावधि चुनाव होने की कोई सम्भावना नही है चुनाव निश्चित समय पर ही होगा, भारतीय जनता पार्टी को आशा से अधिक सफलता मिलेगी परन्तु अनुशासन की बागडोर कांग्रेस के हाथ में ही होगी, अनुशासन पार्टी में नये-नये चेहरे देखने को मिलेंगे।

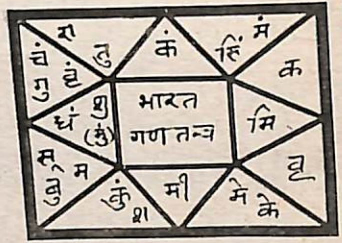

धान्य के स्वामी शनि, अजनास के स्वामी चन्द्रमा :- आकाशी उत्पातों से अन्न का बहुत सा हिसा नष्ट होगा ऐसा होने पर भी अन्न के पैदावार में आशा

से अधिक वृद्धि होगी, सरकार के खाद्य पदार्थों की वितरण प्रणाली में विशेष दिलचस्पी लेने से खाद्य पदार्थों के मूल्यों में ठहराव आयेगा जिस से जनता शान्ति का साँस लेगी दालें सरसों आदि फसलों की पैदावार में कमी होगी भाव भी तेज होंगे।

धन के स्वामी शुक्र देवता :– इस वर्ष भारत की आर्थिक स्थिति में आश्चर्यजनक सुधार होगा–नये नये तिजारती समझौते होंगे, छोटी बड़ी फैक्ट्रियों और कारखानों का फैलाव होगा जिसका प्रभाव आम जनता पर पड़ेगा, कीमतें भी कदरे नियन्त्रण में रहेंगे जिससे आम जनता शान्ति का सांस लेंगी।

फलों के स्वामी बृहस्पति, रस के स्वामी बुध :– फलों की बहुतात होगी फलों में दाग लगने की सम्भावना अथवा कोई बीमारी लगने की सम्भावना है परन्तु ऐसा होने पर भी फलों की बहुतात होगी, फलों के भाव में आश्चर्यजनक उतारचढाव होगा, व्योपारी वर्ग परेशान रहेगा व्योपारी वर्ग प्रायः हानि में रहेगा।

वर्ष का वाहन हाथी :– जहाँ एक ओर से संसार में भयंकर दृष्य देखने और सुनने में आयेंगे तथा हकूमतों और सियासी पार्टियों में उल्टफेर होंगे वहाँ दूसरी ओर से संसार में शान्ति तथा खुशहाली लाने के लिये बड़े-बड़े सम्मेलन होंगे।

सम्पादक

सप्तर्षि सं॰ 5071 चैत्र शुक्लपक्ष वि॰ सं॰ 2052 शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1995

1 अप्रेल की ग्रह स्थिति :–मीन में सूर्य, बुध। कर्क में भौम। कुम्भ में शनि, शुक्र। वृश्चिक में बृहस्पति। तुला में राहु। मेष में केतु

	रार्ष	चैत्र	अप्रे	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	वसन्त-ऋतु! उत्तरायण। (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
4	29	19	1	शनि	रेव	दि	10	19	प्रति	दि	8	37	5	49	नवरात्रारम्भ, नवरेह, 10-19 दिन में मेष में चन्द्र A
	26	20	2	रवि	अश्वि	दि	12	19	द्विती	दि	10	1	9	22	आनन्दः।
	24	21	3	सोम	भर	दि	2	38	तृती	दि	11	46	13	47	जंगत्रय, 9-15 रात वृष में चन्द्र, चरः।
	21	22	4	भौम	कृति	दि	5	10	चतु	दि	1	45	18	47	मुसलम्।
	18	23	5	बुध	रोहि	प्र	7	45	पंच	दि	3	49	23	59	कुमार षष्ठी, शूलम्।
	16	24	6	गुरु	मृग	प्र	10	14	षष्ठी	दि	5	45	28	56	9 बजे दिन मिथुन में चन्द्र, मृत्युः।
	13	25	7	शुक्र	आर्द्रा	प्र	12	27	सप्त	प्र	7	29	1	39	काम्यः।
	10	26	8	शनि	पुन	प्र	2	17	अष्ट	प्र	8	48	4	58	7-49 शां कर्क में चन्द्र, दुर्गाष्टमी, छत्रम्।
	8	27	9	रवि	तिष्य	प्र	3	42	नव	प्र	9	44	7	12	रामनवमी, उमाजयन्ती, शिवा भगवती जयन्ती, श्रीवत्सः।
	5	28	10	सोम	अश्ले	प्र	4	33	दश	प्र	10	8	8	10	4-33 रात सिंह में चन्द्र, 10-26 रात से गण्डान्त, सौम्यः।
	3	29	11	भौम	मघा	प्र	4	58	एका	प्र	10	0	7	48	10-40 दिन तक गण्डान्त, कामदा एकादशी, कालदण्डः।
	0	30	12	बुध	पूफा	प्र	4	53	द्वाद	प्र	9	22	6	11	स्थिरः।
3	57	31	13	गुरु	उफा	प्र	4	21	त्रयो	प्र	8	16	3	23	10-45 दिन कन्या में चन्द्र, महावीर जयन्ती, मासान्त, मातंगः।
	55	वैशा	14	शुक्र	हस्त	प्र	3	30	चर्तु	दि	6	47	31	47	वैशाखी, 2-16 दिन मेष में बुध, संक्रान्ति व्रत, B
	52	2	15	शनि	चित्रा	प्र	2	18	पूर्णि	दि	4	58	27	18	चन्द्र ग्रहण, 2-53 दिन तुला में C

A और **पंचक** समाप्त, 4-46 दिन तक गण्डान्त, प्राजापत्यः। B 11-6 दिन **मेष** में सूर्य मुर्हूत 30 दरयाई, अमृतम्। C **चन्द्र,** काण्डः। **मध्याह्नः**–प्रति से तृती तक पहले दिन। चतु से पूर्णि तक अपने दिन। **श्राद्धः**–प्रति से षष्ठी तक पहले दिन। सप्त से चर्तु तक अपने दिन। पूर्णि पहले दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 वैशाख कृष्णपक्ष वि॰ सं॰ 2052 शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1995

16 अप्रेल की ग्रह स्थिति :- मेष में सूर्य, बुध, केतु। कर्क में भौम। तुला में राहु। वृश्चिक में बृहस्पति। कुम्भ में शनि। मीन में शुक्र।

	रार्ध	वैशा	अप्रे	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	वसन्त-ऋतु। उत्तरायण। (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
13	50	3	16	रवि	स्वाति	प्र	12	53	प्रति	दि	2	54	22	9	अलापकः।
	47	4	17	सोम	विशा	प्र	11	18	द्विती	दि	12	41	16	39	5-41 सायं वृश्चिक में चन्द्र, 6-48 प्रतः मीन में शुक्र, मैत्रम्।
	44	5	18	भौम	अनुर	प्र	9	39	तृती	दि	10	16	10	41	संकट चतुर्थी, वज्रम्।
	42	6	19	बुध	ज्येष्ठ	प्र	8	1	चतु	दि	7	52	4	42	8-1 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, A
	39	7	20	गुरु	मूला	दि	6	29	षष्ठी	प्र	3	18	20	41	ऋषि पीर श्राद्ध, वेताल षष्ठी, धौम्यः।
	37	8	21	शुक्र	पूषा	दि	5	7	सप्त	प्र	1	13	15	25	10-48 रात मकर में चन्द्र, प्रवर्धः।
	35	9	22	शनि	उषा	दि	4	0	अष्ट	प्र	11	25	10	53	क्षयः।
	33	10	23	रवि	श्रव	दि	3	11	नव	प्र	9	59	7	16	1-42 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, B
	31	11	24	सोम	धनि	दि	2	44	दश	प्र	8	58	4	39	बुलबुललंकर यज्ञ, शूलम्।
	29	12	25	भौम	शत	दि	2	44	एका	प्र	8	24	3	12	वरूथिनी एकादशी, वल्लभाचार्य जयन्ती, मृत्युः।
	27	13	26	बुध	पूभा	दि	3	13	द्वाद	प्र	8	20	2	59	स्वा॰ लक्ष्मण जी जयन्ती निशात कश्मीर C
	24	14	27	गुरु	उभा	दि	4	14	त्रयो	प्र	8	45	4	4	छत्रम्।
	22	15	28	शुक्र	रेव	दि	5	42	चर्तु	प्र	9	41	6	21	5-42 सायं मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, D
	20	16	29	शनि	अश्वि	प्र	7	36	अमा	प्र	11	4	9	44	4-54 प्रातः वृष में बुध, सौम्यः।

A 2-25 दिन से 1-38 रात तक गण्डान्त, त्र्यहः (पं प्र 5-30) ध्वांक्ष B सूर्यमास, मुसलम् :। C (महेन्द्र नगर जम्मू) 9-3 दिन मीन में चन्द्र काम्यः, D 11-17 दिन से 12-6 रात तक गण्डान्त, श्रीवत्सः।

मध्याह्नः–प्रति द्वि अपने दिन। तृती॰ चतु पहले दिन। षष्ठी से अमावसी तक अपने दिन। श्राद्धः–प्रति से चतु तक पहले दिन। षष्ठी से अमावसी तक

सप्तर्षि सं० 5071 वैशाख शुक्लपक्ष वि० सं० 2052 शाका सं० 1917 ईसवी सन् 1995

30-अप्रेल की ग्रह स्थितिः- मेष में सूर्य, बुध, केतु। कर्क में भौम। तुला में राहु। वृश्चिक में बृहस्पति। कुम्भ में शनि। मीन में शुक्र

	रार्ध	वैशा	अप्रे	वार	नक्षत्र		बजे मि०		तिथि		बजे मि०		घ	प	वसन्त-ऋतु। उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
13	18	17	30	रवि	भर	प्र	9	52	प्रति	प्र	12	48	14	3	4-29 रात वृष में चन्द्र, कालदण्डः।
	16	18	मई	सोम	कृति	प्र	12	22	द्विती	प्र	2	48	18	59	शिवाजी जयन्ती, स्थिरः।
	14	19	2	भौम	रोहि	प्र	2	58	तृती	प्र	4	46	23	54	अक्षया तृतीया, परशुराम जयन्ती, मातंगः।
	12	20	3	बुध	मृग	प्र	5	30	चतु	प्र	5	47	26	24	4-12 दिन मिथुन में चन्द्र, दिन अधिक, अमृतम्।
	9	21	4	गुरु	आर्द्र	प्र	5	45	चतु	दि	6	42	2	20	काण्डः।
	7	22	5	शुक्र	आर्द्र	दि	7	44	पंच	दि	8	21	6	31	3-14 रात कर्क में चन्द्र, कुमार षष्ठी, काम्यः।
	5	23	6	शनि	पुन	दि	9	40	षष्ठी	दि	9	39	9	48	छत्रम्।
	3	24	7	रवि	तिष्या	दि	11	8	सप्त	दि	10	31	12	0	10-31 प्रातः तक विजया सप्तमी, श्रीवत्सः।
	0	25	8	सोम	अश्ले	दि	12	9	अष्ट	दि	10	54	12	59	12-9 दिन से सिंह में चन्द्र, 5-57 प्रातः से B
12	59	26	9	भौम	मघा	दि	12	38	नव	दि	10	44	12	37	कालदण्डः।
	57	27	10	बुध	पूफा	दि	12	40	दश	दि	10	5	11	2	10-9 दिन कन्या में चन्द्र, 3-32 दिन C
	55	28	11	गुरु	उफा	दि	12	13	एका	दि	8	59	8	20	10-13 रात कृतिका में सूर्य, 3-51 रात D
	53	29	12	शुक्र	हस्त	दि	11	27	द्वाद	दि	7	31	4	39	9-58 रात तुला में चन्द्र, अमृतम्।
	50	30	13	शनि	चित्रा	दि	10	21	त्रयो	दि	5	41	0	7	गणेश चतुर्दशी, गणपतयार यात्रा, त्र्यहः E
	48	31	14	रवि	स्वा	दि	9	0	पूर्णि	प्र	1	20	14	56	बुधपूर्णिमा, मासान्त, 1-50 रात वृश्चिक् F

B 6-19 सायं तक गण्डान्त सौम्यः C सिंह में भौम, स्थिरः। D मेष में शुक्र, ईद नारद एकादशी मातंगः E (चं प्र 3-37) काण्डः। F में चन्द्र, अलापकः। **मध्याह्नः**—प्रति से चतु तक अपने दिन। पंच० से त्रयो० तक पहले दिन। पूर्णिमा अपने दिन। **श्राद्धः**—प्रति से चतु तक अपने दिन। पंचमी से त्रयो० तक पहले दिन। पूर्णि अपने दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 ज्येष्ठ कृष्णपक्ष वि॰ सं॰ 2052 शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1995

15 मई की ग्रह स्थिति:- **वृष** में सूर्य, बुध। **सिंह** में भौम। **तुला** में राहु। **वृश्चिक** में बृहस्पति। **कुम्भ** में शनि। **मेष** में शुक्र, केतु।

	रार्ध	ज्येष्ठ	मई	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	ग्रीष्म-ऋतु। उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिन्टों में)
12	46	1	15	सोम	विशा	दि	7	27	प्रति	प्र	10	54	8	48	**संक्रान्ति व्रत**, 9-19 दिन वृष में सूर्य मुहूर्त A
	44	2	16	भौम	अनूर	दि	5	51	द्विती	प्र	8	27	2	41	10-34 रात से गण्डान्त, 4-10 रात **धनु में चन्द्र** B
	42	3	17	बुध	मूला	प्र	2	36	तृती	दि	6	6	31	15	संकट चतुर्थी, 9-48 दिन तक गण्डान्त, ध्वज:।
	40	4	18	गुरु	पूषा	प्र	1	10	चतु	दि	3	51	25	39	प्राजापत्य:।
	38	5	19	शुक्र	उषा	प्र	11	58	पंच	दि	1	47	20	32	6-53 प्रात: **मकर में चन्द्र** आनन्द:।
	36	6	20	शनि	श्रव	प्र	11	5	षष्ठी	दि	11	56	16	00	स्थिर:।
	34	7	21	रवि	धनि	प्र	10	33	सप्त	दि	10	27	12	21	10-47 दिन **कुम्भ में चन्द्र** और **पंचक** आरम्भ, मातंग:।
	33	8	22	सोम	शत	प्र	10	27	अष्ट	दि	9	23	9	41	अमृतम्।
	32	9	23	भौम	पूभा	प्र	10	50	नव	दि	8	45	8	7	4-41 सायं **मीन में चन्द्र** भौममास, काण्ड:।
	32	10	24	बुध	उभा	प्र	11	42	दश	दि	8	37	7	48	अलापक:।
	31	11	25	गुरु	रेव	प्र	1	4	एका	दि	9	2	8	49	रथा एकादशी, भद्रकाली जयन्ती, 1-4 रात **मेष में** C
	30	12	26	शुक्र	अश्वि	प्र	2	55	द्वाद	दि	9	55	11	4	7-30 प्रात: तक गण्डान्त, वज्रम्।
	29	13	27	शनि	भर	प्र	5	7	त्रयो	दि	11	13	14	21	ध्वांक्ष:।
	28	14	28	रवि	कृति	प्र	5	30	चर्तु	दि	12	53	18	31	11-41 दिन **वृष में चन्द्र**, धौम्य:।
	27	15	29	सोम	कृति	दि	7	32	अमा	दि	2	47	23	17	**सोमामावसी**, नन्द केश्वर भैरव यज्ञ। D

A· 45 किनारी, नारद जयन्ती, मैत्रम्। B और मूल आरम्भ, वज्रम्। C **चन्द्र** और पंचक समाप्त, 11-48 रात रोहिणी नक्षत्र में सूर्य, 6-42 सायं से गण्डांत, मैत्रम्। D शिवमन्दिर गोलगुजराल जम्मू, स्थिर:। **मध्याह्न:**—प्रति से षष्ठी अपने दिन। सप्त से चर्तु तक पहले दिन। अमावसी अपने दिन। **श्राद्ध:**—प्रति

सप्तर्षि सं॰ 5071 ज्येष्ठ शुक्लपक्ष वि॰ सं॰ 2052 शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1995

30 मई की ग्रह स्थितिः–वृष में सूर्य, बुध। सिंह में भौम। तुला में राहु। वृश्चिक में बृहस्पति। कुम्भ में शनि। मेष में शुक्र केतु।

	राधे	ज्ये	मई	वार	नक्षत्र	बजे	मि॰	तिथि	बजे	मि॰	घ	प	ग्रीष्म ऋतु। उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों मे)
	26	16	30	भौम	रोहि दि	10	7	प्रति दि	4	46	28	16	11-27 रात मिथुन में चन्द्र मातंगः।
12	26	17	31	बुध	मृग दि	12	38	द्विती दि	6	39	33	1	अभृतम्।
	25	18	जून	गुरु	आर्द्र दि	2	58	तृती प्र	8	23	2	2	काण्डः।
	24	19	2	शुक्र	पुन दि	4	53	चतु प्र	9	41	5	18	10-27 दिन कर्क में चन्द्र अलापकः।
	23	20	3	शनि	तिष्या दि	6	36	पंच प्र	10	34	7	28	10-41 रात मीन में शनि, मैत्रम्।
	22	21	4	रवि	अश्ले प्र	7	46	षष्ठी प्र	10	55	8	25	कुमार षष्ठी, 7-46 सायं सिंह में चन्द्र, A
	21	22	5	सोम	मघा प्र	8	32	सप्त प्र	10	47	8	2	8-11 रात वृष में शुक्र, ध्वांक्षः।
	20	23	6	भौम	पूफा प्र	8	32	अष्ट प्र	10	8	6	24	ज्येष्ठाष्टमी क्षीरभवानी यात्रा, 2-30 रात कन्या B
	20	24	7	बुध	उफा प्र	8	13	नव प्र	10	2	3	38	प्रवर्धः।
	19	25	8	गुरु	हस्त दि	7	28	दश दि	7	22	34	52	क्षयः।
	18	26	9	शुक्र	चित्रा दि	6	23	एका दि	5	39	30	37	निर्जला एकादशी, 6-57 प्रातः तुला में चन्द्र, गजः।
	17	27	10	शनि	स्वात दि	5	5	द्वाद दि	3	54	25	25	सिद्धः।
	16	28	11	रवि	विशा दि	3	36	त्रयो दि	1	17	19	43	10-1 दिन वृश्चिक् में चन्द्र, उन्मूलम्।
	15	29	12	सोम	अनु दि	1	59	चर्तु दि	10	53	13	43	मानसम्।
	14	30	13	भौम	ज्येष्ठ दि	12	21	पूर्णि दि	8	27	7	37	कबीर जयन्ती, मातारुपभवानी जयन्ती, 12-21 C

A 1-31 दिन से 2 बजे रात तक गण्डान्त, वज्रम्। B में चन्द्र, सौम्यः। C दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 6-46 प्रतः से 5-56 सायं तक गण्डान्त, मुद्गरम्।
मध्याह्नः–प्रति से त्र्यो तक अपने दिन। चर्तु पूर्णि पहले दिन। श्राद्धः–प्रति द्वि॰ पहले दिन। तृती॰ से दशमी तक अपने दिन। एका॰ से पूर्णि तक पहले दिन।

सप्तर्षि सं० 5071 आषाढ कृष्णपक्ष वि० सं० 2052 शाका सं० 1917 ईसवी सन् 1995

14 जून की ग्रह स्थिति:-**मिथुन** में सूर्य। **सिंह** में भौम। **तुला** में राहु। **वृश्चिक** में गुरु। **मीन** में शनि। **मेष** में केतु। **वृष** में शुक्र, बुध

रार्ध	ज्ये	जून	वार	नक्षत्र		बजे	मि०	तिथि		बजे	मि०	घ	प	ग्रीष्म ऋतु। उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
14	31	**14**	बुध	मूला	दि	10	45	**प्रति**	दि	6	0	1	33	**मासान्त**, त्र्यह: (द्वि प्र 3-44) ध्वज:।
13	हार	**15**	गुरु	पूषा	दि	9	17	**तृती**	प्र	1	37	14	59	संक्रान्ति व्रत, 3-18 दिन **मकर में चन्द्र,** B
12	2	**16**	शुक्र	उषा	दि	8	0	**चतु**	प्र	11	46	10	19	संकट चतुर्थी, आनन्द:।
11	3	**17**	शनि	श्रव	दि	7	2	**पंच**	प्र	10	15	6	32	6-42 सायं **कुम्भ में चन्द्र** और **पंचक** आरम्भ, स्थिर:।
10	4	**18**	रवि	धनि	दि	6	28	**षष्ठी**	प्र	9	6	3	43	मातंग:।
9	5	**19**	सोम	शत	दि	6	14	**सप्त**	प्र	8	37	2	2	12-20 रात **मीन में चन्द्र,** अमृतम्।
8	6	**20**	भौम	पूभा	दि	6	28	**अष्ट**	प्र	8	16	1	36	मृत्यु:।
7	7	**21**	बुध	उभा	दि	7	17	**नव**	प्र	8	47	2	28	2-8 रात से गण्डान्त, दक्षिणायन आरम्भ, अलापक:।
8	8	**22**	गुरु	रेव	दि	8	33	**दश**	प्र	9	26	4	30	8-33 प्रात: **मेष में चन्द्र** और **पंचक** समाप्त, C
9	9	**23**	शुक्र	अश्वि	दि	10	16	**एका**	प्र	10	43	7	42	वज्रम्।
10	10	**24**	शनि	भर	दि	12	23	**द्वाद**	प्र	12	20	11	48	6-57 सायं **वृष में चन्द्र,** ध्वांक्ष:।
11	11	**25**	रवि	कृति	दि	2	46	**त्रयो**	प्र	2	14	16	31	धौम्य:।
12	12	**26**	सोम	रोहि	दि	5	19	**चर्तु**	प्र	4	14	21	29	प्रवर्ध:।
13	13	**27**	भौम	मृग	प्र	7	54	**अमा**	प्र	5	24	24	26	6-37 प्रात: **मिथुन में चन्द्र,** दिन अधिक, क्षय:।
13	14	**28**	बुध	आर्द	प्र	10	18	**अमा**	दि	6	7	1	50	गज:।

B 7-13 सायं मिथुन में सूर्य मुर्हत 30 दरयाई, प्राजापत्य:। C 2-57 दिन तक गण्डान्त 7-43 सायं आर्द्र में सूर्य, **बृहस्पति मास,** मैत्रम्।

मध्याह्न:-प्रतिपदा पहले दिन। तृती से अमावसी तक अपने दिन। **श्राद्ध:**-प्रति पहले दिन। तृती० से अमावसी तक अपने दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 आषाढ शुक्लपक्ष वि॰ सं॰ 2052 शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1995

29 जून की ग्रह स्थिति:-मिथुन में सूर्य, शुक्र। सिंह में भौम। तुला में राहु। वृश्चिक् में बृहस्पति। मीन में शनि। मेष में केतु। वृष में बुध

	राथे	हार	जून	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	ग्रीष्म-ऋतु। दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों मे)
12	14	15	**29**	गुरु	पुन	प्र	12	24	**प्रति**	दि	7	47	5	58	5-54 सायं कर्क में चन्द्र, सिद्धः।
	15	16	**30**	शुक्र	तिष्या	प्र	2	6	**द्विती**	दि	9	6	9	15	9-43 दिन मिथुन में शुक्र, उन्मूलम्।
	16	17	**जुला**	शनि	अश्ले	प्र	3	21	**तृती**	दि	10	0	11	25	3-21 रात **सिंह में चन्द्र**, 9-5 रात से गण्डान्त, मानसम्।
	17	18	**2**	रवि	मघा	प्र	4	5	**चतु**	दि	10	23	12	25	9-35 दिन तक गण्डान्त, मुद्गरम्।
	18	19	**3**	सोम	पूफा	प्र	4	19	**पंच**	दि	10	16	12	8	कुमार षष्ठी, ध्वजः।
	19	20	**4**	भौम	उफा	प्र	4	7	**षष्ठी**	दि	9	38	10	33	10-16 दिन **कन्या में चन्द्र**, प्राजापत्यः।
	19	21	**5**	बुध	हस्त	प्र	3	27	**सप्त**	दि	8	35	7	53	हार सप्तमी, आनन्दः।
	20	22	**6**	गुरु	चित्रा	प्र	2	29	**अष्ट**	दि	7	7	4	12	3 बजे दिन **तुला में चन्द्र**, 12-2 रात **मिथुन** में A
	21	23	**7**	शुक्र	स्वा	प्र	1	13	**दश**	प्र	3	13	19	9	मुसलम्।
	22	24	**8**	शनि	विशा	प्र	11	44	**एका**	प्र	12	59	13	30	6-9 सायं वृश्चिक् में चन्द्र, देवशयनी एकादशी, शूलम्।
	23	25	**9**	रवि	अनु	प्र	10	10	**द्वाद**	प्र	10	32	7	28	मृत्युः।
	24	26	**10**	सोम	ज्येष्ठ	प्र	8	30	**त्र्यो**	प्र	8	4	1	21	8-30 रात धनु में चन्द्र, और मूल आरम्भ, B
	25	27	**11**	भौम	मूला	दि	6	53	**चर्तु**	दि	5	40	30	29	ज्वाला चतुर्दशी, रिव्रवयात्रा, छत्रम्।
	25	28	**12**	बुध	पुषा	दि	5	41	**पूर्णि**	दि	3	21	24	42	11-2 रात मकर में चन्द्र, गुरुपूर्णिमा, व्यास पुजा, श्रीवत्सः।

A **बुध**, त्र्यहः (न प्र 5-28) **हार अष्टमी, हार नवमी**, शारिका जयन्ती चरः। B 2-55 दिन से 2-6 रात तक गण्डान्त **नवमी**, शारिका जयन्ती, क्षीरभवानी यज्ञ (जानीपोटा जम्मू) 1-45 दिन कन्या में भौम, काम्यः।

मध्याह्नः–प्रति से अष्ट तक पहले दिन। दशमी से पूर्णिमा तक अपने दिन। **श्राद्धः**–प्रति से अष्ट तक पहले दिन। दशमी से चर्तु तक अपने दिन। पूर्णिमा पहले दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 विक्रमी सं॰ 2052 श्रावण कृष्णपक्ष शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1995

13 जुलाई की ग्रह स्थिति:-मिथुन में सूर्य, बुध, शुक्र। तुला में राहु। वृश्चिक में बृहस्पति। मीन में शनि। मेष में केतु। कन्या में भौम।

	रार्ध	हार	जुला	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	ग्रीष्म-ऋतु। दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
12	26	29	13	गुरु	उषा	दि	4	6	प्रति	दि	1	14	19	22	सौम्य:।
	27	30	14	शुक्र	श्रव	दि	3	3	द्विती	दि	11	21	14	41	2-37 रात **कुम्भ में चन्द्र,** और **पंचक** आरम्भ, धौम्य:।
	28	31	15	शनि	धनि	दि	2	22	तृती	दि	9	49	10	48	संकट चतुर्थी, प्रवर्ध:।
	29	32	16	रवि	शत	दि	2	3	चतु	दि	8	39	7	53	**मासान्त,** क्षय:।
	30	श्रा	17	सोम	पूभा	दि	2	12	पंच	दि	7	56	6	4	संक्रान्ति व्रत, 8-8 प्रात: **मीन में चन्द्र,** 10-21 A
	30	2	18	भौम	उभा	दि	2	51	षष्ठी	दि	7	44	5	32	सिद्ध:।
	31	3	19	बुध	रेव	दि	4	0	सप्त	दि	8	2	6	18	4 बजे दिन **मेष में चन्द्र** और **पंचक** समाप्त, B
	32	4	20	गुरु	अश्वि	दि	5	38	अष्ट	दि	8	51	8	18	मानसम्।
	33	5	21	शुक्र	भर	प्र	7	37	नव	दि	10	4	11	21	2-8 रात **वृष में चन्द्र,** मुद्गरम्।
	34	6	22	शनि	कृति	प्र	9	54	दश	दि	11	41	15	22	**शनिमास,** ध्वज:।
	35	7	23	रवि	रोहि	प्र	12	30	एका	दि	1	34	20	5	7-39 प्रात: **कर्क में बुध,** कमला एकादशी, C
	37	8	24	सोम	मृग	प्र	3	6	द्वाद	दि	3	30	24	54	1-48 दिन **मिथुन में चन्द्र,** 10-21 रात **कर्क** D
	39	9	25	भौम	आर्द्र	प्र	5	31	त्रयो	दि	5	25	29	40	चर:।
	42	10	26	बुध	पुन	प्र	5	31	चर्तु	प्र	7	44	0	45	1-13 रात **कर्क में चन्द्र,** मुसलम्।
	44	11	27	गुरु	पुन	दि	7	41	अमा	प्र	8	31	2	42	सिद्ध:।

A दिन कर्क में सूर्य मुहूर्त 30 किनारी, पांजययात्रा, गज:। B 9-40 दिन से 10-20 रात तक गण्डान्त, उन्मूलम्। C प्रजापत्य: D में शुक्र, आनन्द:।

मध्याह्न:—प्रति अपने दिन। द्वि॰ से दशमी पहले दिन। एका॰ से अमा॰ तक अपने दिन। श्राद्ध:—प्रति से त्रयो॰ तक पहले दिन। चर्तु॰ अमा॰ अपने दिन।

सप्तर्षि सं० 5071 श्रावण शुक्लपक्ष वि० सं० 2052 शाका सं० 1917 ईसवी सन् 1995

28 जुलाई की ग्रह स्थितिः-**कर्क** में सूर्य, बुध, शुक्र। **कन्या** में भौम। **तुला** में राहु। **वृश्चिक्** में बृहस्पति। **मीन** में शनि। **मेष** में केतु।

	रार्ध	श्रा	जुला	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	वर्षा-ऋतु। दक्षिणायन् (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
12	46	12	**28**	शुक्र	तिष्या	दि	9	29	प्रति	प्र	9	27	5	5	उन्मूलम्।
	48	13	**29**	शनि	अश्ले	दि	10	50	द्विती	प्र	9	54	6	16	5-10 सायं शुक्रास्त, 10-50 दिन सिंह में चन्द्र, A
	50	14	**30**	रवि	मघा	दि	11	43	तृती	प्र	9	49	6	7	मुद्गरम्।
	52	15	**31**	चन्द्र	पूफा	दि	12	4	चतु	प्र	9	14	4	43	6-6 सायं कन्या में चन्द्र, ध्वजः।
	54	16	**अग॰**	भौम	उफा	दि	11	57	पंच	प्र	8	11	2	8	नागपंचमी, प्राजापत्यः।
	56	17	**2**	बुध	हस्त	दि	11	26	षष्ठी	दि	6	46	32	40	11-1 रात तुला में चन्द्र, कुमार षष्ठी व्रत, आनन्दः
	58	18	**3**	गुरु	चित्रा	दि	12	1	सप्त	दि	4	58	28	10	तुलसीदास जयन्ती, चरः।
	0	19	**4**	शुक्र	स्वा	दि	9	19	अष्ट	दि	2	55	23	1	2-15 रात वृश्चिक् में चन्द्र, मुसलम्।
	2	20	**5**	शनि	विशा	दि	7	54	नव	दि	12	40	17	21	शूलम्।
	4	21	**6**	रवि	अनु	दि	6	19	दश	दि	10	16	11	21	4-38 रात धनु में चन्द्र मूल आरम्भ, 11-3 B
	7	22	**7**	सोम	मूला	प्र	3	0	एका	दि	7	48	5	11	10-16 दिन तक गण्डान्त, त्र्यहः (द्वा॰ प्र 5-24) C
	9	23	**8**	भौम	पूषा	प्र	1	30	त्रयो	प्र	3	5	19	35	मैत्रम्।
	11	24	**9**	बुध	उषा	प्र	12	8	चर्तु	प्र	12	56	14	14	7-9 प्रातः से मकर में चन्द्र वज्रम्।
	13	25	**10**	गुरु	श्रव	प्र	11	2	पूर्णि	प्र	11	5	9	36	रक्षा बन्धन पूर्णिमा, अमर नाथ यात्रा, थजीवार D

शुक्रास्त
29 जुलाई

A 4-31 प्रातः से 5-6 साय तक गण्डान्त, मानसम्। B रात से गण्डान्त 8-8 रात से सिंह में बुध, मृत्युः। C श्रावण द्वादशी शोपियान यात्रा कुम्भ में वक्री शनि, अलापकः। D यात्रा (बिजबिहारा) ध्वजः मध्याहुः-प्रति से नव तक अपने दिन। दश॰ एक॰ पहले दिन। त्रयो॰ से पूर्णि तक अपने दिन।

श्राद्धः-प्रति से पंच तक अपने दिन। षष्ठी से एका॰ तक पहले दिन। त्रयो से पूर्णि तक अपने दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 भाद्र कृष्णपक्ष वि॰ सं॰ 2052 शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1995

11 अगस्त की ग्रह स्थितिः- कर्क में सूर्य, शुक्र। कन्या में भौम। सिंह में बुध। तुला में राहु। वृश्चिक में गुरु। कुम्भ में शनि। मेष में केतु

	रार्ध	श्रा	अग	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मिं॰	घ	प	वर्षा-ऋतु। दक्षिणायन्। (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
13	15	26	11	शुक्र	धनि	प्र	10	15	प्रति	प्र	9	31	5	45	10-36 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक A
	17	27	12	शनि	शत	प्र	9	50	द्विती	प्र	8	21	2	51	आनन्दः।
	19	28	13	रवि	पूभा	प्र	9	53	तृती	प्र	7	37	1	5	3-50 दिन मीन में चन्द्र, चरः।
	21	29	14	सोम	उभा	प्र	10	22	चतु	प्र	7	21	0	32	संकट चतुर्थी, नवदलयात्रा, मुसलम्।
	23	30	15	भौम	रेव	प्र	11	24	पंच	प्र	7	37	1	16	11-25 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, B
	26	31	16	बुध	अश्वि	प्र	12	56	षष्ठी	प्र	8	26	3	17	5-45 प्रातः तक गण्डान्त, मृत्युः।
	28	भाद्र	17	गुरु	भर	प्र	2	52	सप्त	प्र	9	39	6	23	जन्माष्टमी, संक्रान्ति, 9-57 रात सिंह में सूर्य C
	30	2	18	शुक्र	कृति	प्र	5	11	अष्ट	प्र	11	16	10	26	9-27 दिन वृष में चन्द्र, 6-40 प्रातः सिंह में शुक्र, छत्रम्।
	32	3	19	शनि	रोहि	प्र	5	55	नव	प्र	1	9	15	10	श्रीवत्सः।
	34	4	20	रवि	रोहि	दि	7	42	दश	प्र	3	9	20	11	9-1 रात मिथुन में चन्द्र, प्रजापत्यः।
	36	5	21	सोम	मृग	दि	10	17	एका	प्र	5	7	25	7	अजा एकादशी, चन्द्रमासः, आनन्दः।
	38	6	22	भौम	आर्द्र	दि	12	48	द्वाद	प्र	5	57	27	16	दिन अधिक, गोवत्सापूजा, चरः।
	40	7	23	बुध	पुन	दि	3	1	द्वाद	दि	6	50	2	10	8-30 दिन से कर्क में चन्द्र, मुसलम्।
	43	8	24	गुरु	तिष्या	दि	4	55	त्रयो	दि	8	15	5	39	कलियुग जन्म, 7-28 सायं कन्या में बुध, शूलम्।
	45	9	25	शुक्र	अश्ले	दि	6	24	चर्तु	दि	9	13	7	59	6-24 सायं सिंह में चन्द्र, 12-4 दिन से 12-41 D
	48	10	26	शनि	मघा	प्र	7	0	अमा	दि	9	43	9	13	दर्भ अमावसी, मघामावसी, काम्यः।

A आरम्भ, प्रजापत्यः। B 5-11 सायं से गण्डान्त, चन्दन षष्ठी व्रत, भारत स्वतन्त्र दिवस, शूलम्। C मुहूर्त 30 दरयाई काम्यः। D रात तक गण्डान्त, मृत्युः।

मध्याह्नः–प्रति से द्वादशी तक अपने दिन। त्रयो से अमा- पहले दिन। श्राद्धः–प्रति से द्वादशी तक अपने दिन। त्रयो- से अमा- तक पहले दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 भाद्र शुक्लपक्ष वि॰ सं॰ 2052 शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1995

27 अगस्त की ग्रह स्थिति:–सिंह में सूर्य, शुक्र। कन्या में भौम, बुध। तुला में राहु। वृश्चिक में बृहस्पति। कुम्भ में शनि। मेष में केतु।

	रार्थ	भाद्र	अग	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	वर्षा ऋतु दक्षिणायन् (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
13	51	11	27	रवि	पूफा	प्र	7	50	प्रति	दि	9	43	9	9	1-54 रात कन्या में चन्द्र, छत्रम्।
	53	12	28	सोम	उफा	प्र	7	49	द्विती	दि	9	12	7	51	3-26 रात तुला में भौम, श्रीवत्सः।
	56	13	29	भौम	हस्त	प्र	7	22	तृती	दि	8	13	5	20	हरितालिका तृतीया, सौम्यः।
	58	14	30	बुध	चित्रा	दि	6	33	चतु	दि	6	50	1	49	7 बजे प्रातः तुला में चन्द्र, त्र्यहः (पं प्र 5-4) A
14	1	15	31	गुरु	स्वा	दि	5	14	षष्ठी	प्र	3	0	20	17	कुमार षष्ठी व्रत, स्थिरः।
	3	16	सप्त	शुक्र	विशा	दि	4	1	सप्त	प्र	12	50	14	54	10-22 दिन वृश्चिक् में चन्द्र, ब्रह्मसरोवर, श्राद्ध, मातंगः।
	6	17	2	शनि	अनु	दि	2	29	अष्ट	प्र	10	25	8	57	गंगाष्टमी, शारदाष्टमी (गुशी कुपवाडा) अमृतम्।
	9	18	3	रवि	ज्येष्ठ	दि	12	51	नव	प्र	8	0	2	57	12-51 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, B
	11	19	4	सोम	मूला	दि	11	13	दश	दि	5	38	28	37	अलापकः।
	14	20	5	भौम	पूषा	दि	9	39	एका	दि	3	20	22	50	3-16 दिन मकर में चन्द्र, नारायणी एकादशी, गौतम C
	16	21	6	बुध	उषा	दि	8	14	द्वाद	दि	1	13	17	31	इन्द्र द्वादशी, वामन जयन्ती, वज्रम्।
	19	22	7	गुरु	श्रव	दि	7	4	त्रयो	दि	11	21	12	48	6-35 सायं कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, D
	21	23	8	शुक्र	शत	प्र	5	41	चर्तु	दि	10	19	8	53	अनन्त चतुदर्शी, अनन्तनाग यात्रा, सौम्यः।
	24	24	9	शनि	पूभा	प्र	5	36	पूर्णि	दि	8	38	5	54	11-32 रात मीन में चन्द्र, पितृ पक्षारम्भ, कालदण्डः।

A विनायक चतुर्थी वराह पंचमी, करंकतीर्थ श्राद्ध, कालदण्डः। B 7-16 प्रातः से 6-27 सायं तक गण्डान्त, काण्डः। C नाग यात्रा, मैत्रम्। D वितस्ता त्रयोदशी व्यथवुत्रयात्रा, क्षीरभवानी यज्ञ (जानीपोरा) जम्मू ध्वजः। **मध्याह्नः**–प्रति से चतु तक पहले दिन। षष्ठी से द्वादशी तक अपने दिन। त्रयो से पूर्णि तक पहले दिन। **श्राद्धः**–प्रति से चतु तक पहले दिन। षष्ठी से दशमी तक अपने दिन। एका॰ से पूर्णिमा तक पहले दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 आश्विन कृष्णपक्ष वि॰ सं॰ 2052 शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1995

10 सितम्बर की ग्रह स्थिति:- सिंह में सूर्य। कन्या में बुध, शुक्र। तुला में भौम, राहु। वृश्चिक में बृहस्पति। कुम्भ में शनि। मेष में केतु

राधं	भाद्र	सित	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	वर्षा ऋतु दक्षिणायन् (ग्रह संचार बजे मिनटों मे)
27	25	10	रवि	उभा	प्र	6	1	प्रति	दि	7	56	4	5	स्थिर:।
29	26	11	सोम	रेव	प्र	6	16	द्विती	दि	7	43	3	29	12-35 रात से गण्डान्त, 10-11 दिन कन्या A
32	27	12	भौम	रेव	दि	6	58	तृती	दि	8	0	4	9	स्वा. लक्ष्मण जी अर्न्तध्यान दिवस संकट चतुर्थी, D
34	28	13	बुध	अश्वि	दि	8	25	चतु	दि	8	48	6	6	मृत्यु:।
37	29	14	गुरु	भर	दि	10	16	पंच	दि	10	4	9	12	काश्मीरी पण्डितों का बलिदान दिवस, 4-47 शां B
40	30	15	शुक्र	कृति	दि	12	28	षष्ठी	दि	11	41	13	13	साहिब सप्तमी, छत्रम्।
42	31	16	शनि	रोहि	दि	2	56	सप्त	दि	1	36	18	0	4-9 रात मिथुन में चन्द्र, मासान्त, श्रीवत्स:।
45	असो	17	रवि	मृग	दि	5	31	अष्ट	दि	3	37	22	57	संक्रान्ति व्रत, 10-42 रात कन्या में सूर्य मुर्हूत 30 C
47	2	18	सोम	आर्द्र	प्र	7	59	नव	दि	5	36	27	53	कालदण्ड:।
50	3	19	भौम	पुन	प्र	10	19	दश	प्र	7	19	1	57	3-48 दिन कर्क में चन्द्र स्थिर:।
53	4	20	बुध	तिष्य	प्र	12	19	एका	प्र	8	47	5	39	बुध मास, इन्द्र एकादशी सन्यासियों का श्राद्ध, मातंग:।
55	5	21	गुरु	अश्ले	प्र	1	52	द्वाद	प्र	9	49	8	17	1-52 रात सिंह में चन्द्र, 7-30 सायं से गण्डान्त, अमृतम्।
58	6	22	शुक्र	मघा	प्र	2	58	त्रयो	प्र	10	23	9	43	8-12 प्रात: तक गण्डान्त, काण्ड:।
0	7	23	शनि	पूफा	प्र	3	33	चर्तु	प्र	10	25	9	49	अलपाक:।
2	8	24	रवि	उफा	प्र	3	38	अमा	प्र	9	56	8	40	पितृामावसी, 9-38 रात कन्या में चन्द्र, मैत्रम्।

A में शुक्र, मातंग:। B वृष में चन्द्र, काम्य: D 6-58 प्रात: मेष में चन्द्र, और पंचक समाप्त, 1-18 दिन तक गण्डान्त, शूलम्। C किर्नारी, सौम्य:

मध्याह्न:-प्रति से षष्ठी तक पहले दिन। सप्तमी से अमा तक अपने दिन। श्राद्ध:-प्रति से नवमी तक पहले दिन। दशमी से अमावसी तक अपने दिन।

सप्तर्षि सं० 5071 आश्विन शुक्लपक्ष विक्रमी सं० 2052 शाका सं० 1917 ईसवी सन् 1995

25 सितम्बर की ग्रह स्थितिः-**कन्या** में सूर्य, बुध, शुक्र। तुला में भौम, राहु। वृश्चिक् में बृहस्पति, कुम्भ में शनि, मेष में केतु।

रार्ध	असो	सप्त	वार	नक्षत्र		बजे	मि०	तिथि		बजे	मि०	घ	प	वर्षा-ऋतु दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
5	9	**25**	सोम	हस्त	प्र	3	16	प्रति	प्र	8	58	6	19	नवरात्रारम्भ, वज्रम्।
7	10	**26**	भौम	चित्रा	प्र	2	31	द्विती	प्र	7	35	2	54	2-58 दिन तुला में चन्द्र, ध्वांक्षः।
10	11	**27**	बुध	स्वा	प्र	1	27	तृती	दि	5	31	27	19	धौम्यः।
13	12	**28**	गुरु	विशा	प्र	12	8	चत	दि	3	55	23	18	6-26 सायं वृश्चिक् में चन्द्र, प्रवर्धः।
15	13	**29**	शुक्र	अनु	प्र	10	37	पंच	दि	1	44	17	47	कुमार षष्ठी व्रत, क्षयः
18	14	**30**	शनि	ज्येष्ठ	प्र	8	59	षष्ठी	दि	11	23	11	58	8-59 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 3-25 A
20	15	अक्टू	रवि	मूला	प्र	7	20	सप्त	दि	9	0	5	52	विजया सप्तमी 9 बजे दिन तक, त्र्यहः B
23	16	**2**	सोम	पूषा	दि	5	48	नव	प्र	4	16	24	54	दुर्गाष्टमी महानवमी, भद्रकाली जयन्ती, गान्धी तथा C
26	17	**3**	भौम	उषा	दि	4	21	दश	प्र	2	10	19	41	दसेरा, मानसम्।
28	18	**4**	बुध	श्रव	दि	3	7	एका	प्र	12	21	15	7	2-32 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, D
31	19	**5**	गुरु	धनि	दि	2	10	द्वाद	प्र	10	50	11	22	12-46 रात शुक्रोदय, 1-10 दिन E
34	20	**6**	शुक्र	शत	दि	1	35	त्रयो	प्र	9	42	8	34	सौम्यः।
36	21	**7**	शनि	पूभा	दि	1	24	चर्तु	प्र	9	0	6	54	7-23 प्रातः मीन में चन्द्र, कालदण्डः
39	22	**8**	रवि	उभा	दि	1	42	पूर्णि	प्र	8	49	6	28	स्थिरः

दुर्गाष्टमी 2 अक्टूबर को

शुक्रोदय 5 अक्टूबर

A दिन से 2-43 रात तक गण्डान्त, गजः। B (अ प्र 6-35) सिद्ध :। C लाल बहादुर जयन्ती, 11-21 रात मकर में चन्द्र, उन्मूलम्। D पापांकुशा एकादशी, छत्रम् E तुला में शुक्र, श्रीवत्सः। **मध्याह्नः**-प्रति से षष्ठी तक अपने दिन। सप्तमी पहले दिन। नवमी से पूर्णिमा तक अपने दिन। **श्राद्धः**-प्रति द्वि० तृती० अपने दिन। चतु से सप्त० तक पहले दिन। नवमी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 कार्तिक कृष्णपक्ष विक्रमी सं॰ 2052 शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1995

9 अक्टूबर की ग्रह स्थितिः–**कन्या** में सूर्य, बुध। **तुला** में राहु, शुक्र, भौम। **कुम्भ** में शनि। **वृश्चिक** में बृहस्पति। मेष में केतु

15

रार्ध	असो	अक्टू	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	शरद-ऋतु। दक्षिणायन्। (ग्रह संचार बजे मिनटों मे)
42	23	**9**	सोम	रेव	दि	2	30	प्रति	प्र	9	9	7	20	2-30 दिन **मेष में चन्द्र** और **पंचक** समाप्त, A
44	24	**10**	भौम	अश्वि	दि	3	48	द्विती	प्र	9	59	9	27	अमृतम्।
47	25	**11**	बुध	भर	दि	5	35	तृती	प्र	11	16	12	43	12-1 रात **वृष में चन्द्र,** काण्डः।
49	26	**12**	गुरु	कृति	प्र	7	40	चतु	प्र	12	55	16	53	संकट चतुर्थी करवा चौथ 9-4 दिन **वृश्चिक् में भौम,** अलापकः
52	27	**13**	शुक्र	रोहि	प्र	10	6	पंच	प्र	2	53	21	51	मैत्रम्।
55	28	**14**	शनि	मृग	प्र	12	40	षष्ठी	प्र	4	58	27	6	11-23 दिन **मिथुन में चन्द्र,** वज्रम्।
57	29	**15**	रवि	आर्द्र	प्र	3	13	सप्त	प्र	6	52	31	54	दिन अधिक, ध्वांक्षः।
0	30	**16**	सोम	पुन	प्र	5	35	सप्त	दि	7	0	0	16	11-3 रात **कर्क में चन्द्र,** धौम्यः।
3	31	**17**	भौम	तिष्य	प्र	6	55	अष्ट	दि	8	48	4	43	**मासान्त,** प्रवर्धः।
5	कत	**18**	बुध	तिष्य	दि	7	40	नव	दि	10	18	8	24	9-44 दिन **तुला में सूर्य** मुहूर्त 30 दरयाई, B
8	2	**19**	गुरु	अश्ले	दि	9	20	दश	दि	11	22	10	59	9-20 दिन **सिंह में चन्द्र,** 3-41 रात तक C
11	3	**20**	शुक्र	मघा	दि	10	31	एका	दि	11	56	12	26	**शुक्रमास,** रमाएकादशी, काण्डः।
13	4	**21**	शनि	पूफा	दि	11	15	द्वाद	दि	12	0	12	31	5-21 सायं **कन्या में चन्द्र,** अलापकः।
16	5	**22**	रवि	उफा	दि	11	29	त्रयो	दि	11	35	11	22	मैत्रम्।
19	6	**23**	सोम	हस्त	दि	11	13	चर्तु	दि	10	39	9	1	10-55 रात **तुला में चन्द्र, दीपमाला,** वज्रम्।
21	7	**24**	भौम	चित्र	दि	10	33	अमा	दि	9	19	5	37	महावीर निर्वाण दिवास **सूर्य ग्रहण,** ध्वांक्षः।

A 8-15 प्रातः से 8-45 रात तक गण्डान्त, मातंगः। B संक्रान्ति व्रत, 2-58 रात से गण्डान्त, मातंगः। C गण्डान्त, अमृतम्।

सप्तर्षि सं॰ 5071 कार्तिक शुक्लपक्ष विक्रमी सं॰ 2052 शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1995

25 अक्टूबर की ग्रह स्थितिः-तुला में सूर्य, शुक्र, राहु। **वृश्चिक** में भौम, बृहस्पति। **कुम्भ** में शनि। **मेष** में केतु। **कन्या** में बुध।

16

रार्ध	कत	अक्टू	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	शरद-ऋतु। दक्षिणायन् (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
23	8	**25**	बुध	स्वा	दि	9	33	**प्रति**	दि	7	39	1	25	2-34 रात **वृक्षिक् में चन्द्र,** त्र्यहः (द्वि प्र 5-37) A
25	9	**26**	गुरु	विशा	दि	8	17	**तृती**	प्र	3	26	23	51	प्रवर्धः।
28	10	**27**	शुक्र	ज्येष्ठ	प्र	5	5	**चतु**	प्र	1	8	18	7	11-32 रात से गण्डान्त, चरः।
30	11	**28**	शनि	मूला	प्र	3	28	**पंच**	प्र	10	47	12	17	5-5 प्रातः **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, 10-46 B
32	12	**29**	रवि	पूषा	प्र	1	50	**षष्ठी**	प्र	8	24	6	23	कुमार षष्ठी, 12-37 दिन **वृश्चिक् में शुक्र,** शूलम्।
34	13	**30**	सोम	उषा	प्र	12	22	**सप्त**	प्र	6	10	0	50	7-34 प्रातः **मकर में चन्द्र,** मृत्युः।
36	14	**31**	भौम	श्रव	प्र	11	5	**अष्ट**	दि	4	11	22	33	7-14 रात **तुला में बुध,** श्रीमती इन्दिरागांधी C
39	15	**नव**	बुध	धनि	प्र	10	4	**नव**	दि	2	24	17	59	10-39 दिन **कुम्भ में चन्द्र** और **पंचक** आरम्भ, मैत्रम्।
41	16	**2**	गुरु	शत	प्र	9	24	**दश**	दि	12	54	14	15	वज्रम्।
43	17	**3**	शुक्र	पूभा	प्र	9	9	**एका**	दि	11	46	11	28	3-12 दिन **मीन में चन्द्र,** हरिबोधिनी एकादशी, ध्वाक्षंः।
45	18	**4**	शनि	उभा	प्र	9	22	**द्वाद**	दि	11	6	9	49	शिवस्वाप, धौम्यः।
47	19	**5**	रवि	रेव	प्र	10	2	**त्रयो**	दि	10	58	9	25	10-2 रात **मेष में चन्द्र** और **पंचक** समाप्त, D
50	20	**6**	सोम	अश्वि	प्र	11	13	**चर्तु**	दि	11	21	10	21	क्षयः।
52	21	**7**	भौम	भर	प्र	12	51	**पूर्णि**	दि	12	14	12	30	गुरु नानक जयन्ती, गजः।

A अन्नकूट, गोवर्धन पूजा भाई दूज धौम्यः B दिन तक गण्डान्त मुसलम्। C अर्न्तध्यान दिवस अलापकः। D 4-49 दिन से 4-17 रात तक गण्डान्त, प्रवर्धः। **मध्याह्नः**-प्रति पहले दिन। तृती॰ से दशमी तक अपने दिन। एका॰ से पूर्णि तक पहले दिन। **श्राद्धः**-प्रति पहले दिन। तृती॰ से अष्ट॰ तक अपने दिन। नवमी से पूर्णिमा तक पहले दिन।

सप्तर्षि सं० 5071 मार्ग कृष्णपक्ष विक्रमी सं० 2052 शाका सं० 1917 ईसवी सन् 1995

8 नवम्बर की ग्रह स्थितिः–तुला में सूर्य, बुध, राहु। **वृश्चिक** में भौम बृहस्पति, शुक्र। **कुम्भ** में शनि। **मेष** में केतु।

	राधं	कत	नव	वार	नक्षत्र		बजे	मि०	तिथि		बजे	मि०	घ	प	शरद-ऋतु। दक्षिणायन्। (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
16	54	22	**8**	बुध	कृति	प्र	2	56	प्रति	दि	1	35	15	49	7-21 प्रातः **वृष में चन्द्र,** सिद्धः।
	56	23	**9**	गुरु	रोहि	प्र	5	17	द्विती	दि	3	17	20	2	उन्मूलम्।
	59	24	**10**	शुक्र	मृग	प्र	7	18	तृती	दि	5	17	25	0	6-35 सायं **मिथुन में चन्द्र,** संकट चतुर्थी, मानसम्।
17	1	25	**11**	शनि	मृग	दि	7	51	चर्तु	प्र	7	24	4	15	व्रजम्।
	3	26	**12**	रवि	आर्द्र	दि	10	25	पंच	प्र	9	29	9	27	ध्वांक्षः।
	5	27	**13**	सोम	पुन	दि	12	52	षष्ठी	प्र	11	19	14	7	6-18 प्रातः **कर्क में चन्द्र,** धौम्यः।
	7	28	**14**	भौम	तिष्या	दि	3	0	सप्त	प्र	12	51	17	56	**नहरु जयन्ती,** बालदिवस, प्रवर्धः।
	10	29	**15**	बुध	अश्ले	दि	4	45	अष्ट	प्र	1	55	20	40	4-45 दिन **सिंह में चन्द्र,** 10-21 दिन से A
	11	30	**16**	गुरु	मघा	प्र	6	6	नव	प्र	2	29	22	7	मासान्त, गजः।
	13	मगर	**17**	शुक्र	पूफा	प्र	6	55	दश	प्र	2	31	22	15	**संक्रान्ति व्रत,** 1-5 रात **कन्या में चन्द्र,** B
	16	2	**18**	शनि	उफा	प्र	7	15	एका	प्र	2	5	21	13	उत्पन्ना एकादशी, 3 बजे रात **वृश्चिक् में बुध,** उन्मूलम्।
	19	3	**19**	रवि	हस्त	प्र	7	6	द्वाद	प्र	1	11	18	59	**सूर्य मास,** मानसम्।
	21	4	**20**	सोम	चित्र	प्र	6	30	त्रयो	प्र	11	51	15	44	कुम्भ में मार्गी शनि, 6-49 प्रातः **तुला में चन्द्र,** मुद्गरम्।
	23	5	**21**	भौम	स्वाति	प्र	5	34	चर्तु	प्र	10	14	11	43	ध्वजः।
	25	6	**22**	बुध	विशा	दि	4	20	अमा	प्र	8	12	6	41	10-40 दिन **वृश्चिक् में चन्द्र,** 9-11 रात **धनु** में C

A 11-12 रात तक गण्डान्त महाकाल भैरवाष्टमी, क्षयः। B 7-26 प्रातः वृश्चिक् में सूर्य मुर्हूत 30 समुद्रीय, सिद्धः। C **भौम** 6-32 सायं **धनु** में प्रवेश, प्रजापत्यः। मध्याह्नः–प्रति से अमावसी तक अपने दिन। श्राद्धः–प्रति से तृती तक पहले दिन। चतु से अमा तक अपने दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 मार्ग शुक्लपक्ष विक्रमी सं॰ 2052 शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1995

23 नवम्बर की ग्रह स्थितिः- **वृश्चिक** में सूर्य, बुध, बृहस्पति। **धनु** में भौम, शुक्र। **कुम्भ** में शनि। **तुला** में राहु। **मेष** में केतु।

	रार्ध	मग	नव	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	हेमन्त ऋतु दक्षिणायन् (ग्रहसंचार बजे मिनटों मे)
17	26	7	**23**	गुरु	अनु	दि	2	55	**प्रति**	प्र	6	2	1	18	आनन्दः।
	27	8	**24**	शुक्र	ज्येष्ठ	दि	1	20	**द्विती**	दि	3	45	20	40	1-20 दिन **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, A
	28	9	**25**	शनि	मूला	दि	11	42	**तृती**	दि	1	29	14	57	मुसलम्।
	29	10	**26**	रवि	पूषा	दि	10	4	**चतु**	दि	11	6	8	59	3-40 दिन **मकर में चन्द्र** शूलम्।
	30	11	**27**	सोम	उषा	दि	8	33	**पंच**	दि	8	53	3	28	कुमार षष्ठी व्रत, त्र्यहः (ष प्र 6-52) मृत्युः।
	31	12	**28**	भौम	धनि	प्र	6	6	**सप्त**	प्र	5	5	28	57	6-38 सायं **कुम्भ में चन्द्र** और **पंचक** आरम्भ, उन्मूलम्।
	32	13	**29**	बुध	शत	प्र	5	20	**अष्ट**	प्र	3	38	25	22	बुधाष्टमी, मानसम्।
	33	14	**30**	गुरु	पूभा	प्र	4	56	**नव**	प्र	2	34	22	42	11-1 रात **मीन में चन्द्र** मुद्गरम्।
	34	15	**दस**	शुक्र	उभा	प्र	5	3	**दश**	प्र	1	59	21	17	ध्वजः।
	35	16	**2**	शनि	रेव	प्र	5	38	**एका**	प्र	1	54	21	5	गीताजयन्ती, मोक्षदा एकादशी, 11-25 रात से B
	35	17	**3**	रवि	अश्वि	प्र	6	42	**द्वाद**	प्र	2	20	22	11	5-38 प्रातः **मेष में चन्द्र** और **पंचक** समाप्त, C
	36	18	**4**	सोम	भर	प्र	7	32	**त्रयो**	प्र	3	17	24	36	चरः।
	37	19	**5**	भौम	भर	दि	8	16	**चर्तु**	प्र	4	42	28	6	2-44 दिन **वृष में चन्द्र**, 3-54 रात **कन्या में** D
	38	20	**6**	बुध	कृति	दि	10	15	**पूर्णि**	प्र	6	27	32	33	सिद्धः।

A 7-46 प्रातः से 6-55 रात तक गण्डान्त, चरः। B गण्डान्त, प्रजापत्यः। C 11-52 दिन तक गण्डान्त, आनन्दः। D **राहु**, मीन में केतु, दत्तात्रेय जयन्ती, मुसलम्। **मध्याह्नः**–प्रति से तृती॰ तक अपने दिन। चतु॰ पंच॰ पहले दिन। सप्त से पूर्णिमा तक अपने दिन। **श्राद्धः**–प्रति॰ द्वि॰ अपने दिन। तृती॰ से पंचमी तक पहले दिन। सप्तमी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

पौष कृष्णपक्ष सप्तर्षि सं० 5071 विक्रमी सं० 2052 शाका सं० 1917 ईसवी सन् 1995

7 दिसम्बर की ग्रह स्थिति:-**वृश्चिक** में सूर्य। **धनु** में भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र। **कन्या** में राहु। **मीन** में केतु। **कुम्भ** में शनि।

17

रार्थ	मग	दस	वार	नक्षत्र		बजे	मि०	तिथि		बजे	मि०	घ	प
39	21	**7**	गुरु	रोहि	दि	12	32	प्रति	प्र	7	33	35	18
40	22	**8**	शुक्र	मृग	दि	3	3	प्रति	दि	8	30	2	21
41	23	**9**	शनि	आर्द्र	प्र	5	38	द्विती	दि	10	39	7	41
42	24	**10**	रवि	पुन	प्र	8	7	तृती	दि	12	43	12	50
43	25	**11**	सोम	तिष्या	प्र	10	20	चतु	दि	2	34	17	25
43	26	**12**	भौम	अश्ले	प्र	12	13	पंच	दि	4	4	21	8
44	27	**13**	बुध	मघा	प्र	1	39	षष्ठी	दि	5	7	23	48
45	28	**14**	गुरु	पूफा	प्र	2	34	सप्त	प्र	5	41	0	42
46	29	**15**	शुक्र	उफा	प्र	3	0	अष्ट	प्र	5	49	0	48
47	पौष	**16**	शनि	हस्त	प्र	2	58	नव	दि	5	16	24	7
48	2	**17**	रवि	चित्र	प्र	2	27	दश	दि	4	19	21	44
49	3	**18**	सोम	स्वा	प्र	7	37	एका	दि	2	56	18	16
50	4	**19**	भौम	विशा	प्र	12	26	द्वाद	दि	1	17	14	6
51	5	**20**	बुध	अनु	प्र	11	3	त्रयो	दि	11	19	9	11
52	6	**21**	गुरु	ज्येष्ठ	प्र	9	30	चर्तु	दि	9	9	3	48

हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)

9-18 दिन **बृहस्पति अस्त**, 1-45 रात **मिथुन में** A

8-15 दिन **धनु में बुध**, मानसम्।

मुद्गरम्।

7 दिसम्बर
वृहस्पति अस्त

1-30 दिन **कर्क में चन्द्र**, संकट चतुर्थी, ध्वज:।

प्रजापत्य:।

12-13 रात **सिंह में चन्द्र**, 5-45 सायं से B

6-35 प्रात: तक गण्डान्त, चर:।

मुसलम्। श्री शारदा मां जयन्ती।

8-43 दिन **कन्या में चन्द्र**, महाकाली जयन्ती, C

संक्रान्ति व्रत, 7-23 सायं **धनु में सूर्य**, 9-7 D

2-45 दिन **तुला में चन्द्र**, आनन्देश्वर भैरव E

सफला एकादशी, छत्रम्।

6-44 सायं **वृश्चिक में चन्द्र, भौम मासो** F

सौम्य:।

यक्षामावसी, त्र्यह: (अं प्र 33-51) 9-3 रात G

A **चन्द्र**, दिन अधिक, 10-21 रात **धनु में बृहस्पति**, मातृ का पूजा, **मुंजहर तहर**, उन्मूलम्। B गण्डान्त, आनन्द:। C **मासान्त**, शूलम्। D रात **मकर में शुक्र**, मृत्यु:। E जयन्ती, काम्य:। F **वर्षच्छ**, श्रीवत्स:। G **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, 3-52 दिन से 3-6 रात तक गण्डान्त, उत्तरायण कालदण्ड:। मध्याह्न:-प्रति अपने दिन। द्वि., तृती. पहले दिन। चतु से द्वादशी तक अपने दिन। त्रयो, चर्तु पहले दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 पौष शुक्लपक्ष विक्रमी सं॰ 2052 शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1995-96

22 दिसम्बर की ग्रह स्थितिः-**धनु** में सूर्य, भौम, बुध, बृहस्पति। **मकर** में शुक्र। **कुम्भ** में शनि। **मेष** में केतु। **कन्या** में राहु।

रार्ध	पौष	दस	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	हेमन्त ऋतु। उत्तरायण। (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
52	7	**22**	शुक्र	मूला	प्र	7	51	प्रति	प्र	4	34	27	59	स्थिरः।
51	8	**23**	शनि	पूषा	प्र	6	12	द्विती	प्र	2	15	22	11	11-48 रात **मकर में चन्द्र,** मातंगः।
51	9	**24**	रवि	उषा	दि	4	39	तृती	प्र	12	2	16	42	अमृतम्।
49	10	**25**	सोम	श्रव	दि	3	17	चतु	प्र	10	3	11	43	2-39 रात **कुम्भ में चन्द्र** और **पंचक** आरम्भ, सिद्धः
48	11	**26**	भौम	धनि	दि	2	9	पंच	प्र	8	20	7	25	उन्मूलम्।
47	12	**27**	बुध	शत	दि	1	19	षष्ठी	प्र	6	55	3	54	8-53 रात **मकर में बुध,** कुमार षष्ठी व्रत, मानसम्।
47	13	**28**	गुरु	पूभा	दि	12	48	सप्त	प्र	5	58	1	25	श्री गुरु गोविन्द जन्म, 6-52 प्रातः **मीन में चन्द्र,** मुद्गरम्।
46	14	**29**	शुक्र	उभा	दि	12	47	अष्ट	प्र	5	26	0	4	ध्वजः।
45	15	**30**	शनि	रेव	दि	1	16	नव	दि	5	26	24	29	7-6 प्रातः से 7-26 सायं तक गण्डान्त, 1-16 दिन A
44	16	**31**	रवि	अश्वि	दि	2	14	दश	प्र	5	53	1	12	6-17 सायं **मकर में भौम,** आनन्दः।
43	17	**जन**	सोम	भर	दि	3	39	एका	प्र	6	53	3	40	10-4 रात **वृष में चन्द्र,** 9-30 रात **बृहस्पति उदय,** B
42	18	**2**	भौम	कृति	प्र	5	31	द्वाद	प्र	8	20	7	16	मुसलम्।
41	19	**3**	बुध	रोहि	प्र	7	46	त्रयो	प्र	10	8	11	45	शूलम्।
40	20	**4**	गुरु	मृग	प्र	10	15	चर्तु	प्र	12	12	16	54	8-56 दिन **मिथुन में चन्द्र,** मृत्युः।
39	21	**5**	शुक्र	आर्द्र	प्र	12	50	पूर्णि	प्र	2	21	22	16	काम्यः।

गुरु उदय
पहली जनवरी

A से मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त। प्रजापत्यः। B 1996 पुत्रदा एकादशी, चरः।

मध्याह्नः-प्रति से पूर्णिमा तक अपने दिन। **श्राद्धः**-प्रति से पूर्णिमा तक अपने दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 माघ कृष्णपक्ष विक्रमी सं॰ 2052 शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1996

6 जनवरी की ग्रह स्थितिः–**धनु** में सूर्य, बृहस्पति। **मकर** में भौम, बुध, शुक्र। **कुम्भ** में शनि। **कन्या** में राहु। **मीन** में केतु।

रार्ध	पौष	जन	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	हेमन्तऋतु। उत्तरायण। (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
38	22	**6**	शनि	पुन	प्र	3	22	प्रति	प्र	4	25	27	24	8-45 रात **कर्क में चन्द्र**, छत्रम्।
37	23	**7**	रवि	तिष्या	प्र	5	39	द्विती	प्र	6	17	32	0	श्रीवत्सः।
36	24	**8**	सोम	अश्ले	प्र	7	32	तृती	प्र	7	32	35	12	दिन अधिक, 1 बजे 10 रात से गण्डान्त, सौम्यः।
36	25	**9**	भौम	अश्ले	दि	7	35	तृती	दि	7	42	0	25	2 बजे दिन तक गण्डान्त, 7-35 प्रातः **सिंह में** A
35	36	**10**	बुध	मघा	दि	9	7	चतु	दि	8	42	2	55	चरः।
34	27	**11**	गुरु	पूफा	दि	10	10	पंच	दि	9	14	4	14	4-22 दिन **कन्या में चन्द्र**, मुसलम्।
32	28	**12**	शुक्र	उफा	दि	10	41	षष्ठी	दि	9	14	4	18	**साहिब सप्तमी**, शूलम्।
32	29	**13**	शनि	हस्त	दि	10	46	सप्त	दि	8	44	3	2	10-39 रात **तुला में चन्द्र**, लोहडी मृत्युः।
31	माघ	**14**	रवि	चित्रा	दि	10	22	अष्ट	दि	7	44	0	35	**त्र्यहः** (न प्र 6-32) 3-17 रात **मकर में सूर्य** B
30	2	**15**	सोम	स्वा	दि	9	35	दश	प्र	4	41	27	58	2-50 रात **वृश्चिक में चन्द्र**, **शिशर** संक्रान्ति छत्रम्।
29	3	**16**	भौम	विशा	दि	8	31	एका	प्र	2	43	23	2	षठतिला एकादशी, श्रीवत्सः।
28	4	**17**	बुध	ज्येष्ठ	प्र	5	39	द्वाद	प्र	12	33	17	34	12-3 रात से गण्डान्त, ध्वाक्षः।
27	5	**18**	गुरु	मूला	प्र	4	1	त्रयो	प्र	10	17	11	44	5-39 प्रातः **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, C
26	6	**19**	शुक्र	पूषा	प्र	2	25	चर्तु	प्र	7	53	5	53	**कश्मीरी पण्डितों का जन्म भूमि** D
25	7	**20**	शनि	उषा	प्र	12	46	अमा	प्र	5	35	0	8	7-57 प्रातः **मकर में चन्द्र**, क्षयः।

A चन्द्र, संकट चतुर्थी, 9-44 दिन **कुम्भ में शुक्र**, आनन्दः। B मुर्हूत 15 दरयाई, मासान्त काम्यः। C 11-14 दिन तक गण्डान्त, **शिव चतुर्दशी**, बृहस्पति मास, धौम्यः। D निशकासन दिवस, प्रवर्धः मध्याह्नः–प्रति, द्वि॰ तृती अपने दिन। चतु से अष्ट तक पहले दिन। दश॰ से अमा तक अपने दिन। श्राद्धः–प्रति से तृतिया तक अपने दिन। [illegible]

सप्तर्षि सं॰ 5071 माघ शुक्लपक्ष विक्रमी सं॰ 2052 श्री शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1996

21 जनवरी की ग्रह स्थितिः–**मकर** में सूर्य, भौम। **धनु** में बृहस्पति, बुध। **कुम्भ** में शुक्र, शनि। **मीन** में केतु। **कन्या** में राहु।

	रार्ध	माघ	जन	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	शिशर ऋतु। उत्तरायण। (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
17	23	8	**21**	रवि	श्रव	प्र	11	21	प्रति	दि	3	24	19	54	9-42 रात **धनु में वक्री बुध,** मुसलम्।
	21	9	**22**	सोम	धनि	प्र	10	8	द्विती	दि	1	27	15	2	10-44 दिन **कुम्भ में चन्द्र** और **पंचक** आरम्भ, शूलम्।
	19	10	**23**	भौम	शत	प्र	9	14	तृती	दि	11	44	10	46	गौरी तृतीया, सुभाष चन्द्र जयन्ती, मृत्युः।
	16	11	**24**	बुध	शत	प्र	8	40	चतु	दि	10	22	7	25	2-47 दिन **मीन में चन्द्र,** त्रिपुरा चतुर्थी, **वसन्त** A
	14	12	**25**	गुरु	उभा	प्र	8	32	पंच	दि	9	24	5	3	कुमार षष्ठी, छत्रम्।
	12	13	**26**	शुक्र	रेव	प्र	8	52	षष्ठी	दि	8	54	3	50	8-52 रात **मेष में चन्द्र** और पंचक समाप्त, B
	10	14	**27**	शनि	अश्वि	प्र	9	43	सप्त	दि	8	54	3	53	सौम्यः।
	7	15	**28**	रवि	भर	प्र	11	2	अष्ट	दि	9	28	5	18	भीष्माष्टमी, कालदण्डः।
	5	16	**29**	सोम	कृति	प्र	12	50	नव	दि	7	56	10	30	5-28 प्रातः **वृष में चन्द्र,** स्थिरः।
	3	17	**30**	भौम	रोहि	प्र	3	1	दश	दि	11	58	11	38	गान्धी अन्तर्ध्यान दिवस, मातंगः।
	1	18	**31**	बुध	मृग	प्र	5	28	एका	दि	1	47	16	12	4-12 दिन **मिथुन में चन्द्र,** भीमसीन एकादशी, C
16	58	19	**फर**	गुरु	आर्द्र	प्र	7	17	द्वाद	दि	3	51	21	24	काण्डः।
	56	20	**2**	शुक्र	आर्द्र	दि	8	1	त्रयो	प्र	5	59	0	38	3-57 रात **कर्क में चन्द्र,** काम्यः।
	54	21	**3**	शनि	पुन	दि	10	33	चतु	प्र	8	2	5	42	1-11 रात **मीन में शुक्र,** यक्षणी चतुर्दशी, छत्रम्।
	52	22	**4**	रवि	तिष्य	दि	12	54	पूर्णि	प्र	9	50	10	10	काव पूर्णिमा, माघ पूर्णिमा, श्रीवत्सः।

वसन्त पंचमी
24 जनवरी

A **पंचमी** काम्यः। B 2-44 दिन से 3-3 रात तक गण्डान्त, भारत गणतन्त्र दिवस, श्रीवत्सः। C जया एकादशी, अमृतम्। **मध्याह्नः**–प्रति से तृती तक अपने दिन। चतु से दश तक पहले दिन। एका से पूर्णि तक अपने दिन। **श्राद्धः**–प्रति से द्वादशी तक पहले दिन त्रयो से पूर्णि तक अपने दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 फाल्गुण कृष्णपक्ष विक्रमी सं॰ 2052 श्री शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1996

5 फंरवरी की ग्रह स्थिति:-**मकर** में सूर्य, भौम। **धनु** में बुध, बृहस्पति । **कुम्भ** में शनि। **मीन** में शुक्र, केतु। **कन्या** में राहु।

16

रार्ध	माघ	फर	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	शिशर ऋतु। उत्तरायण। (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
49	23	5	सोम	अश्ले	दि	2	58	प्रति	प्र	11	14	13	41	2-58 दिन **सिंह में चन्द्र,** 8-30 दिन से 9-25 A
47	24	6	भौम	मघा	दि	4	35	द्विती	प्र	12	13	16	6	कालदण्ड:।
45	25	7	बुध	पूफा	दि	5	45	तृती	प्र	12	42	17	18	12 बजे रात **कन्या में चन्द्र,** स्थिर:।
43	26	8	गुरु	उफा	प्र	6	26	चतु	प्र	12	40	17	7	संकट चतुर्थी, **शारिका जी-यज्ञ** निशात कश्मीर B
40	27	9	शुक्र	हस्त	प्र	6	40	पंच	प्र	12	5	15	36	अमृतम्। हेरथ **16** फरवरी
38	28	10	शनि	चित्रा	प्र	6	27	षष्ठी	प्र	11	0	12	57	6-31 प्रात: **तुला में चन्द्र,** काण्ड:।
36	29	11	रवि	स्वा	दि	5	37	सप्त	प्र	9	35	9	20	अलापक:।
34	30	12	सोम	विशा	दि	4	35	अष्ट	प्र	7	49	4	53	**मासान्त,** होराष्टमी, चक्रीश्वर यात्रा, 10-52 C
32	फा	13	भौम	अनु	दि	3	16	नव	दि	5	48	26	44	संक्रान्ति व्रत, 1-55 दिन **कुम्भ में सूर्य,** मुहूर्त 30 D
29	2	14	बुध	ज्येष्ठ	दि	1	47	दश	दि	3	37	21	18	1-47 दिन **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, E
27	3	15	गुरु	मूला	दि	12	9	एका	दि	1	17	15	32	विजया एकादशी, धौम्य:।
25	4	16	शुक्र	पूषा	दि	10	32	द्वाद	दि	10	57	9	42	4-7 दिन **मकर में चन्द्र, शिवरात्रि** (हेरथ) प्रवर्ध:।
23	5	17	शनि	उषा	दि	8	55	त्रयो	दि	8	38	3	58	**शिवचतुर्दशी,** शनिमास, 7-42 प्रात: **मीन में शनि,** F
20	6	18	रवि	श्रव	दि	7	28	अमा	प्र	4	32	26	24	वटुक परमोजुन, डूनमावस, 6-48 रात **कुम्भ में चन्द्र** G

A रात तक गण्डान्त, सौम्य:। B महेन्द्र नगर जम्मू 2 रात **मकर में बुध** 5-54 प्रात: **कुम्भ में भौम** मातंग:। C **वृश्चिक् में चन्द्र मैत्रम्।** D समुद्रीय, वज्रम्। E 8-11 दिन से 7-22 रात तक गण्डान्त, ध्वाक्षं:। F त्र्यह: (चं प्र 5-30) क्षय:। G और **पंचक** आरम्भ, मुसलम्। **मध्याह्न:**-प्रति से एका तक अपने दिन। द्वा॰ त्रयो॰ पहले दिन। अमावसी अपने दिन। **श्राद्ध:**-प्रति से नवमी तक अपने दिन। दशमी से त्रयो तक पहले दिन। अमावसी का अपने दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 फाल्गुण शुक्लपक्ष विक्रमी सं॰ 2052 श्री शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1996

19 फरवरी की ग्रह स्थितिः-**कुम्भ** में सूर्य, भौम। **मीन** में शुक्र, शनि, केतु। **मकर** में बुध। **धनु** में बृहस्पति। **कन्या** में राहु।

	रार्ध	फा	फर	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	शिशर ऋतु, उत्तरायण। (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
16	18	7	**19**	सोम	शत	प्र	5	13	प्रति	प्र	2	48	22	4	अमृतम्।
	15	8	**20**	भौम	पूभा	प्र	4	35	द्विती	प्र	1	27	18	35	10-40 रात **मीन में चन्द्र** काण्डः।
	12	9	**21**	बुध	उभा	प्र	4	19	तृती	प्र	12	29	16	6	अलापकः।
	10	10	**22**	गुरु	रेव	प्र	4	33	चतु	प्र	12	0	14	53	4-33 रात **मेष में चन्द्र** और **पंचक** समाप्त, A
	7	11	**23**	शुक्र	अश्वि	प्र	5	17	पंच	प्र	12	2	14	54	10-40 दिन तक गण्डान्त, वज्रम्।
	4	12	**24**	शनि	भर	प्र	6	31	षष्ठी	प्र	12	35	16	16	कुमार षष्ठी, ध्वांक्षः।
	2	13	**25**	रवि	कृति	प्र	6	55	सप्त	प्र	1	16	17	55	12-52 दिन **वृष में चन्द्र,** धौम्यः।
15	59	14	**26**	सोम	कृति	दि	7	46	अष्ट	प्र	3	9	22	34	तैलाष्टमी, होराष्टमी, स्थिरः।
	56	15	**27**	भौम	रोहि	दि	10	17	नव	प्र	4	58	27	5	11-25 रात **मिथुन में चन्द्र,** मातंगः।
	54	16	**28**	बुध	मृग	दि	12	39	दश	प्र	6	52	31	48	दिन अधिक, अमृतम्।
	51	17	**29**	गुरु	आर्द	दि	3	12	दश	दि	7	0	0	24	6-15 सायं **मेष में शुक्र,** काण्डः।
	48	18	**मार्च**	शुक्र	पुन	दि	5	43	एका	दि	9	5	5	40	11-9 दिन **कर्क में चन्द्र,** अमला एकादशी, अलापकः।
	46	19	**2**	शनि	तिष्य	प्र	8	13	द्वाद	दि	11	4	10	39	मैत्रम्।
	43	20	**3**	रवि	अश्ले	प्र	10	20	त्रयो	दि	12	49	15	6	10-20 रात **सिंह में चन्द्र,** 3-49 दिन से B
	40	21	**4**	सोम	मघा	प्र	12	5	चर्तु	दि	2	11	18	33	होलिका दहन, ध्वांक्षः।
	38	22	**5**	भौम	पूफा	प्र	1	23	पूर्णि	दि	3	5	20	49	**होली,** धौम्यः।

A 10-25 रात से गण्डान्त, मैत्रम्। B 4-49 रात तक गण्डान्त 8-11 रात **कुम्भ में बुध,** वज्रम्। **मध्याह्नः**-प्रति से दश॰ तक अपने दिन। एका॰ से त्रयो॰ तक पहले दिन। चतु॰ पूँ अपने दिन। श्राद्धः-प्रति से दशमी तक अपने दिन। एकादशी से पूर्णिमा तक पहले दिन।

सप्तर्षि सं॰ 5071 चैत्र कृष्णपक्ष विक्रमी सं॰ 2052 श्री शाका सं॰ 1917 ईसवी सन् 1996

6 मार्च की ग्रह स्थितिः–**कुम्भ** में सूर्य, भौम, बुध। **मीन** में शनि, केतु। **मेष** में शुक्र। **कन्या** में राहु। **धनु** में बृहस्पति।

	राधे	फा	मार्च	वार	नक्षत्र		बजे	मि॰	तिथि		बजे	मि॰	घ	प	शिशर-ऋतु - उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
15	35	23	6	बुध	उफा	प्र	2	9	प्रति	दि	3	29	21	53	7-33 प्रातः **कन्या में चन्द्र**, प्रवर्धः।
	32	24	7.	गुरु	हस्त	प्र	2	24	द्विती	दि	3	23	21	39	क्षयः।
	30	25	8	शुक्र	चित्रा	प्र	2	14	तृती	दि	2	45	20	6	2-19 दिन **तुला में चन्द्र**, संकट चतुर्थी, गजः।
	25	26	9	शनि	स्वा	प्र	1	39	चतु	दि	1	39	17	27	सिद्धः।
	24	27	10	रवि	विशा	प्र	12	51	पंच	दि	12	12	13	50	6-53 सायं **वृश्चिक् में चन्द्र**, उन्मूलम्।
	22	28	11	सोम	अनु	प्र	11	31	षष्ठी	दि	10	24	9	24	वज्रम्।
	19	29	12	भौम	ज्येष्ठ	प्र	9	56	सप्त	दि	8	21	4	19	9-56 रात **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, A
	16	30	13	बुध	मूला	प्र	8	21	नव	प्र	3	48	23	30	ध्वजः। मासान्त।
	14	चैत्र	14	गुरु	पूषा	प्र	6	42	दश	प्र	1	26	17	32	12-17 रात **मकर में चन्द्र**, 9-15 दिन **मीन में** B
	16	2	15	शुक्र	उषा	दि	5	2	एका	प्र	11	7	11	42	**सोन्थ**, पाप मोचिनी एकादशी, आनन्दः।
	14	3	16	शनि	श्रव	दि	3	33	द्वाद	प्र	8	53	6	8	2-54 रात **कुम्भ में चन्द्र** और **पंचक** आरम्भ, स्थिरः।
	11	4	17	रवि	धनि	दि	2	14	त्रयो	प्र	6	55	1	13	मातंगः।
	8	5	18	सोम	शत	दि	1	11	चर्तु	दि	5	12	26	40	चन्द्रमास, चैत्रचतुर्दशी, अमृतम्।
	6	6	19	भौम	पूभा	दि	12	26	अमा	दि	3	50	23	17	6-27 प्रातः **मीन में चन्द्र**, श्री भट्टदिवस, काण्डः।

– A 4-17 शां से 3-35 रात तक गण्डान्त, **त्र्यहः** (अ प्र 6-10) मुद्गरम्। B **सूर्य** मुहूर्त 30 दरयाई, संक्रान्ति व्रत, थालभरुन, प्रजापत्यः।

मध्याह्नः–प्रति से पंचमी तक अपने दिन। षष्ठी, सप्त॰ पहले दिन। नवमी से अमा तक अपने दिन। **श्राद्धः**–प्रति से सप्त तक पहले दिन। नव से चर्तु अपने दिन। अमा का पहले दिन।

यज्ञोपवीत मुहूर्त

सप्त 5071 वि. सं. 2052 ईस्वी 1995-96

चैत्रशुक्लपक्ष

2 अप्रेल द्वितीया रविवार

8 बजे 16 प्रात: से
10 बजे 9 दिन तक (वृ)

5 अप्रेल पंचमी बुधवार

6 बजे 34 प्रात: से
8 बजे 5 दिन तक (मे)
8 बजे 5 दिन से
9 बजे 58 दिन तक (वृ)

6 अप्रेल षष्ठी गुरुवार

6 बजे 31 प्रात: से
8 बजे 1 दिन तक (मे)
8 बजे 1 दिन से
9 बजे 54 दिन तक (वृ)

वैशाख कृष्ण पक्ष

19 अप्रेल चतुर्थी बुधवार

7 बजे 52 प्रात: से
9 बजे 9 दिन तक (वृ)
9 बजे 9 दिन से
11 बजे 25 दिन तक (मि)

वैशाख शुक्ल पक्ष

5 मई पंचमी शुक्रवार

7 बजे 44 प्रात: से
8 बजे 6 दिन तक (वृ)
12 बजे 46 दिन से
3 बजे 10 दिन तक (सिं)

11 मई एकादशी गुरुवार

5 बजे 49 प्रात: से
7 बजे 42 दिन तक (वृ)
7 बजे 42 दिन से
9 बजे 57 दिन तक (मि)
9 बजे 57 दिन से
12 बजे 22 दिन तक (क)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

19 मई पंचमी शुक्रवार

7 बजे 14 प्रात: से
9 बजे 29 दिन तक (मि)
9 बजे 29 दिन से
11 बजे 54 दिन तक (क)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

31 मई द्वितीया बुधवार
8 बजे 34 मि. दिन से
11 बजे 3 दिन तक (क)

8 जून दशमी गुरुवार
5 बजे 49 प्रातः से
8 बजे 4 दिन तक (मि)
8 बजे 4 दिन से
10 बजे 29 दिन तक (क)

आषाढ शुक्ल पक्ष

29 जून प्रतिपदि गुरुवार
7 बजे 47 प्रातः से
9 बजे 7 दिन तक (क)
11 बजे 31 दिन से
1 बजे 54 दिन तक (क)

30 जून द्वितीय शुक्रवार
12 बजे 4 दिन से
1 बजे 50 दिन तक (क)

5 जुलाई सप्तमी बुधवार
6 बजे 12 प्रातः से
8 बजे 35 दिन तक (क)

7 जुलाई दशमी शुक्रवार
6 बजे 3 प्रातः से
8 बजे 28 दिन तक (क)
10 बजे 52 दिन से
1 बजे 15 दिन तक (क)

9 जुलाई द्वादशी रविवार
5 बजे 55 मि. प्रातः से
8 बजे 20 दिन तक (क)
10 बजे 43 दिन से
1 बजे 7 दिन तक (क)

10 जुलाई त्रयोदशी सोमवार
5 बजे 51 प्रातः से
8 बजे 15 दिन तक (क)
10 बजे 39 दिन से
1 बजे 2 दिन तक (क)

श्रावण कृष्ण पक्ष

14 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
5 बजे 33 प्रातः से
7 बजे 58 प्रातः तक (क)
7 बजे 58 प्रातः से
10 बजे 22 दिन तक (सिं)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

13 अक्टूबर पंचमी शुक्रवार
11 बजे 57 दिन से
2 बजे दिन तक (ध)
2 बजे दिन से
3 बजे 38 दिन तक (म)

कार्तिक शुक्ल-पक्ष

30 अक्टूबर सप्तमी सोमवार
10 बजे 56 दिन से
12 बजे 59 दिन तक (ध)
12 बजे 59 दिन से
2 बजे 37 दिन तक (म)

5 नवम्बर त्रयोदशी रविवार
7 बजे 12 प्रातः से
8 बजे 10 दिन तक (तु)
10 बजे 32 दिन से
10 बजे 58 दिन तक (ध)

मार्ग कृष्ण पक्ष

9 नवम्बर द्वितीया गुरुवार
10 बजे 16 दिन से
12 बजे 19 दिन तक (ध)

12 बजे 19 दिन से
1 बजे 57 दिन तक (म)

10 नवम्बर तृतीया शुक्रवार
10 बजे 12 दिन से
12 बजे 15 दिन तक (ध)
12 बजे 15 दिन से
1 बजे 53 दिन तक (म)

12 नवम्बर पंचमी रविवार
10 बजे 4 दिन से
12 बजे 7 दिन तक (ध)
12 बजे 7 दिन से
1 बजे 46 दिन तक (म)

मार्ग शुक्ल पक्ष

24 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
11 बजे 19 दिन से
12 बजे 57 दिन तक (म)

27 नवम्बर पंचमी सोमवार
11 बजे 5 दिन से
12 बजे 45 दिन तक (म)
2 बजे 7 दिन से
3 बजे 26 दिन तक (मी)

1 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
10 बजे 49 दिन से
12 बजे 28 दिन तक (म)

3 दिसम्बर द्वादशी रविवार
10 बजे 40 दिन से
12 बजे 19 दिन तक (म)
1 बजे 40 दिन से
3 बजे दिन तक (मी)

माघ शुक्ल पक्ष

22 जनवरी द्वितीया सोमवार
9 बजे 58 दिन से
11 बजे 17 दिन तक (मी)
11 बजे 17 दिन से
12 बजे 47 दिन तक (मे)

25 जनवरी पंचमी गुरुवार
11 बजे 5 दिन से
12 बजे 35 दिन तक (मे)
12 बजे 35 दिन से
2 बजे 28 दिन तक (वृ)

26 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
11 बजे 1 दिन से
12 बजे 31 दिन तक (मे)
12 बजे 31 दिन से
2 बजे 24 दिन तक (वृ)

31 जनवरी एकादशी बुधवार
9 बजे 22 दिन से
10 बजे 41 दिन तक (मी)
10 बजे 41 दिन से
12 बजे 11 दिन तक (मे)

फाल्गुण कृष्ण पक्ष

9 फरवरी पंचमी शुक्रवार
8 बजे 46 दिन से
10 बजे 5 दिन तक (मी)
10 बजे 5 दिन से
11 बजे 35 दिन तक (मे)
11 बजे 35 दिन से
1 बजे 28 दिन तक (वृ)

फाल्गुण शुक्ल पक्ष

21 फरवरी तृतीया बुधवार
9 बजे 18 दिन से
10 बजे 48 दिन तक (मे)
12 बजे 41 दिन से
2 बजे 56 दिन तक (मि)

23 फरवरी पंचमी शुक्रवार
10 बजे 40 दिन से
12 बजे 33 दिन तक (वृ)
12 बजे 33 दिन से
2 बजे 48 दिन तक (मि)

28 फरवरी दशमी बुधवार
8 बजे 52 दिन से
10 बजे 22 दिन तक (मे)
10 बजे 22 दिन से
12 बजे 15 दिन तक (वृ)

1 मार्च एकादशी शुक्रवार
8 बजे 44 दिन से
10 बजे 14 दिन तक (मे)
10 बजे 14 दिन से
12 बजे 7 दिन तक (वृ)
12 बजे 7 दिन से
2 बजे 23 दिन तक (मि)

विवाह मुहूर्त 1995-96

वैशाख कृष्ण पक्ष

17 अप्रेल द्वितीया सोमवार
11 बजे 30 रात से
1 बजे 33 रात तक (ध)
4 बजे 34 रात से
5 बजे 54 रात तक (मी)

20 अप्रेल षष्ठी गुरुवार
8 बजे 45 दिन से
9 बजे 4 दिन तक (वृ)
9 बजे 4 दिन से
11 बजे 21 दिन तक (मि)
4 बजे 9 दिन से
6 बजे 29 शां तक (क)

21 अप्रेल सप्तमी शुक्रवार
5 बजे 6 शां से
6 बजे 29 शां तक (क)
8 बजे 54 रात से
11 बजे 16 मि. रात तक(वृं)
11 बजे 16 रात से
1 बजे 19 रात तक (ध)
4 बजे 23 रात से
5 बजे 39 रात तक (मी)

22 अप्रेल अष्टमी शनिवार
7 बजे 5 दिन से
8 बजे 58 दिन तक (वृ)
8 बजे 58 दिन से
11 बजे 13 दिन तक (मि)

4 बजे 2 दिन से
6 बजे 25 दिन तक (क)
8 बजे 50 रात से
11 बजे 12 रात तक (वृं)
11 बजे 12 रात से
1 बजे 15 रात तक (ध)
4 बजे 16 रात से
5 बजे 35 रात तक (मी)

23 अप्रेल नवमी रविवार

7 बजे 1 प्रात: से
8 बजे 54 दिन तक (वृ)
8 बजे 54 दिन से
11 बजे 9 दिन तक (मि)

26 अप्रेल द्वादशी बुधवार

3 बजे 46 दिन से
6 बजे 9 शां तक (कं)
8 बजे 34 रात से
10 बजे 56 रात तक (वृं)
10 बजे 56 रात से
12 बजे 59 रात तक (ध)
4 बजे रात से
5 बजे 19 रात तक (मी)

27 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार

6 बजे 46 प्रात: से
8 बजे 42 दिन तक (वृ)
8 बजे 42 दिन से
10 बजे 57 दिन तक (मि)
3 बजे 42 दिन से
6 बजे 4 शां तक (कं)
8 बजे 30 रात से
10 बजे 52 रात तक (वृं)
10 बजे 52 रात से
12 बजे 55 रात तक (ध)
3 बजे 56 रात से
5 बजे 15 रात तक (मी)

28 अप्रेल चतुर्दशी शुक्रवार

6 बजे 41 प्रात: से
8 बजे 34 दिन तक (वृ)
8 बजे 34 दिन से
10 बजे 49 दिन तक (मि)
3 बजे 34 दिन से
6 बजे 1 दिन तक (कं)
8 बजे 24 मि. रात से
9 बजे 40 मि. रात तक (वृं)

वैशाख शुक्ल पक्ष

1 मई द्वितीया सोमवार

12 बजे 22 रात से
12 बजे 39 रात तक (धं)
3 बजे 40 रात से
4 बजे 59 रात तक (मी)

3 मई चतुर्थी बुधवार

8 बजे 14 दिन से
10 बजे 29 दिन तक (मि)
3 बजे 18 दिन से
5 बजे 41 दिन तक (क)
8 बजे 6 रात से
10 बजे 28 रात तक (वृं)
10 बजे 28 रात से
12 बजे 31 रात तक (ध)
3 बजे 32 रात से
4 बजे 51 रात तक (मी)

8 मई अष्टमी सोमवार

2 बजे 58 दिन से
5 बजे 21 दिन तक (क)

7 बजे 46 रात से
10 बजे 8 रात तक (वृ)
10 बजे 8 रात से
12 बजे 11 रात तक (ध)
3 बजे 12 रात से
4 बजे 31 रात तक (मी)

10 मई दशमी बुधवार

7 बजे 38 रात से
10 बजे रात तक (वृ)
10 बजे रात से
12 बजे 3 रात तक (ध)
12 बजे 3 रात से
1 बजे 42 रात तक (म)
3 बजे 4 रात से
4 बजे 23 रात तक (मी)

11 मई एकादशी गुरुवार

5 बजे 49 प्रात: से
7 बजे 42 दिन तक (वृ)
7 बजे 42 दिन से
9 बजे 57 दिन तक (मि)
9 बजे 57 दिन से
12 बजे 22 दिन तक (क)
7 बजे 34 रात से
9 बजे 56 रात तक (वृ)
9 बजे 56 रात से
10 बजे 12 रात तक (ध)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

17 मई तृतीया बुधवार

7 बजे 22 दिन से
9 बजे 37 दिन तक (मि)
9 बजे 37 दिन से
12 बजे 2 दिन तक (क)
2 बजे 25 दिन से
4 बजे 49 दिन तक (क)
11 बजे 59 रात से
1 बजे 18 रात तक (म)

19 मई पंचमी शुक्रवार

7 बजे 14 प्रात: से
9 बजे 29 दिन तक (मि)
9 बजे 29 दिन से
11 बजे 54 दिन तक (क)
2 बजे 18 दिन से
4 बजे 41 दिन तक (क)
9 बजे 27 रात से
11 बजे 31 रात तक (ध)

20 मई षष्ठी शनिवार

11 बजे 5 रात से
11 बजे 27 रात तक (ध)
2 बजे 28 रात से
3 बजे 47 रात तक (मी)

21 मई सप्तमी रविवार

7 बजे 6 प्रात: से
9 बजे 21 दिन तक (मि)
9 बजे 21 दिन से
11 बजे 46 दिन तक (क)
2 बजे 10 दिन से
4 बजे 33 दिन तक (क)
9 बजे 19 रात से
10 बजे 33 रात तक (ध)

24 मई दशमी बुधवार

6 बजे 53 प्रात: से
9 बजे 4 दिन तक (मि)
9 बजे 4 दिन से

11 बजे 33 दिन तक (क)
1 बजे 57 दिन से
4 बज 20 दिन तक (क)
9 बजे 7 रात से
11 बजे 10 रात तक (ध)
11 बजे 10 रात से
12 बजे 49 रात तक (म)

25 मई एकादशी गुरुवार

6 बजे 49 प्रातः से
9 बजे दिन तक (मि)
9 बजे दिन से
11 बजे 29 दिन तक (क)
1 बजे 54 दिन से
4 बजे 16 दिन तक (क)
9 बजे 3 रात से
11 बजे 6 रात तक (ध)
11 बजे 6 रात से
12 बजे 45 रात तक (म)
2 बजे 7 रात से
3 बजे 26 रता तक (मी)

26 मई द्वादशी शुक्रवार

6 बजे 45 प्रातः से
9 बजे 56 प्र दिन तक (मि)
9 बजे 56 दिन से
11 बजे 25 दिन तक (क)
1 बजे 49 दिन से
4 बजे 12 दिन तक (क)
8 बजे 58 रात से
11 बजे 2 रात तक (ध)
11 बजे 2 रात से
12 बजे 40 रात तक (म)
2 बजे 2 रात से
2 बजे 55 रात तक (मी)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

31 मई द्वितीया बुधवार

8 बजे 39 दिन से
11 बजे 8 दिन तक (क)

4 जून षष्ठी रविवार

8 बजे 20 रात से
10 बजे 23 रात तक (ध)
10 बजे 23 रात से
12 बजे 2 रात तक (म)

5 जून सप्तमी सोमवार

6 बजे 2 प्रातः से
8 बजे 17 दिन तक (मि)
8 बजे 17 दिन से
10 बजे 42 दिन तक (क)
8 बजे 15 रात से
8 बजे 32 रात तक (ध)

7 जून नवमी बुधवार

5 बजे 53 प्रातः से
8 बजे 8 दिन तक (मि)
8 बजे 8 दिन से
10 बजे 33 दिन तक (क)
8 बजे 7 रात से
10 बजे 10 रात तक (ध)
10 बजे 10 रात से
11 बजे 49 रात तक (म)

8 जून दशमी गुरुवार

5 बजे 49 प्रातः से
8 बजे 4 दिन तक (मि)
8 बजे 4 दिन से
10 बजे 29 दिन तक (क)

Vijayash... ...laya (Regd.)
Bho...

11 जून त्रयोदशी रविवार
7 बजे 49 रात से
9 बजे 53 रात तक (धं)
9 बजे 53 रात से
11 बजे 31 रात तक (म)

12 जून चतुर्दशी सोमवार
5 बजे 32 प्रात: से
7 बजे 47 दिन तक (मि)
7 बजे 47 दिन से
10 बजे 12 दिन तक (क)

आषाढ कृष्ण पक्ष

16 जून चतुर्थी शुक्रवार
8 बजे दिन से
9 बजे 59 दिन तक (क)
5 बजे 11 दिन से
7 बजे 32 शां तक (वृं)
3 बजे 26 रात से
5 बजे 19 रात तक (वृं)

17 जून पंचमी शनिवार
7 बजे 30 प्रात: से
9 बजे 54 दिन तक (क)
5 बजे 7 दिन से
7 बजे 28 शां तक (वृ)
9 बजे 31 रात से
11 बजे 11 रात तक (म)
3 बजे 21 रात से
5 बजे 14 रात तक (वृ)

21 जून नवमी बुधवार
7 बजे 11 दिन से
9 बजे 37 दिन तक (क)
4 बजे 50 दिन से
7 बजे 11 शां तक (वृ)
9 बजे 14 रात से
10 बजे 53 रात तक (म)
3 बजे 4 रात से
7 बजे 57 रात तक (वृ)

22 जून दशमी गुरुवार
7 बजे 7 मि. दिन से
8 बजे 33 मि. दिन तक (क)

25 जून त्रयोदशी रविवार
4 बजे 32 दिन से
6 बजे 54 दिन तक (वृ)
10 बजे 35 रात से
11 बजे 58 रात तक (म)
2 बजे 47 रात से
4 बजे 40 रात तक (वृ)

26 जून चतुर्दशी सोमवार
6 बजे 51 प्रात: से
9 बजे 16 दिन तक (क)
4 बजे 28 दिन से
6 बजे 49 दिन तक (वृ)
8 बजे 52 रात से
10 बजे 31 रात तक (म)
2 बजे 43 रात से
4 बजे 44 रात तक (वृ)

आषाढ शुक्ल पक्ष

2 जुलाई चतुर्थी रविवार
4 बजे 6 दिन से
6 बजे 28 दिन तक (वृ)
8 बजे 31 रात से
10 बजे 10 रात तक (म)
2 बजे 21 रात से
4 बजे 14 रात तक (वृ)

5 जुलाई सप्तमी बुधवार
6 बजे 12 प्रातः से
8 बजे 37 दिन तक (क)
3 बजे 49 दिन से
6 बजे 11 दिन तक (वृ)
8 बजे 14 रात से
9 बजे 52 रात तक (म)
2 बजे 4 रात से
3 बजे 27 रात तक (वृ)

श्रावण कृष्ण पक्ष

19 जुलाई सप्तमी बुधवार
4 बजे दिन से
5 बजे 19 दिन तक (वृ)
5 बजे 19 दिन से
7 बजे 22 दिन तक (ध)
1 बजे 12 रात से
3 बजे 5 रात तक (वृ)

20 जुलाई अष्टमी गुरुवार
2 बजे 53 दिन से
5 बजे 15 दिन तक (वृ)
5 बजे 15 दिन से
5 बजे 39 दिन तक (ध)

22 जुलाई दशमी शनिवार
2 बजे 52 रात से
5 बजे 8 रात तक (मि)

23 जुलाई एकादशी रविवार
2 बजे 40 दिन से
5 बजे 2 दिन तक (वृ)
5 बजे 2 दिन से
7 बजे 5 दिन तक (ध)
2 बजे 48 रात से
5 बजे रात तक (मि)

24 जुलाई द्वादशी सोमवार
2 बजे 36 दिन से
4 बजे 58 दिन तक (वृ)
4 बजे 58 दिन से
7 बजे 1 दिन तक (ध)
12 बजे 51 रात से
2 बजे 44 रात तक (वृ)

आश्विन शुक्ल पक्ष

8 अक्तूबर पूर्णिमा रविवार
1 बजे 42 दिन से
2 बजे 18 दिन तक (ध)
2 बजे 18 दिन से
3 बजे 57 दिन तक (म)
8 बजे 8 रात से
10 बजे 1 रात तक (वृ)
10 बजे 1 रात से
12 बजे 16 रात तक (मि)
12 बजे 16 रात से
2 बजे 41 रात तक (क)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

9 अक्तूबर प्रतिपद् सोमवार
9 बजे 51 दिन से
12 बजे 12 दिन तक (वृ)
12 बजे 12 दिन से
2 बजे 14 दिन तक (ध)
2 बजे 14 दिन से
3 बजे 53 दिन तक (म)
8 बजे 5 रात से
9 बजे 58 रात तक (वृ)
9 बजे 58 रात से
12 बजे 13 रात तक (मि)
12 बजे 13 रात से

2 बजे 38 रात तक (क)

12 अक्तूबर चतुर्थी गुरुवार

9 बजे 45 रात से
12 बजे 2 रात तक (मि)
12 बजे 2 रात से
2 बजे 26 रात तक (क)

13 अक्तूबर पंचमी शुक्रवार

11 बजे 57 दिन से
2 बजे दिन तक (ध)
2 बजे दिन से
3 बजे 38 दिन तक (म)
9 बजे 44 रात से
11 बजे 58 रात तक (मि)
11 बजे 58 रात से
2 बजे 23 रात तक (क)

14 अक्तूबर षष्ठी शनिवार

11 बजे 54 दिन से
1 बजे 56 दिन तक (ध)
1 बजे 56 दिन से
3 बजे 34 दिन तक (म)
9 बजे 40 रात से
11 बजे 54 रात तक (मि)
11 बजे 54 रात से
2 बजे 19 रात तक (क)

19 अक्तूबर दशमी गुरुवार

11 बजे 38 दिन से
1 बजे 41 दिन तक (ध)
1 बजे 41 दिन से
3 बजे 20 दिन तक (म)
4 बजे 42 दिन से
6 बजे 1 दिन तक (मी)
9 बजे 24 रात से
11 बजे 39 रात तक (मि)
11 बजे 39 रात से
2 बजे 4 रात तक (क)

21 अक्तूबर द्वादशी शनिवार

11 बजे 30 दिन से
1 बजे 33 दिन तक (ध)
1 बजे 33 दिन से
3 बजे 12 दिन तक (म)
4 बजे 34 दिन से
5 बजे 54 दिन तक (मी)
9 बजे 17 रात से
11 बजे 32 रात तक (मि)
11 बजे 32 रात से
1 बजे 57 रात तक (क)

22 अक्तूबर त्रयोदशी रविवार

11 बजे 27 दिन से
1 बजे 30 दिन तक (ध)
1 बजे 30 दिन से
3 बजे 9 दिन तक (म)
4 बजे 31 दिन से
5 बजे 50 दिन तक (मी)
9 बजे 13 रात से
11 बजे 28 रात तक (मि)
11 बजे 28 रात से
1 बजे 53 रात तक (क)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

28 अक्तूबर पंचमी शनिवार

9 बजे 6 रात से
11 बजे 5 रात तक (मि)
11 बजे 5 रात से

1 बजे 30 रात तक (क)

29 अक्तूबर षष्ठी रविवार

3 बजे 50 रात से
6 बजे 13 रात तक (क)

30 अक्तूबर सप्तमी सोमवार

10 बजे 56 दिन से
12 बजे 59 दिन तक (धं)
4 बजे दिन से
5 बजे 19 दिन तक (मी)
8 बजे 42 रात से
10 बजे 57 रात तक (मि)
10 बजे 57 रात से
1 बजे 23 रात तक (क)
3 बजे 46 रात से
6 बजे 9 रात तक (क)

1 नवम्बर नवमी बुधवार

10 बजे 48 दिन से
12 बजे 51 दिन तक (ध)
12 बजे 51 दिन से
2 बजे 29 दिन तक (म)
3 बजे 52 दिन से
5 बजे 11 दिन तक (मी)
8 बजे 34 रात से
10 बजे 4 रात तक (मि)

3 नवम्बर एकादशी शुक्रवार

9 बजे 24 रात से
10 बजे 41 रात तक (मि)
10 बजे 41 रात से
1 बजे 6 रात तक (क)
3 बजे 30 रात से
5 बजे 53 रात तक (कं)

4 नवम्बर द्वादशी शनिवार

10 बजे 36 दिन से
12 बजे 39 दिन तक (ध)
12 बजे 39 दिन से
2 बजे 17 दिन तक (म)
8 बजे 22 रात से
10 बजे 37 रात तक (मि)
10 बजे 37 रात से
1 बजे 2 रात तक (क)
3 बजे 26 रात से
5 बजे 49 रात तक (कं)

5 नवम्बर त्रयोदशी रविवार

10 बजे 32 दिन से
12 बजे 35 दिन तक (ध)
12 बजे 35 दिन से
2 बजे 13 दिन तक (म)
8 बजे 18 रात से
10 बजे 33 रात तक (मि)
10 बजे 33 रात से
12 बजे 58 रात तक (क)
3 बजे 22 रात से
5 बजे 45 रात तक (क)

6 नवम्बर चतुर्दशी सोमवार

10 बजे 28 दिन से
12 बजे 31 दिन तक (ध)
12 बजे 31 दिन से
2 बजे 9 दिन तक (म)
3 बजे 32 दिन से
4 बजे 51 दिन तक (मी)
8 बजे 14 रात से
10 बजे 29 रात तक (मि)
10 बजे 29 रात से

11 बजे 13 रात तक (क)

मार्ग कृष्ण पक्ष

8 नवम्बर प्रतिपद् बुधवार

3 बजे 10 रात से
5 बजे 33 रात तक (क)

9 नवम्बर द्वितीया गुरुवार

10 बजे 16 दिन से
12 बजे 19 दिन तक (ध)
12 बजे 19 दिन से
1 बजे 57 दिन तक (म)
3 बजे 20 दिन से
4 बजे 39 दिन तक (मी)
8 बजे 2 रात से
10 बजे 17 रात तक (मि)
10 बजे 17 रात से
12 बजे 42 रात तक (क)
3 बजे 6 रात से
5 बजे 29 रात तक (क)

10 नवम्बर तृतीया शुक्रवार

10 बजे 12 दिन से
12 बजे 15 दिन तक (ध)
12 बजे 15 दिन से
1 बजे 53 दिन तक (म)
3 बजे 16 दिन से
4 बजे 35 दिन तक (मी)
10 बजे 13 रात से
12 बजे 38 रात तक (क)
3 बजे 2 रात से
5 बजे 25 रात तक (क)

15 नवम्बर अष्टमी बुधवार

7 बजे 38 रात से
9 बजे 53 रात तक (मि)
9 बजे 53 रात से
12 बजे 18 रात तक (क)
2 बजे 42 रात से
5 बजे 5 रात तक (क)

18 नवम्बर एका० शनिवार

9 बजे 40 दिन से
11 बजे 43 दिन तक (ध)
11 बजे 43 दिन से
1 बजे 22 दिन तक (म)
2 बजे 44 दिन से
4 बजे 3 दिन तक (मी)
7 बजे 26 रात से
9 बजे 41 रात तक (मि)
9 बजे 41 रात से
12 बजे 6 रात तक (क)

19 नवम्बर द्वादशी रविवार

9 बजे 35 दिन से
11 बजे 39 दिन तक (ध)
11 बजे 39 दिन से
1 बजे 18 दिन तक (म)
2 बजे 40 दिन से
3 बजे 59 दिन तक (मी)

20 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार

7 बजे 18 रात से
9 बजे 33 रात तक (मि)
9 बजे 33 रात से
11 बजे 58 रात तक (क)
2 बजे 22 रात से
4 बजे 45 रात तक (क)

मार्ग शुक्लपक्ष

27 नवम्बर पंचमी सोमवार

2 बजे 7 दिन से

3 बजे 26 दिन तक (मी)
9 बजे 4 रात से
11 बजे 29 रात तक (क)
1 बजे 53 रात से
4 बजे 16 रात तक (कं)

1 दिसम्बर दशमी शुक्रवार

10 बजे 49 दिन से
12 बजे 28 दिन तक (म)
8 बजे 47 रात से
11 बजे 12 रात तक (क)
1 बजे 36 रात से
3 बजे 59 रात तक (कं)

2 दिसम्बर एकादशी शनिवार

10 बजे 44 दिन से
12 बजे 23 दिन तक (म)
8 बजे 43 रात से
11 बजे 8 रात तक (क)
1 बजे 31 रात से
3 बजे 55 रात तक (कं)

3 दिसम्बर द्वादशी रविवार

10 बजे 40 दिन से
12 बजे 19 दिन तक (म)
1 बजे 40 दिन से
3 बजे दिन तक (मी)
8 बजे 39 रात से
11 बजे 3 रात तक (क)
1 बजे 27 रात से
3 बजे 50 रात तक (कं)

माघ कृष्णपक्ष

18 जनवरी त्रयोदशी गुरुवार

10 बजे 14 दिन से
11 बजे 33 दिन तक (मी)
11 बजे 33 दिन से
1 बजे 4 दिन तक (मे)
1 बजे 4 दिन से
2 बजे 57 दिन तक (वृ)

माघ शुक्लपक्ष

21 जनवरी प्रतिपद् रविवार

12 बजे 11 रात से
2 बजे 36 रात तक (तु)
2 बजे 36 रात से
4 बजे 58 रात तक (वृं)
4 बजे 58 रात से
7 बजे 1 रात तक (ध)

22 जनवरी द्वितीया सोमवार

11 बजे 17 दिन से
12 बजे 47 दिन तक (मे)
12 बजे 47 दिन से
2 बजे 40 दिन तक (वृ)
2 बजे 40 दिन से
4 बजे 55 दिन तक (मि)

24 जनवरी चतुर्थी बुधवार

11 बजे 59 रात से
2 बजे 24 रात तक (तु)
2 बजे 24 रात से
4 बजे 46 रात तक (वृं)
4 बजे 46 रात से
6 बजे 49 रात तक (ध)

25 जनवरी पंचमी गुरुवार

11 बजे 5 दिन से
12 बजे 35 दिन तक (मे)
12 बजे 35 दिन से
2 बजे 28 दिन तक (वृ)
2 बजे 28 दिन से

4 बजे 43 दिन तक (मि)
11 बजे 55 रात से
2 बजे 20 रात तक (तु)
2 बजे 20 रात से
4 बजे 42 रात तक (वृ)
4 बजे 42 रात से
6 बजे 45 रात तक (धं)

26 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

11 बजे 1 दिन से
12 बजे 31 दिन तक (मे)
12 बजे 31 दिन से
2 बजे 24 दिन तक (वृ)
2 बजे 24 दिन से
4 बजे 39 दिन तक (मि)
11 बजे 51 रात से
2 बजे 16 रात तक (तु)
2 बजे 16 रात से
4 बजे 38 रात तक (वृ)
4 बजे 38 रात से
6 बजे 41 रात तक (धं)

27 जनवरी सप्तमी शनिवार

12 बजे 27 दिन से
2 बजे 20 दिन तक (वृ)
2 बजे 20 दिन से
4 बजे 35 दिन तक (मि)

29 जनवरी नवमी सोमवार

12 बजे 50 रात से
2 बजे 4 रात तक (तु)
2 बजे 4 रात से
4 बजे 26 रात तक (वृ)
4 बजे 26 रात से
6 बजे 29 रात तक (धं)

31 जनवरी एकादशी बुधवार

10 बजे 41 दिन से
12 बजे 11 दिन तक (मे)
2 बजे 4 दिन से
4 बजे 10 दिन तक (मि)

फाल्गुण कृष्णपक्ष

7 फरवरी तृतीया बुधवार

11 बजे 3 रात से
1 बजे 28 रात तक (तु)
1 बजे 28 रात से
3 बजे 50 रात तक (वृ)
3 बजे 50 रात से
5 बजे 43 रात तक (ध)

8 फरवरी चतुर्थी गुरुवार

10 बजे 9 दिन से
11 बजे 39 दिन तक (मे)
11 बजे 39 दिन से
1 बजे 32 दिन तक (वृ)
1 बजे 32 दिन से
3 बजे 47 दिन तक (मि)
11 बजे 59 रात से
1 बजे 24 रात तक (तु)
1 बजे 24 रात से
3 बजे 46 रात तक (वृ)
3 बजे 46 रात से
5 बजे 39 रात तक (ध)

9 फरवरी पंचमी शुक्रवार

10 बजे 5 दिन से
11 बजे 35 दिन तक (मे)
11 बजे 35 दिन से
1 बजे 28 दिन तक (वृ)
1 बजे 28 दिन से

3 बजे 43 दिन तक (मि)

10 फरवरी षष्ठी शनिवार

1 बजे 16 रात से
3 बजे 38 रात तक (वृ)
3 बजे 38 रात से
5 बजे 31 रात तक (धं)

11 फरवरी सप्तमी रविवार

9 बजे 57 दिन से
11 बजे 27 दिन तक (मे)
11 बजे 27 दिन से
1 बजे 20 दिन तक (वृ)
1 बजे 20 दिन से
3 बजे 35 दिन तक (मि)

14 फरवरी दशमी बुधवार

1 बजे 47 दिन से
3 बजे 23 दिन तक (मि)
3 बजे 23 दिन से
5 बजे 48 दिन तक (क)
10 बजे 35 रात से
1 बजे 1 रात तक (तु)
1 बजे 1 रात से
3 बजे 22 रात तक (वृं)
3 बजे 22 रात से
5 बजे 25 रात तक (धं)

15 फरवरी एकादशी गुरुवार

9 बजे 41 दिन से
11 बजे 11 दिन तक (मे)
11 बजे 11 दिन से
12 बजे 9 दिन तक (वृ)

फाल्गुण शुक्लपक्ष

21 फरवरी तृतीया बुधवार

9 बजे 18 दिन से
10 बजे 48 दिन तक (मे)
10 बजे 48 दिन से
12 बजे 41 दिन तक (वृ)
12 बजे 41 दिन से
2 बजे 56 दिन तक (मि)
2 बजे 56 दिन से
5 बजे 21 दिन तक (क)
10 बजे 8 रात से
12 बजे 33 रात तक (तु)
12 बजे 33 रात से
2 बजे 54 रात तक (वृं)
2 बजे 54 रात से
4 बजे 57 रात तक (धं)
4 बजे 57 रात से
6 बजे 36 रात तक (म)

22 फरवरी चतुर्थी गुरुवार

9 बजे 14 दिन से
10 बजे 44 दिन तक (मे)
10 बजे 44 दिन से
12 बजे 37 दिन तक (वृ)
12 बजे 37 दिन से
2 बजे 52 दिन तक (मि)
2 बजे 52 दिन से
5 बजे 17 दिन तक (क)
10 बजे 4 रात से
12 बजे 30 रात तक (तु)
12 बजे 30 रात से
2 बजे 51 रात तक (वृ)
2 बजे 51 रात से
4 बजे 54 रात तक (धं)
4 बजे 54 रात से

6 बजे 32 रात तक (म)

23 फरवरी पंचमी शुक्रवार

10 बजे 40 दिन से

12 बजे 33 दिन तक (वृ)

12 बजे 33 दिन से

2 बजे 48 दिन तक (मि)

2 बजे 48 दिन से

5 बजे 13 दिन तक (क)

10 बजे रात से

12 बजे 26 रात तक (तु)

12 बजे 26 रात से

2 बजे 47 रात तक (वृं)

2 बजे 47 रात से

4 बजे 50 रात तक (ध)

4 बजे 50 रात से

5 बजे 17 रात तक (म)

28 फरवरी दशमी बुधवार

8 बजे 52 दिन से

10 बजे 22 दिन तक (मे)

10 बजे 22 दिन से

12 बजे 15 दिन तक (वृ)

3 मार्च त्रयोदशी रविवार

10 बजे 20 रात से

11 बजे 52 रात तक (तु)

11 बजे 52 रात से

2 बजे 14 रात तक (वृं)

2 बजे 14 रात से

4 बजे 16 रात तक (ध)

4 बजे 16 रात से

5 बजे 55 रात तक (म)

4 मार्च चतुर्दशी सोमवार

8 बजे 33 दिन से

10 बजे 3 दिन तक (मे)

10 बजे 3 दिन से

2 बजे 56 दिन तक (वृ)

11 बजे 56 दिन से

2 बजे 11 दिन तक (मि)

2 बजे 11 दिन से

4 बजे 36 दिन तक (क)

9 बजे 23 रात से

11 बजे 49 रात तक (तु)

11 बजे 49 रात से

12 बजे 4 रात तक (वृं)

कर्मकाण्डदीपक का नया एडिशन

इस पुस्तक में बुनियाद मकान पूजा, मकान में प्रवेश, यक्षामाक्सी, श्राद्धसंकल्प दिवचक्षीरपूजा दीपमाला, पूजा, जन्म दिन पूजा, विष्णुपूजन, शिवपूजन, रुद्रमन्त्र चमानुवाक, आदि पूजायें शुद्ध और सहीरूप में दर्ज हैं – शुद्ध छपाई बढ़िया कागज और मजबूत बाइंडिंग

शंकु प्रतिष्ठा मुहूर्त

(बुनियाद मकान)

वैशाख कृष्णपक्ष

21 अप्रेल सप्तमी शुक्रवार

5 बजे 7 प्रातः से
6 बजे 40 प्रातः तक (क)

वैशाख शुक्लपक्ष

6 मई षष्ठी शनिवार

12 बजे 46 दिन से
3 बजे 10 दिन तक (सिं)
3 बजे 10 दिन से
5 बजे 33 दिन तक (क)

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

19 मई पंचमी शुक्रवार

7 बजे 14 दिन से
9 बजे 29 दिन तक (मि)
2 बजे 18 दिन से
4 बजे 41 दिन तक (क)

20 मई षष्ठी शनिवार

7 बजे 10 दिन से
9 बजे 25 दिन तक (मि)
2 बजे 14 दिन से
4 बजे 37 दिन तक (क)

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

31 मई द्वितीया बुधवार

6 बजे 21 प्रातः से
8 बजे 34 दिन तक (मि)

3 जून पंचमी शनिवार

6 बजे 10 प्रातः से
8 बजे 21 दिन तक (मि)
1 बजे 14 दिन से
3 बजे 37 दिन तक (क)

12 जून चतुर्दशी सोमवार

12 बजे 35 दिन से
1 बजे 59 दिन तक (क)

श्रावण कृष्णपक्ष

19 जुलाई सप्तमी बुधवार

7 बजे 45 प्रातः से
10 बजे 9 दिन तक (सिं)
5 बजे 19 दिन से
7 बजे 22 शां तक (ध)

कार्तिक शुक्लपक्ष

26 अक्तूबर तृतीया गुरुवार

11 बजे 12 दिन से
1 बजे 15 दिन तक (ध)

4 बजे 16 दिन से
5 बजे 35 दिन तक (मी)
30 अक्तूबर सप्तमी सोमवार
10 बजे 56 दिन से
12 बजे 59 दिन तक (ध)
4 बजे दिन से
5 बजे 19 दिन तक (मी)

मार्ग कृष्णपक्ष

9 नवम्बर द्वितीया गुरुवार
10 बजे 16 दिन से
12 बजे 19 दिन तक (ध)
3 बजे 20 दिन से
4 बजे 39 दिन तक (मी)
10 नवम्बर तृतीया शुक्रवार
10 बजे 12 दिन से
12 बजे 15 दिन तक (ध)
3 बजे 16 दिन से
4 बजे 35 दिन तक (मी)
13 नवम्बर षष्ठी सोमवार
3 बजे 4 दिन से
4 बजे 23 दिन तक (मी)

मार्ग शुक्लपक्ष

27 नवम्बर पंचमी सोमवार
9 बजे 3 दिन से
11 बजे 6 दिन तक (ध)
2 बजे 7 दिन से
3 बजे 26 दिन तक (मी)
6 दिसम्बर पूर्णिमा बुधवार
1 बजे 28 दिन से
2 बजे 47 दिन तक (मी)

माघ शुक्लपक्ष

22 जनवरी द्वितीया सोमवार
9 बजे 58 दिन से
11 बजे 17 दिन तक (मी)
2 बजे 40 दिन से
4 बजे 55 दिन तक (मि)
25 जनवरी पंचमी गुरुवार
2 बजे 28 दिन से
4 बजे 43 दिन तक (मि)
26 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
2 बजे 24 दिन से
4 बजे 39 दिन तक (मि)

फाल्गुण कृष्णपक्ष

9 फरवरी पंचमी शुक्रवार
8 बजे 46 दिन से
10 बजे 5 दिन तक (मां)
1 बजे 28 दिन से
3 बजे 43 दिन तक (मि)
10 फरवरी षष्ठी शनिवार
8 बजे 42 दिन से
10 बजे 1 दिन तक (मी)
1 बजे 24 दिन से
3 बजे 39 दिन तक (मि)

फाल्गुण शुक्लपक्ष

21 फरवरी तृतीया बुधवार
10 बजे 48 दिन से
12 बजे 41 दिन तक (वृ)
12 बजे 41 दिन से
2 बजे 56 दिन तक (मि)

प्रवेश मुहूर्त (नये मकान में दाखिल होने के मुहूर्त)

वैशाख शुक्लपक्ष

11 मई एकादशी वीरवार
7 बजे 42 दिन से
9 बजे 57 दिन तक (मि)

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

19 मई पंचमी शुक्रवार
7 बजे 14 प्रातः से
9 बजे 29 दिन तक (मि)
11 बजे 54 दिन से
1 बजे 47 दिन तक (क)

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

31 मई द्वितीया बुधवार
6 बजे 21 प्रातः से
8 बजे 34 दिन तक (मि)

3 जून पंचमी शनिवार
6 बजे 10 प्रातः से
8 बजे 21 दिन तक (मि)
1 बजे 14 दिन से
3 बजे 37 दिन तक (क)

8 जून दशमी वीरवार
5 बजे 49 प्रातः से
8 बजे 4 दिन तक (मि)

आषाढ कृष्णपक्ष

17 जून पंचमी शनिवार
12 बजे 18 दिन से
2 बजे 41 दिन तक (क)

आषाढ शुक्लपक्ष

30 जून द्वितीया शुक्रवार
12 बजे 4 दिन से
1 बजे 50 दिन तक (क)

श्रावण कृष्ण पक्ष

15 जुलाई तृतीया शनिवार
7 बजे 58 दिन से
9 बजे 49 दिन तक (सिं)

आश्विन शुक्लपक्ष

6 अक्तूबर त्रयोदशी शुक्रवार
12 बजे 23 दिन से
1 बजे 35 दिन तक (ध)

कार्तिक कृष्णपक्ष

13 अक्तूबर पंचमी शुक्रवार
11 बजे 57 दिन से
2 बजे दिन तक (ध)

कार्तिक शुक्लपक्ष

30 अक्तूबर सप्तमी सोमवार
10 बजे 56 दिन से
12 बजे 59 दिन तक (ध)

2 नवम्बर दशमी गुरुवार
10 बजे 44 दिन से

12 बजे 47 दिन तक (ध)

4 नवम्बर द्वादशी शनिवार
10 बजे 36 दिन से
12 बजे 39 दिन तक (ध)

मार्ग कृष्णपक्ष

9 नवम्बर द्वितीया वीरवार
10 बजे 16 दिन से
12 बजे 19 दिन तक (ध)
3 बजे 20 दिन से
4 बजे 39 दिन तक (मी)

10 नवम्बर तृतीया शुक्रवार
10 बजे 12 दिन से
12 बजे 15 दिन तक (ध)
3 बजे 16 दिन से
4 बजे 35 दिन तक (मी)

मार्ग शुक्लपक्ष

1 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
4 बजे 43 दिन से
6 बजे 32 दिन तक (वृ)

2 दिसम्बर एकादशी शनिवार
4 बजे 39 दिन से
6 बजे 28 दिन तक (वृ)

माध शुक्लपक्ष

22 जनवरी द्वितीया सोमवार
9 बजे 58 दिन से
11 बजे 17 दिन तक (मी)
12 बजे 47 दिन से
2 बजे 40 दिन तक (वृ)

25 जनवरी पंचमी गुरुवार
12 बजे 35 दिन से
2 बजे 28 दिन तक (वृ)

26 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
12 बजे 31 दिन से
2 बजे 24 दिन तक (वृ)

31 जनवरी एकादशी बुधवार
9 बजे 22 दिन से
10 बजे 41 दिन तक (मी)
12 बजे 11 दिन से
2 बजे 4 दिन तक (वृ)

फाल्गुण कृष्णपक्ष

9 फरवरी पंचमी शुक्रवार
8 बजे 46 दिन से
10 बजे 5 दिन तक (मी)
11 बजे 35 दिन से
1 बजे 28 दिन तक (वृ)

फाल्गुण शुक्लपक्ष

21 फरवरी तृतीया बुधवार
10 बजे 48 दिन से
12 बजे 41 दिन तक (वृ)

28 फरवरी दशमी बुधवार
7 बजे 32 दिन से
8 बजे 52 दिन तक (मी)
10 बजे 22 दिन से
12 बजे 15 दिन तक (वृ)

2 मार्च द्वादशी शनिवार
7 बजे 21 प्रातः से
8 बजे 40 दिन तक (मी)
10 बजे 11 दिन से
12 बजे 4 दिन तक (वृ)

चूड़ाकर्म मुहूर्त
(ज़रकासय)

वैशाख कृष्णपक्ष

19 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
7 बजे 16 प्रात: से
9 बजे 9 दिन तक (वृ)
9 बजे 9 दिन से
11 बजे 25 दिन तक (मि)

वैशाख शुक्लपक्ष

5 मई पंचमी शुक्रवार
7 बजे 44 प्रात: से
8 बजे 6 दिन तक (वृ)

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

1 जून तृतीया गुरुवार
2 बजे 58 दिन से
3 बजे 46 दिन तक (क)

8 जून दशमी गुरुवार
5 बजे 49 प्रात: से
8 बजे 4 दिन तक (मि)
8 बजे 4 दिन से
10 बजे 29 दिन तक (क)

आषाढ शुक्लपक्ष

29 जून प्रतिपद् गुरुवार
7 बजे 47 दिन से
9 बजे 7 दिन तक (क)
11 बजे 31 दिन से
1 बजे 54 दिन तक (क)

30 जून द्वितीया शुक्रवार
12 बजे 4 दिन से
1 बजे 50 दिन तक (क)

5 जुलाई सप्तमी बुधवार
6 बजे 16 मि. दिन से
8 बजे 35 दिन तक (क)

7 जुलाई दशमी शुक्रवार
6 बजे 8 प्रात: से
8 बजे 33 दिन तक (क)
10 बजे 56 दिन से
1 बजे 20 दिन तक (क)

10 जुलाई त्रयोदशी सोमवार
5 बजे 55 प्रात: से
8 बजे 20 दिन तक (क)
10 बजे 43 दिन से 1 बजे 7 दिन तक (क)

श्रावण कृष्णपक्ष

14 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
8 बजे 2 दिन से
10 बजे 26 दिन तक (सिं)

मार्ग कृष्णपक्ष

10 नवम्बर तृतीया शुक्रवार
10 बजे 12 दिन से
12 बजे 15 दिन तक (धं)
12 बजे 15 दिन से
1 बजे 53 दिन तक (म)

मार्ग शुक्लपक्ष

24 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
11 बजे 19 दिन से
12 बजे 57 दिन तक (म)

माघ शुक्लपक्ष

22 जनवरी द्वितीया सोमवार
9 बजे 58 दिन से
11 बजे 17 दिन तक (मी)
11 बजे 17 दिन से
12 बजे 47 दिन तक (मे)
26 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
11 बजे 1 दिन से
12 बजे 31 दिन तक (मे)
12 बजे 31 दिन से
2 बजे 24 दिन तक (वृ)
31 जनवरी एकादशी बुधवार
9 बजे 22 दिन से
10 बजे 41 दिन तक (मी)
10 बजे 41 दिन से
12 बजे 11 दिन तक (मे)

फाल्गुण कृष्णपक्ष

9 फरवरी पंचमी शुक्रवार
8-46 दिन से
10-5 दिन तक (मी)
10-5 दिन से
11-35 दिन तक (मे)

फाल्गुण शुक्लपक्ष

23 फरवरी पंचमी शुक्रवार
9 बजे 10 दिन से
10 बजे 40 दिन तक (मे)
28 फरवरी दशमी बुधवार
8 बजे 52 दिन से
10 बजे 22 दिन तक (मे)
1 मार्च एकादशी शुक्रवार
8 बजे 44 दिन से
9 बजे 5 दिन तक (मे)

जातकर्म मुहूर्त (काहनेथर)

चैत्र शुक्लपक्ष

2 अप्रेल द्वितीया रविवार
12 बजे 19 दिन तक
5 अप्रेल पंचमी बुधवार
6 अप्रेल षष्ठी गुरुवार

वैशाख शुक्लपक्ष

5 मई पंचमी शुक्रवार
7 बजे 44 प्रातः से
7 मई सप्तमी रविवार
10 बजे 31 दिन तक
10 मई दशमी बुधवार
12 बजे 40 दिन से
11 मई एकादशी गुरुवार
12 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

19 मई पंचमी शुक्रवार
1 बजे 47 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

31 मई द्वितीया बुधवार
12 बजे 38 दिन तक
8 जून दशमी गुरुवार
9 जून एकादशी शुक्रवार

आषाढ शुक्लपक्ष

29 जून प्रतिपद् गुरुवार

7 बजे 47 प्रात: से
30 जून द्वितीया शुक्रवार
5 जुलाई सप्तमी बुधवार
8 बजे 35 दिन तक
7 जुलाई दशमी शुक्रवार
9 जुलाई द्वादशी रविवार

श्रावण कृष्णपक्ष

13 जुलाई प्रतिपद् गुरुवार
1 बजे 14 दिन से
14 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

आश्विन शुक्लपक्ष

6 अक्टूबर त्रयोदशी शुक्रवार
1 बजे 35 दिन तक

कार्तिक कृष्णपक्ष

13 अक्टूबर पंचमी शुक्रवार

कार्तिक शुक्लपक्ष

25 अक्टूबर प्रतिपद् बुधवार
7 बजे 39 दिन से
9 बजे 33 दिन तक
26 अक्टूबर तृतीया गुरुवार
8 बजे 17 दिन से
30 अक्टूबर सप्तमी सोमवार
2 नवम्बर दशमी गुरुवार
5 नवम्बर त्रयोदशी रविवार
10 बजे 58 दिन तक

मार्ग कृष्णपक्ष

9 नवम्बर द्वितीया गुरुवार
10 नवम्बर तृतीया शुक्रवार

मार्गशुक्लपक्ष

26 नवम्बर चतुर्थी रविवार
11 बजे 6 दिन से
27 नवम्बर पंचमी सोमवार
1 दिसम्बर दशमी शुक्रवार
3 दिसम्बर द्वादशी रविवार

माघ शुक्लपक्ष

22 जनवरी द्वितीया सोमवार
25 जनवरी पंचमी गुरुवार
26 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
31 जनवरी एकादशी बुधवार
2 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार
8 बजे 1 दिन से

फाल्गुण कृष्णपक्ष

9 फरवरी पंचमी शुक्रवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

21 फरवरी तृतीया बुधवार
23 फरवरी पंचमी शुक्रवार
28 फरवरी दशमी बुधवार
12 बजे 39 दिन तक
1 मार्च एकादशी शुक्रवार

वाग्दान मुहूर्त (गंण्डुन)

चैत्रशुक्लपक्ष

5 अप्रेल पंचमी बुधवार
6 अप्रेल षष्ठी गुरुवार
12 अप्रेल द्वादशी बुधवार

वैशाख कृष्णपक्ष

16 अप्रेल प्रतिपद् रविवार
20 अप्रेल षष्ठी गुरुवार
21 अप्रेल सप्तमी शुक्रवार
24 अप्रेल दशमी सोमवार
2 बजे 44 दिन तक

26 अप्रेल द्वादशी बुधवार
27 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार

वैशाख शुक्लपक्ष

1 मई द्वितीया सोमवार
10 मई दशमी बुधवार
11 मई एकादशी गुरुवार
12 मई द्वादशी शुक्रवार
11 बजे 27 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

17 मई तृतीया बुधवार
18 मई चतुर्थी गुरुवार
3 बजे 51 दिन से
19 मई पंचमी शुक्रवार
21 मई सप्तमी रविवार
24 मई दशमी बुधवार
25 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

31 मई द्वितीया बुधवार
12 बजे 38 दिन तक
5 जून सप्तमी सोमवार
8 जून दशमी गुरुवार

आषाढ कृष्णपक्ष

22 जून दशमी गुरुवार
8 बजे 33 दिन तक
25 जून त्रयोदशी रविवार

आषाढ शुक्लपक्ष

2 जुलाई चतुर्थी रविवार
10 बजे 23 दिन से
3 जुलाई पंचमी सोमवार
5 जुलाई सप्तमी बुधवार
7 जुलाई दशमी शुक्रवार
9 जुलाई द्वादशी रविवार
12 जुलाई पूर्णिमा बुधवार

श्रावण कृष्णपक्ष

13 जुलाई प्रतिपद् गुरुवार
14 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
19 जुलाई सप्तमी बुधवार
4 बजे दिन तक
23 जुलाई एकादशी रविवार
24 जुलाई द्वादशी सोमवार

आश्विन शुक्लपक्ष

6 अक्टूबर त्रयोदशी शुक्रवार
1 बजे 35 दिन से
8 अक्टूबर पूर्णिमा रविवार

कार्तिक कृष्णपक्ष

9 अक्टूबर प्रतिपद् सोमवार
2 बजे 30 दिन तक
13 अक्टूबर पंचमी शुक्रवार
19 अक्टूबर दशमी गुरुवार
9 बजे 20 दिन से
20 अक्टूबर एकादशी शुक्रवार
22 अक्टूबर त्रयोदशी रविवार
11 बजे 35 दिन तक

कार्तिक शुक्लपक्ष

25 अक्टूबर प्रतिपद् बुधवार
9 बजे 33 दिन तक
26 अक्टूबर तृतीया गुरुवार
8 बजे 17 दिन से
29 अक्टूबर षष्ठी रविवार
30 अक्टूबर सप्तमी सोमवार
1 नवम्बर नवमी बुधवार
2 बजे 24 दिन से
3 नवम्बर एकादशी शुक्रवार

5 नवम्बर त्रयोदशी रविवार
10 बजे 58 दिन तक

मार्ग कृष्णपक्ष

8 नवम्बर प्रतिपद् बुधवार
9 नवम्बर द्वितीया गुरुवार
10 नवम्बर तृतीया शुक्रवार
19 नवम्बर द्वादशी रविवार

मार्ग शुक्लपक्ष

23 नवम्बर प्रतिपद् गुरुवार
2 बजे 55 दिन तक
24 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
1 बजे 20 दिन से
26 नवम्बर चतुर्थी रविवार
11 बजे 6 दिन से
27 नवम्बर पंचमी सोमवार
1 दिसम्बर दशमी शुक्रवार

माघ कृष्णपक्ष

18 जनवरी त्रयोदशी गुरुवार

माघ शुक्लपक्ष

21 जनवरी प्रतिपद् रविवार
22 जनवरी द्वितीया सोमवार
24 जनवरी चतुर्थी बुधवार
10 बजे 22 दिन से
25 जनवरी पंचमी गुरुवार
26 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
29 जनवरी नवमी सोमवार
10 बजे 30 दिन से
31 जनवरी एकादशी बुधवार

फाल्गुण कृष्णपक्ष

5 फरवरी प्रतिपद् सोमवार
2 बजे 58 दिन से
7 फरवरी तृतीया बुधवार
9 फरवरी पंचमी शुक्रवार
11 फरवरी सप्तमी रविवार
14 फरवरी दशमी बुधवार
1 बजे 47 दिन से
15 फरवरी एकादशी गुरुवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

21 फरवरी तृतीया बुधवार
25 फरवरी सप्तमी रविवार
28 फरवरी दशमी बुधवार
12 बजे 39 दिन तक

विद्यारम्भ मुहूर्त (स्कूल में दाखिल करना)

चैत्र शुक्लपक्ष

2 अप्रेल द्वितीया रविवार
12 बजे 19 दिन तक
6 अप्रेल षष्ठी गुरुवार

वैशाख शुक्लपक्ष

4 मई चतुर्थी गुरुवार
6 बजे 42 प्रातः से
5 मई पंचमी शुक्रवार
11 मई एकादशी गुरुवार
12 बजे 13 दिन से
12 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

1 जून तृतीया गुरुवार

4 जून षष्ठी रविवार
8 ज़ून दशमी गुरुवार
9 जून एकादशी शुक्रवार

आषाढ शुक्लपक्ष

29 जून प्रतिपद् गुरुवार
7 बजे 47 दिन से
30 जून द्वितीया शुक्रवार
7 जुलाई दशमी शुक्रवार
9 जुलाई द्वादशी रविवार

श्रावण कृष्णपक्ष

13 जुलाई प्रतिपद् गुरुवार
1 बजे 14 दिन से
14 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

कार्तिक शुक्लपक्ष

26 अक्टूबर तृतीया गुरुवार
8 बजे 17 दिन से
29 अक्टूबर षष्ठी रविवार
2 नवम्बर दशमी गुरुवार
3 नवम्बर एकादशी शुक्रवार

मार्ग कृष्णपक्ष

10 नवम्बर तृतीया शुक्रवार
12 नवम्बर पंचमी रविवार
10 बजे 25 दिन से

मार्ग शुक्लपक्ष

24 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार
1 बजे 20 दिन से
3 दिसम्बर द्वादशी रविवार

माघ शुक्लपक्ष

21 जनवरी प्रतिपद् रविवार
3 बजे 24 दिन से
1 फरवरी द्वादशी गुरुवार
3 बजे 51 दिन तक

फाल्गुण कृष्णपक्ष

9 फरवरी पंचमी शुक्रवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

23 फरवरी पंचमी शुक्रवार
29 फरवरी दशमी गुरुवार
1 मार्च एकादशी शुक्रवार

लड़की को दूध देने का मुहूर्त

चैत्र शुक्लपक्ष

6 अप्रेल षष्ठी गुरुवार
5 बजे 45 शां से

वैशाख कृष्ण पक्ष

18 अप्रेल तृतीया भौमवार
10 बजे 16 दिन से

वैशाख शुक्लपक्ष

7 मई सप्तमी रविवार
10 बजे 31 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

16 मई द्वितीया भौमवार
5 बजे 51 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

30 मई प्रतिपद् भौमवार
10 बजे 7 दिन से
1 जून तृतीया गुरुवार
2 बजे 58 दिन से
8 जून दशमी गुरुवार
13 जून पूर्णिमा भौमवार
12 बजे 21 दिन से

आषाढ शुक्लपक्ष

29 जून प्रतिपद् गुरुवार

11 जुलाई चतुर्दशी भौमवार
5 बजे 40 दिन से
6 बजे 53 शां तक

श्रावण कृष्णपक्ष

13 जुलाई प्रतिपद् गुरुवार
4 बजे 6 दिन से

कार्तिक शुक्लपक्ष

26 अक्टूबर तृतीया गुरुवार
8 बजे 17 दिन से

मार्ग कृष्णपक्ष

12 नवम्बर पंचमी रविवार
10 बजे 25 दिन से
14 नवम्बर सप्तमी भौमवार
3 बजे दिन तक

मार्ग शुक्लपक्ष

23 नवम्बर प्रतिपद् गुरुवार
2 बजे 55 दिन तक

माघ कृष्णपक्ष

18 जनवरी त्रयोदशी गुरुवार

माघ शुक्लपक्ष

21 जनवरी प्रतिपद् रविवार
4 फरवरी पूर्णिमा रविवार
12 बजे 54 दिन तक

फाल्गुण कृष्णपक्ष

15 फरवरी एकादशी गुरुवार
12 बजे 9 दिन तक

फाल्गुण शुक्लपक्ष

29 फरवरी दशमी गुरुवार
3 बजे 12 दिन तक

वस्त्र धारण मुहूर्त

भूषण (ज़ेवर) आदि धारन करना दोनों स्त्री-पुरुष के लिये

चैत्र शुक्लपक्ष

2 अप्रेल द्वितीया रविवार
12 बजे 19 दिन तक

वैशाख कृष्णपक्ष

16 अप्रेल प्रतिपद् रविवार
27 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार
4 बजे 14 दिन से

वैशाख शुक्लपक्ष

11 मई एकादशी गुरुवार
12 बजे 13 दिन तक
12 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

21 मई सप्तमी रविवार
25 मई एकादशी गुरुवार
26 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

8 जून दशमी गुरुवार
9 जून एकादशी शुक्रवार
11 जून त्रयोदशी रविवार
1 बजे 17 दिन तक

आषाढ कृष्णपक्ष

18 जून षष्ठी रविवार

Bhuri Pa... ...aryalaya (Regd.)
...AMU ... bungi,
...002

6 बजे 28 प्रातः तक
22 जून दशमी गुरुवार
23 जून एकादशी शुक्रवार
10 बजे 16 दिन तक

आषाढ शुक्लपक्ष

5 जुलाई सप्तमी बुधवार
6 जुलाई अष्टमी गुरुवार
7 बजे 7 प्रातः तक
7 जुलाई दशमी शुक्रवार
9 जुलाई द्वादशी रविवार

श्रावण कृष्णपक्ष

14 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
3 बजे 3 दिन से
19 जुलाई सप्तमी बुधवार
20 जुलाई अष्टमी गुरुवार
8 बजे 51 दिन तक

श्रावण शुक्लपक्ष

2 अगस्त षष्ठी बुधवार
3 अगस्त सप्तमी गुरुवार
4 अगस्त अष्टमी शुक्रवार
2 बजे 55 दिन तक
6 अगस्त दशमी रविवार
6 बजे 19 प्रातः तक

भाद्र कृष्णपक्ष

11 अगस्त प्रतिपद शुक्रवार

भाद्र शुक्लपक्ष

30 अगस्त चतुर्थी बुधवार
6 बजे 50 प्रातः से
31 अगस्त षष्ठी गुरुवार
1 सितम्बर सप्तमी शुक्रवार
7 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार
7 बजे 4 दिन से

11 बजे 21 दिन तक

आश्विन शुक्लपक्ष

27 सितम्बर तृतीया बुधवार
5 बजे 31 दिन तक
28 सितम्बर चतुर्थी गुरुवार
3 बजे 55 दिन से
29 सितम्ब पंचमी शुक्रवार
4 अक्टूबर एकादशी बुधवार
3 बजे 7 दिन से
5 अक्टूबर द्वादशी गुरुवार
2 बजे 10 दिन तक
8 अक्टूबर पूर्णिमा रविवार
1 बजे 42 दिन से

कार्तिक शुक्लपक्ष

25 अक्टूबर प्रतिपद् बुधवार
26 अक्टूबर तृतीया गुरुवार

1 नवम्बर नवमी बुधवार
2 बजे 24 दिन से
5 नवम्बर त्रयोदशी रविवार
10 बजे 58 दिन तक

मार्ग कृष्णपक्ष

19 नवम्बर द्वादशी रविवार

मार्ग शुक्लपक्ष

23 नवम्बर प्रतिपद् गुरुवार
2 बजे 55 दिन तक
3 दिसम्बर द्वादशी रविवार

पौष कृष्णपक्ष

17 दिसम्बर दशमी रविवार
20 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार

पौष शुक्लपक्ष

29 दिसम्बर अष्टमी शुक्रवार
12 बजे 47 दिन से

वस्त्र धारण मुहूर्त

केवल पुरुषों के लिये

31 दिसम्बर दशमी रविवार
2 बजे 14 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

12 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
10 बजे 41 दिन से

माघ शुक्लपक्ष

26 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

फाल्गुण कृष्णपक्ष

9 फरवरी पंचमी शुक्रवार
11 फरवरी सप्तमी रविवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

23 फरवरी पंचमी शुक्रवार

चैत्र कृष्णपक्ष

7 मार्च द्वितीया गुरुवार
8 मार्च तृतीया शुक्रवार
10 मार्च पंचमी रविवार
17 मार्च त्रयोदशी रविवार — 2 बजे 14 दिन तक

चैत्र शुक्लपक्ष

5 अप्रेल पंचमी बुधवार

वैशाख कृष्णपक्ष

21 अप्रेल सप्तमी शुक्रवार
26 अप्रेल द्वादशी बुधवार
3 बजे 13 दिन से
27 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार
4 बजे 14 दिन तक

वैशाख शुक्लपक्ष

5 मई पंचमी शुक्रवार
7 बजे 44 दिन से
7 मई सप्तमी रविवार
11 बजे 8 दिन से
10 मई दशमी बुधवार
12 बजे 40 दिन से
11 मई एकादशी गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

19 मई पंचमी शुक्रवार
24 मई दशमी बुधवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

1 जून तृतीया गुरुवार
2 बजे 58 दिन से

आषाढ कृष्णपक्ष

25 जून त्रयोदशी रविवार
2 बजे 46 दिन से

आषाढ शुक्लपक्ष

29 जून प्रतिपद् गुरुवार
30 जून द्वितीया शुक्रवार
12 जुलाई पूर्णिमा बुधवार
5 बजे 41 दिन से

श्रावण कृष्णपक्ष

13 जुलाई प्रतिपद् गुरुवार
4 बजे 6 दिन तक
23 जुलाई एकादशी रविवार

श्रावण शुक्लपक्ष

28 जुलाई प्रतिपद् शुक्रवार
9 बजे 29 दिन तक

भाद्र कृष्णपक्ष

20 अगस्त दशमी रविवार

7 बजे 42 दिन तक

23 अगस्त द्वादशी बुधवार

24 अगस्त त्रयोदशी गुरुवार

8 बजे 15 दिन तक

भाद्र शुक्लपक्ष

6 सितम्बर द्वादशी बुधवार

8 बजे 14 दिन तक

आश्विन कृष्णपक्ष

10 सितम्बर प्रतिपद् रविवार

15 सितम्बर षष्ठी शुक्रवार

12 बजे 28 दिन से

20 सितम्बर एकादशी बुधवार

आश्विन शुक्लपक्ष

8 अक्टूबर पूर्णिमा रविवार

1 बजे 42 दिन तक

कार्तिक कृष्णपक्ष

13 अक्टूबर पंचमी शुक्रवार

22 अक्टूबर त्रयोदशी रविवार

11 बजे 35 दिन तक

मार्ग कृष्णपक्ष

9 नवम्बर द्वितीया गुरुवार

12 नवम्बर पंचमी रविवार

10 बजे 25 दिन से

मार्ग शुक्लपक्ष

26 नवम्बर चतुर्थी रविवार

11 बजे 6 दिन से

1 दिसम्बर दशमी शुक्रवार

6 दिसम्बर पूर्णिमा बुधवार

10 बजे 15 दिन से

पौष कृष्णपक्ष

7 दिसम्बर प्रतिपद् गुरुवार

12 बजे 32 दिन तक

10 दिसम्बर तृतीया रविवार

12 बजे 43 दिन तक

पौष शुक्लपक्ष

24 दिसम्बर तृतीया रविवार

4 बजे 39 दिन तक

28 दिसम्बर सप्तमी गुरुवार

12 बजे 49 दिन से

29 दिसम्बर अष्टमी शुक्रवार

3 जनवरी त्रयोदशी बुधवार

माघ कृष्णपक्ष

7 जनवरी द्वितीया रविवार

11 जनवरी पंचमी गुरुवार

10 बजे 10 दिन से

12 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

माघ शुक्लपक्ष

25 जनवरी पंचमी गुरुवार

2 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार

8 बजे 1 दिन से

4 फरवरी पूर्णिमा रविवार

12 बजे 54 दिन तक

फाल्गुण कृष्णपक्ष

7 फरवरी तृतीया बुधवार

5 बजे 45 दिन से

16 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

10 बजे 32 दिन से

फाल्गुण शुक्लपक्ष

21 फरवरी तृतीया बुधवार

29 फरवरी दशमी गुरुवार

3 बजे 12 दिन से

1 मार्च एकादशी शुक्रवार

चैत्र कृष्णपक्ष

6 मार्च प्रतिपद् बुधवार

15 मार्च एकादशी शुक्रवार

द्विचक्षीर मुहूर्त

चैत्र शुक्लपक्ष

2 अप्रेल द्वितीया रविवार
12 बजे 19 दिन तक

वैशाख कृष्णपक्ष

16 अप्रेल प्रतिपद् रविवार

17 अप्रेल द्वितीया सोमवार

27 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार
4 बजे 14 दिन से

वैशाख शुक्लपक्ष

11 मई एकादशी गुरुवार

12 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

8 जून दशमी गुरुवार

9 जून एकादशी शुक्रवार

11 जून त्रयोदशी रविवार

आषाढ शुक्लपक्ष

5 जुलाई सप्तमी बुधवार

6 जुलाई अष्टमी गुरुवार
7 बजे 7 प्रातः तक

7 जुलाई दशमी शुक्रवार

9 जुलाई द्वादशी रविवार

आश्विन शुक्लपक्ष

8 अक्टूबर पूर्णिमा रविवार
1 बजे 44 दिन से

कार्तिक कृष्णपक्ष

9 अक्टूबर प्रतिपद् सोमवार

कार्तिक शुक्लपक्ष

25 अक्टूबर प्रतिपद् बुधवार

26 अक्टूबर तृतीया गुरुवार

5 नवम्बर त्रयोदशी रविवार

मार्ग शुक्लपक्ष

23 नवम्बर प्रतिपद् गुरुवार

3 दिसम्बर द्वादशी रविवार

माघ शुक्लपक्ष

26 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

फाल्गुण कृष्णपक्ष

9 फरवरी पंचमी शुक्रवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

23 फरवरी पंचमी शुक्रवार

लेन्टर छत आदि डालने का मुहूर्त

चैत्र शुक्लपक्ष

7 अप्रेल सप्तमी शुक्रवार

वैशाख कृष्णपक्ष

24 अप्रेल दशमी सोमवार

वैशाख शुक्लपक्ष

4 मई चतुर्थी गुरुवार
6 बजे 42 प्रातः से

5 मई पंचमी शुक्रवार
7 बजे 44 प्रातः तक

7 मई सप्तमी रविवार
11 बजे 8 दिन तक

10 मई दशमी बुधवार

12 बजे 40 दिन तक
11 मई एकादशी गुरुवार
12 बजे 13 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

19 मई पंचमी शुक्रवार
21 मई सप्तमी रविवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

31 मई द्वितीया बुधवार
12 बजे 38 दिन से
1 जून तृतीया गुरुवार
2 बजे 58 दिन तक

आषाढ कृष्णपक्ष

18 जून षष्ठी रविवार
6 बजे 28 प्रातः तक

आषाढ शुक्लपक्ष

30 जून द्वितीया शुक्रवार

श्रावण कृष्णपक्ष

13 जुलाई प्रतिपद् गुरुवार
1 बजे 14 दिन से
14 जुलाई द्वितीया शुक्रवार

कार्तिक कृष्णपक्ष

15 अक्टूबर सप्तमी रविवार
22 अक्टूबर त्रयोदशी रविवार
11 बजे 29 दिन तक

कार्तिक शुक्लपक्ष

30 अक्टूबर सप्तमी सोमवार
1 नवम्बर नवमी बुधवार
2 बजे 24 दिन से

मार्ग कृष्णपक्ष

12 नवम्बर पंचमी रविवार
10 बजे 25 दिन तक
13 नवम्बर षष्टी सोमवार
12 बजे 52 दिन से

मार्ग शुक्लपक्ष

26 नवम्बर चतुर्थी रविवार
11 बजे 6 दिन से
27 नवम्बर पंचमी सोमवार

माघशुक्लपक्ष

21 जनवरी प्रतिपद रविवार
3 बजे 24 दिन से
22 जनवरी द्वितीया सोमवार
10-44 दिन तक
1 फरवरी द्वादशी गुरुवार
2 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार
8 बजे 1 दिन तक

फाल्गुण कृष्णपक्ष

7 फरवरी तृतीया बुधवार
5 बजे 5 दिन से
16 फरवरी द्वादशी शुक्रवार
10 बजे 29 दिन से

फाल्गुण शुक्लपक्ष

28 फरवरी दशमी बुधवार
12 बजे 39 दिन से
29 फरवरी दशमी गुरुवार
3 बजे 12 दिन तक
1 मार्च एकादशी शुक्रवार
5 बजे 43 दिन से

पन्न ह्युन मुहूर्त

भाद्र शुक्लपक्ष

30 अगस्त चतुर्थी बुधवार
31 अगस्त षष्ठी गुरुवार

1 सितम्बर सप्तमी शुक्रवार
2 सितम्बर अष्टमी शनिवार
7 सितम्बर त्रयोदशी गुरुवार
8 सितम्बर चतुर्दशी शुक्रवार

नये मकान में चुल्हा गैस आदि जलाने के मुहूर्त

चैत्र शुक्लपक्ष

6 अप्रेल षष्ठी गुरुवार
12 अप्रेल द्वादशी बुधवार

वैशाख कृष्णपक्ष

19 अप्रेल चतुर्थी बुधवार
7 बजे 52 दिन से
21 अप्रेल सप्तमी शुक्रवार
5 बजे 7 दिन से

वैशाख शुक्लपक्ष

5 मई पंचमी शुक्रवार
7 बजे 44 प्रातः से
10 मई दशमी बुधवार
12 बजे 40 दिन तक
12 मई द्वादशी शुक्रवार
11 बजे 27 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

19 मई पंचमी शुक्रवार
26 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

31 मई द्वितीया बुधवार
12 बजे 38 दिन तक
1 जून तृतीया गुरुवार
2 बजे 58 दिन से
8 जून दशमी गुरुवार
9 जून एकादशी शुक्रवार
6 बजे 23 शां से

आषाढ कृष्णपक्ष

23 जून एकादशी शुक्रवार
10 बजे 16 दिन तक

आषाढ शुक्लपक्ष

30 जून द्वितीया शुक्रवार
3 जुलाई पंचमी सोमवार
5 जुलाई सप्तमी बुधवार
7 जुलाई दशमी शुक्रवार
10 जुलाई त्रयोदशी सोमवार

श्रावण कृष्णपक्ष

13 जुलाई प्रतिपद् गुरुवार
1 बजे 14 दिन से
24 जुलाई द्वादशी सोमवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

16 अक्टूबर सप्तमी सोमवार
7 बजे दिन से
20 अक्टूबर एकदशी शुक्रवार
10 बजे 31 दिन से

कार्तिक शुक्लपक्ष

25 अक्टूबर प्रतिपद बुधवार
7 बजे 39 दिन से
26 अक्टूबर तृतीया गुरुवार
30 अक्टूबर सप्तमी सोमवार

मार्ग कृष्णपक्ष

10 नवम्बर तृतीया शुक्रवार
5 बजे 17 दिन तक
13 नवम्बर षष्ठी सोमवार

मार्ग शुक्लपक्ष

24 नवम्बर द्वितीया शुक्रवार

1 बजे 20 दिन तक

27 नवम्बर पंचमी सोमवार

माघ कृष्णपक्ष

17 जनवरी द्वादशी बुधवार

22 जनवरी द्वितीया सोमवार

10 बजे 44 दिन तक

माघ शुक्लपक्ष

31 जनवरी एकादशी बुधवार

2 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार

8 बजे 1 दिन से

फाल्गुण कृष्णपक्ष

7 फरवरी तृतीया बुधवार

5 बजे 45 दिन तक

9 फरवरी पंचमी शुक्रवार

14 फरवरी दशमी बुधवार

1 बजे 47 दिन तक

16 फरवरी द्वादशी शुक्रवार

10 बजे 32 दिन से

फाल्गुण शुक्लपक्ष

23 फरवरी पंचमी शुक्रवार

28 फरवरी दशमी बुधवार

12 बजे 39 दिन तक

29 फरवरी दशमी गुरुवार

3 बजे 12 दिन से

1 मार्च एकादशी शुक्रवार

शिशुर लागुन मुहूर्त

मार्ग शुक्लपक्ष

23 नवम्बर प्रतिपद् गुरुवार

2 बजे 55 दिन तक

3 दिसम्बर द्वादशी रविवार

पौष कृष्णपक्ष

17 दिसम्बर दशमी रविवार

20 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार

पौष शुक्लपक्ष

29 दिसम्बर अष्टमी शुक्रवार

12 बजे 47 दिन से

31 दिसम्बर दशमी रविवार

2 बजे 13 दिन से

माघ कृष्णपक्ष

12 जनवरी षष्ठी शुक्रवार

दीपदान मुहूर्त

आश्विन शुक्लपक्ष

8 अक्टूबर पूर्णिमा रविवार

माघ कृष्णपक्ष

17 जनवरी द्वादशी बुधवार

माघ शुक्लपक्ष

31 जनवरी एकादशी बुधवार

2 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार

8 बजे दिन तक

फाल्गुण कृष्णपक्ष

7 फरवरी तृतीया बुधवार

9 फरवरी पंचमी शुक्रवार

14 फरवरी दशमी बुधवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

23 फरवरी पंचमी शुक्रवार

28 फरवरी दशमी बुधवार

साथ रटुन

(विवाह, यज्ञोपवीत इत्यादि शुभ मूहूर्तो के लिये वस्त्र, कपड़ा, मसाला, अग्निवत्र, लिवुन, मेहन्दी लगाना, मस मुचरुन इत्यादि)

चैत्र शुक्लपक्ष

1 अप्रेल प्रतिपद् शनिवार
10 बजे 19 दिन से

वैशाख कृष्णपक्ष

16 अप्रेल प्रतिपद् रविवार
17 अप्रेल द्वितीया सोमवार

वैशाख शुक्लपक्ष

11 मई एकादशी गुरुवार
12 बजे 16 दिन तक
12 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

26 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

8 जून दशमी गुरुवार
9 जून एकादशी शुक्रवार
11 जून त्रयोदशी रविवार
1 बजे 17 दिन तक

आषाढ कृष्णपक्ष

22 जून दशमी गुरुवार
8 बजे 33 दिन से
23 जून एकादशी शुक्रवार
10 बजे 16 दिन तक

आषाढ शुक्लपक्ष

5 जुलाई सप्तमी बुधवार
6 जुलाई अष्टमी गुरुवार
7 बजे 7 दिन तक
7 जुलाई दशमी शुक्रवार
9 जुलाई द्वादशी रविवार

श्रावण कृष्णपक्ष

19 जुलाई सप्तमी बुधवार
4 बजे दिन से
20 जुलाई अष्टमी गुरुवार
8 बजे 51 दिन तक

कार्तिक कृष्णपक्ष

9 अक्टूबर प्रतिपद् सोमवार
2 बजे 30 दिन से

कार्तिक शुक्लपक्ष

25 अक्टूबर प्रतिपद् बुधवार
26 अक्टूबर तृतीया गुरुवार
6 नवम्बर चर्तुदशी सोमवार
11 बजे 21 दिन से

मार्ग कृष्णपक्ष

19 नवम्बर द्वादशी रविवार
20 नवम्बर त्रयोदशी सोमवार

मार्ग शुक्लपक्ष

23 नवम्बर प्रतिपद् गुरुवार
2 बजे 55 दिन तक
3 दिसम्बर द्वादशी रविवार

फाल्गुण कृष्णपक्ष

9 फरवरी पंचमी शुक्रवार
11 फरवरी सप्तमी रविवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

23 फरवरी पंचमी शुक्रवार

यात्रा मुहूर्त

चैत्र शुक्लपक्ष

1 अप्रेल पश्चिमोत्तर
2 अप्रेल पूर्वोत्तर
12 बजे 19 रिन तक
4 अप्रेल पूर्व दक्षिण
5 बजे 10 दिन से
5 अप्रेल उत्तर बिना यात्रा
6 अप्रेल पूर्व पश्चिम
8 अप्रेल पूर्व बिना यात्रा
9 अप्रेल पूर्वोत्तर
12 अप्रेल उत्तर बिना

वैशाख कृष्णपक्ष

18 अप्रेल पूर्व दक्षिण
19 अप्रेल उत्तर बिना
20 अप्रेल पूर्व पश्चिम
21 अप्रेल पश्चिम बिना
22 अप्रेल पूर्व बिना
23 अप्रेल पूवोत्तर
24 अप्रेल पश्चिमोत्तर
25 अप्रेल पूर्व यात्रा
26 अप्रेल पूर्व पश्चिम
27 अप्रेल पूर्व पश्चिम
28 अप्रेल पूर्वेत्तर
29 अप्रेल पूर्व बिना

वैशाख शुक्लपक्ष

2 मई पूर्व दक्षिण
3 मई उत्तर बिना
5 मई पश्चिम बिना
7 बजे 44 दिन से
6 मई पूर्व बिना
7 मई पूर्वोत्तर
11 बजे 8 दिन तक
9 मई पूर्व दक्षिण
12 बजे 38 दिन से
10 मई उत्तर बिना
11 मई पूर्व पश्चिम
12 मई पश्चिम बिना
11 बजे 27 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

16 मई पूर्व दक्षिण
17 मई उत्तर बिना
18 मई पूर्व पश्चिम
19 मई पश्चिम बिना
20 मई पूर्व बिना
21 मई पूर्वोत्तर
22 मई पश्चिमोत्तर
23 मई पूर्व यात्रा
24 मई पूर्व पश्चिम
25 मई पूर्व पश्चिम
26 मई पश्चिम बिना
29 मई पूर्व बिना
7 बजे 33 दिन से

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

30 मई पूर्व दक्षिण
31 मई उत्तर बिना
12 बजे 38 दिन तक
1 जून पूर्व पश्चिम
2 बजे 58 दिन से
2 जून पश्चिम बिना
3 जून पूर्व बिना
6 जून पूर्व दक्षिण

7 जून उत्तर बिना
8 जून पूर्व पश्चिम
11 जून पूर्वोत्तर
3 बजे 36 दिन से
12 जून पूर्व बिना
13 जून पूर्व दक्षिण

आषाढ कृष्णपक्ष

16 जून पश्चिम बिना
17 जून पूर्व बिना
18 जून पूर्वोत्तर
19 जून पश्चिमोत्तर
20 जून पूर्व यात्रा
21 जून पूर्व पश्चिम
22 जून पूर्व पश्चिम
23 जून पश्चिम बिना
10 बजे 16 दिन तक
25 जून पूर्वोत्तर
2 बजे 46 दिन से
26 जून पूर्व बिना
27 जून पूर्व दक्षिण

आषाढ शुक्लपक्ष

29 जून पूर्व पश्चिम
30 जून पश्चिम बिना
3 जुलाई पूर्व बिना
4 जुलाई पूर्व दक्षिण
5 जुलाई उत्तर बिना
9 जुलाई पूर्वोत्तर
10 जुलाई पूर्व बिना
11 जुलाई पूर्व दक्षिण
12 जुलाई उत्तर बिना

श्रावण कृष्णपक्ष

13 जुलाई पूर्व पश्चिम
14 जुलाई पश्चिम बिना
15 जुलाई पश्चिमोत्तर
18 जुलाई पूर्व यात्रा
19 जुलाई पूर्व पश्चिम
20 जुलाई पूर्व पश्चिम
5 बजे 38 दिन तक
23 जुलाई पूर्वोत्तर
24 जुलाई पूर्व बिना
26 जुलाई उत्तर बिना
27 जुलाई पूर्व पश्चिम

श्रावण शुक्लपक्ष

28 जुलाई पश्चिम बिना
9 बजे 29 दिन तक
30 जुलाई पूर्वोत्तर
11 बजे 43 दिन से
31 जुलाई पूर्व बिना
1 अगस्त पूर्व दक्षिण
2 अगस्त उत्तर बिना
11 बजे 26 दिन तक
5 अगस्त पूर्व बिना
7 बजे 54 दिन से
6 अगस्त पूर्वोत्तर
7 अगस्त पूर्व बिना
8 अगस्त पूर्व दक्षिण
9 अगस्त उत्तर बिना
10 अगस्त पूर्व पश्चिम

भाद्र कृष्णपक्ष

11 अगस्त पूर्वोत्तर
12 अगस्त पश्चिमोत्तर
13 अगस्त पूर्वोत्तर

14 अगस्त पश्चिमोत्तर
15 अगस्त पूर्व यात्रा
19 अगस्त पूर्व बिना
20 अगस्त पूर्वोत्तर
21 अगस्त पूर्व बिना
10 बजे 17 दिन तक
22 अगस्त पूर्व दक्षिण
12 बजे 48 दिन से
23 अगस्त उत्तर बिना
24 अगस्त पूर्वपश्चिम
4 बजे 55 दिन तक

भाद्र शुक्लपक्ष

27 अगस्त पूर्वोत्तर
28 अगस्त पूर्व बिना
29 अगस्त पूर्व दक्षिण
1 सितम्बर पश्चिम बिना
2 सितम्बर पूर्व बिना
3 सितम्बर पूर्वोत्तर
4 सितम्बर पूर्व बिना
5 सितम्बर पूर्व दक्षिण
6 सितम्बर उत्तर बिना
7 सितम्बर पूर्व पश्चिम
8 सितम्बर पूर्वोत्तर
9 सितम्बर पश्चिमोतर

आश्विन कृष्णपक्ष

10 सितम्बर पूर्वोत्तर
11 सितम्बर पश्चिमोत्तर
12 सितम्बर पूर्व दक्षिण
13 सितम्बर उत्तर बिना
8 बजे 25 दिन तक
15 सितम्बर पश्चिम बिना
12 बजे 27 दिन से
19 सितम्बर पूर्व दक्षिण
20 सितम्बर उत्तर बिना
23 सितम्बर पूर्व बिना
24 सितम्बर पूर्वोत्तर

आश्विन शुक्लपक्ष

25 सितम्बर पूर्व बिना
29 सितम्बर पश्चिम बिना
30 अक्टूबर पूर्व बिना
2 अक्टूबर पूर्व बिना
3 अक्टूबर पूर्व दक्षिण
4 अक्टूबर उत्तर बिना
5 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
6 अक्टूबर पूर्वोत्तर
7 अक्टूबर पश्चिमोत्तर
8 अक्टूबर पूर्वोत्तर

कार्तिक कृष्णपक्ष

9 अक्टूबर पश्चिमोत्तर
10 अक्टूबर पूर्व दक्षिण
3 बजे 48 दिन तक
13 अक्टूबर पश्चिम बिना
14 अक्टूबर पूर्व बिना
16 अक्टूबर पूर्व बिना
20 अक्टूबर पश्चिम बिना
10 बजे 31 दिन से
21 अक्टूबर पूर्व बिना
22 अक्टूबर पूर्वोत्तर
23 अक्टूबर पूर्व बिना
11 बजे 13 दिन तक

कार्तिक शुक्लपक्ष

26 अक्टूबर पूर्व पश्चिम
8 बजे 17 दिन से

27 अक्टूबर पश्चिम बिना
28 अक्टूबर पूर्व बिना
29 अक्टूबर पूर्वोत्तर
30 अक्टूबर पूर्व बिना
31 अक्टूबर पूर्व दक्षिण
1 नवम्बर पूर्व पश्चिम
2 नवम्बर पूर्व पश्चिम
3 नवम्बर पूर्वोत्तर
4 नवम्बर पश्चिमोत्तर
5 नवम्बर पूर्वोत्तर
6 नवम्बर पूर्व बिना

मार्ग कृष्णपक्ष

9 नवम्बर पूर्व पश्चिम
10 नवम्बर पश्चिम बिना
11 नवम्बर पूर्व बिना
7 बजे 51 दिन तक
13 नवम्बर पूर्व बिना
14 नवम्बर पूर्व दक्षिण
3 बजे दिन तक
18 नवम्बर पूर्व बिना
19 नवम्बर पूर्वोत्तर
22 नवम्बर उत्तर बिना
4 बजे 20 दिन से

मार्ग शुक्लपक्ष

23 नवम्बर पूर्व पश्चिम
24 नवम्बर पश्चिम बिना
25 नवम्बर पूर्व बिना
26 नवम्बर पूर्वोत्तर
27 नवम्बर पूर्व बिना
28 नवम्बर पूर्व दक्षिण
29 नवम्बर पूर्व पश्चिम
30 नवम्बर पूर्व पश्चिम
1 दिसम्बर पूर्वोत्तर
2 दिसम्बर पश्चिमोत्तर
3 दिसम्बर पूर्वोत्तर
6 दिसम्बर उत्तर बिना
10 बजे 20 दिन से

पौष कृष्णपक्ष

7 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
8 दिसम्बर पश्चिम बिना
3 बजे 3 दिन से
10 दिसम्बर पूर्वोत्तर
11 दिसम्बर पूर्व बिना
14 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
20 दिसम्बर उत्तर बिना
21 दिसम्बर पूर्व पश्चिम

पौष शुक्लपक्ष

22 दिसम्बर पश्चिम बिना
23 दिसम्बर पूर्व बिना
24 दिसम्बर पूर्वोत्तर
25 दिसम्बर पूर्व बिना
26 दिसम्बर पूर्व यात्रा
27 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
28 दिसम्बर पूर्व पश्चिम
29 दिसम्बर पूर्वोत्तर
30 दिसम्बर पश्चिमोत्तर
31 दिसम्बर पूर्वोत्तर
2 बजे 14 दिन तक
3 जनवरी उत्तर बिना
4 जनवरी पूर्व पश्चिम

माघ कृष्णपक्ष

6 जनवरी पूर्व बिना
7 जनवरी पूर्वोत्तर
10 जनवरी उत्तर बिना

9 बजे 7 दिन से
11 जनवरी पूर्व पश्चिम
12 जनवरी पश्चिम बिना
13 जनवरी पूर्व बिना
10 बजे 46 दिन तक
16 जनवरी पूर्व दक्षिण
17 जनवरी उत्तर बिना
18 जनवरी पूर्व पश्चिम
19 जनवरी पश्चिम बिना
20 जनवरी पूर्व बिना

माघ शुक्लपक्ष

21 जनवरी पूर्वोत्तर
22 जनवरी पश्चिमोत्तर
23 जनवरी पूर्व यात्रा
24 जनवरी पूर्व पश्चिम
25 जनवरी पूर्व पश्चिम
26 जनवरी पूर्वोत्तर
27 जनवरी पूर्व बिना
30 जनवरी पूर्व दक्षिण
31 जनवरी उत्तर बिना
2 फरवरी पश्चिमबिना
8 बजे दिन से
3 फरवरी पूर्व बिना
4 फरवरी पूर्वोत्तर
12 बजे 54 दिन तक

फाल्गुण कृष्णपक्ष

6 फरवरी पूर्व दक्षिण
4 बजे 35 दिन से
7 फरवरी उत्तर बिना
8 फरवरी पूर्व पश्चिम
9 फरवरी पश्चिम बिना
14 फरवरी उत्तर बिना
15 फरवरी पूर्व पश्चिम
16 फरवरी पश्चिम बिना
18 फरवरी पूर्वोत्तर

फाल्गुण शुक्लपक्ष

19 फरवरी पश्चिमोत्तर
20 फरवरी पूर्व यात्रा
21 फरवरी पूर्व पश्चिम
22 फरवरी पूर्व पश्चिम
23 फरवरी पश्चिम बिना
26 फरवरी पूर्व बिना
7 बजे 46 दिन से
27 फरवरी पूर्व दक्षिण
28 फरवरी उत्तर बिना
12 बजे 39 दिन तक
29 फरवरी पूर्व पश्चिम
3 बजे 12 दिन तक
1 मार्च पश्चिम बिना
2 मार्च पूर्व बिना
5 मार्च पूर्व दक्षिण

चैत्र कृष्णपक्ष

6 मार्च उत्तर बिना
7 मार्च पूर्व पश्चिम
11 मार्च पूर्व बिना
15 मार्च पश्चिम बिना
17 मार्च पश्चिमोत्तर
19 मार्च पूर्व यात्रा

सर्वार्थ सिद्धि योग

(अफसर से मिलना, फार्म भरना दरखास्त भेजना, छोटी मोटी यात्रा को जाना, चार्ज लेनदेन ऐसे ही आम मुहूर्तों के लिये सर्वार्थ सिद्धि योग से लाभ उठायें)

चैत्र शुक्लपक्ष

2 अप्रेल द्वितीया रविवार
12 बजे 19 दिन तक
4 अप्रेल चतुर्थी भौमवार
5 बजे 10 दिन तक
5 अप्रेल पंचमी बुधवार
9 अप्रेल नवमी रविवार

वैशाख कृष्णपक्ष

22 अप्रेल अष्टमी शनिवार
4 बजे दिन से
27 अप्रेल त्रयोदशी गुरुवार
4 बजे 14 दिन से
28 अप्रेल चर्तुदर्शी शुक्रवार

वैशाख शुक्लपक्ष

5 मई पंचमी शुक्रवार
7 बजे 44 दिन से
7 मई सप्तमी रविवार
11 बजे 8 दिन तक

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

15 मई प्रतिपद् सोमवार
7 बजे 27 दिन से
20 मई षष्ठी शनिवार
25 मई एकादशी गुरुवार
26 मई द्वादशी शुक्रवार
29 मई अमावसी सोमवार
7 बजे 32 दिन से

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

1 जून तृतीया गुरुवार
2 बजे 58 दिन से
2 जून चतुर्थी शुक्रवार
4 बजे 53 दिन तक
10 जून द्वादशी शनिवार
5 बजे 5 दिन तक
12 जून चर्तुदर्शी सोमवार
1 बजे 59 दिन तक

आषाढ कृष्णपक्ष

16 जून चतुर्थी शुक्रवार
8 बजे दिन से
17 जून पंचमी शनिवार
7 बजे 2 प्रातः तक
20 जून अष्टमी भौमवार
6 बजे 28 प्रातः से
22 जून दशमी गुरुवार
23 जून एकादशी शुक्रवार
10 बजे 16 दिन तक
26 जून चर्तुदशी सोमवार

आषाढ शुक्लपक्ष

29 जून प्रतिपद् गुरुवार
5 जुलाई सप्तमी बुधवार

श्रावण कृष्णपक्ष

14 जुलाई द्वितीया शुक्रवार
3 बजे 3 दिन तक

18 जुलाई षष्ठी भौमवार
2 बजे 57 दिन तक
20 जुलाई अष्टमी गुरुवार
5 बजे 38 दिन तक
24 जुलाई द्वादशी सोमवार
27 जुलाई अमावसी गुरुवार

श्रावण शुक्लपक्ष

2 अगस्त षष्ठी बुधवार
11 बजे 26 दिन तक

भाद्र कृष्णपक्ष

19 अगस्त नवमी शनिवार
21 अगस्त एकादशी सोमवार
10 बजे 17 दिन तक
24 अगस्त त्रयोदशी गुरुवार
4 बजे 55 दिन तक

भाद्र शुक्लपक्ष

3 सितम्बर नवमी रविवार
12 बजे 51 दिन से

आश्विन कृष्णपक्ष

10 सितम्बर प्रतिपद् रविवार
12 सितम्बर तृतीया भौमवार
6 बजे 58 प्रातः से
16 सितम्बर सप्तमी शनिवार
2 बजे 56 दिन तक
24 सितम्बर अमावसी रविवार

आश्विन शुक्लपक्ष

1 अक्टूबर सप्तमी रविवार
8 अक्टूबर पूर्णिमा रविवार
1 बजे 42 दिन तक

कार्तिक कृष्णपक्ष

10 अक्टूबर द्वितीया भौमवार
3 बजे 48 दिन तक
11 अक्टूबर तृतीया बुधवार
5 बजे 35 दिन से
18 अक्टूबर नवमी बुधवार
7 बजे 40 दिन से
20 अक्टूबर एकादशी शुक्रवार
10 बजे 31 दिन से
22 अक्टूबर त्रयोदशी रविवार

कार्तिक शुक्लपक्ष

26 अक्टूबर तृतीया गुरुवार
8 बजे 27 दिन से

मार्ग कृष्णपक्ष

8 नवम्बर प्रतिपद् बुधवार
13 नवम्बर षष्ठी सोमवार
12 बजे 52 दिन से
14 नवम्बर सप्तमी भौमवार
3 बजे दिन से
15 नवम्बर अष्टमी बुधवार
4 बजे 45 दिन तक
17 नवम्बर दशमी शुक्रवार
19 नवम्बर द्वादशी रविवार
22 नवम्बर अमावसी बुधवार
4 बजे 20 दिन से

मार्ग शुक्लपक्ष

23 नवम्बर प्रतिपद् गुरुवार
2 बजे 55 दिन तक
26 नवम्बर चतुर्थी रविवार
10 बजे 4 दिन से
27 नवम्बर पंचमी सोमवार
8 बजे 33 दिन से
3 दिसम्बर द्वादशी रविवार
5 दिसम्बर चतुर्दशी भौमवार

8 बजे 16 दिन तक
6 दिसम्बर पूर्णिमा बुधवार

पौष कृष्णपक्ष

11 दिसम्बर चतुर्थी सोमवार
12 दिसम्बर पचंमी भौमवार
20 दिसम्बर त्रयोदशी बुधवार

पौष शुक्लपक्ष

24 दिसम्बर तृतीया रविवार
4 बजे 39 दिन तक
25 दिसम्बर चतुर्थी सोमवार
3 बजे 17 दिन तक
29 दिसम्बर अष्टमी शुक्रवार
12 बजे 47 दिन से
31 दिसम्बर दशमी रविवार
2 जनवरी द्वादशी भौमवार
3 जनवरी त्रयोदशी बुधवार

माघ कृष्णपक्ष

7 जनवरी द्वितीया रविवार
9 जनवरी तृतीया भौमवार
7 बजे 35 प्रातः तक

माघ शुक्लपक्ष

26 जनवरी षष्ठी शुक्रवार
2 फरवरी त्रयोदशी शुक्रवार
8 बजे दिन से
4 फरवरी पूर्णिमा रविवार
12 बजे 51 दिन तक

फाल्गुण कृष्णपक्ष

12 फरवरी अष्टमी सोमवार
4 बजे 35 दिन से
17 फरवरी त्रयोदशी शनिवार
8 बजे 55 दिन से

फाल्गुण शुक्लपक्ष

22 फरवरी चतुर्थी गुरुवार
23 फरवरी पंचमी शुक्रवार
26 फरवरी अष्टमी सोमवार
7 बजे 46 दिन से
29 फरवरी दशमी गुरुवार
3 बजे 12 दिन से
1 मार्च एकादशी शुक्रवार
5 बजे 43 दिन तक

चैत्र कृष्णपक्ष

9 मार्च चतुर्थी शनिवार
11 मार्च षष्ठी सोमवार
15 मार्च एकादशी शुक्रवार
5 बजे 2 दिन से
16 मार्च द्वादशी शनिवार
3 बजे 33 दिन तक
19 मार्च अमावसी भौमवार
12 बजे 26 दिन से

देवगौण के लिये कोई वार, भौमवार, गुरुवार आदि निषेध नहीं-धनिष्ट पंचक अथवा कोई निषेध नहीं है। ❖❖

देवगौण कर के एक सप्ताह तक यज्ञोपवीत अथवा विवाह संस्कार होना आवश्यक है।

राशि के अनुसार यज्ञोपवीत, विवाह, शंकुप्रतिष्ठा तथा प्रवेश मुहूर्त

यज्ञोपवीत मुहूर्त
(राशि के अनुसार)

मेष सिंह धनु	पूजा
वैशाख शुक्लपक्ष	
5 मई पंचमी शुक्र॰	बृ
11 मई एकादशी गुरु॰	बृ
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष	
19 मई पंचमी शुक्र॰	बृ
ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	
31 मई द्वितीया बुध॰	बृ
8 जून दशमी गुरु॰	बृ
आषाढ शुक्लपक्ष	
29 जून प्रतिपद् गुरु॰	बृ
5 जुलाई सप्तमी बुध॰	बृ
7 जुलाई दशमी शुक्र॰	बृ
श्रावण कृष्णपक्ष	
14 जुलाई द्वितीया शुक्र॰	बृ
कार्तिक कृष्णपक्ष	
13 अक्टूबर पंचमी शुक्र॰	वृ
कार्तिक शुक्लपक्ष	
30 अक्टूबर सप्तमी चन्द्र॰	वृ
मार्ग कृष्णपक्ष	
9 नवम्बर द्वितीया गुरु॰	वृ
10 नवम्बर तृतीया शुक्र॰	वृ
12 नवम्बर पंचमी रवि॰	वृ
माघ शुक्लपक्ष	
22 जनवरी द्वितीया सोम॰	
25 जनवरी पंचमी गुरु॰	चं
26 जनवरी षष्ठी शुक्र॰	चं
31 जनवरी एकादशी बुध॰	
फाल्गुण कृष्णपक्ष	
9 फरवरी पंचमी शुक्र॰	
फाल्गुण शुक्लपक्ष	
21 फरवरी तृतीया बुध॰	चं

23 फरवरी पंचमी शुक्र०
28 फरवरी दशमी बुध०
1 मार्च एकादशी गुरु० चं

वृष कन्या मकर

चैत्र शुक्लपक्ष
2 अप्रेल द्वितीया रवि० चं
5 अप्रेल पंचमी बुध०
6 अप्रेल षष्ठी गुरु०

वैशाख कृष्णपक्ष
19 अप्रेल चतुर्थी बुध० सू

वैशाख शुक्लपक्ष
5 मई पंचमी शुक्र० सू
11 मई एकादशी गुरु० सू

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष
19 मई पंचमी शुक्र०

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष
31 मई द्वितीया बुध०
8 जून दशमी गुरु०

आषाढ शुक्लपक्ष
29 जून प्रतिपद् गुरु०
30 जून द्वितीया शुक्र०
5 जुलाई सप्तमी बुध०
7 जुलाई दशमी शुक्र०
9 जुलाई द्वादशी रवि०
10 जुलाई त्रयोदशी सोम०

श्रावण कृष्णपक्ष
14 जुलाई द्वितीया शुक्र

कार्तिक कृष्णपक्ष
13 अक्टूबर पंचमी शुक्र०

कार्तिक शुक्लपक्ष
30 अक्टूबर सप्तमी सोम०
5 नवम्बर त्रयोदशी रवि०

मार्ग कृष्णपक्ष
9 नवम्बर द्वितीया गुरु०
10 नवम्बर तृतीया शुक्र०
12 नवम्बर पंचमी रवि०

मार्ग शुक्लपक्ष
24 नवम्बर द्वितीया शुक्र०
27 नवम्बर पंचमी सोम०
1 दिसम्बर दशमी शुक्र०
3 दिसम्बर द्वादशी रवि० चं

माघ शुक्लपक्ष
22 जनवरी द्वितीया सोम० बृ
25 जनवरी पंचमी गुरु० बृ
26 जनवरी षष्ठी शुक्र० वृ
31 जनवरी एकादशी बुध०

फाल्गुण कृष्णपक्ष
9 फरवरी पंचमी शुक्र० बृ

फाल्गुण शुक्लपक्ष
21 फरवरी तृतीया बुध० बृ
28 फरवरी दशमी बुध० बृ
1 मार्च एकादशी शुक्र० बृ

मिथुन तुला कुम्भ

चैत्र शुक्लपक्ष
2 अप्रेल द्वितीया रवि० चं

5 अप्रेल पंचमी बुध०	चं
6 अप्रेल षष्ठी गुरु०	
वैशाख कृष्णपक्ष	
19 अप्रेल चतुर्थी बुध०	
वैशाख शुक्लपक्ष	
5 मई पंचमी शुक्र०	
11 मई एकादशी गुरु०	चं
ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	
31 मई द्वितीया बुध०	सू
आषाढ शुक्लपक्ष	
29 जून प्रतिपद् गुरु०	
30 जून द्वितीया शुक्र०	
5 जुलाई सप्तमी बुध०	चं
7 जुलाई दशमी शुक्र०	
9 जुलाई द्वादशी रवि०	

10 जुलाई त्रयोदशी सोम०	
श्रावण कृष्णपक्ष	
14 जुलाई द्वितीया शुक्र	चं
कार्तिक शुक्लपक्ष	
30 अक्टूबर सप्तमी सोम०	चं
5 नवम्बर त्रयोदशी रवि०	
मार्ग कृष्णपक्ष	
9 नवम्बर द्वितीया गुरु०	चं
10 नवम्बर तृतीया शुक्र०	चं
12 नवम्बर पंचमी रवि०	
मार्ग शुक्लपक्ष	
24 नवम्बर द्वितीया शुक्र०	
27 नवम्बर पंचमी सोम०	चं
1 दिसम्बर दशमी शुक्र०	
3 दिसम्बर द्वादशी रवि०	

माघ शुक्लपक्ष	
22 जनवरी द्वितीया सोम०	सू
25 जनवरी पंचमी गुरु०	सू
26 जनवरी षष्ठी शुक्र०	सू
फाल्गुण शुक्लपक्ष	
21 फरवरी तृतीया बुध०	
23 फरवरी पंचमी शुक्र०	
28 फरवरी दशमी बुध०	
1 मार्च एकादशी शुक्र	
कर्कट वृश्चिक मीन	
चैत्र शुक्लपक्ष	
2 अप्रेल द्वितीया रवि	
5 अप्रेल पंचमी बुध	
6 अप्रेल षष्ठी गुरु०	

वैशाख कृष्णपक्ष	
19 अप्रेल चतुर्थी बुध०	
वैशाख शुक्लपक्ष	
5 मई पंचम्यां शुक्र०	चं
11 मई एकादश्यां गुरु०	
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष	
19 मई पचंमी शुक्र०	
ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	
31 मई द्वितीया बुध०	चं
8 जून दशमी गुरु०	
आषाढ शुक्लपक्ष	
30 जून द्वितीया शुक्र०	सू
5 जुलाई सप्तमी बुध०	सू
9 जुलाई द्वादशी रवि०	सू
10 जुलाई त्रयोदशी सोम०	सू

श्रावण कृष्णपक्ष	
14 जुलाई द्वितीया शुक्र०	सू
कार्तिक कृष्णपक्ष	
13 अक्टूबर पंचमी शुक्र०	
कार्तिक शुक्लपक्ष	
30 अक्टूबर सप्तमी सोम०	सू
5 नवम्बर त्रयोदशी रवि०	सू
मार्ग कृष्णपक्ष	
9 नवम्बर द्वितीया गुरु०	सू
10 नवम्बर तृतीया शुक्र०	सू
मार्ग शुक्लपक्ष	
24 नवम्बर द्वितीया शुक्र०	
27 नवम्बर पंचमी सोम०	

1 दिसम्बर दशमी शुक्र०	
3 दिसम्बर द्वादशी रवि०	
माघ शुक्लपक्ष	
22 जनवरी द्वितीया सोम०	चं
25 जनवरी पंचमी गुरु०	
26 जनवरी षष्ठी शुक्र०	
31 जनवरी एकादशी बुध०	
फाल्गुण कृष्णपक्ष	
9 फरवरी पंचमी शुक्रवार	
फाल्गुण शुक्लपक्ष	
21 फरवरी तृतीया बुध०	सू
23 फरवरी पंचमी शुक्र०	सू
1 मार्च एकादशी शुक्र०	सू

विवाह मुहूर्त राशि के अनुसार

मेष सिंह धनु

वैशाख कृष्णपक्ष	
20 अप्रेल षष्ठी गुरु०	बृ
21 अप्रेल सप्तमी शुक्र०	बृ
22 अप्रेल अष्टमी शनि०	बृ
23 अप्रेल नवमी रवि०	बृ
28 अप्रेल चतुर्दशी०	बृ
वैशाख शुक्लपक्ष	
1 मई द्वितीया सोम०	बृ
3 मई चतुर्थी बुध०	बृ
8 मई अष्टमी सोम०	बृ

(केवल रात के लग्नों में बहृस्पति पूजा)	
10 मई दशमी बुध	बृ
11 मई एकादशी गुरु०	बृ
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष	
17 मई तृतीया बुध०	बृ
19 मई पंचमी शुक्र०	बृ
20 मई षष्ठी शनि०	बृ
21 मई सप्तमी रवि०	बृ
26 मई द्वादशी शुक्र०	बृ
ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	
31 मई द्वितीयस्यां बुध०	बृ

4 जून षष्ठी रवि॰	बृ
5 जून सप्तमी सोम॰	बृ
7 जून नवमी बुध॰	बृ
8 जून दशमी गुरु॰	बृ
आषाढ कृष्णपक्ष	
16 जून चतुर्थी शुक्र	
17 जून पंचमी शनि॰	बृ
25 जून त्रयोदशी रवि॰	बृ
26 जून चर्तुदशी सोम॰	बृ
आषाढ शुक्लपक्ष	
2 जुलाई चतुर्थी रवि॰	बृ
5 जुलाई सप्तमी बुध॰	बृ
कार्तिक कृष्णपक्ष	
9 अक्टूबर प्रतिपद् सोम॰	बृ

(रात के लग्नों में गुरु पूजा दिन के लग्न निषेध)	
12 अक्टूबर चतुर्थी गुरु॰	वृ
13 अक्टूबर पंचमी शुक्र॰	वृ
14 अक्टूबर षष्ठी शनि॰	वृ
19 अक्टूबर दशमी गुरु॰	वृ
21 अक्टूबर द्वादशी शनि॰	वृ
22 अक्टूबर त्रयोदशी रवि॰	वृ
कार्तिक शुक्लपक्ष	
28 अक्टूबर पंचमी शनि॰	बृ
29 अक्टूबर षष्ठी रवि॰	बृ
30 अक्टूबर सप्तमी सोम॰	बृ
1 नवम्बर नवमी बुध॰	बृ
5 नवम्बर त्रयोदशी रवि॰	बृ

(रात के लग्नों में बृहस्पति पूजा दिन के लग्न निषेध)	
6 नवम्बर चर्तुदशी सोम॰	वृ
मार्ग कृष्णपक्ष	
8 नवम्बर प्रतिपद् बुध॰	वृ
9 नवम्बर द्वितीया गुरु॰	वृ
10 नवम्बर तृतीया शुक्र॰	वृ
15 नवम्बर अष्टमी बुध॰	वृ
माघ कृष्णपक्ष	
18 जनवरी त्रयोदशी गुरु॰	
माघ शुक्लपक्ष	
21 जनवरी प्रतिपद् रवि॰	
22 जनवरी द्वितीया सोम॰	
24 जनवरी चतुर्थी बुध॰	चं
25 जनवरी पंचमी गुरु॰	चं

26 जनवरी षष्ठी शुक्र॰	
(दिन के लग्नों में चन्द्र पूजा रात के शुद्ध)	
27 जनवरी सप्तमी शनि॰	
29 जनवरी नवमी सोम॰	
31 जनवरी एकादशी बुध॰	
फाल्गुण कृष्णपक्ष	
7 फरवरी तृतीया बुध॰	
8 फरवरी चतुर्थी गुरु॰	
9 फरवरी पंचमी शुक्र॰	
10 फरवरी षष्ठी शनि॰	
11 फरवरी सप्तमी रवि॰	
14 फरवरी दशमी बुध॰	
15 फरवरी एकादशी गुरु॰	

फाल्गुन शुक्लपक्ष	
21 फरवरी तृतीया बुध॰	चं
22 फरवरी चतुर्थी गुरू॰	चं
23 फरवरी पंचमी शुक्र॰	
28 फरवरी दशमी बुध॰	
3 मार्च त्रयोदशी रवि॰	
4 मार्च चर्तुदशी सोम॰	
वृष कन्या मकर	
वैशाख कृष्णपक्ष	
17 अप्रेल द्वितीयस्यां सोम॰	सू
21 अप्रेल सप्तमी शुक्र॰	
(रात के लग्नों में सूर्य पूजा दिन के निषेध)	
22 अप्रेल अष्टमी शनि॰	सू

23 अप्रेल नवमी रवि॰	सू
26 अप्रेल द्वादशी बुध॰	सू
27 अप्रेल त्रयोदशी गुरू॰	सू
28 अप्रेल चर्तुदशी शुक्र॰	सू
(दिन के लग्नों में सूर्य पूजा)	
वैशाख शुक्लपक्ष	
1 मई द्वितीया सोम॰	सू
3 मई चतुर्थी बुध॰	सू
10 मई दशमी बुध॰	सू
11 मई एकादशी गुरू॰	सू
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष	
17 मई तृतीयां बुध॰	चं
19 मई पंचमी शुक्र॰	
20 मई षष्ठी शनि॰	
21 मई सप्तमी रवि॰	

24 मई दशमी बुध॰	
25 मई एकादशी गुरू॰	
(रात के लग्नों में चन्द्र पूजा)	
26 मई द्वादशी शुक्र॰	चं
ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	
31 मई द्वितीया बुध॰	
4 जून षष्ठी रवि॰	चं
5 जून सप्तमी सोम॰	चं
7 जून नवमी बुध॰	
8 जून दशमी गुरू॰	
11 जून त्रयोदशी रवि॰	
12 जून चर्तुदशी सोम॰	
आषाढ कृष्णपक्ष	
16 जून चतुर्थी शुक्र॰	
17 जून पंचमी शनि॰	

21 जून नवमी बुध॰	
22 जून दशमी गुरू॰	
25 जून त्रयोदशी रवि॰	
26 जून चर्तुदशी सोम॰	
आषाढ शुक्लपक्ष	
2 जुलाई चतुर्थी रवि॰	चं
5 जुलाई सप्तमी बुध॰	
श्रावण कृष्णपक्ष	
19 जुलाई सप्तमी बुध॰	चं
20 जुलाई अष्टमी गुरू॰	चं
22 जुलाई दशमी शनि	
23 जुलाई एकादशी रवि	
24 जुलाई द्वादशी सोम	
आश्विन शुक्लपक्ष	
8 अक्टूबर पूर्णिमा रवि	

कार्तिक कृष्णपक्ष	
9 अक्टूबर प्रतिपद् सोम	
(रात के लग्नों में चन्द्र पूजा)	
12 अक्टूबर चतुर्थी गुरु	
13 अक्टूबर पंचमी शुक्र	
14 अक्टूबर षष्ठी शनि	
19 अक्टूबर दशमी गुरु	
21 अक्टूबर द्वादशी शनि	
(दिन के लग्नों में चन्द्र पूजा)	
22 अक्टूबर त्रयोदशी रवि	
कार्तिक शुक्लपक्ष	
28 अक्टूबर पंचमी शनि॰	चं
29 अक्टूबर षष्ठी रवि॰	चं
30 अक्टूबर सप्तमी सोम॰	
1 नवम्बर नवमी बुध॰	
3 नवम्बर एकादशी शुक्र॰	
4 नवम्बर द्वादशी शनि॰	
5 नवम्बर त्रयोदशी रवि॰	
(रात के लग्नों में चन्द्र पूजा)	
6 नवम्बर चर्तुदशी सोम॰	चं
मार्ग कृष्णपक्ष	
8 नवम्बर प्रतिपद् बुध॰	
9 नवम्बर द्वितीया गुरु॰	
10 नवम्बर तृतीया शुक्र॰	
15 नवम्बर अष्टमी बुध॰	चं
18 नवम्बर एकादशी शनि॰	
19 नवम्बर द्वादशी रवि॰	
20 नवम्बर त्रयोदशी सोम॰	
मार्ग शुक्लपक्ष	
27 नवम्बर पंचमी सोम॰	
1 दिसम्बर दशमी शुक्र॰	
2 दिसम्बर एकादशी शनि॰	
3 दिसम्बर द्वादशी रवि॰	चं
माघ शुक्लपक्ष	
21 जनवरी प्रतिपद् रवि॰	वृ
22 जनवरी द्वितीया सोम॰	वृ
24 जनवरी चतुर्थी बुध॰	वृ
25 जनवरी पंचमी गुरु॰	वृ
26 जनवरी षष्ठी शुक्र॰	वृ
(दिन के लग्नों में बृह॰ पूजा रात के लग्न निषेध)	
29 जनवरी नवमी सोम॰	वृ
31 जनवरी एकादशी बुध॰	वृ
फाल्गुन कृष्णपक्ष	
7 फरवरी तृतीया बुध॰	वृ
8 फरवरी चतुर्थी गुरु॰	वृ
9 फरवरी पंचमी शुक्र॰	वृ
10 फरवरी षष्ठी शनि॰	वृ
11 फरवरी सप्तमी रवि॰	वृ
फाल्गुन शुक्लपक्ष	
21 फरवरी तृतीया बुध॰	वृ
22 फरवरी चतुर्थी गुरु॰	वृ
28 फरवरी दशमी बुध॰	वृ

मिथुन तुला कुम्भ

वैशाख कृष्णपक्ष	
17 अप्रैल द्वितीया सोम॰	
20 अप्रैल षष्ठी गुरु॰	
21 अप्रैल सप्तमी शुक्र॰	

(रात के लग्नों में चन्द्र	पूजा)	24 मई दशमी बुध॰	सू	22 जून दशमी गुरू॰		कार्तिक कृष्णपक्ष	
22 अप्रेल अष्टमी शनि॰	चं	25 मई एकादशी गुरू॰	सू	25 जून त्रयोदशी रवि॰	चं	9 अक्टूबर पतिपद् सोम॰	सू
23 अप्रेल नवमी रवि॰	चं	26 मई द्वादशी शुक्र॰	सू	26 जून चर्तुदशी सोम॰		14 अक्टूबर षष्ठी शनि॰	सू
26 अप्रेल द्वादशी बुध॰		**ज्येष्ठ शुक्लपक्ष**		**आषाढ शुक्लपक्ष**		19 अक्टूबर दशमी गुरू॰	
27 अप्रेल त्रयोदशी गुरू॰		31 मई द्वितीया बुध॰	सू	2 जुलाई चतुर्थी रवि॰		21 अक्टूबर द्वादशी शनि	
28 अप्रेल चर्तुदशी शुक्र॰		4 जून षष्ठी रवि॰	सू	5 जुलाई सप्तमी बुध॰		(रात के लग्नों में चन्द्र	पूजा
वैशाख शुक्लपक्ष		5 जून सप्तमी सोम॰	सू	**श्रावण कृष्णपक्ष**		दिन के शुद्ध)	
1 मई द्वितीया सोम॰	चं	11 जून त्रयोदशी रवि॰	सू	19 जुलाई सप्तमी बुध॰		22 अक्टूबर त्रयोदशी रवि॰	चं
3 मई चतुर्थी बुध॰		12 जून चर्तुदशी सोम॰	सू	20 जुलाई अष्टमी गुरू॰		**कार्तिक शुक्लपक्ष**	
8 मई अष्टमी सोम॰		**आषाढ कृष्णपक्ष**		22 जुलाई दशमी शनि॰	चं	28 अक्टूबर पंचमी शनि॰	
10 मई दशमी बुध॰	चं	16 जून चतुर्थी शुक्र॰	चं	23 जुलाई एकादशी रवि॰	चं	29 अक्टूबर षष्ठी रवि॰	
11 मई एकादशी गुरू॰	चं	17 जून पंचमी शनि		24 जुलाई द्वादशी सोम॰		30 अक्टूबर सप्तमी सोम॰	चं
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष		(दिन के लग्नों में चन्द्र	पूजा)	**आश्विन शुक्लपक्ष**		1 नवम्बर नवमी बुध॰	
17 मई तृतीया बुध॰	सू	रात के लग्न शुद्ध		8 अक्टूबर पूर्णिमा रवि॰	सू	3 नवम्बर एकादशी शुक्र॰	
21 मई सप्तमी रवि॰	सू	21 जून नवमी बुध॰				4 नवम्बर द्वादशी शनि॰	

5 नवम्बर त्रयोदशी रवि॰	
6 नवम्बर चर्तुदशी सोम॰	
मार्ग कृष्णपक्ष	
8 नवम्बर प्रतिपद् बुध॰	चं
9 नवम्बर द्वितीया गुरु॰	चं
10 नवम्बर तृतीय शुक्र॰	
(दिन के लग्नों में चन्द्र पूजा)	
(रात के लग्न शुद्ध)	
15 नवम्बर अष्टमी बुध॰	
18 नवम्बर एकादशी शनि॰	चं
19 नवम्बर द्वादशी रवि॰	चं
20 नवम्बर त्रयोदशी सोम॰	
मार्ग शुक्लपक्ष	
27 नवम्बर पंचमी सोम॰	चं
1 दिसम्बर दशमी शुक्र	

2 दिसम्बर एकादशी शनि॰	
3 दिसम्बर द्वादशी रवि॰	
माघ कृष्णपक्ष	
18 जनवरी त्रयोदशी गुरु॰	सू
माघ शुक्लपक्ष	
22 जनवरी द्वितीय सोम॰	सू
24 जनवरी चतुर्थी बुध॰	सू
25 जनवरी पंचमी गुरु॰	सू
26 जनवरी षष्ठी शुक्र॰	सू
27 जनवरी सप्तमी शनि॰	सू
फाल्गुण कृष्णपक्ष	
10 फरवरी षष्ठी शनि॰	सू
11 फरवरी सप्तमी रवि॰	सू
14 फरवरी दशमी बुध॰	
15 फरवरी एकादशी गुरु॰	

फाल्गुण शुक्लपक्ष	
21 फरवरी तृतीया बुध॰	
22 फरवरी चतुर्थी गुरु॰	
23 फरवरी पंचमी शुक्र॰	
28 फरवरी दशमी बुध॰	
3 मार्च त्रयोदशी रवि॰	
4 मार्च चर्तुदशी सोम॰	
कर्कट वृश्चिक मीन	
वैशाख कृष्णपक्ष	
17 अप्रेल द्वितीया सोम॰	
20 अप्रेल षष्ठी गुरु॰	
21 अप्रेल सप्तमी शुक्र॰	
22 अप्रेल अष्टमी शनि॰	
23 अप्रेल नवमी रवि॰	

26 अप्रेल द्वादशी बुध	
27 अप्रेल त्रयोदशी गुरौ॰	
28 अप्रेल चर्तुदशी शुक्र॰	
वैशाख शुक्लपक्ष	
1 मई द्वितीया सोम॰	
3 मई चतुर्थी बुध॰	
(रात के लग्नों में चन्द्र पूजा)	
8 मई अष्टमी सोम॰	
10 मई दशमी बुध॰	
11 मई एकादशी गुरु॰	
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष	
17 मई तृतीया बुध॰	
19 मई पंचमी शुक्र॰	
20 मई षष्ठी शनि॰	
21 मई सप्तमी रवि॰	चं

24 मई दशमी बुध०	
25 मई एकादशी गुरु०	
26 मई द्वादशी शुक्र०	
ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	
31 मई द्वितीया बुध०	चं
4 जून षष्ठी रवि०	
5 जून सप्तमी सोम०	
7 जून नवमी बुध०	
8 जून दशमी गुरु०	
11 जून त्रयोदशी रवि०	
12 जून चर्तुदशी सोम०	
आषाढ कृष्णपक्ष	
16 जून चतुर्थी शुक्र०	सू
17 जून पंचमी शनि०	

(दिन के लग्नों में सूर्यो पूजा रात के लग्न निषेध)	
21 जून नवमी बुध०	सू
22 जून दशमी गुरु०	सू
25 जून त्रयोदशी रवि०	सू
26 जून चर्तुदशी सोम०	सू
आषाढ शुक्लपक्ष	
2 जुलाई चतुर्थी रवि०	सू
5 जुलाई सप्तमी बुध०	सू
श्रावण कृष्णपक्ष	
19 जुलाई सप्तमी बुध०	
20 जुलाई अष्टमी गुरु०	
22 जुलाई दशमी शनि०	
23 जुलाई एकादशी रवि०	
24 जुलाई द्वादशी सोम०	चं

आश्विन शुक्लपक्ष	
8 अक्टूबर पूर्णिमा रवि०	
कार्तिक कृष्णपक्ष	
9 अक्टूबर प्रतिपद् सोम०	
12 अक्टूबर चतुर्थी गुरु०	
13 अक्टूबर पंचमी शुक्र०	
14 अक्टूबर षष्ठी शनि०	चं
19 अक्टूबर दशमी गुरु०	सू
21 अक्टूबर द्वादशी शनि०	सू
22 अक्टूबर त्रयोदशी रवि०	सू
कार्तिक शुक्लपक्ष	
28 अक्टूबर पंचमी शनि०	सू
29 अक्टूबर षष्ठी रवि०	सू
30 अक्टूबर सप्तमी सोम०	सू
3 नवम्बर एकादशी शुक्र०	सू

4 नवम्बर द्वादशी शनि०	सू
5 नवम्बर त्रयोदशी रवि०	सू
6 नवम्बर चर्तुदर्शी सोम०	सू
मार्ग कृष्णपक्ष	
8 नवम्बर प्रतिपद् बुध०	सू
9 नवम्बर द्वितीया गुरु०	सू
10 नवम्बर तृतीया शुक्र०	सू
दिन के लग्नों में सूर्य पूजा रात के लग्न निषेध	
15 नवम्बर अष्टमी बुध०	सू
18 नवम्बर एकादशी शनि०	
19 नवम्बर द्वादशी रवि०	
20 नवम्बर त्रयोदशी सोम०	चं
मार्ग शुक्लपक्ष	
27 नवम्बर पंचमी सोम०	

1 दिसम्बर दशमी शुक्र॰
2 दिसम्बर एकादशी शनि॰
3 दिसम्बर द्वादशी रवि॰

माघ कृष्णपक्ष

18 जनवरी त्रयोदशी गुरु॰

माघ शुक्लपक्ष

21 जनवरी प्रतिपद् रवि॰
22 जनवरी द्वितीया सोम॰ चं
24 जनवरी चतुर्थी बुध॰
25 जनवरी पंचमी गुरु॰
26 जनवरी षष्ठी शुक्र॰
27 जनवरी सप्तमी शनि॰
29 जनवरी नवमी सोम॰
31 जनवरी एकादशी बुध॰

फाल्गुण कृष्णपक्ष

7 फरवरी तृतीया बुध॰
8 फरवरी चतुर्थी गुरु॰
9 फरवरी पंचमी शुक्र
10 फरवरी षष्ठी शनि॰ चं
11 फरवरी सप्तमी रवि॰ चं
14 फरवरी दशमी बुध॰ सू
15 फरवरी एकादशी गुरु॰ सू

फाल्गुण शुक्लपक्ष

21 फरवरी तृतीया बुध॰ सू
22 फरवरी चतुर्थी गुरु॰ सू
23 फरवरी पंचमी शुक्र॰ सू
3 मार्च त्रयोदशी रवि॰ सू
4 मार्च चर्तुदशी सोम॰ सू

शंकु प्रतिष्ठा मुहूर्त

(राशि के अनुसार)

मेष सिंह धनु

वैशाख कृष्णपक्ष

21 अप्रेल सप्तमी शुक्र॰

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

19 मई पंचमी शुक्र॰
20 मई षष्ठी शनि॰

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

31 मई द्वितीया बुध॰
12 जून चर्तुदशी सोम॰

कार्तिक शुक्लपक्ष

30 अक्टूबर सप्तमी सोम॰

मार्ग कृष्णपक्ष

9 नवम्बर द्वितीया गुरु॰
10 नवम्बर तृतीया शुक्र॰

मार्ग शुक्लपक्ष

27 नवम्बर पंचमी सोम॰
6 दिसम्बर पूर्णिमा बुध॰

माघ शुक्लपक्ष

22 जनवरी द्वितीया सोम॰

फाल्गुण कृष्णपक्ष

9 फरवरी पंचमी शुक्र

10 फरवरी षष्ठी शनि०

वृष कन्या मकर

वैशाख शुक्लपक्ष

6 मई षष्ठी शनि०

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

19 मई पंचमी शुक्र०

20 मई षष्ठी शनि०

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

31 मई द्वितीया बुध०

3 जून पंचमी शनि०

12 जून चर्तुदशी सोम०

श्रावण कृष्णपक्ष

19 जुलाई सप्तमी बुध०

कार्तिक शुक्लपक्ष

26 अक्टूबर तृतीया गुरू०

30 अक्टूबर सप्तमी सोम०

मार्ग कृष्णपक्ष

9 नवम्बर द्वितीया गुरू०

10 नवम्बर तृतीया शुक्र०

13 नवम्बर षष्ठी सोम०

मार्ग शुक्लपक्ष

27 नवम्बर पंचमी सोम०

6 दिसम्बर पूर्णिमा बुध०

माघ शुक्लपक्ष

22 जनवरी द्वितीया सोम०

25 जनवरी पंचमी गुरू०

26 जनवरी षष्ठी शुक्र०

फाल्गुण कृष्णपक्ष

9 फरवरी पंचमी शुक्र०

10 फरवरी षष्ठी शनि०

फाल्गुण शुक्लपक्ष

21 फरवरी तृतीया बुध०

मिथुन तुला कुम्भ

वैशाख कृष्णपक्ष

21 अप्रेल सप्तमी शुक्र

वैशाख शुक्लपक्ष

6 मई षष्ठी शनि०

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

31 मई द्वितीया बुध

3 जून पंचमी शनि०

12 जून चर्तुदशी सोम०

श्रावण कृष्णपक्ष

19 जुलाई सप्तमी बुध०

कार्तिक शुक्लपक्ष

26 अक्टूबर तृतीया गुरू०

मार्ग कृष्णपक्ष

13 नवम्बर षष्ठी सोम०

माघ शुक्लपक्ष

22 जनवरी द्वितीया सोम०

25 जनवरी पंचमी गुरू०

26 जनवरी षष्ठी शुक्र०

फाल्गुण कृष्णपक्ष

10 फरवरी षष्ठी शनि०

फाल्गुण शुक्लपक्ष

21 फरवरी तृतीया बुध०

कर्कट वृश्चिक मीन

वैशाख कृष्णपक्ष

21 अप्रेल सप्तमी शुक्र०

वैशाख शुक्लपक्ष

6 मई षष्ठी शनि०

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

19 मई पंचमी शुक्र०

20 मई षष्ठी शनि०

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

3 जून पंचमी शनि०

12 जून चतुर्दशी सोम०

श्रावण कृष्णपक्ष

19 जुलाई सप्तमी बुध०

कार्तिक शुक्लपक्ष

26 अक्टूबर तृतीया गुरु०

30 अक्टूबर सप्तमी सोम०

मार्ग कृष्णपक्ष

9 नवम्बर द्वितीया गुरु०

10 नवम्बर तृतीया शुक्र०

13 नवम्बर षष्ठी सोम०

मार्ग शुक्लपक्ष

27 नवम्बर पंचमी सोम

6 दिसम्बर पूर्णिमा बुध

माघ शुक्लपक्ष

25 जनवरी पंचमी गुरु०

26 जनवरी षष्ठी शुक्र०

फाल्गुण कृष्णपक्ष

9 फरवरी पंचमी शुक्र०

फाल्गुण शुक्लपक्ष

21 फरवरी तृतीया बुध०

प्रवेश मुहूर्त
(राशि के अनुसार)

मेष सिंह धनु

वैशाख शुक्लपक्ष

11 मई एकादशी गुरु०

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

19 मई पंचमी शुक्र०

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

31 मई द्वितीया बुध०

8 जून दशमी गुरु०

आषाढ कृष्णपक्ष

17 जून पंचमी शनि०

श्रावण कृष्णपक्ष

15 जुलाई तृतीया शनि०

आश्विन शुक्लपक्ष

6 अक्टूबर त्रयोदशी शुक्र०

कार्तिक कृष्णपक्ष

13 अक्टूबर पंचमी शुक्र०

कार्तिक शुक्लपक्ष

30 अक्टूबर सप्तमी सोम०

2 नवम्बर दशमी गुरु०

मार्ग कृष्णपक्ष

9 नवम्बर द्वितीया गुरु०

10 नवम्बर तृतीया शुक्र०

मार्ग शुक्लपक्ष
2 दिसम्बर एकादशी शनि०
माघ शुक्लपक्ष
22 जनवरी द्वितीया सोम०
31 जनवरी एकादशी बुध०
फाल्गुण कृष्णपक्ष
9 फरवरी पंचमी शुक्र०
फाल्गुण शुक्लपक्ष
28 फरवरी दशमी बुध०

वृष कन्या मकर

वैशाख शुक्लपक्ष
11 मई एकादशी गुरु०
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष
19 मई पंचमी शुक्र०

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष
31 मई द्वितीया बुध०
3 जून पंचमी शनि०
8 जून दशमी गुरु०
आषाढ कृष्णपक्ष
17 जून पंचमी शनि०
आषाढ शुक्लपक्ष
30 जून द्वितीया शुक्र०
श्रावण कृष्णपक्ष
15 जुलाई तृतीया शनि०
आश्विन शुक्लपक्ष
6 अक्टूबर त्रयोदशी शुक्र०
कार्तिक कृष्णपक्ष
13 अक्टूबर पंचमी शुक्र०

कार्तिक शुक्लपक्ष
30 अक्टूबर सप्तमी सोम०
2 नवम्बर दशमी गुरु०
4 नवम्बर द्वादशी शनि०
मार्ग कृष्णपक्ष
9 नवम्बर द्वितीया गुरु०
10 नवम्बर तृतीया शुक्र०
मार्ग शुक्लपक्ष
1 दिसम्बर दशमी शुक्र०
माघ शुक्लपक्ष
22 जनवरी द्वितीया सोम०
25 जनवरी पंचमी गुरु०
26 जनवरी षष्ठी शुक्र०
31 जनवरी एकादशी बुध०

फाल्गुण कृष्णपक्ष
9 फरवरी पंचमी शुक्र०
फाल्गुण शुक्लपक्ष
21 फरवरी तृतीया बुध०
28 फरवरी दशमी बुध०
2 मार्च द्वादशी शनि०

मिथुन तुला कुम्भ

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष
31 मई द्वितीया बुध०
3 जून पंचमी शनि०
आषाढ शुक्लपक्ष
30 जून द्वितीया शुक्र०
श्रावण कृष्णपक्ष
15 जुलाई तृतीया शनि०

आश्विन शुक्लपक्ष

6 अक्टूबर त्रयोदशी शुक्र०

कार्तिक शुक्लपक्ष

2 नवम्बर दशमी गुरू०

4 नवम्बर द्वादशी शनि०

मार्ग शुक्लपक्ष

1 दिसम्बर दशमी शक्र०

2 दिसम्बर एकादशी शनि०

माघ शुक्लपक्ष

22 जनवरी द्वितीया सोम०

25 जनवरी पंचमी गुरू०

26 जनवरी षष्ठी शुक्र०

फाल्गुण शुक्लपक्ष

21 फरवरी तृतीया बुध०

28 फरवरी दशमी बुध०

2 मार्च द्वादशी शनि०

कर्कट वृश्चिक मीन

वैशाख शुक्लपक्ष

11 मई एकादशी गुरू०

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

19 मई पंचमी शुक्र०

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

3 जून पंचमी शनि०

8 जून दशमी गुरू०

आषाढ कृष्णपक्ष

17 जून पंचमी शनि०

आषाढ शुक्लपक्ष

30 जून द्वितीया शुक्र०

कार्तिक कृष्णपक्ष

13 अक्टूबर पंचमी शुक्र

कार्तिक शुक्लपक्ष

30 अक्टूबर सप्तमी सोम०

4 नवम्बर द्वादशी शनि०

मार्ग कृष्णपक्ष

9 नवम्बर द्वितीया गुरू०

10 नवम्बर तृतीया शुक्र०

मार्ग शुक्लपक्ष

1 दिसम्बर दशमी शुक्र०

2 दिसम्बर एकादशी शनि०

माघ शुक्लपक्ष

25 जनवरी पंचमी गुरू०

26 जनवरी षष्ठी शुक्र०

31 जनवरी एकादशी बुध०

फाल्गुण कृष्णपक्ष

9 फरवरी पंचमी शुक्र०

फाल्गुण शुक्लपक्ष

21 फरवरी तृतीया बुध०

2 मार्च द्वादशी शनि०

मेष राशि का वर्षफल

वर्ष के आरम्भ पर गोचर से बारवाँ सूर्य-चन्द्रमा तथा बुध आर्थिक संकट का इशारा है, लग्न तथा आठवें भाव का स्वामी भौम चौथे भाव में होना वर्षभर के शरीर सम्बन्धित परेशानियों का सूचक है, वर्षभर अपने शरीर अथवा घर के किसी न किसी सदस्य की चिन्ता लगी रहेगी, यदि आप कारोबार करते हैं तो वर्षभर रात दिन काम में जुटे रहने का योग है ऐसा होने पर भी सन्तोषजनक लाभ मिलेगा नहीं परन्तु हानि की सम्भावना भी नहीं है, यदि आप कोई नया काम आरम्भ करना चाहते हैं तो अवश्य करें बिना किसी हिचकिचाहट के उस काम में धन खुले दिल से लगायें,

यद्यपि इस वर्ष उस काम पर केवल खर्च ही करना होगा परन्तु वह काम आप के भविष्य को बनाने वाला होगा, नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित हर काम में रूकावट पड़ने की सम्भावना है इस वर्ष तरक्की की कोई आशा न रखें, शनि देवता पाँचवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है जिस के प्रभाव से विद्यार्थी वर्ग को अधिक से अधिक परिश्रम करने पर ही लाभ की आशा रखनी चाहिये।

मेष राशि वालों को उपाय के रूप में निम्नलिखित 16 नामों वाले महामन्त्र का बार-बार उच्चारण करना चाहिये-निश्चय रखिये इस मन्त्र के बार बार उच्चारण करने से आप की समस्या हल होगी:-

मन्त्र "हरे राम - हरे राम - राम राम - हरे हरे
हरे कृष्ण - हरे कृष्ण - कृष्ण कृष्ण - हरे हरे"

मेष राशि का मासिक फल

अप्रेल : मास के आरम्भ पर बारवाँ सूर्य-चन्द्रमा तथा बुध-चौथा मंगल-आठवाँ बृहस्पति-ग्यारवाँ शनि तथा शुक्र-सातवाँ राहु तथा लग्न में केतु का होना इस मास के अशान्त वातावरण को जतलाता है, यदि आप व्यापार करते हैं तो इस मास को अपने लिये अशुभ ही मानिये, यदि आप नौकरी पेशा हैं तो यह मास यथावत् चलता रहेगा, विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता रहेगी।

मई : लग्न में सूर्य केतु-दूसरा बुध चन्द्रमा- चौथा भौम-सातवाँ राहु-आठवाँ बृहस्पति-ग्यारवाँ शनि तथा बारवाँ शुक्र होने से यह मास गत मास की अपेक्षा अच्छी स्थिति में ही गुजरेगा, कारोबारी वर्ग के कारोबार में वृद्धि होगी, यदि कारोबार सम्बन्धित कोई नई योजना विचाराधीन है तो इस मास में

उस काम का श्रीगणेश कीजिये सफलता अवश्य मिलेगी, नौकरी पेशा मेष राशि वालों के लिये यह मास हर काम में सफलता का है, शरीर अकस्मात बनता बिगडता रहेगा, गृहस्थी होने पर घरेलू लटकती हुई समस्याओं का हल अचानक निकल आयेगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित प्रायः हर काम में सफलता होगी।

जून : पहला शुक्र केतु-दूसरा सूर्य बुध- तीसरा चन्द्रमा- पाँचवाँ भौम-छटा राहु- आठवाँ बृहस्पति तथा बारवाँ शनि होने से यह मास आप ने सुख व शान्ति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा, यदि आप व्यापार करते हैं तो हर काम में संघर्ष करना पड़ेगा तथा प्रायः हर काम में सफलता मिलेगी, नौकरी पेशा होने पर आप के सभी रुके हुये कार्य भी हरकत में आयेंगें, हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता होगी, घरेलू वातावरण शान्त रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का मास है।

जुलाई : पहले भाव का केतु-दूसरा बुध-तीसरे भाव का सूर्य और शुक्र- चौथा चन्द्रमा-पांचवाँ भौम-सातवाँ राहु-आठवाँ बृहस्पति तथा बारवाँ शनि-इस ग्रहचाल से इस मास में कारोबारी वर्ग मालामाल होगा, नौकरी पेशा वालों के लिये भी नौकरी सम्बन्धित हर काम में सफलता का महीना है, गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण भी शान्त रहेगा, विद्यार्थियों के लिये ग्रह अनुकूल हैं जुट कर पढ़ाई में लगे रहिये आशा से अधिक सफलता मिलेगी।

अगस्त : पहले भाव का केतु-चौथे भाव का सूर्य बुध और शुक्र-छटा चन्द्रमा भौम-सातवाँ राहु-आठवाँ बृहस्पति तथा बारवाँ शनि-इस ग्रहस्थिति के प्रभाव से यह मास आप ने हर दृष्टि से अशान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, आप नौकरी करते हैं या कारोबार दोनों सूरतों में आप के हर आरम्भ किये हुये काम में रूकावट पड़ने की सम्भावना है, विद्यार्थियों के लिये भी असफलता का ही महीना है।

सितम्बर : पहले भाव का केतु-पाँचवाँ सूर्य और शुक्र-छटे भाव का बुध-सातवाँ भौम राहु-आठवाँ बृहस्पति और चन्द्रमा-ग्यारवाँ शनि होने से यह मास कारोबारी वर्ग के लिये लाभदायक रहेगा विशेषतया मशीनरी सम्बन्धित अथवा लोहे का काम करने वालों के लिये यह मास अधिक लाभदायक रहेगा, व्यापारी वर्ग को अगर अपने काम को बढावा देने का कोई विचार है तो इस मास में उस काम का श्रीगणेश करें-आप का कारोबार दिनों दिन फलता रहेगा, नौकरी पेशा मेष राशि वालों के लिये भी यह मास सफलता तथा लाभ का है, इस मास के ग्रह विद्यार्थियों के अनुकूल हैं।

अक्टूबर : पहले भाव का केतु-छटे भाव का सूर्य और बुध-सातवाँ राहु शुक्र और भौम-आठवाँ बृहस्पति-नवाँ चन्द्रमा तथा दसवाँ शनि-इस ग्रह चाल के प्रभाव से आप ने यह महीना शान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, कारोबारी वर्ग लाभ में रहेगा, नौकरी पेशा मेष राशि वालों के लिये यह महीना यद्यपि संघर्ष तथा दौडधूप का है परन्तु हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता होगी, गृहस्थी होने पर घर में मास भर किसी न किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी बनी रहेगी, इस मास के

ग्रह विद्यार्थियों के पक्ष में नहीं हैं, बहुत परिश्रम करने पर भी इच्छानुसार सफलता की आशा न रखें।

नवम्बर : सातवाँ सूर्य और बुध तथा आठवें भाव में बृहस्पति और भौम होने से आप को शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये, अगर दैवयोग से आप का शरीर स्वस्थ भी रहेगा तो भी स्त्री की ओर से अचानक शरीर कष्ट की सम्भावना है यदि दैवयोग से इस मुसीबत से बच भी गये तो भी घर में अचानक कोई दुर्घटना होगी-इस कष्ट से बचने का एक उपाय है आप इस मास के आरम्भ से ही उच्चारण किया करें :-

"चन्द्रशेखर! चन्द्रशेखर! चन्द्रशेखर! पाहि मां
चन्द्रशेखर! चन्द्रशेखर! चन्द्रशेखर रक्ष माम्!"

यदि शरीर ठीक रखने के लिये आवश्यक न हो तो माँस का प्रयोग न करें, हो सके तो उपरलिखित मन्त्र से भगवान् शङ्कर पर हर सोमवार को जल चढाया करें।

दिसम्बर : आठवें भाव का बुध तथा सूर्य-नवें भाव में शुक्र बारवाँ चन्द्रमा-ग्यारवाँ शनि-इस मिले जुले योग के फलानुसार आप का शरीर स्वस्थ रहेगा, कारोबार की दृष्टि से भी यह मास उत्तम है, अगर आप नौकरी करते हैं और यदि आप किसी प्रकार की तरक्की मिलने की आशा में बैठे हैं तो वह तरक्की इस मास में अवश्य मिलेगी, अगर इस में कुछ रूकावट पडेगी तो भी प्रयत्न करने पर आपकी तरक्की की आशा मज़बूत बनेगी।

जनवरी : दूसरा चन्द्रमा-छटे भाव का राहु-नवाँ सूर्य बुध और बृहस्पति-दसवाँ भौम और शुक्र-ग्यारवाँ शनि तथा बारवाँ केतु-इस ग्रहचाल को दृष्टि में रखकर विदित होता है कि नये वर्ष का पहला महीना आप को नये वर्ष के लिये शुभ सन्देश लेकर आया है - यह मास आप के लिये एक महत्वपूर्ण सफलता का वर्ष होगा, आप नौकरी करते हैं या कारोबार आप विद्यार्थी हैं आपकी ट्रेनिंग अथवा पढाई आदि सम्पूर्ण होने वाली है हर सूरत में नया वर्ष आप के लिये सफलता का है।

फरवरी : नवाँ बहस्पति-दसवाँ सूर्य बुध तथा भौम-ग्यारवाँ शनि तथा शुक्र, इस ग्रहस्थिति पर वेध अष्टक वर्ग आदि गोचर सिद्धान्तों के आधार से विचार करके यही मालूम होता है यह मास संघर्ष का होते हुये भी सामूहिक रूप से सफलता तथा लाभ का मास ही है, आप के घर में कोई धार्मिक महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, यह महीना अधिक से अधिक खर्च करने का महीना है जो खर्च प्राय: शुभ कार्यों पर ही होगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना है।

मार्च : बारवाँ शनि तथा केतु होने से इस मास में शरीर सम्बन्धित कोई न कोई चिन्ता आप को घेरे रखेगी, पहले भाव का शुक्र ग्यारवाँ भौम-दसवाँ बुध तथा नवाँ बृहस्पति होने से इस मास की आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी, आप नौकरी करते हैं या कारोबार आप ने यह मास सुख व शान्ति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये भी यह महीना सुख शान्ति का ही होगा।

वृष राशि का वर्षफल

वर्षचक्र में ग्यारवाँ सूर्य चन्द्रमा तथा बुध-तीसरा भौम तथा दसवें शनि का होना इस वर्ष के शुभफल का सूचक है, वेध अष्टकवर्ग आदि गोचर सिद्धान्तों के आधार से भी ग्रहःस्थिति अच्छी है आप शरीर से स्वस्थ रहेंगे, अगर आप दैवयोग से शरीर से अस्वस्थ हैं तो आप किसी नये डॉक्टर से इलाज करवायें अवश्य आप का शरीर स्वस्थ रहेगा। अगर घर में भी कोई शरीर सम्बन्धित परेशानी होगी वह भी समाप्त हो जायेगी, यदि आप कारोबार करते हैं तो आप का कारोबार इस वर्ष तरक्की की राह पर अग्रसर रहेगा, नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित हर काम में सफलता मिलेगी, यद्यपि वर्ष के पहले छः महीने संघर्ष के ही होंगें परन्तु ऐसा होने पर भी हर काम में सफलता होगी, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का ही महीना है।

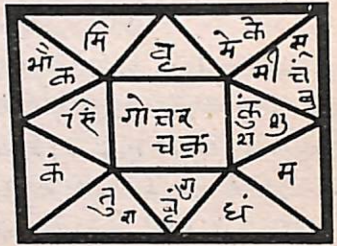

वृष राशि का मासिक फल

अप्रेल : तीसरा भौम-छटा राहु-सातवाँ बृहस्पति-दसवाँ शनि और शुक्र-ग्यारवाँ सूर्य चन्द्रमा और बुध तथा बारवाँ केतु होने से यह मास सुख व शान्ति के वातावरण में ही गुजारना होगा। घर में कोई शुभ महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, आप की नौकरी अगर अच्छी पोजीशन की है तो आपकी पोजीशन में अचानक वृद्धि होगी-यदि छोटे दर्जे के मुलाज़िम हैं तो आप के हर काम में रूकावट पडने की सम्भावना है यहाँ तक कि नौकरी छूट जाने का भी खतरा है, विद्यार्थियों के लिये विद्या सम्वन्धित हर काम में सफलता का महीना है।

मई : पहले भाव का बुध और चन्द्रमा-तीसरा भौम-छटे भाव का राहु सातवाँ बृहस्पति-दसवाँ शनि-ग्यारवाँ शुक्र-बारवाँ सूर्य और केतु-इस ग्रहस्थिति पर वेध अष्टकवर्ग के आधार से विचार करने पर मालूम होता है कि यह मास आप ने सुख व शान्ति के वातावरण में गुज़ारना होगा, शरीर सुख उत्तम रहेगा, यदि आप कारोबार करते हैं आप को रात दिन काम में लगे रहने पर भी इच्छानुसार लाभ नहीं मिलेगा, नौकरी पेशा होने पर अच्छे-अच्छे पुरुषों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, आदर

व मान में वृद्धि होगी, घर में शुभ कार्यों में धन खर्च करने की योजनायें बनती रहेंगी, यद्यपि इस मास में लाभ उत्तम रहेगा भी परन्तु खर्च की भी भरमार होगी, विद्यार्थियों को पठन पाठन में दिलचस्पी बनी रहेगी अगर आपने कोई परीक्षा दी होगी या देनी हो तो सफलता क़ी ही आशा रखिये।

जून : पहले भाव का सूर्य बुध-दूसरा चन्द्रमा तथा चौथा भौम-सातवाँ बृहस्पति-ग्यारवाँ शनि-बारवाँ शुक्र और केतु तथा छटे भाव का राहु-इस ग्रहस्थिति पर विचार करने से मालूम होता है कि आप ने यह मास अशान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, शारीरिक परेशानी बनी रहेगी, आप का स्वास्थ अगर ठीक रहेगा भी परन्तु तो भी घर के किसी न किसी सदस्य की शारीरिक परेशानी बनी ही रहेगी, तँगदस्ती से दो चार होना पड़ेगा, खर्च की अधिकता रहेगी, प्रायः खर्च व्यर्थ ही होगा, आप नौकरी करते हैं या कारोबार रात दिन काम में लगे रहने पर भी इच्छानुसार फल मिलेगा नहीं, विद्यार्थी होने पर यह महीना आपने अशान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा।

जुलाई : पहले भाव में बुध-दूसरा सूर्य-चौथा भौम-सातवाँ बृहस्पति ग्यारवाँ शनि-बारवाँ शुक्र और केतु तथा छट्टे भाव में राहु इस मास की ग्रहस्थिति सामूहिक रूप से अशुभ है जिस के प्रभाव से आप ने यह मास संघर्ष दौडधूप तथा अशान्त माहौल में ही गुज़ारना होगा, कोई भी काम बिना रुकावट के सिद्ध नहीं होगा, आप कारेबार करते हैं या व्यापार हर एक काम आप के लिये अशान्ति का कारण बनेगा। विद्यार्थियों के लिये भी विद्या सम्बन्धित हर काम में रुकावट का ही महीना है।

अगस्त : तीसरा बुध सूर्य और शुक्र-पाँचवाँ चन्द्रमा भौम-छटे भाव का राहु-सातवाँ बृहस्पति-वेध

अष्टकवर्ग आदि ज्योतिष सिद्धान्तों के आधार से ग्रहस्थिति को परख कर मालूम होता है कि सामूहिक रूप से यह मास आपके लिये लाभदायक ही रहेगा, अगर आप कारोबार करते हैं तो कारोबार सम्बन्धित हर काम में सफलता मिलेगी, अगर आप नौकरी करते हैं तथा तरक्की का सिलसिला चल रहा है तो इस महीने में तरक्की मिलने की सम्भावना है अगर नहीं भी मिले तो भी तरक्की मिलने की आशा दृढ हो जायेगी, विद्यार्थियों को पठन पाठन में रुचि रहेगी, विद्या सम्बन्धित हर काम में आशा से अधिक सफलता होगी।

सितम्बर : चौथे भाव का सूर्य और शुक्र-पाँचवाँ बुध-छटे भाव का भौम और राहु-सातवाँ चन्द्रमा तथा बृहस्पति, दसवाँ शनि और बारवाँ केतु– वेध अष्टकवर्ग आदि गोचर सिद्धान्तों के आधार से ग्रहों की स्थिति सुधरी हुई है जिस के प्रभाव से यह महीना आप ने हर पहलू से शान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा। आप अगर कारोबार करते हैं तो आप का काम बिना किसी उलझन के सफल होगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी।

अक्टूबर : पाँचवाँ सूर्य बुध-छटे भाव का भौम शुक्र और राहु-सातवाँ बृहस्पति-आठवाँ चन्द्रमा और दसवाँ शनि तथा बारवाँ केतु होने से यह महीना अशान्ति का ही होगा, गृहस्थी होने पर घर की नई-नई परेशानियाँ दिनों दिन पैदा होंगी, अगर आप नौकरी करते हैं तो दफतर में किसी सम्बन्धित अफसर से अनबन होगी, यदि आप कारोबार करते हैं तो यह मास यद्यपि देखने में लाभदायक रहेगा परन्तु हानि की भी सम्भावना है, विद्यार्थियों के लिये भी ग्रह अनुकूल नहीं हैं, विद्या सम्बन्धित हर

काम में असफलता के लिये तैयार रहें।

नवम्बर : छटे भाव में सूर्य बुध और राहु-सातवाँ भौम बृहस्पति और शुक्र-दसवाँ चन्द्रमा तथा शनि-बारवाँ केतु- वेध अष्टकवर्ग आदि के आधार से विचार करने पर मालूम होता है कि चार ग्रह अनुकूल हैं और पाँच ग्रह प्रतिकूल हैं इस मिले जुले योग के आधार से यह महीना रंग बदलता रहेगा, कभी आप को मानसिक अशान्ति और कभी शान्ति, कारोबार की स्थिति भी ऐसी ही रहेगी कि कभी आप का काम सन्तोषजनक रूप में चलेगा और कभी ढीला पड़ेगा, अगर आप नौकरी करते हैं तो यह मास आपने अशान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, विद्यार्थियों को पठन पाठन की ओर कम दिलचस्पी रहेगी।

दिसम्बर : छटे भाव का राहु-सातवाँ सूर्य बुध और बृहस्पति-आठवाँ भौम तथा शुक्र-दसवाँ शनि-ग्यारवाँ चन्द्रमा और बारवाँ केतु- इस मास की ग्रहस्थिति भी आपके पक्ष में नहीं है, शारीरिक कष्ट अथवा चोट लगने की सम्भावना है-उपाय के रूप में इस मास की हर मंगलवार को तहर बनाकर पक्षियों को डालें पर तहर में नमक न डालें अपितु मीठा डालें, अगर आप कारोबार करते हैं तो इस मास में आप का कारोबार ढाँवाँढोल स्थिति में चलेगा, नौकरी पेशा होने पर अचानक कोई आरोप लगने की सम्भावना है, सावधान रहिये। विद्यार्थियों के लिये ग्रह अनुकूल है आप का विद्या सम्बन्धित हर एक काम सफल रहेगा।

जनवरी : पहले भाव का चन्द्रमा-पाँचवाँ राहु-आठवाँ सूर्य बुध और बृहस्पति-नवें भाव का भौम

और शुक्र-दसवाँ शनि तथा ग्यारवाँ केतु- वेध अष्टकवर्ग के आधार से ग्रहों को परख कर यही मालूम होता है यह महीना सुख व शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, आप कारोबार करते हैं या नौकरी पेशा हैं दोनों सूरतों में आप इस मास में लाभ में ही रहेंगें। विद्यार्थियों के लिये भी यह मास विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का है।

फरवरी : दसूरा चन्द्रमा-पाँचवाँ राहु-आठवाँ बृहस्पति-नवें भाव का सूर्य भौम और बुध-दसवाँ शुक्र और शनि तथा ग्यारवाँ केतु- इस मास में अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी है जिस के प्रभाव से जो कोई काम हाथ में होगा संघर्ष के बाद ही उस में सिद्धि होगी, अगर आप कारोबार करते हैं तो रात दिन काम में लगे रहने पर भी परिश्रम के अनुसार लाभ की आशा न रखें, नौकरी पेशा होने पर काम की अधिकता से आप को काम में जुटा रहना पड़ेगा, विद्यार्थियों को पठन पाठन में दिलचस्पी बनी रहेगी, विद्या सम्बन्धित प्राय: हर काम में सफलता मिलेगी।

मार्च : तीसरा चन्द्रमा-दसवाँ राहु-आठवाँ बृहस्पति-नवाँ बुध दसवाँ सूर्य और भौम-ग्यारवाँ शनि तथा केतु-बारवाँ शुक्र- इस ग्रहस्थिति पर विचार करने से मालूम पड़ता है कि यह मास हर पहलू से लाभदायक रहेगा, यदि आप कारोबार करते हैं तो लाभ के साथ साथ आप के कारोबार को इस मास में बढ़ावा भी मिलेगा यह भी सम्भव है कि आप कोई कारोबार सम्बन्धित नई योजना भी बनायेंगे, जो योजना आप के लिये लाभदायक रहेगी, नौकरी पेशा होने पर दरबार सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है।

मिथुन राशि का वर्षफल

वर्ष के आरम्भ पर गोचर चक्र में बृहस्पति तथा भौम की स्थिति अच्छी न होने पर भी शेष ग्रहों की स्थिति अच्छी है। इस मिले जुले योग के प्रभाव से यद्यपि यह वर्ष संघर्ष का ही होगा परन्तु प्रयत्न करने पर हर काम का परिणाम आपके पक्ष में होगा, यदि आप व्यापार करते हैं तो इस वर्ष आप के काम को अवश्य करके विशालता मिलेगी, कारोबार की कोई नई योजना बनेगी जिस में आप सफल रहेंगें, नौकरी पेशा होने पर अगर आप का कोई तरक्की का सिलसिला चल रहा है तो उस में अवश्य सफलता मिलेगी। गृहस्थी होने पर इस वर्ष घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा जो प्रोग्राम शान व मान से सम्पूर्ण होगा। विद्यार्थियों के लिये यह वर्ष परेशानी का ही होगा, जबकि पाँचवें भाव में राहु के होने से विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित कामों में इच्छानुसार सफलता नहीं होगी।

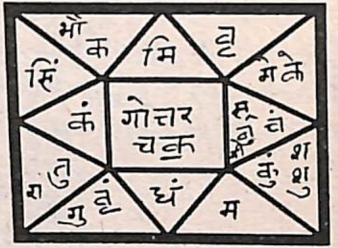

उपाय : अगर आप इस वर्ष के क्रूर ग्रहों को शान्त बनाना चाहते हैं तो नियम से भगवान् शङ्कर

पर जल चढाया करें, आप के आठवें भाव को भौम देख रहा है जिस क्रूर योग के प्रभाव से आप के शरीर में अचानक चोट लगने की सम्भावना है। इस कष्ट से बचने का एक मात्र उपाय है, अगर आप किसी नशीली वस्तु का सेवन करते हो यहाँ तक कि अगर आप सिगरेट का प्रयोग ही करते हो आज से ही छोड़ दीजिये न छोड़ने पर बाद मे पछताना पड़ेगा।

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रेल : दसवाँ भौम-पाँचवाँ राहु-छटा बृहस्पति-नवें भाव का शुक्र-दसवाँ सूर्य चन्द्रमा और बुध-ग्यारवाँ केतु- इस मास की ग्रहस्थिति के प्रभाव से यह मास आप ने शान्त माहौल में ही गुज़ारना होगा, नौकरी पेशा मिथुन राशि वालों के लिये लाभ के साथ साथ यह मास मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि करने वाला होगा, यद्यपि व्यापारी वर्ग को अधिक कार्य करना भी होगा लेकिन कारोबार सम्बन्धित जो कोई काम हाथ में लेंगें उस में भी सफलता होगी, कारोबार में लाभ के साथ साथ आप के कारोबार में वृद्धि भी होगी अथवा कोई नया काम आरम्भ करने का प्रोग्राम बनेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये ग्रह अनुकूल हैं अतः इस मास से विशेष लाभ उठायें।

मई : दूसरा भौम-पाँचवाँ राहु-छटा बृहस्पति-नवाँ शनि-दसवाँ शुक्र-ग्यारवाँ सूर्य और केतु-बारवाँ चन्द्रमा और बुध- इस मास के आरम्भ पर क्रूर ग्रहों का पलड़ा शुभ ग्रहों की अपेक्षा भारी है अतः

यह बात निश्चित है कि प्रत्येक काम का परिणाम शुभ तथा अशुभ ग्रहों के अनुसार ही होगा, अगर आप कारोबार करते हैं परिश्रम करने पर आप को सन्तोषजनक लाभ मिलेगा नहीं, नौकरी पेशा होने पर कोई भी काम बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा, विद्यार्थियों को पठन पाठन में दिलचस्पी कम रहने पर भी प्राय: विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता ही होगी।

जून : पहले भाव का चन्द्रमा-तीसरा भौम-पाँचवाँ राहु छटे भाव का बृहस्पति-दसवाँ शनि-ग्यारवाँ शुक्र और केतु बारवाँ सूर्य और बुध होने से आप ने यह महीना हर पहलू से सुख व शान्ति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा, अगर आप गृहस्थी हैं घर की बहुत समय से लटकती हुई समस्या इस मास में अवश्य हल होगी, यदि इस मास में हल नहीं होगी परन्तु सफलता की आशा सुदृढ हो जायेगी, आप कारोबार करते हैं या व्यापार दोनों सूरतों में यह मास आपके लिये लाभ का है, विद्यार्थी होने पर आप को इस महीने में यदि कोई परीक्षा या इन्टरव्यु देना हो अथवा पढ़ाई सम्बन्धित कोई प्रोग्राम बनाना हो अथवा फार्म आदि भरना हो तो इस महीने में अवश्य भरें उस काम का परिणाम आपके पक्ष में होगा।

जुलाई : पहले भाव का सूर्य शुक्र-दूसरा चन्द्रमा-तीसरा भैम-पाँचवाँ राहु-छटा बृहस्पति-दसवाँ शनि-ग्यारवाँ केतु-बारवाँ बुध- सूर्य और बृहस्पति गोचर से अशुभ होने पर भी वेध में होने से यह दोनों ग्रह इस मास में विशेषतया आप के लिये शुभ फलदायक होंगें, आप अगर गृहस्थी हैं, लड़के अथवा लड़की के विवाह से सम्बन्धित कोई समस्या है अथवा पढाई से सम्बन्धित कोई चिन्ता है

Regd.)
180002

तो ऐसी समस्या का समाधान इस मास में अवश्य निकल आयेगा, यदि इस में हल नहीं भी होगी परन्तु तो भी हल होने की आशा मज़बूत हो जायेगी। यदि आप कारोबार करते हैं तो आप का कारोबार यथावत् चलता रहेगा और आशा से अधिक लाभ मिलेगा, नौकरी पेशा होने पर यह मास आपने शान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का महीना है।

अगस्त : दूसरा सूर्य बुध और शुक्र-चौथे भाव का चन्द्रमा और भौम-पाँचवाँ राहु-छटा बृहस्पति-दसवें भाव का शनि तथा ग्यारवाँ केतु- चौथे भाव का चन्द्रमा आपके मातृपक्ष पर प्रभावित रहेगा, अगर सौभाग्य से आप की माता अभी जीवित हैं तो उनका ध्यान रखें अचानक उनका शरीर बिगडने की आशंका है शेष कारोबार की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा, नौकरी पेशा होने पर प्रायः मानसिक अशान्ति बनी रहेगी जबकि दफतर का माहौल आप के पक्ष में नहीं होगा, विद्यार्थियों के लिये भी यह महीना अशान्ति का ही महीना है।

सितम्बर : तीसरा सूर्य और शुक्र-चौथे भाव का बुध-पाँचवाँ राहु और भौम-छटा चन्द्रमा और बृहस्पति-नवें भाव का शनि और ग्यारवाँ केतु- इस मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलडा भारी है जिस के फलस्वरूप आप ने यह महीना सुख व शान्ति के वातावरण में गुज़ारना होगा, अगर आप व्यापारी हैं तो आप के कारोबार की दशा में वृद्धि रहेगी, नौकरी पेशा होने पर नौकरी में अचानक तरक्की अथवा लाभ का योग है, गृहस्थी होने पर घर में काई शुभ महोत्सव रचाने का योग है, शरीर

अकस्मात बिगडने की आशंका है, उपाय के रूप में आप इस महीने वैष्णव रहें, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का महीना है।

अक्टूबर : चौथा सूर्य बुध-पाँचवाँ भौम शुक्र और राहु छटे भाव का बृहस्पति-सातवाँ चन्द्रमा-नवाँ शनि और ग्यारवाँ केतु- गोचर में बृहस्पति और शनि को महत्वपूर्ण स्थान है परन्तु इस मास में ये दोनों ग्रह अशुभ स्थिति में होने से यह मास दौडधूप तथा परेशानी के माहौल में ही गुजरेगा, शरीर भी ढाँवाँढोल स्थिति में रहेगा, आप कारोबार करते हैं या नौकरी दोनों सूरतों में इस मास में दौडधूप अधिक करनी होगी परन्तु सन्तोषजनक लाभ नहीं मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये भी यह मास अशान्ति का ही है, विद्या सम्बन्धित किसी भी काम में मनोवांछित सफलता नहीं मिलेगी।

नवम्बर : पाँचवाँ सूर्य बुध और राहु-छटे भाव का भौम बृहस्पति तथा शुक्र-नवाँ चन्द्रमा और शनि तथा ग्यारवाँ केतु होने से जो कोई भी काम आप हाथ में लेंगें वह सम्पूर्ण नहीं होगा, यदि आप कारोबार करते हैं तो बहुत परिश्रम करने पर भी लाभ नहीं होगा अपितु हानि होने की ही सम्भावना है, यदि आप नौकरी करते हैं तो आप ने रात दिन काम में जुटे रहना होगा परन्तु किसी भी काम का परिणाम सन्तोषजनक नहीं होगा, खर्च की लम्बी-लम्बी योजनायें बनेंगी, आर्थिक स्थिति में कोई वृद्धि नहीं होगी अपितु आमदनी में कमी ही होगी, विद्यार्थियों को परिश्रम करने पर भी इच्छानुसार सफलता मिलेगी नहीं।

दिसम्बर : पाँचवाँ राहु-छटे भाव का सूर्य बुध और बृहस्पति-सातवाँ भौम और शुक्र-नवाँ शनि-दसवाँ चन्द्रमा और ग्यारवाँ केतु- मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी है जिस के प्रभाव से आप जिस किसी कारोबारी लाईन से सम्बन्धित हैं काम में दिलचस्पी लीजिए आप को हर काम में सफ़लता मिलेगी, यदि आप नौकरी करते हैं जो कोई भी काम आप हाथ में लेंगें उस में लाभ तथा सफलता होगी, भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, यद्यपि आर्थिक दशा के लिये यह मास उत्तम है परन्तु खर्च की भी लम्बी-2 योजनायें बनती रहेंगी, विद्यार्थियों को यद्यपि पठन पाठन में दिलचस्पी कम रहेगी भी परन्तु विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी।

जनवरी : चौथे भाव का राहु-सातवाँ सूर्य बुध और बृहस्पति-आठवाँ भौम तथा शुक्र-नवाँ शनि-दसवाँ केतु-बारवाँ चन्द्रमा- इस ग्रहस्थिति के अनुसार आप ने यह मास अशान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, इस मास में कोई नया काम आरम्भ करने का प्रोग्राम न बनायें बल्कि हाथ में आये हुये काम को ही संभाल कर रखने का प्रयत्न करें यह भी सम्भव है कि आप को कारोबार में अचानक हानि होगी, नौकरी पेशा होने पर दफतर में अचानक आपके विरुद्ध कोई आरोप लगाया जायेगा जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा, उपाय के रूप में आप इस मास की हर सोमवार को भगवान् शङ्कर पर जल चढाया करें, जल चढाते समय बार बार उच्चारण किया करें- **"चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि मां, चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।"** विद्यार्थियों के लिये विद्या

सम्बन्धित हर काम में सफलता का महीना है।

फरवरी : पहले भाव का चन्द्रमा-चौथा राहु-सातवाँ बृहस्पति आठवाँ सूर्य भौम और बुध-नवाँ शुक्र और शनि तथा दसवाँ केतु- वेध अष्टकवर्ग के सिद्धान्तों से ग्रहों को परख कर मालूम पड़ता है कि पिछले महीनों की अपेक्षा यह महीना हर पहलू से उत्तम रहेगा, आप कारोबार करते हैं या नौकरी दोनों सूरतों में आप ने लाभ में ही रहना पड़ेगा, विद्यार्थी वर्ग को पठन पाठन में अधिक दिलचस्पी रहेगी, आप ने परीक्षा दी हो या देनी हो आशा से अधिक सफलता मिलेगी। यदि आप किसी ट्रेनिंग आदि के लिये दौडधूप कर रहे हैं तो ऐसे काम के लिये यह मास सफलता का है।

मार्च : दूसरा चन्द्रमा-चौथा राहु-सातवाँ बृहस्पति-आठवाँ बुध, नवाँ सूर्य और भौम-दसवाँ शनि तथा केतु ग्यारवाँ शुक्र इस ग्रहस्थिति के प्रभाव से यद्यपि यह महीना संघर्ष तथा दौडधूप में ही गुजरेगा परन्तु अन्त में हर काम में सफलता ही होगी, आप अगर कोई कारोबार करते हैं तो आप काम में दिलचस्पी लीजिये आप के काम को वृद्धि मिलेगी अथवा कोई नया काम आरम्भ करने का प्रोग्राम बनेगा, नौकरी पेशा होने पर अचानक तरक्की अथवा कोई लाभ मिलने का योग है, विद्यार्थी होने पर यदि आप परीक्षा में सफल होने के लिए दौडधूप कर रहे हैं तो इस मास में ऐसे काम मे सफलता मिलेगी, दैवयोग से अगर कुछ रुकावट पड़े तो शीघ्र ही सफलता मिलने की आशा रखें।

कर्क राशि का वर्षफल

वर्ष के आरम्भ पर ग्रहों की ढाँवाँढोल स्थिति को देखते हुये गोचरफलित शास्त्र के अनुसार यही मालूम होता है कि इस वर्ष आपकी शारीरिक तथा आर्थिक स्थिति बनती बिगड़ती रहेगी, अगर आप पहले से ही शरीर से अस्वस्थ हैं तो आप को शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये यदि दैवयोग से आप शरीर से स्वस्थ रहेंगे भी तो भी घर के किसी न किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी बनी रहेगी–उपाय के रूप में बार बार उच्चारण किया करें– **"महादेव! महादेव महादेवेति कीर्तनात् वत्सं गौरिव गौरीश धावन्तमभिधावति"** नौकरी पेशा होने पर आप को अकस्मात्

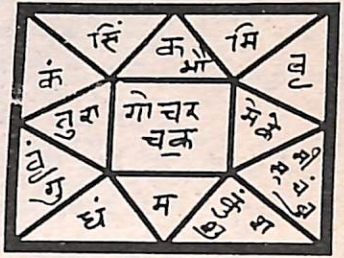

दफतर की परेशानी आ घेरेगी जो लगभग पहले छः महीनों में जोर पकडेगी–उपाय के रूप में हर सोमवार को दफतर जाने से पहले कुत्तों को रोटियाँ डाला करें, कारोबारी पेशा होने पर वर्ष के पहले छः मास दौडधूप के रहेंगें परन्तु लाभ कुछ रहेगा नहीं बल्कि हानि की ही सम्भावना है दूसरे छः

महीने यद्यपि लाभदायक न भी रहेंगें परन्तु हानि की भी कोई सम्भावना नहीं है, सम्भव है इस वर्ष घर में कोई महोत्सव रचाने अथवा कोई जाईदाद खरीदने का प्रोग्राम बनेगा अगर पहले छः महीनों में प्रोग्राम बनेगा तो वह प्रोग्राम सम्पूर्ण होगा ही नहीं तथा दूसरे छः महीनों में आरम्भ किया हुआ कारोबार सम्बन्धित काम प्रयत्न करने पर आप के लिये लाभदायक ही रहेगा, यदि आप विद्यार्थी हैं तो विद्या सम्बन्धित हर काम के लिये सफलता का महीना है।

कर्क राशि का मासिक फल

अप्रेल : पहले भाव का भौम-चौथा राहु-पाँचवाँ बृहस्पति, आठवाँ शनि और शुक्र-नवाँ सूर्य चन्द्रमा तथा बुध-दसवाँ केतु- इस ग्रहस्थिति के आधार से यह महीना संघर्ष तथा दौडधूप में ही गुज़रेगा, शरीर की दशा भी इस महीने में ढाँवाँढोल रहेगी, गृहस्थी होने पर घर में परेशानी की नई नई समस्यायें खडी होंगी, यदि आप व्यापारी हैं तो आप का काम यथावत् चलता रहेगा, यद्यपि यह महीना कोई लाभ का महीना नहीं है परन्तु किसी प्रकार की हानि भी नहीं होगी।

मई : पहले भाव का भौम-चौथा राहु-पाँचवाँ बृहस्पति तथा आठवाँ शनि-नवाँ शुक्र-दसवाँ सूर्य और केतु-ग्यारवाँ चन्द्रमा तथा बुध- इस ग्रहस्थिति को दृष्टि में रख कर ज्योतिषफलित के आधार से विदित

होता है कि यह मास सुख व शान्ति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा, आप का शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा अगर घर में भी कोई शरीर सम्बन्धित परेशानी है वह भी बहुत हद तक दूर हो जायेगी, घर में अतिथियों का आवागमन जोरों पर रहेगा अथवा घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, व्यापारी होने पर आप का काम बिना किसी अडचन के यथाक्रम चलता रहेगा, विद्यार्थियों को आशा से अधिक सफलता मिलेगी तथा पठन पाठन में दिलचस्पी बनी रहेगी।

जून : दूसरे भाव में भौम-चौथा राहु-पाँचवाँ बृहस्पति, नवाँ शनि दसवाँ शुक्र और केतु-ग्यारवाँ सूर्य और बुध तथा बारवाँ चन्द्रमा शुभ अशुभ ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि यह महीना एक ही रंग में गुज़रेगा नहीं शरीर कभी बिल्कुल स्वस्थ रहेगा और कभी अस्वस्थ, ऐसे ही अगर आप कारोबार करते हैं तो कभी अधिक लाभ मिलेगा और कभी हाथ पर हाथ धरकर बैठना होगा, घर में कोई जाईदाद खरीदने की योजना बनेगी, नौकरी पेशा होने पर यह महीना आप के लिये विशेष लाभदायक रहेगा, विद्यार्थियों के लिये विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का महीना है।

जुलाई : पहले भाव का चन्द्रमा-दूसरा भौम तथा चौथा राहु-पाँचवाँ बृहस्पति-नवें भाव का शनि-दसवाँ केतु ग्यारवाँ बुध तथा बारवाँ सूर्य और शुक्र होने से इस मास के आरम्भ पर चार शुभ ग्रह आपके अनुकूल हैं शेष पाँच ग्रह आप के प्रतिकूल हैं, वेध अष्टकवर्ग आदि को ध्यान में रखकर यही विदित होता है कि यह महीना आपने शान्त वातारण में ही गुज़ारना होगा - आर्थिक लाभ यदि होगा भी

नहीं परन्तु हानि की भी सम्भावना नहीं है, यदि आप नौकरी करते हैं तो आपको अचानक कुछ लाभ मिलेगा अथवा तर्की मिलेगी, विद्यार्थियों के लिये भी तर्की का महीना है।

अगस्त : पहले भाव का सूर्य बुध और शुक्र-तीसरा चन्द्रमा और भौम-चौथा राहु-पाँचवाँ बृहस्पति-नवाँ शनि और दसवाँ केतु : मास के आरम्भ पर शुक्र चन्द्रमा तथा भौम सुख तथा लाभ के सचूक हैं, यदि आप गृहस्थी हैं और अगर घर में किसी लड़की अथवा लड़के के विवाह की दौड़धूप चल रही है तो इस मास में ऐसी समस्या हल होगी, कारोबार की दृष्टि से भी यह मास उत्तम है, यदि आप नौकरी करते हैं तो यह महीना आपने शान व मान तथा लाभ के साथ गुज़ारना होगा, यदि आपको दफतर सम्बन्धित कोई चिन्ता है वह भी दूर हो जायेगी। विद्यार्थियों को इस महीने से लाभ उठाना चाहिये। पढ़ाई का क्षणमात्र भी व्यर्थ न गंवायें, अगर पढ़ाई सम्बन्धित कोई नया प्रोग्राम है तो इस मास में उसका श्रीगणेश अवश्य कीजिये ऐसा करना आपके लिये लाभदायक रहेगा।

सितम्बर : दूसरा सूर्य और शुक्र-तीसरा बुध-चौथा राहु और भौम पाँचवाँ चन्द्रमा और बृहस्पति आठवाँ शनि और दसवाँ केतु इस ग्रहस्थिति के आधार से यह महीना संघर्ष तथा दौड़धूप के वातारण में ही गुज़रेगा, आपकी शरीर की दशा भी बनती बिगड़ती रहेगी, नौकरी पेशा होने पर दफतर का माहौल आप के प्रतिकूल होने पर भी किसी प्रकार का भय नहीं होगा अथवा किसी प्रकार की हानि नहीं होगी, व्यापारी होने पर आप का काम यथावत चलता रहेगा।

अक्टूबर : तीसरा बुध और सूर्य-चौथा भौम शुक्र और राहु पाँचवाँ बृहस्पति-छटे भाव का चन्द्रमा-आठवाँ शनि और दसवाँ केतु-इस मास की ग्रह स्थिति के आधार से आप का शरीर स्वस्थ रहेगा अगर घर में किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित कोई परेशानी है तो किसी योग्य डॉक्टर से इलाज करवाने पर वह परेशानी अवश्य दूर हो जायेगी। नौकरीपेशा कर्कट राशिवालों को यह मास अशान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, कारोबारी वर्ग के लिये लाभ का महीना है, कारोबार को बढ़ावा देने की कोई योजना बनेगी जिस पर धन खर्च करना पड़ेगा, विद्यार्थियों मे पठनपाठन की रुचि कम होगी यदि कोई पारीक्षा देनी हो या दी हो अवश्य सफलता मिलेगी।

नवम्बर : चौथे भाव का सूर्य बुध और राहु-पाँचवाँ भौम बृहस्पति और शुक्र-आठवाँ चन्द्रमा और शनि तथा दसवें भाव का केतु : इस ग्रह स्थिति पर विचार करने से मालूम होता है कि यह महीना आपने संघर्ष तथा दौड़धूप में ही गुज़ारना होगा। शरीर की स्थिति ढाँवाढोल रहेगी कभी शरीर स्वस्थ रहेगा और कभी अस्वस्थ, घरेलू परेशानियाँ भी मास भर आपको घेरे रखेंगी, आप कारोबारी हों या नौकरी पेशा दोनों सूरतों में आप के लिये यह मास अशान्ति का ही है, उपाय के रूप में इस मास की हर सोमवार को भगवान् शंकर पर जल चढ़ाया करें और लगातार निम्नलिखित मन्त्र का बार बार उच्चारण कीजिये

महादेव! महादेव! महादेवेति कीर्तनात् - वत्सं गौरिव
गौरीश धावन्तं अभिधावति

दिसम्बर : चौथे भाव का राहु-पाँचवाँ सूर्य बृहस्पति बुध-छटे भाव का भौम शुक्र-आठवाँ शनि-नवाँ चन्द्रमा और दसवाँ केतु। वेध अष्टकवर्ग आदि सिद्धान्तों के आधार से पाँचवाँ सूर्य नवाँ चन्द्रमा अशुभ होते हुये भी शुभ हैं, ऐसे ही शुभ अशुभ ग्रहों के मिले जुले योग के आधार से यह मास शान्त वातावरण में ही गुज़रेगा, प्रायः हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता होगी केवल शरीर अकस्मात् बिगड़ने की सम्भावना है आप को निम्नलिखित यह मन्त्र शरीर के लिये अथवा किसी दुर्घटना से बचाये रखने में सहायक रहेगा इस मन्त्र का बार-बार उच्चारण किया करें -

मन्त्र - "त्वं ओंकारोऽसि वेदानां देवानाञ्च सदा शिवः
आधारशक्ति शक्तिनां मृत्युञ्जय नमोस्तुते"

आप कारोबार करते हैं या नौकरी तो आपका काम यथावत् चलता रहेगा, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का महीना है।

जनवरी : तीसरे भाव का राहु-छटे भाव का सूर्य बुध तथा बृहस्पति, सातवाँ भौम और शुक्र, आठवाँ शनि, नवें भाव का केतु तथा ग्यारवाँ चन्द्रमा। इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति वेध अष्टकवर्ग सिद्धान्तों के आधार से सुधरी हुई है, इस शुभ योग के आधार से यह मास आप के लिये नये वर्ष का शुभ संदेश लेकर आया है, आप कारोबार करते हैं या नौकरी पेशा हैं दोनों सूरतों में आप का हाथ में लिया हुआ हर एक काम सफल रहेगा, अगर आप गृहस्थी हैं तो घर में कोई शुभ काम रचाने

का प्रोग्राम बनेगा यह भी सम्भव है आप ने कोई जाईदाद खरीदना अथवा बनाना होगा घर में यदि कोई काम अथवा समस्या विचाराधीन है उस का भी समाधान निकल आयेगा। विद्यार्थियों के लिये भी विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का ही मास है।

फरवरी : तीसरे भाव का राहु-छटा बृहस्पति-सातवाँ सूर्य भौम और बुध-आठवाँ शुक्र और शनि-नवें भाव का केतु तथा बारवाँ चन्द्रमा। इस मास के हर अशुभ ग्रह को वेध और अष्टकवर्ग ने सम्भाला है जिसके प्रभाव से यह महीना आपने शान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, आप का शरीर स्वस्थ रहेगा, घर में शरीर सम्बन्धित परेशानी अगर होगी उस का भी समाधान होगा, ग्रहस्थी होने पर अगर घर में लड़के अथवा लड़की की विवाह सम्बन्धित कोई परेशानी है वह भी हल होगी, आप जिस किसी भी पेशा से सम्बन्धित हैं तो आप का कारोबार तथा कामकाज़ सफलता से आगे बड़ेगा, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का महीना है।

मार्च : पहले भाव का चन्द्रमा तीसरा राहु-छटा बृहस्पति और सातवाँ बुध-आठवाँ सूर्य भौम-नवाँ शनि और केतु तथा दसवाँ शुक्र। बृहस्पति और शनि भी वेधाष्टकवर्ग के आधार से अच्छी स्थिति में हैं इस मिले जुले योग के आधार से इस मास में विशेषतया शरीर के विषय में सावधान रहिये शेष हर पहलू से यह महीना लाभदायक तथा सफलता का है, आप कारोबार करते हैं या नौकरी दोनों सूरतों में आप ने सफल रहना है, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का महीना है।

सिंह राशि का वर्षफल

गोचर चक्र में आठवां सूर्य चन्द्र, बारवां भौम सातवां शनि चोथ बृहस्पति यह सभी ग्रह अच्छी स्थिति में नहीं हैं इस क्रूर योग के प्रभाव से इस वर्ष आप के शरीर की दशा ढांवाढोल रहेगी अचानक चोट लगने का भी अन्देशा अथवा अचानक शरीर में किसी प्रकार की कांट छांट करवानी पड़ेगी, गृहस्थी होने पर आप गृहस्थ की ओर से भी अशांत रहेंगे उपाय के रूप में आप को इस वर्ष वैष्णव रहना चाहिये यदि आप को कोई नशा शराब इत्यादि की बुरी आदत है इस वर्ष कभी प्रयोग में न लाये यदि आप मेरी यह चेतावनी मिलने पर भी अमल न करोगे तो आप ने बाद में पछताना होगा, निम्नलिखित मन्त्र का बार बार उच्चारण करें :–

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि-वर्धनम्
उर्वा-रुकम्-इव बन्धनात्-मृत्यो-मुंक्षीय मामृतात्।।

आमदनी में कोई रुकावट नहीं होगी अपितु खर्च के लम्बे-2 प्रोग्राम बनते रहेंगे यदि आप व्यापारी हैं इस वर्ष पुराने कारोबार को ही सम्भाले रखने में अपनी सफलता मानिये, विद्यार्थियों के लिये भी यह वर्ष अधिक संघर्ष का होगा परन्तु सामूहिक रूप से विद्या सम्बन्धित हर काम में आप की सफलता यकीनी है।

सिंह राशि का मासिक फल

अप्रेल:- तीसरे भाव का राहु, चौथा बृहस्पति, सातवां शनि शुक्र आठवां सूर्य चन्द्रमा बुध, नवां केतु, बारवां भौम, इस ग्रह चाल को देखते हुये तथा ऐसे ही अष्टकवर्ग इत्यादि सिद्धान्तों के आधार से विदित होता है यह महीना आप ने सुख शान्ति के माहौल में ही गुजारना होगा केवल शरीर के विषय में सावधान रहना जरूरी है। चोट लगने का योग उपाय के रूप में जब भी मौका मिले उच्चारण किया करें। 'चन्द्र **शेखर-चन्द्रशेखर-चन्द्रशेखर पाहिमां**

चन्द्र शेखर-चन्द्रशेखर-चन्द्रशेखर रक्ष मां।।

विद्यार्थियों के लिये यह महीना सफलता का महीना है, आमदनी की दृष्टि से भी सफलता का महीना है।

मईः- तीसरा राहु, चौथ बृहस्पति, सातवां शनि, आठवां शुक्र, नवां सूर्य केतु, दसवां बुध चन्द्रमा, बारवां भौम इस मास में खसूसी तौर से भौम आपके लिये अनिष्ट ग्रह है इस ग्रह के प्रभाव से आपको घरेलू चिन्ता बनी रहेगी यदि आप नौकरी करते हैं यदि नौकरी सम्बन्धित कोई परेशानी होगी वह अवश्य दूर होगी। अपितु आपको नौकरी सम्बन्धित कोई शुभ सन्देश मिलने वाला है व्यापारी वर्ग के लिये यह महीना आशा से अधिक लाभ का रहेगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में अवश्य सफलता होगी।

जूनः- पहले भाव का भौम, तीसरा राहु, चौथा बृहस्पति, आठवां शनि, नवां शुक्र केतु, दसवां सूर्य, बुध, ग्यारवां चन्द्रमा होने से इस माह को अपने लिये शुभ मानिये, यदि आप नौकरी पेशा हैं तो आपके नौकरी सम्बन्धित काम हरकत में आयेंगे, अचानक नौकरी सम्बन्धित कोई शुभ सन्देश मिलने का योग है व्यापारी वर्ग के लिये भी ग्रह अनुकूल हैं केवल जरुरत है आप काम में लगे रहिये आपको आशा से अधिक लाभ मिलेगा। गृहस्थी होने पर आपको इस मास में खर्च का प्रबल योग है परन्तु आमदनी में भी खर्च के अनुसार वृद्धि होगी, घर में यदि कोई शरीर सम्बन्धित परेशानी है वह भी दूर होगी विद्यार्थियों को इस मास के ग्रह अनुकूल हैं विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का महीना है।

जुलाईः- इस महिने के आरम्भ पर पहले घर का मंगल, तीसरा राहु, चौथा बृहस्पति, आठवां शनि,

नवां केतु, दसवां बुध, ग्यारवां सूर्य और शुक्र, बारवां चन्द्रमा और शनि इस मिले जुले शुभाशुभ योग के अनुसार यह महीना आपने दौड़धूप तथा संघर्ष में ही गुज़ारना है लेकिन हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता होगी नौकरी पेशा तथा व्यापारी बर्ग को भी इस महिने में अधिक दौड़धूप करनी होगी लेकिन मेहनत के अनुसार ही लाभ भी होगा घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा विद्यार्थी वर्ग को इस महिने से लाभ उठाना चाहिये इस मास में की हुई पढ़ाई या की हुई मेहनत रंग लायेगी अर्थात यह महीना आप के लिये हर पहलू से शुभ है।

अगस्तः- पहला सूर्य शुक्र, दूसरा बुध तीसरा भौम, राहु चौथा बृहस्पति, चन्द्रमा सातवां शनि और केतु अष्टकवर्ग तथा गोचर सिद्धान्तों के अनुसार यह महीना शान मान से गुज़ारना होगा यद्यपि खर्च का योग अधिक है भी परन्तु लाभ अथवा आमदनी भी अच्छी होगी, नौकरी पेशा सिंह राशि वालों के लिये यह महीना सुख शान्ति का ही है। व्यापारी वर्ग को आशा से अधिक लाभ होगा। विद्यार्थियों के लिये इस माह के ग्रह अनुकूल नहीं है। मेहनत करने पर भी विद्या सम्बन्धित किसी काम में सफलता नहीं होगी।

सितम्बरः- पहला सूर्य, शुक्र, दूसरा बुध, तीसरा भौम, राहु चौथ बृहस्पति और चन्द्रमा, सातवां शनि, नवां केतु वेधाष्टक वर्ग के सिद्धान्तों से इस ग्रह चाल पर विचार करने से मालूम होता है यह महीना हर पहलू से शुभ होगा, घर मे कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा अथवा प्रोग्रामों में सम्मिलित

होने की मसरुफियत रहेगी, खर्च की लम्बी-लम्बी योजनाएं बनेगी, नौकरी पेशा तथा कारोबारी वर्ग के लिये भी यह महीना लाभ का होगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित कोई भी काम वह परीक्षा हो या इन्टरव्यू इत्यादि उसमें इच्छानुसार सफलता की आशा न रखें।

अक्टूबर:- दूसरा सूर्य बुध, तीसरा भौम शुक्र राहु चौथ बृहस्पति, पांचवा चन्द्रमा, सातवां शनि, नवां केतु इस ग्रहचाल पर विचार करने से मालूम होता है यह महीना आपको ढांवाढोल स्थिति में ही गुज़ारना होगा यदि आप गृहस्थी हैं गृहस्थ पक्ष से कोई न कोई चिन्ता लगी ही रहेगी, आपके नौकरी पेशा होने पर आपको इस मास में अचानक कुछ लाभ मिलेगा अथवा अचानक नौकरी सम्बन्धित कोई शुभ सन्देशा मिलेगा, यदि आप कारोबार करते हैं आपके कारोबार में दिनों दिन वृद्धि होगी, विद्यार्थियों के लिये भी विद्या सम्बन्धित हर काम में लाभ अथवा सफलता का होगा।

नवम्बर:- महीने के आरम्भ पर गोचर से आपको तीसरा सूर्य, बुध, राहु, चौथा भौम बृहस्पति शुक्र, सातवां चन्द्रमा और शनि, नवां केतु इस महीने की ग्रहचाल आपके हक में हैं आप नौकरी करते हैं या कारोबार इस महीने में जिस काम में आपका हाथ होगा सफलता अवश्य होगी, विद्यार्थियों के लिये भी कामयाबी का महीना।

दिसम्बर:- तीसरा राहु, चौथा सूर्य बुध बृहस्पति, पांचवां भौम शुक्र, सातवां शनि आठवां चन्द्रमा, नवां केतु यद्यपि इस माह के ग्रह आपके अनुकूल हैं भी परन्तु गृहस्थी होने पर घरेलू कोई परेशानी

महीनावर रहेगी, व्यापारी होने पर यह महीना आपको आशा से अधिक लाभ देने वाला होगा नौकरी पेशा होने पर अचानक लाभ अथवा तरक्की का योग, विद्यार्थियों को भी विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता।

जनवरी:- दूसरा राहु, पांचवां सूर्य बुध बृहस्पति, छठेभाव का भौम शुक्र सातवां शनि, आठवां केतु, दसवां चन्द्रमा वेधाष्टकवर्ग इत्यादि सिद्धान्तों के आधार से मालूम पड़ता है यह नये साल का पहला महीना आपके लिये शुभ सन्देश लेकर आया है आप नौकरी करते हैं या व्यापार आप दिल से काम में जुट जायें हर काम में आपकी सफलता अवश्य होगी विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

फरवरी:- दूसरा राहु, पांचवां बृहस्पति, छठे भाव का सूर्य भौम बुध सातवां शनि, शुक्र, आठवां केतु, ग्यारवां चन्द्रमा इस माह में शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी है। हर काम में जिसमें आपका हाथ होगा अवश्य सफलता होगी, गृहस्थी होने पर घर में कोई शुभ कार्य सम्पन्न होगा। भाई बन्धों रिश्तेदारों से मिलने जुलने की चर्चा रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिये विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का महीना।

मार्च:- दूसरा राहु, पांचवां बृहस्पति, छठः बुध, सातवां सूर्य भौम आठवां केतु शनि, नवां शुक्र, बारवां चन्द्रमा होने से यह महीना संघर्ष का होगा। रात दिन काम में जुटा रहना पड़ेगा। अन्त में प्रत्येक कार्य में आपकी सफलता होगी, विद्यार्थियों को मेहनत करने पर भी मनोवांछित सफलता नहीं होगी।

कन्या राशि का वर्ष फल

वर्ष के आरम्भ पर तीसरा बृहस्पति, सातवां सूर्य और बुध, तथा छठे शुक्र का होना गोचर से यह सभी ग्रह अनिष्ठ होने पर भी सूर्य और बुध बेध में होने से अशुभ फलदायक नहीं हैं, शेष शनि इत्यादि ग्रहों की स्थिति अच्छी है। इस मिले जुले शुभाशुभ योग के आधार से यह वर्ष संघर्ष तथा दौड धूप का वर्ष होने पर भी प्रायः हर काम में सफलता तथा लाभदायक ही होगा, घर में इस वर्ष कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, सातवें घर में सूर्य चन्द्रमा तथा बुध की युति होने से गृहस्थी होने पर भी स्त्री पक्ष से मानसिक अशान्ति रहेगी, पांचवें भाव पर भौम की पूर्ण

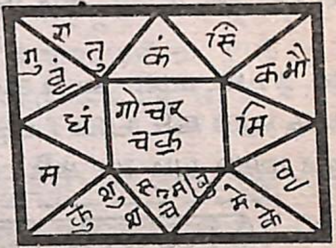

दृष्टि होने से सन्तान पक्ष से भी मानसिक अशान्ति रहेगी, इस परेशानी से बचने का उपाय है आप रोजाना भगवत् गीता के एक एक अध्याय का पाठ किया करें यदि आप संस्कृत का ज्ञान नहीं रखते हैं तो आप विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय से गीता के केसिट जिसका अनुवाद तथा व्याख्या कशमीरी जबान में हैं रोज़ प्रातः सुना करें, जबकि भगवान् कृष्ण ने भगवत्गीता के अठारवें अध्याय के श्लोक

में कहा है जो केवल भगवत्गीता के श्लोंकों को सुनता है वह सभी पापों तथा कष्टों से मुक्त हो जाता है।

कन्या राशि का मासिक फलादेश

अप्रेलः- दूसरे भाव का राहु, तीसरा बृहस्पति, छठे भाव का शुक्र और शनि सातवां सूर्य चन्द्रमा और बुध, आठंवा केतु, ग्यारहवां भौम, इस ग्रहचाल के आधार से यह महीना सुख शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, रुके हुये काम हरकत में आयेगें, आमदनी की दृष्टि से यह महीना उत्तम है, विद्यार्थियों के लिये विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का महीना।

मईः- दूसरा राहु, तीसरा बृहस्पति, छठे भाव का शनि, सातवां शुक्र, आठवां सूर्य और केतु नवां चन्द्रमा और बुध, ग्यारवां भौम बेधाष्टक वर्ग इत्यादि सिद्धान्तों के आधार की कसौटी पर ग्रहों को परखने से मालूम होता है कि यह महीना अधिक संघर्ष तथा दौड धूप में ही गुजरेगा, खर्च के बड़े-बड़े प्रोग्राम बनते रहेगें, गृहस्थ सम्बन्धित परेशानियों की अधिकता रहेगी। आप नौकरी पेशा हैं या व्यापारी लाभ की आशा इस महीने में न रखें, विद्यार्थियों के लिये भी अशान्ति अथवा असफलता का ही महीना है।

जून:- दूसरा राहु, तीसरा बृहस्पति, सातवां शनि, आठवां शुक्र तथा केतु, नवां सूर्य बुध, दसवां चन्द्रमा, बारवां भौम, इस महीने के ग्रहों की स्थिति अच्छी नहीं हे। अचानक शरीर बिगड़ने का योग, लाभ की दृष्टि से भी यह महीना कमजोर ही रहेगा, खर्च का योग बलवान है, विद्यार्थियों के लिये भी ग्रहों का प्रभाव अनिष्ट ही रहेगा।

जुलाई:- दूसरा राहु, तीसरा बृहस्पति, सांतवा शनि, आठवां केतु, नवां बुध दसवां, सूर्य, शुक्र, ग्यारवां चन्द्रमा, बारवां भौम, बेधाष्टवर्ग इत्यादि के आधार से इस मास के प्रायः सभी ग्रह सुधरे हुये हैं, आप नौकरी पेशा हैं या कारोबारी दोनों सूरतों में यहमहीना आपके लिये कामयाबी का ही महीना होगा, विद्यार्थियों के लिये भी हर प्रकार से लाभदायक महीना है।

अगस्त:- पहला भौम चन्द्रमा, दूसरा राहु, तीसरा बृहस्पति, सातवां शनि आठवां केतु, ग्यारवां, सूर्य बुध शुक्र होने से यह महीना हर पहलू से उत्तम रहेगा, हर आरम्भ किये हुये कार्य में कामयाबी होगी, आमदनी में बृद्धि होगी, विद्यार्थियों को आशा से अधिक सफलता का योग ।

सितम्बर:- पहले भाव का बुध, दूसरा राहु भौम, तीसरा चन्द्रमा बृहस्पति छठे भाव का शनि, बारवां सूर्य शुक्र इस मास में केवल चन्द्रमा तथा शुक्र आपके हक में हैं शेष सभी ग्रह अनिष्ट ही हैं। इस कारण इस माह में अचानक कोई दुर्घटना होने का खतरा अथवा अचानक नुकसान होगा, उपाय के

रुप में बहुरुपगर्भ का पाठ अवश्य करें। विद्यार्थी वर्ग के लिये भी परेशानी का ही महीना है।

अक्टूबर:- पहला बुध सूर्य, दूसरे भाव का भौम शुक्र राहु, तीसरा बृहस्पति, चौथा चन्द्रमा, छठे भाव का शनि, आठवां केतु, शरीर के बारे में सावधान रहें, आपका शरीर बनता बिगड़ता रहेगा, गृहस्थी होने पर स्त्री के शरीर की दशा भी डांवा डोल रहेगी, लाभ की दृष्टि से भी परेशानी का ही महीना है। विद्यार्थियों के लिये भी परेशानी का ही महिना है।

नवम्बर:- दूसरा सूर्य बुध राहु, तीसरा भौम बृहस्पति शुक्र छठे भाव का चन्द्रमा शनि, आठवां केतु, इस माह में शुभग्रहों का पलड़ा भारी होने से यह महीना शान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, आप व्यापारी हैं या नौकरी पेशा आप के लिये यह महीना लाभ तथा इज्जत का महीना है। विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

दिसम्बर:- दूसरा राहु, तीसरा सूर्य बुध बृहस्पति, चौथा भौम और शुक्र, छठा शनि, सातवां चन्द्रमा, आठवां केतु, यद्यपि यह महीना संघर्ष तथा दौड धूप में ही गुज़रेगा परन्तु हर काम में आखर में सफलता होगी। गृहस्थी होने पर किसी घरेलू परेशानी से घेरे रहने का योग है, लाभ की दृष्टि से यह महीना उत्तम है। शुभकामों पर खर्च के प्रोग्राम बनते रहेंगें। विद्यार्थियों के लिये आशा से अधिक सफलता होगी।

जनवरीः– पहले भाव का राहु, चौथा सूर्य बुध बृहस्पति पांचवां भौम शुक्र छठे भाव का शनि, सातवां केतु, नवां चन्द्रमा, शरीर सम्बन्धित परेशानी लगी ही रहेगी, कारोबार सम्बन्धित कोई नया प्रोग्राम बनने वाला है नौकरी सम्बन्धित तरक्की अथवा लाभ का योग विद्यार्थियों के लिये ग्रह अनुकूल हैं । विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी।

फरवरीः- पहला राहु, चौथा बृहस्पति, पांचवां सूर्य भौम बुध, छठेभाव का शुक्र और शनि, सातवां केतु, दसवां चन्द्रमा वेधाष्टक वर्ग के आधार से इस मास के ग्रह बहुत हद तक सुधरा नहीं हैं। परन्तु ऐसा होने पर भी इस मास का कोई भी काम बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा। लाभ तथा आदर की दृष्टि से उत्तम महीना है। नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित कोई शुभ सन्देश मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना है।

मार्चः– पहला राहु, चौथा बृहस्पति, पांचवां बुध, छठे भाव का सूर्य भौम, सातवां शनि और केतु आठवां शुक्र, ग्यारवां चन्द्रमा इस माह की ग्रहचाल आपके अनुकूल हैं आप कारोबार करते हैं या नौकरी इस माह से कुछ लाभ उठायें, हर काम में सफलता होगी। विद्यार्थियों की विद्या सम्बन्धित प्रत्येक योजना सफल रहेगी, घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम होगा।

तुला राशि का वर्ष फल

वर्ष के आरम्भ के ग्रह चक्र में छठे भाव का सूर्य चन्द्रमा बुध का होना लाभ तथा सुख शान्ति का इशारा है इस शुभ योग के आधार से हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता, शत्रुओं पर विजय होगी, शरीर सुख, दूसरे भाव का बृहस्पति होने से धन का लाभ, परिवार का सुख, पुत्रपक्ष से मानसिक शान्ति, पांचवा शुक्र होने से डिपापर्टम्यन्टल परीक्षा में सफलता, विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता शेष ग्रहों को भी वेधाष्टक वर्ग गोचर सिद्धान्तों के आधार से परख कर यही विदित होता है कि सामूहिक रूप से यह वर्ष आपने सुख शान्ति के वातावरण में ही व्यतीत करना होगा।

तुला राशि का मासिक फलादेश

अप्रेलः- पहला राहु, दूसरा बृहस्पति, पांचवा शुक्र शनि, छठः सूर्य चन्द्रमा बुध, सातवां केतु, दसवां

भौम इस महीने की ग्रहस्थिति आपके हक में है घर में यदि कोई घरेलू परेशानी चल रही है। वह भी दूर होगी, यह महीना आपने सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजारना होगा, विद्यार्थियों के लिये सफलता का ही महीना है।

मईः- पहले भाव का राहु, दूसरा बृहस्पति पांचवां शनि, छठः शुक्र सातवां सूर्य और केतु, आठवां बुध और चन्द्रमा, दसवां भौम इस मास की ग्रह स्थिति पर विचार करने से मालूम होता है यदि आप गृहस्थी हैं तो घरेलू परेशानियों का ज़ोर रहेगा, खसूसी तौर संतान पक्ष से सावधान रहना चाहिये, लाभ की दृष्टि से उत्तम महीना है। विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी।

जूनः- पहला राहु, दूसरा बृहस्पति, छठे भाव का शनि, सातवां केतु आठवां बुध, नवां सूर्य शुक्र, दसवां चन्द्रमा, ग्यारवां भौम इस ग्रह चाल पर वेधाष्टकवर्ग के अनुसार विचार करने से विदित होता है कि यह महीना आपने संघर्ष तथा दौडधूप के माहौल में ही गुज़ारना होगा। आप व्यापारी हैं या नौकरी पेशा आप का कोई भी काम विना रूकावट के सिद्ध नहीं होगा, गृहस्थी होने पर यह महीना घरेलू कामों में लगे रहने का योग है। आमदनी में कोई इज़ाफा नहीं होगा परन्तु खर्च के नये-नये मनसूबे बनते रहेंगे, विद्यार्थियों को पठन पाठन में दिलचस्पी कम रहेगी।

जुलाईः- पहले भाव का राहु, दूसरा बृहस्पति, छठः शनि सातवां केतु, आठवां बुध, नवां सूर्य शुक्र, दसवां चन्द्रमा ग्यारवां भौम, वेघाष्टकवर्ग सिद्धान्तों के आधार से ग्रहों पर विचार करने से मालूम

होता है यह महीना आपने सुख तथा शान्त वातावरण में ही व्यतीत करना है। आप व्यापारी हैं या नौकरी पेशा आपने यह महीना लाभ के माहौल में ही गुज़ारना होगा लाभ के लिये उत्तम होने पर भी खर्च की भरमार रहेगी। यहां तक कि तंगदस्ती से भी दुचार होना पड़ेगा। विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में कामयाबी होगी।

अगस्त:- पहले भाव का राहु, दूसरा बृहस्पति छठे भाव का शनि सातवां केतु, दसवां सूर्य बुध और शुक्र, बारवां भौम और चन्द्रमा इस ग्रह चाल से यही मालूम पड़ता है कि इस महीने में अचानक शरीर कष्ट अथवा चोट इत्यादि लगने की सम्भावना है मित्र वर्ग भी लड़ने के लिये तैयार होंगे। आमदनी में कमी, खर्च की अधिकता होगी नौकरी पेशा होने पर अचानक कोई इलज़ाम लगने की सम्भावना, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में रुकावट की सम्भावना उपाय के रूप में बार-बार उच्चारण किया करें:-

ॐ त्र्यम्बंक यजामहे, सुगन्धिं पुष्टि-वर्धनम्
उर्वा-रुकम्-इव बन्धनात्-मृत्यो-मुक्षीय मामृतात्।।

सितम्बर:- पहले भाव का राहु भौम, दूसरा चन्द्रमा बृहस्पति, पांचवा शनि ग्यारवां सूर्य और शुक्र, बारवां बुध इस महीने की ग्रहस्थिति खास उत्तम नहीं हैं यह महीना रंग बदलता रहेगा आप व्यापारी हैं या नौकरी पेशा तो कभी मानसिक शान्ति गाहे हद से ज्यादा परेशानी, गाहे लाभ गाहे हांनि यह

महीना संघर्ष तथा पेरशानी में ही गुजरेगा, विद्यार्थियों के लिये यह महीना परेशानी तथा विद्या सम्बन्धित प्रत्येक काम में उलझन पैदा करने वाला होगा।

अक्टूबर:- पहले भाव का राहु भौम शुक्र दूसरा बृहस्पति तीसरा चन्द्रमा, पांचवां शनि, सातवां केतु, बारवां बुध सूर्य होने से महीनाबर अपने शरीर की अथवा घर की किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी बनी रहेगी, व्यापारी होने पर काम की कोई योजना सफल होगी नहीं यदि आप नौकरी करते हैं तो यह महीना परेशानी के माहौल में ही गुज़ारना है विद्यार्थियों को भी पठन पाठन में रुचि कम रहेगी यदि कोई परीक्षा अथवा इन्टरव्यू इत्यादि देना हो या दिया हो इच्छानुसार सफलता की आशा न रखें।

नवम्बर:- पहला सूर्य राहु, बुध, दूसरा भौम बृहस्पति तथा शुक्र पांचवा चन्द्रमा और शनि सातवां केतु होने से इस माह के क्रूर ग्रहों का पलड़ा भारी है हर आरम्भ किये हुये काम में रुकावट लाभ की दृष्टि से यह महीना ढ़ीला ही है यदि आप व्यापारी हैं अचानक कुछ नुकसान होने की सम्भावना नौकरी पेशा होने पर किसी सम्बन्धित अफसर से टकराव, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित किसी काम में इच्छानुसार सफलता होगी नहीं।

दिसम्बर:- पहला राहु, दूसरा सूर्य, और बुध बृहस्पति तीसरा भौम शुक्र पांचवा शनि छठः चन्द्रमा सातवां केतु ग्रह स्थिति पर विचार करने से मालूम पड़ता है आपके हर आरम्भ किये हुये काम में

सफलता होगी, लाभ की दृष्टि से अथवा आदर की दृष्टि से यह महीना उत्तम रहेगा आप नौकरी करते हैं या व्यापार कोई देर की कामना पूरी होने का योग है घर में कोई शुभ काम रचाने का प्रोग्राम बनेगा अथवा घर में नवजात बालक का जन्म होगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये हर काम में सफलता का महीना।

जनवरी:- तीसरा सूर्य बुध, बृहस्पति चौथा भौम शुक्र पांचवां शनि छठे भाव का केतु आठवां चन्द्रमा, बारवां राहु इस मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी है । यह महीना अशान्त वातावरण में ही गुज़रेगा गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियों का भी ज़ोर रहेगा, नौकरी पेशा होने पर दफ्तरी परेशानी महीना बर बनी रहेगी, विद्यार्थियों के लिये विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का महीना।

फरवरी:- तीसरा बृहस्पति चौथा सूर्य भौम बुध, पांचवां शनि, शुक्र छठः केतु, नवां चन्द्रमा, बारवां राहु वेधाष्टकवर्ग की कसोटी पर ग्रहों को परख कर मालूम पड़ता है कि यह महीना आपके लिये हर काम में सफलता का ही होगा, अचानक कोई लाभ मिलने का योग, कोई जायदाद बनाने अथवा खरीदने का योग, विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का महिना।

मार्च:- तीसरा बृहस्पति, चौथा बुध, पांचवा सूर्य भौम, छठः शनि केतु सातवां शुक्र, दसवां चन्द्रमा, बारवां राहु इस माह की ग्रह चाल प्रायः आपके अनुकूल है हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता होगी आमदनी के लिये ग्रह अनुकूल हैं आशा से अधिक लाभ, घर में कोई शुभमहोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, विद्यार्थियों के लिये भी विद्या सम्बंधित हर काम में सफलता का महीना है। ❖❖

वृश्चिक राशि का वर्ष फल

वर्ष के आरम्भ पर पहले भाव का बृहस्पति, चौथा शुक्र शनि, नवां भौम, पांचवां सूर्य चन्द्रमा बुध प्राय: सभी ग्रह खराब स्थिति में ही ठहरे हैं इस क्रूर योग के प्रभाव से मानहानि, कारोबार में रुकावट मानसिक अशान्ति, हर एक आरम्भ किये हुये काम में रुकावट, हानि की सम्भावना, शरीर कष्ट उपाय के रूप में आप जन्मदिन पर इष्टदेवी का पुष्पार्चण अवश्य करवायें। इस वर्ष के आरम्भ से ही वैष्णव रहने की प्रतिज्ञा कीजिये, यदि घर में किसी वयोवृद्ध से नाराज़गी है तो उनसे माफी मांग कर उनसे आर्शीवाद प्राप्त करना ही आप हर कष्ट का मुकाबला करने में समर्थ होंगें, मेरे लिखे हुये इस उपाय को अवश्य अपनायें हो सके तो हर सोमवार को भगवान् शंकर पर जल चढ़ाया करें।

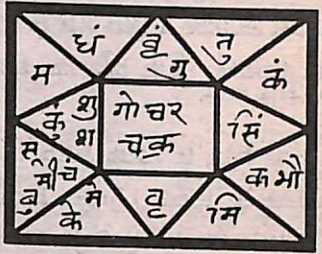

वृश्चिक राशि का मासिक फल

अप्रेलः- पहले भाव का बृहस्पति, चौथा शुक्र शनि, पांचवां सूर्य, चन्द्रमा बुध, छठः केतु, नवां भौम, बारवां राहु होने से यह महीना संघर्ष तथा दौड़ धूप में ही गुज़रेगा, आपके कारोबार की जो भी दशा है आपका कोई भी काम बिना रुकावट के सम्पूर्ण होगा नहीं, लाभ की दृष्टि से भी यह महीना ढीला ही रहेगा, गृहस्थी होने पर महीना भर घर की परेशानियां आपको घेरे रखेंगी। उपाय के रूप में हर मंगलवार को तहर बनाकर पक्षियों को डाला करें, विद्यार्थियों को भी पठन पाठन में रुचि कम रहेगी और विद्या सम्बन्धित हर काम में ढीलापन ही रहेगा।

मईः- पहले भाव का बृहस्पति, चौथा शनि, पांचवा शुक्र छठे भाव का सूर्य केतु, सातवां चन्द्रमा बुध, नवां भौम, बारवां राहु, बृहस्पति और शनि अच्छी स्थिति में न होने से यह महीना अशान्त वातावरण में ही गुज़रेगा, हर एक काम बनते बनते विगड जायेगा, आमदनी में रुकावट खर्च की अधिकता, अचानक दुर्घटना की सम्भावना उपाय के रूप में इस माह की हर शनिवार को तहर बनाकर पक्षियों को डालें, विद्यार्थियों के लिये भी अशान्ति का महीना है।

जून:- पहले भाव का बृहस्पति, पांचवां शनि, छठे भाव का शुक्र केतु, सातवां सूर्य बुध, आठवां चन्द्रमा, दसवां भौम, बारवां राहु इस मास के शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति से विदित होता है कि यह महीना डांवाडोल स्थिति में ही गुज़रेगा कोई भी काम बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा प्रयत्न करने पर भी आमदनी में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं होगी फजूल खर्च के दिनों दिन प्रोग्राम बनते रहेंगें नौकरी पेशा होने पर अचानक तबदीली का योग, विद्यार्थियों के पठन पाठन सम्बन्धित हर काम में रुकावट।

जुलाई:- पहले भाव का बृहस्पति, पांचवा शनि, छठे भाव का केतु, सातवां बुध, आठवां सूर्य शुक्र नवां चन्द्रमा दसवां भौम, बारवां राहु इस मास के ग्रह अनुकूल न होने पर भी प्रायः सभी ग्रह वेध में होने से आप के लिये शुभ ही होगें, आप कारोबार करते हैं या नौकरी दोनों सूरतों में यह महीना आपके लिये लाभदायक हैं, आदर मान प्रतिष्ठा की दृष्टि से भी उत्तम है प्रायः हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता होगी, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी।

अगस्त:- पहले भाव का बृहस्पति, पांचवां शनि, छठे भाव का केतु, नवां सूर्य बुध तथा शुक्र, ग्यारवां भौम चन्द्रमा, बारवां राहु यही महीना प्रायः अशान्त माहौल में ही गुज़ारना होगा गृहस्थी होने पर घर के किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी लगी रहेगी आमदनी में कोई इज़ाफा होगा नहीं परन्तु खर्च के लम्बे-लम्बे मनसूबे बनते रहेंगें विद्यार्थियों के लिये भी अशान्ति तथा असफलता का महीना है।

सितम्बर:- पहले भाव का बृहस्पति चन्द्रमा, चौथा शनि, छठः केतु, दसवां सूर्य और शुक्र, ग्यारवां बुध, राहु और भौम शरीर के विषय में सावधान रहिये अचानक गृहस्थ की अथवा अपनें शरीर से सम्बन्धित परेशानी खड़ी होगी आमदनी के लिये यह महीना उत्तम है खर्च के प्रोग्राम बनते रहेगें परन्तु खर्च प्रायः शुभकामों पर ही होगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी।

अक्टूबर:- पहले भाव का बृहस्पति, दूसरा चन्द्रमा, चौथा शनि, छठे भाव का केतु, ग्यारवां सूर्य और बुध, बारवां भौम राहु शुक्र, इस महीने में भी आप शरीर के विषय में सावधान रहें उपाय के रूप में हर मंगलवार को तहर बनाकर पक्षियों को डाला करें आमदनी के लिये यह महीना उत्तम है अचानक कुछ लाभ मिलने अथवा कोई शुभ संदेश मिलने का भी योग, विद्यार्थियों के लिये इस माह के ग्रह अनुकूल है आपके हर काम में सफलता होगी।

नवम्बर:- पहला बृहस्पति शुक्र भौम, चौथा शनि चन्द्रमा, छठे भाव का केतु, बारवां सूर्य तथा राहु बुध इस माह के आरम्भ की गृहस्थिति पर विचार करने से मालूम होता है कि अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने से गृहस्थी होने पर घर के किसी सदस्य की चिन्ता महीना भर बनी रहेगी आमदनी की आशा न रखें अपितु हानि की ही सम्भावना है घर में अतिथियों का आना जाना चलता ही रहेगा, विद्यार्थियों के लिये ग्रह अनुकूल हैं।

दिसम्बर:- पहला बृहस्पति सूर्य बुध, दूसरा भौम शुक्र, चौथा शनि, पांचवां चन्द्रमा, छठे भाव का केतु बारवां राहु इस मास के आरम्भ पर प्रायः सभी ग्रहों की स्थिति डावांडोल ही है इस कारण

यह बात यकीनी है कि इस मास में आप अशान्त रहेंगे अपितु किसी खास मुसीबत का भी सामना करना पड़ेगा आर्थिक संकट का योग भी है अचानक कोई झूठा इलज़ाम लगने का अन्देशा है विद्यार्थियों के लिये भी परेशानी का ही महीना है।

जनवरी:- दूसरा सूर्य बुध बृहस्पति, तीसरा भौम शुक्र, चौथा शनि, पांचवां केतु, सातवां चन्द्रमा, ग्यारवां राहु वेधाष्टकवर्ग के आधार से यह महीना आपके लिये शुभ सन्देश लेकर आया है आमदनी की दृष्टि से यह महीना उत्तम रहेगा कोई ऐसा शुभ सन्देश मिलेगा जो आपकी प्रतिष्ठा को बनाए रखने में सहायक होगा व्यापारी होने पर व्यापार में अचानक तरक्की का योग, विद्यार्थियों के लिये विद्या से सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी।

फरवरी:- दूसरे भाव का बृहस्पति, तीसरा सूर्य भौम बुध, चौथा शुक्र शनि, पांचवां केतु, आठवां चन्द्रमा ग्यारवां राहु, इस मास की शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है यह महीना आपने सुख शन्ति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा आप व्यापारी हैं या नौकरी करते हैं यह महीना आप के लिये लाभ तथा आदर का ही है विद्यार्थियों को भी आशा से अधिक सफलता मिलेगी।

मार्च:- दूसरा बृहस्पति, तीसरा बुध, चौथा सूर्य और भौम, पांचवां केतु और शनि छठे भाव व शुक्र, नवां चन्द्रमा, ग्यारवां राहु भास के आम्भ पर क्रूर ग्रहों का पलड़ा भारी होने से यह महीना आप ने अशान्ति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा परन्तु लाभ की दृष्टि से अच्छा रहेगा। खर्च की अधिकता रहेगी, रात दिन काम में जुटे रहने का योग है। विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी।

धनु राशि का वर्ष फल

वर्ष के आरम्भ पर तीसरा शुक्र शनि, चौथा बुध यह तीनों ग्रह अच्छी स्थिति में हैं इनके प्रभाव से अच्छे पुरुषों से मेलमिलाप का अवसर मिलेगा, लाभ की दृष्टि से यह महीना उत्तम है आपने इस वर्ष कोई जायदाद सम्बन्धित खर्च का मनसूबा बनाना होगा जबकि बृहस्पति बारवें भाव में ठहरा है यह भी मुमकिन है आपने कोई वाहन इत्यादि खरीदना होगा नौकरी पेशा होने पर नौकरी में अवश्य तरक्की का योग नौकरी सम्बन्धित यदि कोई काम रुका पड़ा है तो ऐसे सभी काम हल हो जायेंगे यदि आपका सम्बन्ध किसी कारोजार से है आपके कारोबार को वृद्धि होगी घर में कोई शुभ महोत्सव रचाने का प्रोग्राम अवश्य बनेगा विद्यार्थियों को इस वर्ष के एक-एक क्षण से लाभ उठाना चाहिये यह वर्ष आपके नींव को बनाने वाला वर्ष होगा।

धनु राशि का मासिक फल

अप्रेलः- तीसरे भाव का शुक्र और शनि, चौथा सूर्य चन्द्रमा बुध, पांचवां केतु, आठवां भौम, ग्यारवां राहु, बारवां बृहस्पति इस मास के आरम्भ की ग्रह स्थिति आपके अनुकूल हैं यह महीना शान्तवातावरण में ही गुज़रेगा लाभ की दृष्टि से उत्तम म्हीना, भाई बन्धों रिश्तेदारों से मिलने जुलने का योग, घर में कोई शुभमहोत्सब रचाने का प्रोग्राम, आप नौकरी पेशा हैं या व्यापारी दोनों सूरतों में आप को मानसिक शान्ति रहेगी, विद्यार्थियों की सफलता में ग्रह सहायक हैं विद्या सम्बन्धित आपका हर एक काम सफल रहेगा।

मईः- तीसरे भाव का शनि, चौथा शुक्र, पांचवां सूर्य केतु, छठे भावका चन्द्रमा बुध, आठवां भौम, ग्यारवां बृहस्पति इस मास के प्रायः सभी ग्रह आपके हक में हैं आप जो कोई भी काम हाथ में लेंगें उसमें अवश्य सफलता होगी आमदनी में बृद्धि केवल शरीर के विषय में सावधान रहें गृहस्थी होने पर आपकी स्त्री के शरीर बिगड़ने की सम्भावना उपाय के रूप में इस मास में घर पर मांस का प्रयोग न करें मंगलवार को तहर बनाकर छोटे बच्चों को खिलायें परन्तु तहर में देसी घी डालें विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

जून:– चौथेभाव का शनि, पांचवा शुक्र केतु, छठ: बुध, सातवां चन्द्रमा, नवां भौम, ग्यारवां राहु, बारवां बृहस्पति वेधाष्टकवर्ग इत्यादि से गृह स्थिति पर विचार करने से मालूम होता है यदि आप शरीर से अस्वस्थ हैं अथवा घर का कोई सदस्य अस्वस्थ है इस मास की ग्रहचाल से ऐसी परेशानियों से अवश्य छुटकारा मिलेगा, आप व्यापार करते हैं या नौकरी दोनों सूरतों में आप लाभ में रहेंगें, विद्यार्थियों के लिये भी इस मास के ग्रह अनुकूल हैं।

जुलाई:- चौथे भाव का शनि, पांचवां केतु, छठे भाव का बुध, सातवां सूर्य और शुक्र, आठवां चन्द्रमा, नवां भौम, ग्यारवां राहु, बारवां बृहस्पति इस महीने में अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी हैं जिसके प्रभाव से यह महीना अशान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा, घरेलू परेशानियों का भी घेराव महीनाभर रहेगा, शरीर के बिगड़ने की सम्भावना विद्यार्थियों के लिये कोशिश करने पर भी असफलता का ही महीना है।

अगस्त:- चौथे भाव का शनिश्चर, पांचवां केतु, आठवां सूर्य बुध शुक्र, दसवां चन्द्रमा भौम, ग्यारवां राहु, बारवां बृहस्पति ऐसे ही ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा लगभग एक जैसा है इस योग के अनुसार यह महीना सर्वसाधारण रूप से चलता रहेगा यद्यपि यह लाभ का महीना नहीं हैं परन्तु हानि की भी कोई सम्भावना नहीं है विद्यार्थियों को पठन पाठन में दिलचस्पी कम रहेगी यदि कोई परीक्षा दी है या देनी है सफलता की आशा न रखें।

सितम्बरः- तीसरा शनि, पांचवा केतु, नवां सूर्य शुक्र, दसवां बुध, ग्यारवां भौम तथा राहु, बारवां बृहस्पति चन्द्रमा होने से तथा वेधाष्टकवर्ग सिद्धान्तों के आधार से ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है यह महीना हर पहलू से शान्तवातावरण में ही गुज़रेगा, भाईबन्धों रिश्तेदारों से मेलमिलाप का अवसर मिलेगा, आमदनी की दृष्टि से यह माह उत्तम है परन्तु खर्च की भी अधिकता रहेगी परन्तु खर्च प्रायः शुभ कामों पर ही होगा।

अक्टूबरः- पहले भाव का चन्द्रमा, तीसरा शनि, पांचवां केतु, दसवां सूर्य बुध, ग्यारवां, राहु शुक्र भौम बारवां बृहस्पति होने से यह महीना सुख शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा, गृहस्थी होने पर घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा जो प्रोग्राम शान्त माहौल में ही सम्पन्न होगा नौकरी पेशा होने पर लाभ की दृष्टि से यह महीना इस वर्ष में विशेष महत्त्व रखेगा, विद्यार्थियों के लिये मान प्रतिष्ठा तथा सफलता का महीना है।

नवम्बरः- तीसरे भाव का शनि तथा चन्द्रमा, पांचवा केतु, ग्यारवां सूर्य राहु और बुध, बारवां भौम शुक्र बृहस्पति इस मास के आरम्भ पर गृहस्थिति को देखने से विदित होता है कि यह महीना हर प्रकार से उत्तम रहेगा यदि आप को गृहस्थपक्ष से कोई परेशानी है अथवा अपने शरीर की कोई चिन्ता है वह अवश्य दूर होगी, भाई बन्धों रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, आमदनी की दृष्टि से ग्रह आपके अनुकूल हैं खर्च भी यदि होगा वह शुभ कामों पर ही होगा, कोई जायदाद खरीदने

अथवा बनाने का योग है विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में आशा से अधिक लाभ होगा।

दिसम्बरः- पहले भाव का भौम शुक्र, तीसरा शनि, चौथा चन्द्रमा, पांचवां केतु, ग्यारवां राहु, बारवां सूर्य बुध तथा बृहस्पति होने से यह महीना डावांडोल स्थिति में ही गुज़ारना होगा, कोई भी काम जो आप हाथ में लेंगें उलझन तथा परेशानी के बिना सिद्ध नहीं होगा, आमदनी में कमी खर्च की अधिकता होगी, गृहस्थी होने पर महीनाभर घरेलू परेशानी लगी ही रहेगी, विद्यार्थियों के लिये भी परेशानी का ही महीना है।

जनवरीः- पहला सूर्य बुध बृहस्पति, दूसरा भौम शुक्र, तीसरा शनि, चौथे भाव का केतु, छठः चन्द्रमा दसवां राहु इस मास के सभी अनिष्ट ग्रह बेध में होने से आपके लिये इस महीने का प्रत्येक ग्रह अनुकूल हैं यह महीना हर काम में सफलता का महीना है, रुके हुये काम हरकत में आयेगें अचानक लाभ अथवा नौकरी पेशा होने पर तरक्की का योग, विद्यार्थियों को आशा से अधिक सफलता होगी।

फरवरीः- पहला बृहस्पति, दूसरा सूर्य भौम बुध, तीसरा शुक्र शनि, चौथा केतु, सातवां चन्द्रमा, दसवां राहु इस ग्रहस्थिति के अनुसार यह महीना हर प्रकार से शान्त माहौल में ही गुज़रेगा यदि कोई शरीर सम्बन्धित परेशानी है वह दूर होगी हर आरम्भ किये हुये अथवा हाथ में लिये हुये काम में सफलता होगी, आमदनी उत्तम, शुभकामों पर खर्च, भाई बन्धों से मेलमिलाप, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मार्च:- पहले भाव का बृहस्पति, दूसरा बुध, तीसरा सूर्य भौम, चौथा शनि केतु, पांचवां शुक्र, आठवां चन्द्रमा, दसवां राहु इस मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति को देखते हुये मालूम होता है कि आप को हर काम में सफलता मिलेगी अपितु बिगड़े हुये कामों में सुधार होगा आप नौकरी करते हैं या व्यापार दोनों सूरतों में आप लाभ में रहेंगें, धार्मिक कामों में दिलचस्पी अथवा घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, विद्यार्थियों को पठन पाठन सम्बन्धित हर काम में इच्छानुसार सफलता मिलेगी।

मकर राशि का वर्षफल

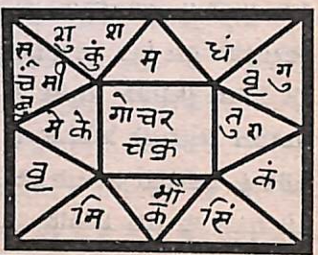

वर्ष के आरम्भ पर ग्यारहवाँ बृहस्पति, दूसरा शुक्र, तीसरा सूर्य चन्द्रमा तथा दसवें भाव का राहु होना शुभफल का सूचक है, दूसरा शनि तथा तीसरा बुध वेध में होने ने अशुभ फलदायक होने पर भी शुभ फलदायक हैं-इस मिले जुले योग के प्रभाव से शरीर स्वस्थ रहेगा-रोगों से मुक्ति-अच्छे-अच्छे अधिकारियों से मेल व मिलाप-धन लाभ उत्तम

पद की प्राप्ति दरबार में मान प्रतिष्ठा डिपार्ट मेन्टल परीक्षा में सफलता व्योपारी वर्ग के लिये हर प्रकार लाभ का वर्ष है चौथे भाव में केतु होने से अगर किसी जाईदाद सम्बन्धित परेशानी ने आप को आघेरा है वह परेशानी समाप्त होने की सम्भावना है, अगर दैवयोग से जाईदाद सम्बन्धि समस्या समाप्त न भी होगी तो भी उस समस्या के हल होने के आसार देखने में आयेंगे, सातवाँ मंगल भी अपना बुरा प्रभाव डालने के बिना नहीं रहेगा जिस के प्रभाव से गृहस्थी होने पर स्त्री की शारीरिक चिन्ता रहेगी अगर वह शरीर से पहले से ही अस्वस्थ है तो शरीर में चीरफाड का योग भी बन सकता है, सातवें मंगल के क्रूर प्रभाव को शान्त करने के लिए आप दोनों पति पत्नी को वैष्णव रहना चाहिये तथा निम्नलिखि मन्त्र का बार-बार उच्चारणस करना चाहिये

"चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि मां।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्"

विद्या के स्थान यानि पांचवे भाव को विद्या गुरु बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देख रहा है जिसका प्रभाव विद्यार्थियों के लिये अनुकूल होगा अतः विद्यार्थियों को चाहिये कि वह इस अवसर का पूरा लाभ उठाये-कमर बाँधकर पढ़ाई में जुट जायें आपको आशा से अधिक सफलता मिलेगी अगर उच्च विद्या प्राप्ति के लिये विदेश अथवा कहीं दूर जाना चाहते हैं तो विलम्ब न करें जाने का प्रोग्राम बनायें सफलता अवश्य मिलेगी।

मकर राशि का मासिक फल

अप्रेलः– दूसरा शनि शुक्र, तीसरा सूर्य चन्द्रमा बुध, सातवाँ भौम, दसवाँ राहु तथा ग्यारवाँ बृहस्पति होने से यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा आप की आर्थिक स्थिति बहुत हद तक सुधर जायेगी, करोबारी वर्ग के लिये हर प्रकार से लाभ तथा शान्ति का महीना है गृहस्थी होने पर आप को घरेलू परेशानी घेरे रखेगी, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का महीना है।

मईः– दूसरा शनि, तीसरा शुक्र, चौथ सूर्य और केतु, पाँचवा चन्द्रमा और बुध, सातवाँ भौम, दसवाँ राहु तथा ग्यारवाँ बृहस्पति होने पर यही मालूम पड़ता है इस मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी है जिस के फलस्वरूप यह मास संघर्ष तथा दौड धूप में ही गुज़रेगा परन्तु ऐसा होने पर भी बृहस्पति के प्रभाव से अन्त में हर काम में सफलता ही होगी-शरीर की दशा भी ढाँवाढोल रहेगी आप का शरीर बनता बिगडता रहेगा, घरेलू परेशानियों का भी जोर रहेगा, विद्यार्थियों को भी पठन-पाठन में कम दिलचस्पी रहेगी-ऐसा होने पर भी परीक्षा में सफलता की ही आशा रखें।

जूनः– तीसरा शनि, चौथ शुक्र केतु, पाँचवाँ सूर्य बुध, छटा चन्द्रमा, आठवा, भौम, दसवाँ राहु तथा ग्यारवाँ बहृस्पति वेध अष्टक वर्ग दृष्टि आदि गोचर सिद्धान्तों के आधार से यह माह हर प्रकार से

अशान्त वातावरण में गुज़ारना होगा, बिगडे हुये काम सुधरेंगे, घर में भाई बन्धुओं तथा मित्रों का आना जाना ज़ोरों पर होगा, नौकरी पेशा वालों को सम्बन्धित अफसरों से मिलने जुलने की व्यस्तता रहेगी व्योपारी वर्ग हर प्रकार से लाभ में रहेगा-आठवें मंगल से सावधान रहिये अचानक कोई दुर्घटना होगी अथवा शरीर में चोट लगने की सम्भावना है उपाय के रूप में इस मास की हर मंगलवार को तहर बनाकर पक्षियों को डाला करें तथा साथ ही इस मास में अवश्य वैष्णव रहें, विद्यार्थियों के लिये यह महीना अशान्ति का है जब कि शनि आप के विद्या के घर को देख रहा है।

जुलाई:— तीसरा शनि, चौथा, केतु, पाँचवाँ बुध, छटे भाव का सूर्य और शुक्र, सातवाँ चन्द्रमा, आठवाँ भौम, दसवाँ राहु, ग्यारवाँ बृहस्पति इस ग्रहस्थिति को दृष्टि में रखकर विदित होता है कि यह मास प्राय: यात्रा में ही गुज़रेगा जिस यात्रा में आप सफल रहेंगे, यदि आप वाहन आदि खरीदना चाहते हैं अथवा कोई जाईदाद आदि खरीदना चाहते हैं तो उस तरफ ध्यान दीजिये ऐसी समस्या अवश्य हल होगी, घर में कोई शुभ महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा इस मास के ग्रह विद्यार्थियों के पक्ष में है आप पढ़ाई में जुट जाये सफलता निश्चित है।

अगस्त:— तीसरा शनि, चौथा केतु, सातवाँ सूर्य बुध शुक्र, नवाँ चन्द्रमा भौम, दसवाँ राहु, ग्यारवाँ बृहस्पति इस मास की ग्रहस्थिति को देखकर मालूम पड़ता है कि इस मास में अशुभ ग्रहों का पलड़ा यद्यपि भारी है परन्तु बृहस्पति और शनि की स्थिति अच्छी होने से अशुभ ग्रहों का प्रभाव भी शान्त

होगा जिस के प्रभाव से यह महीना सुख व शान्ति के वातावरण में गुजारना होगा आप नौकरी करते हैं या व्यापार दोनों सूरतों में आप सफल रहेंगे, विद्यार्थियों के लिये भी यह मास विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का है।

सितम्बर:– दूसरा शनि, चौथा केतु, आठवाँ सूर्य और शुक्र, दसवाँ राहु और भौम, ग्यारवाँ चन्द्रमा बृहस्पति, नवाँ बुध, आठवें सूर्य को शनि पर्ण दृष्टि से देख रहा है इस क्रूर योग के प्रभाव से अचानक शरीर कष्ट का योग है दैवयोग से अगर आप शरीर से स्वस्थ ही रहेंगें तो भी घर के किसी सदस्य की अचानक शरीर सम्बन्धित परेशानी अधेरेगी, आर्थिक दृष्टि से यद्यपि यह मास लाभदायक है भी परन्तु खर्च की बड़-बड़ी योजनायें बनती रहेगी, नौकरीपेशा मकर राशिवालों को डिपार्टमेन्टल तर्की मिलने का योग है, विद्यार्थियों के लिये विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का मास है।

अक्टूबर:– दूसरे भाव का शनि, चौथा केतु, नवाँ बुध सूर्य, दसवाँ राहु भौम शुक्र, ग्यारवाँ बृहस्पति, बारवाँ चन्द्रमा, मास के आरम्भ की ग्रहस्थिति को देखते हुये मालूम पड़ता है आप का शरीर अचानक विगडने का अथवा चोट लगने का अन्देशा है, गृहस्थी होने पर आप को गृहस्थपक्ष से भी परेशानी रहेगी उपाय के रूप में आप के घर में निम्नलिखित मन्त्र की गूंज हर समय होनी चाहिये, यह मन्त्र घर के हर सदस्य को अवश्य याद करना चाहिये।

"ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्ठि बर्धनम्
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योमुखीय मामृतात्।।"

नवम्बरः– दूसरे भाव का शनि चन्द्रमा, चौथा केतु, दसवाँ सूर्य बुध राहु, ग्यारवाँ भौम शुक्र बृहस्पति, महीने के आरम्भ पर इस मिल जुले योग के प्रभाव से यह मास शान्त वातावरण में ही गुजरेगा यदि आप पहले से शरीर से अस्वस्थ हैं तो ज़रा सा ध्यान देने पर आप बिल्कुल स्वस्थ रहेंगे यदि घर के किसी सदस्य के शरीर सम्बन्धित परेशानी है तो उसका भी अन्त होगा आप नौकरी करते हैं या व्योपार दोनों सूरतों में आप सफल रहेंगे, धन प्रायः शुभ कामों पर ही खर्च होगा-इस मास में खर्च के लम्बे-लम्बे प्रोग्राम बनेंगे, विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी यदि आप ट्रेनिंग अथवा विदेश में पढने के लिये दौड़धूप करते हैं तो इस मास में विशेषतया इस काम पर ज़ोर लगायें सफलता अवश्य मिलेगी यदि सफलता न भी मिले परन्तु सफलता की आशा सुदृढ़ हो जायेगी।

दिसम्बरः– दूसरा शनि, तीसरा चन्द्रमा, चौथा केतु, दसवाँ राहु, ग्यारवाँ सूर्य बृहस्पति बुध, बारवाँ भौम शुक्र, इस मास में शनि के बिना प्रायः सभी ग्रह अनुकूल हैं, यह मास हर दृष्टि से आपके पक्ष में रहेगा आप के रुके हुये काम हरकत में आयेगें जो कोई भी काम आपके हाथ में होगा अथवा नये सिरे से कोई काम आरम्भ करेंगे उसमें सफलता अवश्य मिलेगी आप नौकरी करते हैं या व्योपार तो इस मास के ग्रहों से लाभ उठायें, यदि आप को लड़के अथवा लड़की के विवाह अथवा पढ़ाई

सम्बन्धित कोई समस्या है आप परिश्रम कीजिये अवश्य सफलता प्राप्त होगी, विद्यार्थियों के लिये विद्यासम्बन्धित हर काम में सफलता का ही महीना है।

जनवरी:— पहले भाव में भौम, दूसरा शनि, तीसरा केतु, पाँचवें भाव का चन्द्रमा, नवाँ राहु, बारवाँ सूर्य बुध बृहस्पति-इस ग्रह चाले के प्रभाव से यह मास आशान्त वातावरण में ही गुज़रेगा शरीर की परेशानी बनी रहेगी, गृहस्थी होने पर स्त्री के शरीर के विषय में सावधान रहिये हर आरम्भ किये हुये काम में रुकावटें आ खड़ी होंगी, आप नौकरी करते हैं या कारोबार दोनों सूरतों में आप असफल रहेंगें, विद्यार्थियों के लिय भी यह मास अशान्ति का ही होगा।

फरवरी:— पहले भाव में सूर्य भौम बुध, दूसरे भाव का शनि और शुक्र, तीसरा केतु, छटा चन्द्रमा, नवाँ राहु, बारवाँ बृहस्पति इस मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों तथा अशुभ ग्रहों का पलड़ा बराबर है जिसके फलस्वरूप यह मास प्रायः शान्त वातावरण में ही गुज़रेगा, यदि आप व्योपार करते हैं तो आप का काम यथावत् चलता रहेगा, अगर आप नौकरी करते हैं तो अचानक लाभ मिलेगा अथवा कोई शुभ सन्देश मिलेगा विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का महीना है।

मार्च:— पहला बुध, दूसरा सूर्य भौम, तीसरा शनि और केतु चोथे भाव का शुक्र, सातवां चन्द्रमा और नवाँ राहु, बारवाँ बृहस्पति होने से यह मास दौडधूप तथा संघर्ष में ही गुज़रेगा, कोई शुभ काम बिना उलझन के सिद्ध नही होगा, व्योपारी वर्ग या नौकरी पेशा रात दिन काम में जुटे रहने पर भी लाभ की कोई आशा न रखें, विद्यार्थियों को भी डटकर पढाई में लगे रहने पर ही सफलता की आशा रखनी चाहिये।

कुम्भ राशि का वर्ष फल

वर्ष के आरम्भ पर गोचर चक्र में पहला शुक्र, दूसरा बुध, छठे भाव का भौम यह सभी ग्रह अच्छी स्थिति में है इसके अलावा तीन ग्रह सूर्य चन्द्रमा शनि अच्छी स्थिति में न होने पर भी तीनों ग्रह वेध में होने से शुभ फलदायक हैं सामूहिक रूप से यह वर्ष आप के लिये सुखशान्ति का वर्ष होगा अच्छे पुरुषों के साथ मेलजोल का मोका मिलेगा यदि आप व्यापार करते हैं इस वर्ष कोई कारोबाीर सम्बन्धित विशाल योजना चालू होने की सम्भावना, आप कारोबार में जुटे रहिये यदि आप नौकरी करते हैं इस वर्ष दफ्तर सम्बन्धित कोई भी काम जो रुका पड़ा हो हरकत में आयेगा घर मे इस वर्ष काई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा कोई जायदाद खरीदने अथवा बनाने का भी योग है विद्यार्थियों के लिये भी ग्रह अनुकूल हैं, विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी।

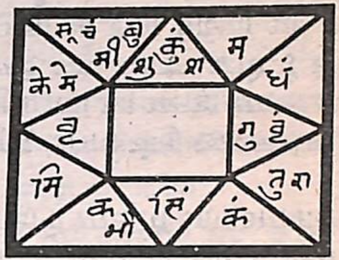

कुम्भ राशि का मासिक फलादेश

अप्रेलः- पहला शनि शुक्र, दूसरे भाव का सूर्य चन्द्र बुध, तीसरा केतु, छठे भाव का भौम, नवां राहु, दसवां बृहस्पति इस मास के शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है यह महीना आपने सुख शान्ति के वातावरण में ही गुज़ारना होगा लाभ की दृष्टि से उत्तम है परन्तु खर्च का योग भी बलवान है आप यदि कारोबार करते हैं तो आपके कारोबार को बृद्धि होगी यदि आप नौकरी करते हैं यह महीना शान मान का होगा विद्यार्थियों के लिये भी ग्रह अनुकूल हैं।

मईः- पहले भाव का शनि, दूसरा शुक्र, तीसरा सूर्य और केतु, चौथा चन्द्रमा बुध, छठेभाव का भौम नवां राहु, दसवां बृहस्पति माह के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने से व्यापारी पेशा होने पर व्यापार में बृद्धि, नौकरी पेशा होने पर हर काम में सफलता लाभ की दृष्टि से यह महीना आपके लिये उत्तम है इस महीने में आपको अधिक से अधिक संघर्ष करना होगा, विद्यार्थियों के लिये विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का महीना है।

जूनः- दूसरे भाव का शनि, तीसरा शुक्र केतु, चौथा सूर्य और बुध, पांचवां चन्द्रमा, सातवां भौम, नवां राहु दसंवा बृहस्पति, अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने से यह महीना दौड़धूप तथा संघर्ष में

ही गुज़रेगा घेरलू परेशानियों से मन अशान्त रहेगा, आमदनी में अचानक कमी होगी कोई काम सिरे चडेगा नहीं अपतु हर आरम्भ किये हुये काम में रुकावट आयेगी यदि घर में आपका कोई वृद्ध आप पर नाराज़ है उनसे माफी मांग कर प्रायश्चित करें ऐसा न करने पर बाद में पछताना होगा नौकरी पेशा होने पर अचानक किसी मुसीबत का सामना करना पडेगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित अथवा इन्टरव्यू में सफलता की कोई विशेष आशा नहीं रखनी चाहिये।

जुलाई:- दूसरा शनि, तीसरा केतु, चौथा बुध, पांचवां सूर्य शुक्र, छठः चन्द्रमा, सातवां भौम, नवां राहु दसवां बृहस्पति प्राय: सभी अनिष्ट ग्रह इस मास के आरम्भ पर वेध में हैं इस मिले जुले शुभाशुभ ग्रहों के आधार से यह महीना हर पहलू से आपके लिये लाभदायक हैं गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण शान्त रहेगा आमदनी में आशा से अधिक इज़ाफा होगा, खर्च में अधिकता रहेगी भाईबन्धों से मिलने जुलने का मौका मिलेगा विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता।

अगस्त:- दूसरे भाव का शनि, तीसरा केतु, छठे भाव का सूर्य बुध शुक्र, आठवां चन्द्रमा भौम, नवां राहु दसवां बृहस्पति शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये अचानक शरीर बिगड़ने का अन्देशा, गृहस्थी होने पर स्त्रीपक्ष से भी शरीर सम्बन्धित परेशानी खड़ी होने की सम्भावना उपाय के रूप में आप इस महीने में अवश्य बैष्णव रहने का प्रोग्राम बनाये, आमदनी की दृष्टि से भी यह महीना उत्तम रहेगा, विद्यार्थियों के लिये भी सफलता का महीना।

सितम्बर:- पहले भाव का शनि, तीसरा केतु, सातवां सूर्य शुक्र, आठवां बुध, नवां भौम और राहु दसवां चन्द्रमा बृहसपतिप्राय: सभी गृह इस माह के आरम्भ में अच्छी स्थिति में न होने से यह महीना अशान्त वातावरण में ही गुजरेगा, शरीर बिगड़ने की सम्भावना गृहस्थी होने पर गृहस्थपक्ष से भी महीना भर कोई न कोई परेशानी बनी ही रहेगी आमदनी के साधनों में रुकावट पड़ेगी खर्च के लम्बे-2 मनसूबे बनते रहेंगें, विद्यार्थियों के लिये भी इस मास के ग्रह अनिष्ठ ही हैं।

अक्टूबर:- पहले भाव का शनि, तीसरा केतु, आठवां सूर्य बुध, नवां भौम शुक्र राहु, दसवां बृहस्पति, ग्यारवां चन्द्रमा इस मिले जुले शुभाशुभ योग के आधार से यह महीना सुख शान्ति के माहौल में ही गुज़रेगा केवल शरीर के विषय में सावधान रहिये यद्यपि खर्च का योग बलवान है परन्तु आमदनी भी उत्तम रहेगी कारोबार में वृद्धि होगी विद्यार्थियों के लिये आशा से अधिक सफलता देने वाला महीना है।

नवम्बर:- पहले भाव का शनि चन्द्रमा, तीसरा केतु, नवें भाव का सूर्य राहु बुध, दसवां भौम बृहस्पति शुक्र इस ग्रहचाल को वेधाष्टकवर्ग के सिद्धान्तों से विचार करने पर मालूम होता है इस महीने में आप दौड-धूप अधिक करेंगें नई-नई कारोबार सम्बन्धित योजनायें बनाते रहेंगें परन्तु कोई भी योजना सिरे नहीं चढेगी आमदनी की दृष्टि से भी यह महीना ढीला ही रहेगा यदि आप नौकरी पेशा हैं तो

दफ्तर का माहौल आपके अनुकूल न होने से अशान्ति बनी रहेगी विद्यार्थियों के लिये भी अशान्ति का ही महीना है।

दिसम्बर:- पहले भाव का शनि, दूसरा चन्द्रमा, तीसरा केतु, नवां राहु, दसवां सूर्य बुध बृहस्पति, ग्यारवां भौभ शुक्र होने से इस माह के आरम्भ पर शुभग्रहों का पलड़ा भारी होने से यह महीना शान्तवातावरण में ही गुजरेगा हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता होगी यदि आप कारोबार करते हैं तो आपके कारोबार को वृद्धि मिलेगी यदि आप नौकरी करते हैं इसमें नौकरी सम्बन्धित कोई शुभ सन्देश अवश्य मिलने वाला है विद्यार्थियों को आशा से अधिक सफलता होगी।

जनवरी:- पहले भाव का शनि, दूसरा केतु, चौथा चन्द्रमा, आठवां राहु ग्यारवां सूर्य बुध बृहस्पति, बारवां भौम शुक्र बेधाष्टवर्ग दृष्टि इत्यादि के अनुसार इस मास की ग्रह चाल पर विचार करने से मालूम होता है यह महीना हर काम में सफलता का महीना है कोई जायदाद खरीदने या बनाने की योजना बनेगी जो सफल रहेगी कारोबारी बर्ग के लिये यह महीना विशेष लाभ का महिना है कारोबार को बढावा देने की भी योजना बनेगी, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी।

फरवरी:- पहले भाव का शुक्र शनि, दूसरा केतु, पांचवां चन्द्रमा आठवां राहु, ग्यारवां बृहस्पति बारवां सूर्य भौम बुध शरीर के विषय में सावधान रहिये शेष हर पहलू से यह महीना आपके लिये

सफलता का हैं कारोबार को नये ढांचे में डालने की कोई स्कीम बनेगी लाभ के लिये भी यह महीना उत्तम है नौकरी पेशा होने पर इस महीने में आपको अवश्य कोई लाभ अथवा शुभ सन्देश मिलेगा विद्यार्थियों को आशा से अधिक सफलता मिलेगी।

मार्च:- पहले भाव का सूर्य भौम, दूसरा शनि केतु, तीसरा शुक्र छठः चन्द्रमा, आठवां राहु, ग्यारवां बृहस्पति बारवां बुध शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने से यह महीना हर पहलू से सुख शान्ति के माहौल में गुजरेगा लाभ उत्तम रहेगा, अच्छे कामों में खर्च करने की योजनाएं बनेगी, व्यापारी होने पर आप के व्यापार को बढ़ावा मिलेगा, नौकरी पेशा होने पर इस महीना में आपको नौकरी सम्बन्धित कोई शुभ सन्देश मिलेगा विद्यार्थियों के लिये आशा से अधिक सफलता मिलेगी। ❖❖

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय से मिलने वाली पुस्तकें

पञ्चस्तवी=हिन्दी अर्थसहित,
पञ्चस्तवी=उर्दू (एडियशन) अर्थ सहित
भवानी नाम सहस्र-दोनों एडियशन हिन्दी उर्दू
कर्मकाण्डदीपक हिन्दी उर्दू
महिम्नस्तोत्र=(हिन्दी उर्दू लिपि में) अर्थ सहित

शिवरात्रि पूजा उर्दू हिन्दी
पुष्पार्चन (अथवा) हवन के लिये स्वाहाकार (हिन्दी उर्दू)
गणेश, नारायण, शिव, सूर्य, देवी (पंचायतन)
अन्तिम संस्कार विधि
हिन्दी एडिशन उर्दू एडिशन

मीन राशि का वर्ष फल

वर्ष के आरम्भ पर नवें भाव का बृहस्पति, बारवां शुक्र, पहले भाव का चन्द्रमा, आठवां राहु यह सभी ग्रह इस वर्ष के शुभफल के सूचक हैं इसके अलावा शेष सभी ग्रह वेधं में होने से यह वर्ष आप के जीवन का स्मरणीय वर्ष होगा गृहस्थी होने पर आपका घरेलू वातावरण शान्त रहेगा यदि घर मे देर से चलती आ रही कोई परेशानी है अथवा लडके या लडकी के विवाह का कुछ प्रोग्राम है ऐसी सभी घरेलू परेशानियों का अवश्य अन्त होगा आप इन समस्याओं को हल करने के खातिर कमर बान्धिये केवल योजनायें ही न बनाये आप व्यापार करते हैं या नौकरी दोनों सूरतों में आप के लिये यह वर्ष खास महत्त्व का होगा विद्यार्थियों के लिये भी यह वर्ष आशा से अधिक सफलता वाला वर्ष होगा केवल मेरे लिखे फलादेश पर ही नज़र ना रखें अपितु रात दिन काम में जुटे रहिये शुभग्रह आपकी सहायता करेंगें।

मीन राशि का मासिक फल

अप्रेल:- पहले भाव का सूर्य चन्द्रमा बुध, दूसरा केतु, पांचवां मंगल, आठवां राहु, नवां बृहस्पति, बारवां शुक्र शनि इस मास की ग्रह स्थिति पर विचार करने से विदित होता है यह महीना इस वर्ष में हर पहलू से आपके लिये सुख शान्ति तथा लाभ का होगा जिस किसी भी काम में आपका हाथ होगा वह काम बिना किसी रुकावट के हल होगा, आमदनी की दृष्टि से भी ग्रह आपके हक में हैं यदि आप नौकरी करते हैं यदि आपकी तरक्की रुकी हुई है इस महीने में सफलता की आशा रखें।

मई:- पहले भाव का शुक्र, दूसरा सूर्य केतु, तीसरा चन्द्रमा तथा बुध, पांचवां भौम, आठवां राहु, नवां बृहस्पति, बारवां शनि वेधाष्टकवर्ग के आधार से इस मास के प्रायः सभी ग्रह सुधरे हुये हैं जिन ग्रहों के प्रभाव से हर काम में सफलता, घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, शुभकामों में खर्च के प्रोग्राम बनेंगे विद्यार्थियों के लिये विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता शुभकामों में खर्च के प्रोग्राम बनेगें, विद्यार्थियों के लिये विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी।

जून:- पहले भाव का शनि, दूसरा शुक्र और केतु, तीसरा सूर्य बुध, चौथा चन्द्रमा, छठः भौम, आठवां राहु, नवां बृहस्पति गोचर सिद्धान्तों के आधार से मालूम पड़ता है इस महीने में शुभग्रहों का पलड़ा भारी है यह महीना शान्त वातावरण में गुज़रेगा भाईबन्धों से मेलमिलाप शरीर सुख उत्तम आमदनी में वृद्धि

जुलाई:- पहले भाव का शनि, दूसरा केतु, तीसरा बुध, चौथा सूर्य शुक्र, पांचवां चन्द्रमा, छठः भौम, आठवां राहु, नवां बृहस्पति इस माह के शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति एक जैसी होने से घरेलू परेशानी महीने भर घेरे रखेगी, कोई भी कार्य बिना किसी उलझन के सिद्ध होगा नहीं आमदनी में अवश्य बृद्धि होगी परन्तु खर्च की अधिकता रहेगी विद्यार्थियों के लिये सफलता का योग।

अगस्त:- पहले भाव का शनि, दूसरा केतु, पांचवां सूर्य बुध शुक्र, सातवां चन्द्रमा भौम, आठवां राहु, नवां बृहस्पति ग्रहस्थिति के आधार से यही मालूम होता है इस महिने में सर्व साधारण रूप से घरेलू या अपनी शरीर सम्बन्धित चिन्ता बनी रहेगी उपाय के रूप में इस महीने में वैष्णव रहें आमदनी के लिये उत्तम महीना घर में अतिथियों का आना जाना जोरों पर रहेगा कोई जायदाद बनाने अथवा खरीदने की स्कीम बनेगी परन्तु अमली रूप देने में रुकावट आयेगी विद्या सम्बन्धित हर काम में विद्यार्थियों को उलझन का सामना करना होगा।

सितम्बर:- दूसरे भाव का केतु, छठे भाव का सूर्य शुक्र, सातवां बुध, आठवां भौम और राहु, नवां

चन्द्रमा बृहस्पति, बारवां शनि होने से शरीर के विषय में सावधान रहिये यदि आप शरीर से स्वस्थ रहेंगें भी परन्तु घर के किसी न किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित चिन्ता महीना भर लगी ही रहेगी व्यापारी वर्ग के लिये यह महीना विशेष लाभ का है इस महीने से लाभ उठायें काम में जुटे रहिये नौकरी पेशा मीन राशि वालों को नौकरी सम्बन्धित कोई शुभ संदेश अवश्य मिलेगा विद्यार्थियों को इस मास के ग्रह अनुकूल हैं पढाई में लगे रहिये सफलता अवश्य है।

अक्टूबर- दूसरा केतु, सातवां सूर्य बुध, आठवां भौम शुक्र राहु, नवां बृहस्पति, दसवां चन्द्रमा, बारवां शनि वेधाष्टकवर्ग के सिद्धान्तों पर विचार करने से मालूम होता है यह महीना अपने सुख शान्ति तथा आदर मान के वातावरण में गुजारना है आमदनी में अवश्य वृद्धि होगी कारोबार सम्बन्धित रुके हुये काम हरकत में आयेगे नौकरी पेशा होने पर यदि नौकर सम्बन्धित कोई समस्या रुकी पड़ी है उस ओर ध्यान दीजिये अवश्य सफलता होगी विद्यार्थियों के लिये भी ग्रह अनुकूल हैं पढ़ाई में लगे रहिये सफलता अवश्य होगी।

नवम्बर:- दूसरा केतु, आठवां सूर्य बुध राहु, नवां भौम बृहस्पति शुक्र, बारवां चन्द्रमा शनि इस ग्रहचाल पर विचार करने से मालूम होता है कि यह महीना आपने संघर्ष दौड़धूप में ही गुजरना होगा कोई भी काम बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा, व्यापारी वर्ग लाभ में ही रहेगा, विद्यार्थियों को पठन पाठन की ओर कम प्रवृति रहने पर भी यदि आपने कोई परीक्षा देनी है या दी है सफलता अवश्य होगी।

दिसम्बर:- पहला चन्द्रमा, दूसरा केतु आठवां राहु, नवां सूर्य बुध बृहस्पति, दसवां भौम शुक्र बारवां शनि यह महीना सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा आप यदि व्यापार करते हैं तो व्यापार में वृद्धि के लिये कोई बड़ी राशि खर्च करने का प्रोग्राम बनेगा यदि आप नौकरी पेशा हैं अचानक कुछ लाभ मिलने की सम्भावना है यह भी मुमकिन है कि कोई तबदीली का सिलसिला बने जो आपके लिये लाभप्रद रहेगा, विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हरकाम में सफलता का योग।

जनवरी:- पहले भाव का केतु, तीसरा चन्द्रमा, सातवां राहु, दसवां सूर्य बुध बृहस्पति, ग्यारवां भौम शुक्र, बारवां शनि इस महीने में प्रायः सभी ग्रह आपके अनुकूल है मानिये नये वर्ष का पहला महिना आपके लिये शुभ सन्देश लेकर आया है आप कारोबार करते हैं या नौकरी जिस किसी भी काम से आप सम्बन्धित हैं हर आरम्भ किये हुये अथवा चालू काम में अवश्य सफलता तथा लाभ होगा। विद्यार्थियों के लिये विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित हैं।

फरवरी:- पहले भाव का केतु, चौथा चन्द्रमा, सातवां राहु, दसवां बृहस्पति, ग्यारवां सूर्य भौम बुध शनि और शुक्र वेधाष्टकवर्ग इत्यादि गोचर सिद्धान्तों के आधार से विदित होता है कि यह महीना हर पहलू से लाभदायक रहेगा आमदनी में वृद्धि होगी परन्तु खर्च का योग बलवानहै, विद्यार्थियों के लिये भी ग्रह अनुकूल हैं आपने यदि कोई परीक्षा दी है या देनी है सफलता अवश्य होगी।

मार्च:- इस मास के आरम्भ के ग्रहों की स्थिति लगभग फरवरी जैसी है यह महीना आपने सुख शान्ति तथा आदर मान के माहौल में ही गुजारना होगा भाई बन्धों रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, कारोबार की दृष्टि से यह महीना उत्तम है नौकरी पेशा होने पर अचानक कुछ लाभ मिलने का योग है दफ्तर में आदर मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी विद्यार्थियों को आशा से अधिक सफलता होगी।

साढ़सत्ती

मकर　　　कुम्भ　　　मीन

मकरः- राशि वालों की साढसत्ती 16 दिसम्बर 1987 से आरम्भ हुई है 17 फरवरी 1996 को समाप्त होगी यदि आप विशाल रूप में कोई कारोबार करते हैं तो शनिदेव आपको कुछ हानि किये विना जायेगा नही आप अवश्य इस वर्ष इष्ट देवी का हवन करें यदि ऐसा करना सम्भव नहीं है तो जन्म दिन पर इष्टदेवी का पुष्पार्चन अवश्य करें, इस बात को भी भूलिये मत यदि आपकी जन्मकुण्डली में शनि कुम्भ राशि का, मकर राशि का अथवा तुला राशि का है तो निश्चय जानिये शनि देवता कारोबार की दृष्टि से शिखर पर लेने वाला ग्रह होगा यदि आप को जन्मकुण्डली में शनि के साथ कोई शुभ ग्रह हो तो मेरे लिखे इस शुभफल की आशा रखें यदि जन्मकुण्डली में शनि के साथ कोई ग्रह ना हो अथवा अशुभ ग्रह हो तो अशुभ फल ही मानिये।

कुम्भ:- राशि वालों की साढसत्ती 22 मार्च 1990 से आरम्भ हुई है 1998, 20 अप्रेल को समाप्त होगी यह समय अपने लिये परेशानियों तथा कष्टों का ही मानिये यदि शनि ऊपर लिखे के अनुसार अच्छी स्थिति में है तो शनि आप को आदर मान देने वाला तथा माला माल करने वाला होगा शनि की अच्छी स्थिति होने पर देर की रुकी हुई समस्याओं का समाधान होगा आप इस बात का विश्वास रखें शनि अशुभ ग्रह होते हुये आपके लिये हानिकारक नहीं है जबकि कुम्भ राशि शनि की अपनी राशि है।

मीन :- राशि वालों की साढसती 6 मार्च 1993 से आरम्भ हुई है जो 7 जून 2000 में समाप्त होगी यह वर्ष आप ने संघर्ष तथा अशान्त वातावरण में ही गुज़ारना होगा आप का कोई भी काम बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा गृहस्थी होने पर घेरलू परेशानियां वर्षभर घेरी रखेंगी खर्च के मज़बूत प्रोग्राम बनेंगे यह भी सम्भव है इस वर्ष आप को कोई जायदाद, जमीन, वाहन इत्यादि खरीदना होगा।

ढय्या

कर्क

वृश्चिक

कर्क:- आपकी ढय्या 17 फरवरी 1996 को समाप्त होगी जबकि शनि मीन राशि में आयेगा शनि की दृष्टि अधिक हानिकारक मानी जाती है शनि आपके दरबार धन, सन्तान तथा विद्यास्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है शनि का नाम 'संस्कृत' में दुख भी रखा गया है अच्छी स्थिति में होने पर भी यह ग्रह हानिकारक ही होता है आप नौकरी करते हैं या व्यापार दोनों सूरतों में आप अशान्त हीं रहेंगें गृहस्थी होने पर आप को घरेलू परेशानियां पीछा नहीं छोडेंगी खसूसी तौर पर सन्तान पक्ष से अशान्त रहेंगें, विद्यार्थी वर्ग को 1996, 17 फरवरी तक का समय असफलता कां ही है उपाय के रूप में अगर आपको घर में किसी वृद्ध के साथ कोई नाराज़गी है उनसे क्षमा याचना करने पर ही उनसे आर्शीवाद प्राप्त करके पास होने की कोई आशा रखें।

नोट:- 3 जून 1995 से 7 अगस्त तक शनि मीन राशि में रहेगा इन दो महिने 4 दिनों के

लिये **सिंह राशि** वालों पर शनि का अनिष्ट प्रभाव होगा। सिंह राशि वालों को इन दो महीनों के लिये अवश्य वैष्ण्व रहना चाहिये नहीं तो शारीरिक कष्ट अथवा कोई दुर्घटना का भय।

वृश्चिकः- आपकी ढय्या 17 फरवरी 1996 को समाप्त होगी शनि आप के शरीर तथा दरबार को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है आप को शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये, हर शनिवार को भगवान् शंकर पर जल चढ़ाया करें और शां को अवश्य बहुरूपगर्भ पढा करें जन्मदिन पर भगवान् शंकर के सहस्त्र नाम से पुण्पार्चण करें यदि आप वाहन चलाते हैं तो वाहन पर चढते-चढते पढ़ा करें। **"सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि। एवम्-एव त्वया कार्य-अस्मत्-वैरि-विनाशनम्।।** यदि आप नौकरी करते हैं दरबार में अचानक किसी उलझन में उझलने का योग।

नोट :- 3 जून 1995 से 7 अगस्त तक शनि मीन राशि में रहेगा इन दो महीने 4 दिनों के लिये **धनु राशि** वालों पर शनि का प्रभाव अनिष्ट ही रहेगा अचानक चोट का भय।

अक्षांश = 33 -10 -------------------- लग्न सारिणी -------------------- पलभा :- 8-7

तिथि	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	लाग्न
वैशा.	2	2	2	2	3	3	3	3	3	3	3	3	4	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	6	6	6	मेष
	38	45	52	58	4	11	18	26	34	41	49	57	5	13	20	28	36	44	52	59	7	15	23	31	38	46	54	1	10	17	
ज्येष्ठ	6	6	6	6	6	7	7	7	7	7	7	8	8	8	8	8	8	9	9	9	9	9	9	9	10	10	10	10	10	10	वृष
	25	33	41	49	56	4	12	22	32	41	51	1	11	21	31	40	50	10	10	20	30	39	49	59	9	19	29	38	48	58	
आषा.	11	11	11	11	11	11	12	12	12	12	12	13	13	13	13	13	14	14	14	14	14	15	15	15	15	15	16	16	16	16	मि.
	8	18	28	38	47	57	7	19	30	42	54	5	17	28	40	52	3	15	27	38	50	1	13	25	36	48	0	12	23	34	
श्राव.	16	16	17	17	17	17	17	18	18	18	18	18	19	19	19	19	19	20	20	20	20	20	21	21	21	21	21	22	22	22	कर्क
	47	58	9	21	33	44	56	8	20	32	45	57	9	21	33	45	57	9	22	34	45	58	10	22	34	46	59	11	23	35	
भाद्र	22	22	23	23	23	23	24	24	24	24	24	25	25	25	25	25	26	26	26	26	26	27	27	27	27	27	28	28	28	28	सिंह
	47	59	11	24	36	47	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	
अस्र	28	29	29	29	29	29	30	30	30	30	30	31	31	31	31	31	32	32	32	32	32	33	33	33	33	33	34	34	34	34	कन्या.
	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	
कार्ति	34	35	35	35	35	35	36	36	36	36	36	37	37	37	37	37	38	38	38	38	38	39	39	39	39	39	40	40	40	40	तुला
	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	49	1	13	25	37	49	1	13	26	38	50	2	14	26	38	51	3	15	27	39	
मार्ग	40	41	41	41	41	41	42	42	42	42	42	43	43	43	43	43	44	44	44	44	44	44	45	45	45	45	45	46	46	46	वृश्चि
	51	3	15	28	40	52	4	16	27	39	51	2	14	25	37	49	0	12	24	35	47	58	10	22	33	45	57	8	20	32	
पौष	46	46	47	47	47	47	47	48	48	48	48	48	48	49	49	49	49	49	49	50	50	50	50	50	50	51	51	51	51	51	धनु
	43	54	6	18	31	41	53	3	13	23	32	42	52	2	12	21	31	41	52	1	11	20	30	40	50	0	10	19	29	39	
माघ	51	51	52	52	52	52	52	52	53	53	53	53	53	53	53	53	54	54	54	54	54	54	54	55	55	55	55	55	55	55	मक
	49	59	9	18	28	38	48	56	4	11	19	27	35	43	50	58	6	14	22	29	37	45	53	1	8	16	24	32	40	47	
फा.	55	56	56	56	56	56	56	56	56	57	57	57	57	57	57	57	57	57	58	58	58	58	58	58	58	58	58	59	59	59	कुम्भ
	55	3	11	19	26	34	42	49	55	2	8	15	22	28	35	41	48	55	1	8	14	21	28	34	41	47	54	1	7	14	
चैत्र	59	59	59	59	59	59	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	मीन
	20	27	34	40	47	53	0	7	13	20	26	33	40	46	53	59	6	13	19	26	32	39	46	52	59	5	12	19	25	32	

दैनिक लग्न सारिणी वैशाख मास (13 अप्रेल से 13 मई) तक के लिये -- भ.स्टै, समयानुसार

वैशा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	लग्न
अंग्रेजी	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	मई	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	
प्रातः	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	मे
तक	40	36	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	
दिन	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	वृ
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	32	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	44	40	36	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	मि
तक	49	45	41	37	33	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	7	3	59	55	51	
दिन	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	क
तक	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	
दिन	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	सिं
तक	34	30	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	
शां	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	कं
तक	55	51	47	43	39	35	31	27	23	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	21	17	13	9	5	1	57	
रात	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	तु
तक	18	14	10	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	वृं
तक	39	35	31	27	23	19	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	
रात	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	धं
तक	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	44	
रात	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	म
तक	20	16	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	
रात	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	कुं
तक	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	52	48	
रात	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	मी
तक	5	1	57	53	49	45	41	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	32	39	35	31	27	23	19	15	11	7	

दैनिक लग्न सारिणी ज्येष्ठ मास (14 मई से 13 जून तक) के लिये -- भ.स्टै, समयानुसार

ज्येष्ठ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	
अंग्रेज़ी	14	15	16	17	19	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	जुन	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	
प्रातः	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	वृ
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	46	42	38	34	
दिन	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	मि
तक	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	
दिन	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	क
तक	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	
दिन	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	सिं
तक	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	
दिन	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	कं
तक	53	49	45	41	37	33	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	7	3	59	55	
शां	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	तु
तक	16	12	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	18	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	वृं
तक	37	33	26	25	21	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	धं
तक	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	46	42	
रात	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	म
तक	18	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	
रात	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	कुं
तक	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	54	50	46	
रात	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	मी
तक	3	59	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	मे
तक	39	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	

दैनिक लग्न सारिणी आषाढ मास (14 जून से 15 जुलाई तक) के लिये -- भ.सैट, समयानुसार

आषाढ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	
अंग्रेज़ी	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	जुला.	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
प्रातः	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	मि
तक	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	
दिन	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	क
तक	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	19	15	11	7	
दिन	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	सिं
तक	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	
दिन	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	कं
तक	51	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	
दिन	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	तुं
तक	14	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	13	
शाम	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	वृं
तक	35	31	27	23	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	धं
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	
रात	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	म
तक	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	19	15	
रात	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	कुं
तक	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	56	52	48	44	40	
रात	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	मी
तक	1	57	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	मे
तक	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	33	49	45	41	37	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	
रात	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	वृ
तक	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	32	28	24	

कर्मकाण्डदीपक का नया एडिशन

इस पुस्तक में बुनियाद मकान पूजा, मकान में प्रवेश, यक्षांमावसी, श्राद्धसंकल्प दिवचक्षीरपूजा दीपमाला, पूजा, जन्म दिन पूजा, विष्णुपूजन, शिवपूजन, शिवरात्रि पूजा, रुद्रमन्त्र चमानुवाक, महिम्नस्तोत्र आदि पूजायें शुद्ध और सहीरूप में दर्ज हैं – शुद्ध छपाई बढ़िया कागज और मजबूत बाइडिंग

हमारी सभी छपी पुस्तकें निम्नलिखित पता से मिल सकती है –

(1) विजयेश्वर -प्रिंटिग प्रैस तालाब तिलू जम्मू ।

(2) जे के बुक शाप़ गल्ली न. 1 तालाब तिलू जम्मू ।

(3) बसीन स्टेशनरी स्टोर पक्का डंगा फोन नं. 43885 ।

(4) गुप्ता स्टेशनरी स्टोर सिटी चौक जम्मू ।

(5) यूनिवर्सल न्विज़ एजन्सी मुकरजी बाज़ार ऊधमपुर ।

(7) वेदप्रकाश तनीजा रघुनाथ मन्दिर, अमरकालोनी (देहली)
फोनः 6429046

NEW BOOK CORPORATION
6/3 Takwadi, Near Princess Street Signal
Kalbadevi Road - Bombay - 400002
Ph : 2016380 - 2054492

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय से मिलने वाली पुस्तकें

पञ्चस्तवी=हिन्दी अर्थसहित,
पञ्चस्तवी=उर्दू (एडियशन) अर्थ सहित
भवानी नाम सहस्त्र-दोनों एडिशन हिन्दी उर्दू
कर्मकाण्डदीपक (शिवरात्रिपूजा) हिन्दी उर्दू
महिम्नस्तोत्र=(हिन्दी उर्दू लिपि में) अर्थ सहित
श्रीमद्भगवद्गीता=उर्दू (एडिशन) अर्थ सहित
पुष्पार्चन (अथवा) हवन के लिये स्वाहाकार
(हिन्दी उर्दू) **शारदा पढ़िये**
गणेश, नारायण, शिव, सूर्य, देवी (पंचायतन)
अन्तिम संस्कार विधि
हिन्दी एडिशन उर्दू एडिशन

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय के नियम

जन्मपत्री बनवाने के लिये शुद्ध गणित का होना आवश्यक होता है। यदि आप शुद्ध और सही जन्मपत्री बनवाना चाहते है तो सम्वत्, तिथि समय और जन्मस्थान "गोत्र" लिख कर भेजे।

1. जन्मपत्री बनवाने की दक्षिणा=150 रु॰
2. जन्मपत्री दिखाने की दक्षिणा=20 रु॰
3. यदि आप ने सम्पादक से मिलना हो तो विजयेश्वर प्रिंटिगं प्रेस तालाब तिलो से सम्पर्क करें।

प्रबन्धक

पञ्चस्तवी

हिन्दी तथा उर्दू एडिशन छप गया!

पंचस्तवी केवल जगदम्बा की स्तुति ही नहीं है बल्कि पञ्चस्तवी का एक एक शब्द शक्तिशाली मन्त्र है, यदि आप सर्वकामना सिद्धि चाहते हैं तो नियम से नित्य पञ्चस्तवी का पाठ जितना भी हो सके अवश्य किया करें, आप की हर एक कामना पूरी होगी

पञ्चस्तवीकार कहता है :–

यं यं कामम्–अपेक्ष्य, येन विधिना केनापि वा
चिन्तितम्, जप्तं वा सफली करोति सहसा तं तं समस्तं नृणाम्।

अर्थ :–जो भक्त जिस जिस कामना से पञ्चस्तवी का पाठ चिन्तन, उच्चारण अथवा जप करता है उसकी वह वह कामना तत्क्षणात् पूरी होती है।

16 अप्रैल 1995
एक बार फिर जाएंगे
500 कश्मीरी पंडित आनंदपुर साहिब

319 वर्ष पहले औरंगजेब के ज़ुल्मों से तंग आकर 500 कश्मीरी पंडितों ने मटन गांव के पंडित कृपाराम दत्त के नेतृत्व में आनंदपुर साहिब पहुंचकर गुरू तेग बहादुर को अपनी अपार व्यथा सुनायी। आज संसार भर में सभी कश्मीरी पंडित गुरू तेग बहादुर के अमर और बेमिसाल बलिदान (11 नवम्बर 1675) की बदौलत जीवित हैं।

इस घटना के बाद पंडित कृपाराम दत्त 29 साल तक गुरू गोविंद सिंह की सेवा में उनके साथ-साथ रहे। उन्हें संस्कृत की शिक्षा दी, कश्मीर शैव दर्शन समझाया, खालसा बने और चमकौर के युद्ध (सन 1704) में मुगल फौजों से लड़ते हुए शहीद हो गये।

पनुन कश्मीर इस वर्ष 16 अप्रैल 1995 (रविवार) के दिन 500 कश्मीरी पंडितों की एक कृतज्ञता यात्रा का आयोजन कर रहा है। 15 अप्रैल की शाम को देश-विदेश से कश्मीरी पंडित चण्डीगढ़ पहुंचकर दूसरी सुबह एक भव्य जुलूस के रूप में आनंदपुर साहिब में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए वाहनों में रवाना होंगे।

कश्मीरी पंडितों पर प० कृपाराम दत्त जैसे पूर्वजो के संघर्ष का ऋण है, गुरू तेग बहादुर और उनके वंश के बलिदान का ऋण है। इतिहास के इतने बड़े ऋण के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने और इस यात्रा में शामिल होने के लिए लिखें या सम्पर्ककरें।

प्रोग्राम को-आर्डिनेटर - गुरू तेग बहादुर कृतज्ञता यात्रा,
5520/I, केटगरी-II, मार्डन हाऊसिंग कम्पलैक्स, मनि - माजरा,
चंडीगढ़ - 160101
फोन : 0172-33073, 25052 फैक्स : 011-2206668
0129-277160

मानसिक शान्ति देने वाला मन्त्र

ॐ नमः शम्भवाय च, मयो भवाय च
नमः शंकराय च, मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च ।

We offer our salutations to Thee— the Giver of Happiness. We offer our Salutations to Thee —the Auspiciousness. We offer our Salutations to Thee — the Bestower of Bliss and still greater Bliss

शिवभक्तों का दास प्रेमनाथ

तालाब, तिलू, जम्मू

(पञ्चाङ्गप्रवर्तक)

यत्-चावहा-सार्थम्-असत्कृतोसि
विहारशय्यासन-भोजनेषु ।
एकोऽथवा-प्यच्युत तत्समक्षं
तत्-क्षामये-त्वाम्-अहम्-अप्रमेयम् ।।

श्री-मद्भगवद्गीता

(सम्पादक)

भावार्थ :- हे गुरुदेव ! विहार शय्या आसन भोजनादि में अकेले अथवा किसी के सामने यदि आप भूल से भी मेरे से अपमानित हुये होंगे, उस अपराध के लिये क्षमा मांगता हूँ ।

सम्पादक

हिन्दी उर्दू जन्त्री मिलने का पता :

जम्मू

(1) विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (गोलगुजराल)
(2) विजयेश्वर प्रिंटिंग प्रैस तालाब तिलू
(3) भसीन स्टेशनरी स्टोर पकाडंगा फोन : 43885
(4) J.K. Book Shop, Street No. 1 तालाब. तिलू
गुप्ता स्टेशनरी स्टोर सिटी चौक) जम्मू :

देहली

1. देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, फोन : 261030
2. काश्मीरी समिति अमर कालोनी, नई दिल्ली फोन : 6465280
3. वेद प्रकाश तनीजा, रघुनाथ मन्दिर अमर कालोनी, (दुकान नं. 4) फोन : 6429046
4 दुकान नं० १० डी०डी०ए० मार्किट, मधुवन, दिल्ली-९२, फोन : ६४१२६९५

ऊधमपुर

UNIVERSIAL NEWS AGENCY
MUKERJEE BAZAR UDHAMPUR

अथ
भावचक्रमिदम्

End